प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय

(BK Godfatherly Spiritual University)

– शिव बाबा की अंतिम शिक्षाएँ –

(Final Teachings of Shiv Baba)

" मीठे बच्चो, संगम युग के महान समय को ऐसे सफल करो "

~ ब्राह्मण आत्माओ के लिए विशेष ज्ञान-योग-पुरुषार्थ की अनमोल किताब ~

An eBook of Purusharth to print and revise

Telecasted by: **Peace of Mind TV** | Book Created by: **Shiv Baba Service Initiative**

Source: www.bkgsu.com

यह मधुबन से आये हुए PMTV द्वारा मिले विशेष पुरुषार्थ स्वयं परमपिता शिव बाबा द्वारा प्रेरित है। इसे बहुत ध्यान से रोज पढ़े। समय अनुसार बाबा के अव्यक्त इशारे भी आपको इसी में मिलेंगे। सभी पुरुषार्थी ब्राह्मण आत्माए इस पुरुषार्थ बुक का लाभ उठाए (print करें) और अपने पुरुषार्थ में गति और सुधार लाए।

Daily Purusharth inspired by Shiv baba (God, the Supreme father) for present time's special and rewarding Purusharth. These inspirations are directly given by Shiv baba during 'Amritvela Yog' and were broadcasted from madhuban through PMTV (Peace of mind TV).

Visit: www.shivbabas.org | www.bkgsu.org (Our Main Website)

BK Google: www.bkgoogle.org (Our Search engine)

First Edition:

27th March, 2020

Published by:

The Shiv Baba Service Initiative (Contact: contact@shivbabas.org);

Prajapita Brahma Kumari Ishwariya Vishwa Vidhyalay (Madhuban)

Available at: Google books, Amazon Kindle and gbk-books.com

Online available at:

‘**PDF books**’ section of our main website (Visit: www.shivbabas.org/books)

OR scan this QR code (using your phone camera) to visit :

‘**No copyright**’ (Shiv baba’s knowledge is free and for all children).

इस eBook को सभी ब्राह्मण आत्माओ को SHARE करे I Via WhatsApp, email, social media.

Om Shanti
08.07.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

आज बाबा बच्चों के पुरुषार्थ को देख रहा था...,
तो बाबा ने देखा कि बच्चे मेहनत कर रहे है...!

परन्तु बच्चे, अब आप बच्चों को मेहनत नहीं करनी, अब आपके अंदर ज्ञान, योग, धारणा, सेवा समा गयी है।
बस स्वयं पर attention ही रखना है और बहुत सहज रीति आगे से आगे बढ़ना है...।

फिर बाबा ने कहा ... निश्चय, समर्पण भाव और धैर्यता - यहीं गुण कहो ... शक्ति कहो ... आप बच्चों को मंज़िल पर पहुँचाएगी...।

देखो बच्चे, बाप (परमात्मा पिता) इस समय आपके छोटे से छोटे काम के लिए भी हाज़िर है...। बस आप बाप को बता निश्चिन्त होकर बैठ जाओ...।
परन्तु होता क्या है..., जब आप कोई छोटा-सा कार्य बाबा को बोलते हो और वो जल्दी से नहीं होता तो आप स्वयं करने लग जाते हो...!
परन्तु उस समय आप बाप पर 100% निश्चय रखो...।

यदि वो कार्य उस समय नहीं हो रहा है, तो उसमें केवल आप बच्चों का ही कल्याण है...।
यदि बाप को कहने के बाद नहीं हो रहा और आपके करने से हो जाता है तो short term के लिए तो सफलता मिलेगी परन्तु हमेशा के लिए नहीं...!

इसलिए अपनी शान्तचित्त अवस्था बनाये रखो..., love and light का अभ्यास करते रहो...।

बच्चे, यह ज्ञान और योग ठीक रीति करने पर आप बच्चों में accuracy, awareness और balance आएगा ... अर्थात् आपकी बुद्धि सभी directions पर कार्य करेगी ... इसलिए इस बात पर भी attention दो...।

योग में मस्त होना अच्छा है, लेकिन इतना मस्त नहीं होना कि आप अपनी ज़िम्मेवारियों से ही पीछे हट जाओ ... अर्थात् जिस समय, जिस कार्य की ज़रूरत है अर्थात् जिस कार्य से आपके परिवार के सदस्य satisfied रहते है, वो कार्य भी करो..., ताकि आपके परिवार का खुशी भरा वातावरण आप सबको उड़ा दे...।
महीनता से इस point को समझना है...।

इसलिए बच्चे, अब स्वयं के पुरुषार्थ पर और बाप (परमात्मा पिता) पर, 100% निश्चय रख धैर्यतापूर्वक चलो...।

जो यह विश्व-परिवर्तन का कार्य हो रहा है, वह कोई छोटा कार्य नहीं है...!
और इस समय यह कार्य बहुत speed से चल रहा है अर्थात् internally सारी तैयारी हो चुकी है ... बस प्रत्यक्ष होने ही वाली है...।

बस बच्चे, आप 100% समर्पण हो, बाप पर निश्चय रख आगे से आगे बढ़ो ... बिल्कुल अचानक ही परिवर्तन हो जायेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
09.07.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

आज बाबा ने कहा कि बच्चे सोचते हैं कि हमारा योग बहुत powerful लग रहा है, तो योग में और क्या करेंें...?

तो बाबा ने कहा कि अगर बाबा बच्चों को कहें कि आप अपने powerful vibrations का प्रयोग करो ... वृति से अपने आस-पास के वायुमण्डल का, आत्माओं का परिवर्तन करो और बच्चे यह कार्य करें, और यदि उन्हें सफलता जल्दी नहीं मिलती तो बच्चे सोच में पड़ जाते है...!

परन्तु बच्चे, हर कार्य धैर्यतापूर्वक ही होता है...। हर बुराई की अति के बाद अन्त होती है। इन सब बातों का ज्ञान ना होने के कारण बच्चे मूंझ जाते हैं।

इसलिए बाबा बच्चों को कहता है कि आप सहज रीति स्वयं पर attention दे आगे बढ़ते रहो...।

बच्चे, किसी भी कार्य में सदा के लिए सफलता चाहते हो तो जो भी result मिल रही है उसकी परवाह किये बिगर आगे बढ़ो ... और आपके निश्चिन्त होते ही आपको आपके कार्य में भरपूर सफलता मिलनी शुरु हो जायेगी...।

‘निश्चय और धैर्यता’ - यही सफलता की चाबी है।
इसे बाबा दृढ़ता भी कहता है अर्थात् कुछ भी हो मुझे अपना कार्य करते ही रहना है ... डगमग नहीं होना...।

बाबा ने देखा कि बच्चों ने तपस्या की है, वो भी बिल्कुल बाप की श्रीमत प्रमाण ... बाप के सपूत बच्चे का सबूत दिया है और बाप भी बच्चों के लिए यही गीत गा रहा है कि वाह बच्चे वाह, वाह मेरे सपूत बच्चे वाह...।

ज्ञान की महीनता को समझ स्वयं पर attention के आधार पर बच्चों ने स्वयं में बहुत परिवर्तन किया है ...और इस सफलता का major आधार है - ‘निश्चय और धैर्यता’...।
जिस तरह बच्चे ‘एक बल - एक भरोसा’ हो चले हो, तो सफलता है ही है...।

तो बच्चों ने कहा;
बाबा हम भी हमेशा वाह बाबा वाह के गीत गाते है ... और आपके सहयोग से ही हम यहाँ तक पहुँचे है...।

तो बाबा ने कहा कि बाबा (परमात्मा पिता) अपने सपूत बच्चों के साथ हर पल है और उनकी विजय तो निश्चित ही है...। बस बाबा तो निमित्त बन अपना part बजा रहा है...।

बस बच्चे, इसी तरह उमंग-उत्साह में रह आगे बढ़ो ... बस मंज़िल अब कुछ ही कदम पर है...। सभी बच्चे बाप पर 100% निश्चय रखें...।
सभी श्रेष्ठ आत्माएं है और सभी का part ऊँचा है...।

इसलिए हमेशा बाप पर 100% निश्चय रख, निश्चिन्त रह, आगे बढ़ो...।
जब परमात्मा बाप साथ में हैं, तो विजय तो है ही है...।

देखो, अब problems के बारे में सोचना बन्द करो ... प्राप्तियों के बारे में सोचो...।
बस आगे प्राप्तियां ही प्राप्तियां है ... नाचो, गाओ, खुशियां मनाओ ... वाह बच्चे वाह...!

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
10.07.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, स्वयं पर full attention रख love and light के साथ-साथ purity का भी अभ्यास करते रहो ...
और सदा अपनी स्व-स्थिति के आसन पर अर्थात् एकरस स्थिति के आसन पर स्थित रहो...।

कुछ भी सोचो मत अर्थात् प्रभाव-मुक्त ... अर्थात् किसी भी बात का, किसी भी atmosphere का, किसी के भी स्वभाव-संस्कार का, कोई भी किसी भी तरह के कमज़ोरी के प्रभाव से मुक्त ... अर्थात् किसी भी बात को या कार्य को कहते, करते, सुनते - no effect - इसमें मूंझो मत...।

देखो बच्चे, कोई भी अच्छी वा बुरी बात का पता तो चलेगा, परन्तु आपके संकल्पों में ना चले...।
एक दम शांतचित्त बन वरदानी मूर्त बन जाओ...।
कोई भी अकल्याण की बात वा जो बात आपके according ना हो, तो भी उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना अर्थात् अकल्याण को भी, ज्ञान के point को use कर, कल्याण में परिवर्तन कर दो...।

देखो, जब बाप (परमात्मा पिता) है ही साथ में तो कल्याण है ही है...।
इसलिए 100% निश्चय, फिर निश्चिन्त अवस्था...।

निश्चिन्त अवस्था है तो विजय हुई ही पड़ी है...।

बस, इसके लिए 100% समर्पण भाव रखो। खुद को भी बाप को समर्पण कर दो ... अर्थात् जहाँ बिठाये, जो खिलाये ... जहाँ रखे, तेरी मर्ज़ी...।

बच्चे, बाप के हर बोल पर 100% निश्चय रख आगे बढ़ते जाओ, क्योंकि आपको पता नहीं चल रहा है कि पाँच तत्वों से बनी दुनिया जोकि इस समय बिल्कुल तमोप्रधान हो गयी है, वो सतोप्रधान किस तरह बनती है..., जबकि आप बच्चे ही निमित्त बनते हो...।
परन्तु इस दुनिया के परिवर्तन की विद्धि को ना जानने के कारण मूँझ जाते हो।

जो यह बात बाप बार-बार कह रहा है कि 'आप ही हो' अर्थात् आप ही हो विश्व-परिवर्तन कर्ता..., बच्चे अब आप 'पहुँचे की पहुँचे' अर्थात् अपनी सम्पूर्णता की मंज़िल के समीप, पहुँचे की पहुँचे...।
यह दोनों बात 100% सत्य है ... और यही संकल्प मंज़िल पर पहुँचने के आधार है...।

इसलिए निश्चयबुद्धि बन, निश्चिन्त रह, इस संकल्प को धारण कर तीव्र गति से आगे बढ़ो ... बस अब शुभ दिन आयो रें..., शुभ दिन आयो रें...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
11.07.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, आप शरीर नहीं आत्मा हो, और आत्मिक दृष्टि से सारा संसार ही आपका परिवार है।
अब बस इस अन्तिम जन्म में गृहस्थ व्यवहार में रहते आपको स्वयं पर attention ही रखना है कि मेरी वज़ह से कोई भी आत्मा असंतुष्ट ना हो ... और आप जिस परिवार में रहते हो, उन सदस्यों की ज़िम्मेवारी बुद्धि से बाप (परमात्मा पिता) हवाले कर दो...।

देखो, अब सब कुछ सम्भालने परमात्मा बाप आ गया है ... और उसे पता है कि किस रीति उसको सम्भालना है...।

यदि आप अपनी ज़िम्मेवारी समझोगे तो आपके सम्बन्ध में आने वाली आत्माओं के साथ-साथ आपका भी हिसाब-किताब बन जायेगा, जो फिर आपको स्वयं ही चुक्तु करना पड़ेगा...!

अब सब कुछ बाप (परमात्मा पिता) हवाले करने में आपका भी कल्याण है और आपके सम्बन्ध में आने वाली आत्माओं का भी...।
इसलिए बच्चे, आप निश्चिन्त हो जाओ...। आपका बाप स्वयं आ गया है, आप बच्चों की ज़िम्मेवारी संभालने...।
फिर बार-बार, सोच-सोच कर क्यों भारी हो जाते हो...?

जो थोड़ा बहुत हिसाब-किताब है, वो सहज रीति चुक्तु करो अर्थात् बार-बार बाप को समर्पण कर अपनी seat पर set होने का अभ्यास करो...।
अब अपना हिसाब-किताब मत बनाओ। यह ना हो कि समय परिवर्तन हो जायें और आपको पश्चाताप करना पड़े...!
अब बस समय परिवर्तन हुआ की हुआ...।

इसलिए बच्चे, इस समय सबसे अधिक ज़रूरी है अपनी एकरस अर्थात् शांतचित्त स्थिति में स्थित रहना। आपको अपनी यह seat किसी भी कारण से नहीं छोड़नी है ... चाहे कुछ भी हो जायें...!

देखो बच्चे, एकरस स्थिति आपकी बाप-समान स्थिति है ... इस स्थिति में जब आप स्थित होते हो तो आपके साथ बाप है ही है ... और जब आप योग लगाने के लिए वा किसी भी कारणवश संकल्पों में क्या, क्यों, कैसे, ऐसे, वैसे वा कब तक लाते हों, तो आप बाप से दूर अर्थात् अपनी मंज़िल से दूर हो जाते हो...। इसलिए सदा प्रेमस्वरुप बनकर रहो ... कोई भी बड़े से बड़ा कारण आपको आपकी स्थिति से ना हिलाये...।
बस बच्चे, आप मंज़िल के समीप ही हो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
12.07.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, अब जल्दी से बाप-समान बन, बाप (परमात्मा पिता) की बाँहो में समा जाओ...।

(तो बच्चों ने कहा ... बाबा, हमें भी बहुत जल्दी है कि हम भी आप-समान बन आपकी बाँहो में समा, अतिन्द्रिय सुख का अनुभव करें...)

फिर बाबा ने कहा...
बच्चे, इसके लिए प्रवृति में रहते यह ध्यान रखना है कि आपको एक तो सदा एकरस स्थिति में स्थित रहना है, दूसरा जो आपने अपना तन, मन, धन, जन ... बुद्धि से शिवबाबा को समर्पित किया है, तो उसमें फिर आपकी आसक्ति ना हो, अर्थात उसमें मन-बुद्धि ना जाये...।

देखो बच्चे, जो आपने तन बाबा को समर्पण किया है, शिवबाबा आपसे भी अच्छी तरह इस तन की संभाल भी करेगा और सहज रीति हिसाब-किताब चुक्तु करवा देगा...।

इसी तरह मन में जो संकल्प आये वो भी बाप को सौंपने पर बाप आपके संकल्पों को श्रेष्ठ बना देगा, शुभ भावना ... शुभ कामना से संपन्न कर देगा ... और आपको कभी भी धन की भी कमी नहीं होने देगा ... और साथ ही आपको ज्ञान-धन से भी इतना भरपूर कर देगा कि आप जन्म-जन्मान्तर तक धन-धान्य सम्पन्न बन जाओगे...।

जन अर्थात् सम्बन्ध-संपर्क में आने वाली आत्माओं की भी अच्छी रीति संभाल कर, उनके सहज रीति हिसाब-किताब चुक्तु करवा अपने साथ ले जायेगा...।

इसलिए बच्चे, आपको सम्पूर्ण रीति समर्पण होना है...।
यदि अभी भी इनमें आपका समय गया या मन-बुद्धि गई, तो आप फँस जाओगे और दूसरा आपको बहुत ज्यादा निश्चय भी होना चाहिए...।

जैसे एक छोटे बच्चे को माँ-बाप पर संपूर्ण निश्चय होता है, तो माँ-बाप भी बच्चे की इतनी संभाल करते हैं कि जब भी कोई problem आती है तो वो तुरंत ही अपने बच्चे को अपनी गोदी में छिपा लेते हैं..., जैसे रास्ते में कीचड़ आये तो भी, सफर में कोई गन्दा side scene आये तो भी, माँ-बाप अपने बच्चे को गोदी में छिपा लेते है कि मेरा बच्चा ना देखें...। अर्थात् वो अपने से ज्यादा अपने बच्चे का ध्यान रखते हैं...।

शिवबाबा तो हमेशा बच्चों के श्रेष्ठ भाग्य के गीत गाता है, और बच्चों पर नज़र पड़ते ही बाबा वाह वाह बच्चे..., कहता है...।
इस तरह आपको भी अपने ऊँच से ऊँच, श्रेष्ठ से श्रेष्ठ स्वमान में स्थित हो, श्रेष्ठ से श्रेष्ठ अर्थात् बाप-समान बन जाना है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
13.07.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

आज बाबा ने भक्तों और बच्चों में फर्क बताया कि भक्त भी भगवान् को याद करते है और इसके साथ छोटी-छोटी इच्छाएं रखते है और वो बाप को पूरी रीति जानना भी नहीं चाहते ... अर्थात् उन्होंने द्वापर से सच्ची भक्ति अर्थात् निःस्वार्थ भक्ति, नहीं की होती...। जिस कारण मैं परमात्मा शिव, भी उनकी वो ही इच्छा पूर्ण कर उनकी भक्ति का फल उन्हें उसी समय दे देता हूँ...।

भगवान को तो जोकि सभी आत्माओं का बाप है इसलिए सभी बच्चों को उनकी तपस्या का 100% फल देना पड़ता है ... चाहे वो भक्त, भगवान के द्वारा प्राप्त वरदान को दुरूपयोग करें ... तब भी भगवान सब कुछ जानते हुए भी उसे उसकी तपस्या का फल देता ही है...।

और यहाँ तो स्वयं भगवान बाप बन, आप मीठे-मीठे, प्यारे बच्चों को जन्म-जन्म की तपस्या का फल direct देने आ गया है...। यह माला में number fix होना, एक जन्म की प्रालब्ध नहीं है, बल्कि द्वापर से लेकर बजाए गये part की प्रालब्ध है...।

आप बच्चे जोकि द्वापर से ही सच्ची भक्ति करते हो अर्थात् निष्काम भक्ति, जिसकी एवज में मैं (परमात्मा शिव) तुम्हें बाप रूप में मिलता हूँ और तुम्हें ऐसा ज्ञान कहो, समझानी कहो देता हूँ, जिससे तुम नम्बरवार मेरे समान बन जाते हो...।

मैं तुम्हारी छोटी-छोटी इच्छाएं नहीं पूरी करता, बल्कि तुम्हें इतना योग्य बना देता हूँ कि तुम अपने साथ-साथ सारे विश्व की आत्माओं की इच्छा को पूर्ण कर देते हो...।

यदि मैं बीच-बीच में तुम्हारी इच्छायें पूरी करने लग जाऊँ, तो तुम्हारी तपस्या का फल कम हो जाता है...।
इसलिए मैं बार-बार कहता हूँ कि आप समर्पण हो जाओ अर्थात् इन सभी परिस्थितियों को मुझे समर्पण कर दो ... अर्थात् आप बेफिक्र हो जाओ...।

और जब आप इच्छा-मुक्त या परिस्थिति-मुक्त हो जाते हो, तो आपमें इतनी power आ जाती है कि आपके संकल्प कार्य करने लग जाते है, अर्थात् आपके powerful vibrations आपके आस-पास, आपके अनुकूल वातावरण बना देते है...।
अन्यथा आप छोटी-छोटी परिस्थिति में फँस मैं और मेरे में आ जाते हो...।

इसलिए बाबा कहता है... निरसंकल्प हो जैसे बाप कहता है, वैसे करो ... तब ही आप सभी चीज़ों से अर्थात् इस पाँच तत्वों की दुनिया के प्रभाव से निकल बाप-समान बन सकते हो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
14.07.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, मन और बुद्धि के मालिक बन इन्हें अपने order से चलाओ...।

यदि अभी भी, कभी आप मालिक बनो ... और कभी मन-बुद्धि..., तो वह ठीक नहीं है...।

यदि अभी भी आप स्वराज्य अधिकारी अर्थात् अपने मन-बुद्धि के राजा नहीं बनोगे, तो ना ही बाप के दिलतख्तनशीन बनोगे और ना ही विश्व-अधिकारी बन पाओगे...।

बच्चे, आपको इस दुनिया के सभी साधनों से वैराग्य आ जाना चाहिए, नहीं तो अंत समय यह साधन आपको अपनी तरफ खींचेगे...।

- इन साधनों से क्या प्राप्त करना चाहते हो...?
- क्या इच्छा रह गयी है...?
- दुनिया के समाचार जानना चाहते हो या अपना time paas करने के लिए इन्हें use करते हो...!
- क्या बाप से यह सब प्राप्ति नहीं होती...?
- या आप स्वयं से या बाप से bore हो जाते हो...?
- या सोचते हो कि एक second तो लगता है...!

परन्तु बच्चे, आपका एक-एक second बहुत बहुमूल्य है ... और फिर पूरे कल्प में ऐसे बाप (परमात्मा पिता) का साथ नहीं मिलेगा...!

अतिन्द्रिय सुख का गायन ही गोप-गोपियों का है ... और सर्व प्राप्ति अभी की, और भविष्य में भी शिव बाप से ही होनी है...।

इसलिए full attention दो ... मनन-चिंतन करो ... बाप से रूह-रिहान करो ... मन्सा सेवा करो ... और शांति में बैठ यह अभ्यास बढ़ाते चलो...।

बच्चे, बाबा बार-बार कह रहा है - 'अभी नहीं, तो कभी नहीं'...।

यदि आप मजबूरी से कोई कार्य करते हो, तो वो भी जमा हो जाते है ... और यदि मन से करते हो तो नीचे की तरफ आ जाते हो...।
इसलिए हर बात को परखकर बड़ी युक्ति-युक्त ढंग से चलते चलो...।

बच्चे, प्रवृति में रहते बड़े युक्ति-यक्त ढंग से चलना पड़ता है, इसलिए आप बच्चों को अपने गुणों और शक्तियों की seat से कभी भी नहीं उतरना है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
15.07.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

आज बच्चों ने बाबा से कहा कि बाबा, हम अपना 100% दे पुरुषार्थ कर रहे है ... हमारे अंदर एक ही लगन है कि बाप-समान बनना ही है।
इतना पुरुषार्थ करने के बाद भी वो powerful स्थिति नहीं बन रही है...?

Light की dress में रहने का भी अभ्यास करते है ... और आपकी छत्रछाया के नीचे रहने का भी अभ्यास करते है..., परन्तु दोनों एक साथ नहीं कर पाते...!

तो बाबा ने कहा...
बच्चे, शिवबाबा की नज़र हर पल आप बच्चों पर ही है।
बाबा देख रहा है कि बच्चों के अंदर एक ही लगन है परन्तु मगन होने में नम्बरवार है...।

यदि बच्चे, आप अपना 100% दे पुरुषार्थ करते हो और आपके ऊपर अपना full attention है, तो बाप की guarantee है कि बाप आपको अपने समान बना साथ ले जायेगा...।

यह अभ्यास नया होने के कारण आप लोगों को थोड़ा मुश्किल लगता है, परन्तु जैसे-जैसे अभ्यास बढ़ाते जाओगे उतना ही सहज हो जायेगा और पहले से सहज हुआ भी है...।

और जब आप light house - might house स्थिति में स्थित होते हो, तो automatically आपका connection main power house के साथ हो जाता है...।

इसलिए ज्यादा सोचो मत, ज्यादा सोचने पर दिलशिकस्त हो जाते हो।
वैसे भी हिसाब-किताब clear करने का समय होने के कारण स्थिति ऊपर-नीचे होती है, परन्तु आपका full attention होने के कारण आप तुरन्त अपनी seat पर set हो जाते हो...।
इसलिए अपने पर निश्चय रखो। आप ही कल्प-कल्प के विजयी रत्न हो...।

बस मैं और मेरे-पन का त्याग कर, बाबा पर 100% निश्चय रख, हल्के हो, आगे से आगे बढ़ते चलो ... ज्यादा सोचो मत ... कैसे होगा ... कब होगा ... मैं कर पाऊँगा या नहीं...!

स्वयं से संतुष्ट रह अर्थात् अपने पुरुषार्थ से संतुष्ट रह, बीती को बिंदी लगा, परमात्मा बाप की याद की लगन में मगन रहो...। बाबा हर पल आपके साथ है अर्थात् बाप भी आपको स्नेह, सहयोग और शक्ति दे रहा है, फिर तो हुआ ही पड़ा है ना...!

इसलिए अब कोई हलचल नहीं, एकदम संतुष्ट, अचल, अडोल और एकरस रहना है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
16.07.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, आप हो एक आत्मा अर्थात् संकल्प शक्ति अर्थात् point of energy अर्थात् आत्मा...।

एक तरफ हो आप थोड़ी-सी आत्मायें जिन्हें बाप तैयार कर रहा है...।
उन्हें ऐसी पढ़ाई पढ़ा रहा है जिससे उनके अंदर केवल positive संकल्प ही होंगे, कोई mixture नहीं ... ना ही कोई साधारण संकल्प ... ना ही कोई व्यर्थ ... सदा उमंग, उत्साह, सफलता, खुशी से भरे हुए ... बेहद के कल्याण के निमित्त powerful संकल्प...।

और दूसरी तरफ, सारे विश्व की आत्मायें, व्यर्थ, negative और साधारण संकल्पों से भरपूर ... परन्तु इस समय वो सभी आत्मायें हार चुकी है, थक चुकी है, निराश हो चुकी है और उनकी हर खुशी और सफलता क्षण भंगुर है ... उनके अंदर हर समय एक डर समाया हुआ है ... अर्थात् उनकी आसुरी शक्तियां शक्तिहीन हो चुकी है और इधर आप आत्मायें दिनों-दिन शक्तिशाली होती जा रही हो, क्योंकि आपका स्वयं पर attention हर पल का है और आप बच्चों ने अपने इस पाँच तत्वों रूपी वस्त्र में भी अंदर-रीति (अर्थात् internally) काफी परिवर्तन कर लिया है...।

बस थोड़े से attention से ही सारा कार्य हो जायेगा अर्थात् आपकी ईश्वरीय ताकत आसुरी ताकत पर विजय प्राप्त कर लेगी अर्थात् उन्हें तमोप्रधान से सतोप्रधान बना देगी...।

अभी भी आपकी शक्तियों ने आसुरी शक्तियों को बिल्कुल कमज़ोर कर दिया है ... बस आप सब बच्चों का एक powerful स्थिर संकल्प, परिवर्तन का संकल्प सब कुछ परिवर्तन कर देगा...।

बस बच्चे, बाप (परमात्मा पिता) को, बाप की शिक्षाओं को संग रख, love and light के अभ्यास को करते आगे बढ़ो ... विजय हुई ही पड़ी है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
17.07.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, आपका लक्ष्य बहुत ऊँच है अर्थात् आप मनुष्य से देव और देव से भगवान समान बनने का पुरुषार्थ करते हो ... अर्थात् आप सारी दुनिया के रचयिता परमपिता परमात्मा के समान इस दुनिया में रहते बनना चाहते हो।

जबकि इस दुनिया की मनुष्य आत्मायें, द्वापर से ही परमात्मा से मिलने के लिए या उनके क्षण भर के दर्शन के लिए अपना पूरा जीवन ही लगा देती है।

परन्तु आप मुट्ठी भर बच्चे, परमात्मा बाप की श्रीमत पर सच्चे मन से, पूरी लगन से चल, बाप-समान बन जाते हो...।

आपका बाप के प्रति समर्पण भाव ही आपको, आपके लक्ष्य तक पहुँचाता है।

यह समय की भी बलिहारी है, जो केवल इस समय ही कोई-कोई आत्मायें ही बाप (परमात्मा पिता) को पहचान बाप-समान बनने का attention देती है। और केवल योग्य आत्मायें ही नम्बरवार बाप-समान बन सकती है।

योग्य अर्थात् जो आत्मायें बेहद में सोचे और सच्चे दिल से निश्चय और धैर्यता को अपना आधार बना आगे बढ़े...।
ऐसे बच्चों को ही बाप का हर कदम में full सहयोग मिलता है ... अर्थात् भगवान बाप ऐसी आत्माओं को ही अपने समान बना लेता है, अन्यथा भगवान तो सबका बाप है...!

कई बच्चे सोचते है कि पता नहीं कितना समय अभी और लगेगा...!
देखो बच्चे, बाप की शक्तियाँ अपरमअपार है, इसके कारण बाप की महिमा भी अपरमअपार है...।

बाप-समान बनने के लिए आपको स्वयं को इतना योग्य तो बनाना ही पड़ेगा कि आप बाप की दी गई शक्तियों को स्वयं में सही रीति धारण कर, उसे सही रीति use कर सको...।

बस बच्चे, बाप पर निश्चय रख आगे बढ़ो, आप ही कल्प-कल्प के विजयी हो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
18.07.2018

★ 【 आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, बाप-समान बनना सहज नहीं है..., इसके लिए 100% त्याग, तपस्या अर्थात् समर्पण भाव चाहिए ... 100% निश्चय चाहिए ... क्योंकि हर कार्य सूक्ष्म है...।

इस स्थूल नेत्रों से कुछ दिखाई नहीं देता, परन्तु यहाँ है परमपिता परमात्मा, सर्व कल्याणकारी, पालनहार भगवान जोकि अपने बच्चों की छोटी-बड़ी हर समस्या को सहज ही अर्थात् हर तूफान को तोहफे में परिवर्तन कर देता है..., बस wait and watch की आवश्यकता है...।

भक्तों को भक्ति का फल जल्दी मिलता है, परन्तु बच्चों को हर तरह का त्याग कर अपना 100% दे तपस्या कर, कई तरह के papers देने पड़ते है, तब ही बच्चे अपने aim को प्राप्त कर अपनी प्राप्तियों को, जोकि अपरमअपार है, को प्राप्त करते है...।

जैसे एक बच्चा, थोड़ी-सी मेहनत कर कमाने लग जाये, तो थोड़ी-सी मेहनत से थोड़ी बहुत प्राप्ति होनी शुरु हो जाती है...।

दूसरी तरफ, एक बच्चा पढ़ने लगे तो उसे तन, मन, धन भी लगाना पड़ता है ... और paper भी देने पड़ते है...।
परन्तु जब तक वो अपने aim तक नहीं पहुँचता, तब तक प्राप्ति कुछ नहीं...।

परन्तु aim पर पहुँचते ही दोनों बच्चों में ज़मीन-आसमान का अन्तर दिखता है। इसलिए बच्चे, आप उमंग-उत्साह के साथ, स्वयं पर attention दे आगे बढ़ो...।

आप बच्चों के साथ-साथ आपके परिवार की हर तरह से सम्भाल रखने की guarantee स्वयं भगवान की है, इसलिए निश्चिन्त रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
19.07.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...

बच्चे, निश्चयबुद्धि विजयन्ती - इस बात को महीनता से समझो...। जब नम्बरवन बनना है तो समय से पहले ही अर्थात् सारी दुनिया से पहले अपने सारे हिसाब-किताब clear कर, अपनी seat पर set होना पड़ेगा...।

इसके लिए स्वयं पर 100% attention ज़रूरी है और साथ ही साथ, धैर्यता का गुण जो निश्चय के साथ बंधा हुआ ही है...।

- निश्चय अर्थात् निश्चिन्त स्थिति...
- निश्चय अर्थात् एक बल, एक भरोसा...
- निश्चय अर्थात् एक बाप (परमात्मा पिता) दूसरा ना कोई, हर छोटी-बड़ी परिस्थिति में...
- निश्चय अर्थात् खुशनुमा चेहरा, सदैव हल्का, संतुष्टता से भरपूर मन...
- निश्चय अर्थात् रमता योगी...
- निश्चय अर्थात् no question, no complaint...

जो बच्चा निश्चय और धैर्यता के गुण को अपनी शक्ति बना लेगा वो ही मास्टर सर्वशक्तिमान् बन, मास्टर भगवान् बन जायेगा ... अर्थात् कल्प-कल्प की विजयी आत्मा...।

इसलिए बच्चे, आप सभी बातों से न्यारे रहो..., बाबा बैठा है...।
हर बात में 100% कल्याण समाया हुआ है क्योंकि हर आत्मा अपना accurate part play कर रही है ... drama का अन्त अर्थात् climax period चल रहा है, जिसमें हर आत्मा के छिपे हुए संस्कार-स्वभाव सामने आ विदाई ले रहे हैं...।

आप अपनी शुभ भावना, शुभ कामना सभी आत्माओं के लिए बनाये रखो, जिससे सभी का कल्याण हो - यही बाप-समान बच्चों का कर्तव्य है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
20.07.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा कि अब आप बच्चों की स्व-स्थिति ऊँची होती जा रही है ... अर्थात् आप सब इस दुनिया के प्रभाव से न्यारे अर्थात् तेरा, मेरा, क्या, क्यों, ऐसे, वैसे, अच्छा, बुरा ... हर चीज़ से न्यारे होते जा रहे हो...।
अब आप बच्चों के संकल्प भी बेहद में रहते हैं।

बाबा ने एक example दिया..., जैसे, जब पानी से भरे एक बर्तन को अग्नि के ऊपर रख दें, तो पानी भाप बन ऊपर उड़ता जाता है ... इसी तरह अब आप बच्चों की स्थिति योग-अग्नि से ऊपर की तरफ अर्थात् बेहद में स्थित होती जा रही है...।
अब आप दुनिया के प्रभाव से न्यारे होते जा रहे हो...।

यदि कोई बच्चा अभी भी क्या, क्यों करता है, तो जैसेकि बर्तन के ऊपर plate रख देता है, जिससे वो हद में भी आ जाता है और योग-अग्नि भी slow हो जाती है...।

इसलिए बच्चे स्वयं पर attention रखो और हर बंधन से मुक्त रह सभी आत्माओं को बंधन-मुक्त बनाओ ... और आपकी बेहद की स्थिति अर्थात् बाप-समान स्थिति ही सभी को मुक्त कर सकती है।

बच्चे, अब आपके अंदर एक ही संकल्प हो कि सब अच्छा है ... और हर बात में केवल कल्याण ही कल्याण है...।

देखो बच्चे, यह love and light का अभ्यास आप बच्चों को ऊपर ही ऊपर लेकर जा रहा है ... और जैसे-जैसे आप बच्चों की स्थिति ऊँची होती जा रही है, तो आपके परिवर्तन की speed बहुत तेज़ हो रही है...।

बस आप बच्चे बाप (परमात्मा पिता) पर 100% निश्चय रख, हर कदम में अपना कल्याण समझ, धैर्यतापूर्वक आगे बढ़ते जाओ - यही सर्वश्रेष्ठ विधि है अपनी-अपनी position पर पहुँचने की...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
21.07.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बच्चे, अब आपका बाप प्रत्यक्ष रूप में आपकी सम्भाल करने आ गया है।
इसलिए, निश्चिन्त हो जाओ...।

किसी भी बात में क्या, क्यों मत करो...। चाहे तन है, चाहे मन है ... इसे सतोप्रधान बनाने के लिए इसकी सफाई आवश्यक है और जब सफाई होगी, तो कुड़ा तो निकलेगा ही..., अर्थात् तन की बीमारी और मन की कमज़ोरी बाहर किसी ना किसी रूप में आयेगी, और इसी में आपका 100% कल्याण समाया हुआ है...।

यह समय केवल आपके कल्याण के निमित्त है।
इसलिए 100% बाप (परमात्मा पिता) पर निश्चय रख, स्वयं का परिवर्तन करो, तब ही आप विश्व-परिवर्तन कर पाओगे...।

बस बाप पर 100% निश्चय रख, धैर्यतापूर्वक चलते रहो..., पूरे निश्चय के साथ आगे बढ़ो...।

बच्चे, आप तो मास्टर प्रेम के सागर हो - निर्माणता, नम्रता और मधुरता तो आपके विशेष गुण है। आप सर्व विशेष हो...।
आपकी presence ही सभी आत्माओं में जागृति देती है।

बस आप अपने उच्चतम् authority रुपी स्वमान में स्थित रहो।
देखो, अगर paper के रूप में कोई भी बात आये तो आप विशाल हृदय बन सभी को क्षमा कर स्नेह दो, यही विश्व-कल्याणकारी आत्मा के विशेष गुण है।

आपके साथ तो स्वयं भगवान, बाप रूप में चलता है ... फिर आपको तो किसी भी बात की सोच होनी ही नहीं चाहिए...!

इसलिए बच्चे, बहुत carefully, love and light के साथ-साथ पवित्रता का अभ्यास करते रहो। पूरे alert रहो...।

मैं भी light ... यह तन भी light ... और मेरे चारों तरफ light ही light है...।
यह light का अभ्यास ही इन पाँचों तत्वों की originality को सामने लायेगा..., तब ही तो अन्त सो आदि होगी...।

बस बच्चे, बाप भी light ... आप भी light ... चारों तरफ बस light ही light है...।
बच्चे, यह अनुभव करो कि बाबा की light आप पर आ रही है और आप आत्मा में समाती जा रही है...।
इसे कहा जाता है चिड़ियाओं ने सागर को हप कर लिया..., अर्थात् शिवबाबा की light लेते-लेते light स्वरूप ही बन गये...। बस बच्चे, ऐसा अभ्यास करते रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
22.07.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, इस मार्ग में संस्कार परिवर्तन अति आवश्यक है। संस्कार परिवर्तन अर्थात् स्व-परिवर्तन अर्थात् विश्व-परिवर्तन...।

देखो बच्चे, जो स्वयं ही स्वयं के संस्कार परिवर्तन नहीं कर सकते, तो समय आने पर बाप (परमात्मा पिता) उन आत्माओं के संस्कार परिवर्तन कर उन्हें घर (परमधाम) लेकर जाते हैं ... और जो आत्मायें स्वयं ही स्वयं के संस्कार परिवर्तन करते हैं, वो समय को परिवर्तन करने के निमित्त बन जाते हैं ... और अपना उच्चतम् भाग्य बना लेते हैं...।

देखो, बाप की सारी पढ़ाई का सार ही परिवर्तन है, इसलिए स्वयं ही स्वयं की checking कर अपने संस्कार बाप-समान बना लो ... अर्थात् drama के हर scene पर निश्चय अर्थात् no question - no complaint, किसी भी तरह का...।

ऐसी आत्मायें ही बिन्दु रूप में स्थित अर्थात् अपने सारे संकल्पों से मुक्त, बाप-समान स्थिति में स्थित हो, बाप के संग विश्व-परिवर्तन का कार्य कर सकती है।

देखो बच्चे, आप सब आगे से आगे ही बढ़ रहे हो...।
बस अब ना ही अलबेले बनना है और ना ही दिलशिकस्त बनना है, बस स्वयं पर full attention रख, love and light का अभ्यास करते रहो...।
क्या, क्यों, कैसे में मत जाना, नहीं तो आपकी speed रुक जायेगी जिससे आपका number पीछे रह जायेगा...।

बस attention दे आगे से आगे बढ़ो...। बाप पर और स्वयं पर निश्चय रख, निश्चिन्त रहो ... धैर्यतापूर्वक चलते चलो...।
विजय आप बच्चों की ही है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
23.07.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, बिल्कुल हल्के रहना है, कभी भी स्वयं को अर्थात् संकल्पों द्वारा एक second के लिए भी कहीं जुड़ना या फँसना नहीं है...।

अच्छे से अच्छा कार्य करने के बाद भी उस संकल्प से न्यारा हो, स्वमान में स्थित हो, बाप (परमात्मा पिता) के संग बैठ जाओ ... अर्थात् सदा याद रहे - करनहार मैं हूँ और करावनहार बाबा है ... हर संकल्प के प्रभाव से न्यारा, बिल्कुल हल्का...।

देखो, विश्व-परिवर्तन भी आपके परिवर्तन पर आधारित है परन्तु एक limited समय तक, फिर तो परिवर्तन होना ही है ... इसलिए बाप की समझानी की महीनता को समझ हर बात से न्यारे हो जाओ...। न्यारी आत्मा ही अन्तिम समय 100% safe रहेगी...।

यदि कहीं भी संकल्प फँसे तो आपको भी अन्य आत्माओं की तरह ही पश्चाताप या दुःख की भासना होगी ... चाहे 1% हो, परन्तु होगी तो ना..., जो बाप नहीं चाहता...।

जिन बच्चों को इतना समय तक एक-एक बात की समझानी दी, इतना काबिल बनाया ... वो भी अपने थोड़े से अलबेलेपन के कारण कहीं भी फँस जायें...!

बस बच्चे, बाप पर न्यौछावर हो जाओ ... तब ही बाप-समान बन पाओगे...।

इसलिए, बाप पर 100% निश्चय रखो ... और आगे बढ़ो...। बाप ऐसे ही कोई बात नहीं बताता। हर बात की और हर समझानी देने का एक समय होता है। जिस समय, जिस बात को बताने की आवश्यकता होती है, उसी according बाप आपको बताता है।

इसलिए किसी बात की depth में ना जा ... बहुत सहज रीति अर्थात् हल्के रह, बाप की हर बात पर निश्चय रख ऊपर से ऊपर उड़ते रहो...।

परमात्मा बाप की हर पल नज़र आप बच्चों पर ही है ... और आप भी स्वयं पर 100% attention दे आगे से आगे उड़ते रहो।

अभी तो बाप बहुत ही जल्दी आप बच्चों के आगे कई गुप्त राज़ स्पष्ट करेगा...।
बस आप धैर्यतापूर्वक बाप पर निश्चय रख, बाप की श्रीमत प्रमाण आगे से आगे बढ़ो...।

हर बात में, हर समझानी में केवल आप बच्चों का ही कल्याण समाया हुआ है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
24.07.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
देखो बच्चे, भक्तों को भी भगवान पर कितना विश्वास होता है ... अन्तिम श्वांस तक भी भक्त भगवान पर विश्वास रखते हैं ... और कई बार तो किसी के श्वांस छोड़ने के बाद भी उसके परिजन सोचते हैं कि यह वापस आ जायेगा...।

देखो, सारी दुनिया की हर तरह की आत्मा, भगवान पर भरोसा रखकर ही अपना जीवन व्यतीत करती है ... और आप तो नम्बरवन बच्चे हो, जिन बच्चों पर भगवान को भी मान है ... विश्वास है..., कि यही बच्चे मुझे विश्व-भर में प्रत्यक्ष करेंगे...।
परमात्मा बाप का नाम बाला करेंगे...।

फिर बताओ, बाबा की हर पल नज़र आप बच्चों पर नहीं होगी, तो किस पर होगी...!

जिस तरह बाप को बच्चों पर अटूट निश्चय है, इस तरह आप भी स्वयं पर ... बाप पर ... अटूट निश्चय रख, हर स्थिति, परिस्थिति में स्वयं का 100% कल्याण समझ आगे से आगे बढ़ो ... यह paper नहीं..., बल्कि आपको आपके लक्ष्य तक पहुँचाने की विधि है, जो बस खत्म ही होने वाली है।

देखो यह निश्चय और धैर्यता का गुण, शक्ति रूप में काम कर रहा है, यह परिस्थिति के समय ही पता चलता है...। हर परिस्थिति में आपकी स्थिति अचल-अडोल रहे..., क्योंकि आपका रक्षक स्वयं परमपिता परमात्मा है...।
बस बाप जैसे कहें, वैसे करते जाओ...।
अचानक ही प्राप्तियाँ शुरु हो जायेगी...।

इसलिए बच्चे ... हल्के रहो, बिल्कुल हल्के ... ज्यादा सोचो मत अर्थात् कोई भी बात वा कोई भी कार्य, स्वयं का या किसी भी आत्मा का स्वभाव-संस्कार समझ में नहीं आता, तो उसे 100% बाप (परमात्मा पिता) हवाले कर स्व-स्थिति में स्थित हो, बाप के संग आकर बैठ जाओ...।

हर तरफ से अपना बुद्धियोग हटा बाप की तरफ लगाओ...। समय बस परिवर्तन होने ही वाला है।

आप बच्चों को इस दुनिया में कुछ भी नया नहीं दिख रहा है, इसलिए आप मूँझ जाते हो परन्तु बाप पर निश्चय रखो कि परिवर्तन हुआ कि हुआ...।

बाबा ने यह भी बताया कि जब कोई ऐसी बात वा कार्य होता है, जो आपकी समझ में नहीं आता कि करना चाहिए की नहीं...!
तो जो पहला संकल्प उठे, उस according कर उसे बाप हवाले कर दो अर्थात् उसका result बाप हवाले कर निश्चिन्त स्थिति में स्थित हो, बाप के संग बैठ जाओ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
25.07.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बच्चे, अब बिल्कुल शान्त स्थिति में स्थित हो जाओ। अपनी शान्ति की drill, दिन में बार-बार करो...।

स्वयं पर full attention दे, कर्म करते-करते बिल्कुल detach हो जाओ ... अर्थात् मन-बुद्धि के द्वारा शान्ति की स्थिति में स्थित हो, शान्ति के सागर के संग बैठ जाओ...।
यही अभ्यास बार-बार करो...। इसी अभ्यास से दुनिया से न्यारे हो पाओगे...।

बिल्कुल गहन शान्ति में चले जाओ और कुछ नहीं...।
“मैं और मेरा बाबा ... और बीच में शान्ति की शक्ति” ... जो आपके पूरे घर को बहुत जल्द, शान्ति कुण्ड बना देगी।

बार-बार स्वयं की स्मृति का switch on करो। इसमें attention कम मत करना ... बिल्कुल हल्के रह यह attention रखना है...।

कुछ भी हो जाये, सबकुछ बाप (परमात्मा पिता) हवाले कर शान्तचित्त हो, बाप के संग जाकर बैठ जाओ..., परिस्थिति second में गायब हो जायेगी...।

यदि किसी कारणवश भूल भी जाओ, तो उस समय को बिन्दी लगा, अगले ही second में बाप के संग जाकर बैठ जाओ। यही सबसे ऊँचा पुरुषार्थ है। कभी पवित्रता की शक्ति फैलाओ ... कभी प्रेम की ... तो कभी शान्ति की...।

बस बिल्कुल हल्के रह, 100% attention दे करते रहो...। यही attention आपको आपके लक्ष्य तक पहुँचायेगा।

बाप की खुशी आपके लक्ष्य तक पहुँचने पर इतनी अधिक हो जाती है कि उस खुशी में सारा संसार झूम उठता है...।
बस हर पल आप बच्चों को उमंग-उत्साह में रह खुशी-खुशी बाप के संग बैठे रहना है, इसी attention से सबकुछ परिवर्तन हो जायेगा...।
आप सभी आत्मायें विशेष हो।

बस, यह अभ्यास attention देकर करना भी है और साथ ही साथ परिवार की सभी आत्माओं को सन्तुष्ट भी रखना है ताकि वो भी आपके संग-संग चल सके...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
26.07.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, अन्तर्मुखी बन जाओ...। किसी भी बात का ज्यादा मन्थन मत करो...।

आप बच्चे हो विश्व-कल्याणकारी बच्चे...। अभी तो आप बच्चों को मास्टर भगवान-भगवती बन, दाता-वरदाता बन, बेहद की आत्माओं का कल्याण करना है अर्थात् विश्व की सभी आत्माओं को घर (परमधाम) का रास्ता दिखाना है...।

बस आप हर पल अपने उच्चतम् स्वमान की authority में रहो...। आपके ऊँच स्वमान की शक्ति ही सारा कार्य कर देगी और अभी कर भी रही है...।
बस आप तो अपनी स्मृति का switch on रखो...। आपके बैठने से ही सारा कार्य अर्थात् आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा मिलेगा...।

ज्यादा सोचो मत ... ज्ञान, गुण, शक्ति के स्वरूप बन जाओ, तभी तो मास्टर भगवान कहलाओगे...।
इसलिए बच्चे, हर बात में कल्याण है और कल्याण तो होना ही है ... आप द्वारा नहीं होगा, तो फिर बताओ कौन करेगा...!

देखो, विश्व-कल्याण करने के लिए स्वयं को बिल्कुल हल्का रखना है और सदा मास्टर सर्वशक्तिवान् की seat पर set रहना है।
इस seat पर set होते ही दूर से ही हर तरह की आत्मायें अर्थात् आपकी संकल्प power से ही वो मुक्ति को प्राप्त कर, आपका धन्यवाद कर, खुशी-खुशी घर को जायेगी...।

बस आपको तो केवल स्वयं को अपनी seat पर set रखने का attention रखना है और जो आत्मा अपनी seat पर set है, वो बिल्कुल हल्की और खुश है। तब ही तो आपके vibrations ही सारा कार्य कर देंगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
27.07.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

आज बाबा ने कहा...
तुम हो विश्व-परिवर्तक बच्चे, अर्थात् विश्व की तमोप्रधान से तमोप्रधान वस्तु को एक second से भी कम समय में सतोप्रधान बनाने वाले...।
फिर आप बच्चों को किसी भी वस्तु की बुराई के बारे में कोई single संकल्प भी नहीं चलाना चाहिए।

फिर बाबा ने कहा...
आपके साथ जो कुछ भी हो रहा है, वो शिव बाप की planning के according ही हो रहा है।
हर स्थिति, परिस्थिति से गुज़र कर ही बच्चों की checking होती है, तभी तो बच्चे परिपक्व बनते है...।

इसलिए हमेशा अचल, अडोल, एकरस स्थिति में स्थित रह, हर आत्मा के प्रति शुभ-भावना रखनी है। आपके सम्पर्क में आने वाली आत्मायें भी बाप के according ही आपके सम्पर्क में आ रही है। फिर तो आप बच्चों को उन आत्माओं का धन्यवाद करना चाहिए।

बच्चे, जिन-जिन स्थान पर आप रह रहे हो वो सब शिवबाबा का भंडारा है और जहाँ आप श्रेष्ठ आत्मायें भोजन स्वीकार करें ... वो भोजन, भोजन ना रहकर भोग अर्थात् प्रसाद बन जाता है...। जिस भोजन से अन्य आत्माओं का भी कल्याण होता है।

बस बच्चे, स्वयं पर और बाप पर 100% निश्चय रख धैर्यतापूर्वक love and light के साथ purity का भी अभ्यास करते जाओ...।
परिवर्तन तो होना ही है और अचानक होना है...।

बस बच्चे, आपके लक्ष्य पर पहुँचने के बाद वो-वो आनन्द भरे scene होने है, जो आपके संकल्प, स्वप्न में भी नहीं है...। देखो, परमात्मा बाप आपको पढ़ा-पढ़ाकर काबिल बना रहा है। और आप बच्चे भी अपना 100% दे बाप के आगे समर्पण हो जाते हो।

तो बताओ, उसकी result कितनी ऊँची, आश्चर्यजनक और आनन्द से भरपूर होगी...!
बच्चे, यह result आपकी द्वापर से सच्ची भक्ति और बाप (परमात्मा पिता) के अनुसार की गई तपस्या और त्याग का ही है और बच्चे अब तो बस प्राप्तियाँ शुरु होने वाली ही है।

देखो, इस समय जो बच्चा पूरे सच्चे मन से अपने लक्ष्य को सामने रख बाप की श्रीमत् प्रमाण ही अपने संकल्प करता है अर्थात् अपनी मन्सा, वाचा, कर्मणा और सम्बन्ध, सम्पर्क में बाप की श्रीमत् प्रमाण अर्थात् स्व-स्थिति के आसन पर स्थित हो बाप के आगे 100% समर्पण हो, full निश्चय रख, धैर्यतापूर्वक आगे से आगे बढ़ रहा है, वो बहुत ही जल्द अपने लक्ष्य को प्राप्त कर अपना कार्य अर्थात् परमात्मा बाप की post पर पहुँच साक्षात् इस विश्व का कल्याण करना शुरू कर देगा ... और फिर सभी अपना-अपना कार्य शुरू करेंगे...।

बस बच्चे, हर हाल में चाहे अच्छा हो या परिस्थिति वाला हो, निश्चय के साथ-साथ समर्पण और धैर्यता के साथ आगे बढ़ो...।
कभी भी, कुछ भी हो सकता है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
28.07.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, आप भगवान बाप के विशेष बच्चे हो ... जिन्हें स्वयं भगवान पढ़ा विश्व के आगे प्रत्यक्ष करेगा...। इसलिए आप सभी बच्चे अपना उमंग-उत्साह बढ़ाकर जाये ... सभी एक-दूसरे के साथ बहुत स्नेह के साथ रहें ... और full सहयोग दें ... बस अपने बोल पर विशेष attention रखना...।

हर आत्मा के संस्कार अपने-अपने है और इन्हें परिवर्तन करना बाप (परमात्मा पिता) का कार्य है...। यदि कुछ समझानी देनी है तो उसे personally बहुत स्नेह के साथ दे, ताकि वो आगे से आगे बढ़े...।

फिर बाबा ने कहा...

देखो बच्चे, बाप एक ऐसा sample तैयार कर रहा है जोकि पूरे विश्व में बड़े सम्मान के साथ दिखायेगा कि जो कार्य आप विश्व की जानी-मानी आत्मायें इन पाँच तत्वों के बीच रहते असम्भव समझते थे, वो कार्य अर्थात् बाप-समान बनने का कार्य मेरे इन बच्चों ने कर दिखाया...!

इसमें थोड़ा समय तो लगता ही है, क्योंकि इस समय आप बच्चों के संस्कार इतनी गुह्य रीति से परिवर्तन होते है और उसकी जड़ भी इतनी गहराई तक डाल दी जाती है ... जो विशेष संस्कार पूरे कल्प तक चलते हैं ... चाहे उनकी percentage कम हो जाती है, परन्तु अभी तक अर्थात् कल्प के अन्त तक प्रत्यक्ष आप बच्चों में वो संस्कार नज़र आते है।

देखो बच्चों, अभी तक आप बच्चों के अंदर सच्चाई, सफाई, दया और क्षमा की भावना है, जो केवल प्रेम से ही आती है...।
तो बताओ, इतनी सच्चाई का संस्कार डालने में समय तो लगेगा ना...!

देखो, सबसे बहुमूल्य, सबसे खूबसूरत जो दुनिया में numberone हो ... ऐसी मूर्ति को तैयार करने के लिए पहले सोने को अच्छी तरह से तपाना पड़ता है ... फिर कितनी ही बार polish करनी पड़ती है ... फिर बहुत बारीकी से सजावट करनी पड़ती है और आप सोचते हो कुछ हो क्यों नहीं रहा...!

देखो, बहुत कुछ हो चुका है परन्तु जब तक मूर्ति पूरी रीति तैयार नहीं होती, तब तक उसे प्रत्यक्ष नहीं किया जाता...।
बस wait and watch करो...। फिर देखना बाप की कमाल और दुनिया वालों की वाह वाह...!

जिसमें आप बच्चों के निश्चय और धैर्यता के गुण प्रत्यक्ष दिखेंगे और वो सोचेंगे ... यह हम कभी भी नहीं कर सकते थे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
29.07.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, अब आपको अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सफल होना है ... और अपने लक्ष्य तक पहुँचने का आधार आपका निश्चय और धैर्यता का गुण है...।

देखो बच्चे, बाबा बार-बार कह रहा है कि जो भी परिस्थिति आपके सामने आ रही है वो केवल छोटे-छोटे से paper है और उसमें first number लेना या pass होना यह आपके निश्चय की percentage पर है।

निश्चय अर्थात् निश्चिन्त बुद्धि, बिल्कुल हल्का...।

फिर बाबा ने कहा...
अब जबकि आप अपने लक्ष्य तक पहुँचने ही वाले हो तो माया और प्रकृति भी बस आपके सामने झुकने ही वाली है ... परन्तु उससे पहले वो आपको 100% परिपक्व बनाने के लिए आप पर अपना वार करेगी ... और जब आप निश्चयबुद्धि बन बाप पर सर्मपण हो जाओगे तो माया और प्रकृति भी आपके आगे सर्मपण हो जायेगी...।

बाप की आप बच्चों से guarantee है कि आपको वो कोई भी तरह से स्थूल कमी नहीं होने देगा ... मौज में रखेगा...। बस आप बच्चों को तो निश्चयबुद्धि हो रहना है।
निश्चय ही number का आधार है।

इसलिए, अब आप स्वयं के लिए सोचना बन्द करो अर्थात् आने वाले काम की कोई planning मत बनाओ...।
आप तो केवल बाप की श्रीमत प्रमाण अपनी seat पर set रह अपना विश्व-कल्याण का कार्य करो।

देखो बच्चे, बीता हुआ कल भूतकाल है, उसके बारे में सोचना अर्थात् भूतों को बुलाना अर्थात् अपना एक-एक second करते काफी समय बर्बाद कर देना और अब जबकि direct बाप (परमात्मा पिता) आपके लिए आ गया है और आप प्रति सोचने का कार्य भी स्वयं कर रहा है और बाप के पास आपके लिए future की "the best planning" है, तो आप अपनी मन-बुद्धि ना लगा अर्थात् बाप के कार्य में interfere ना कर, बाप पर 100% निश्चय रख समर्पण हो जाओ, फिर देखना बाप की कमाल पर कमाल...।

आप बच्चों की guarantee स्वयं परमपिता परमात्मा ले रहा है। बस आप तो present में रह अर्थात् अपनी स्व-स्थिति के आसन पर स्थित रह अपने चारों तरफ powerful vibrations फैलाओ...।
स्वयं पर 100% attention रखो।

जिस समय, जिस गुण और जिस शक्ति की ज़रूरत है उसी का स्वरूप बन जाओ।
हर बात में स्वयं का कल्याण समझो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
30.07.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, मैं हूँ परमपिता परमात्मा शिव, सारी दुनिया का रखवाला, भगवान, ईश्वर, अल्लाह अर्थात् मेरे कई नाम है और मुझे हर बच्चा इस समय पुकार रहा है ... और आप बच्चे हो मास्टर भगवान अर्थात् मैं पिता और आप मेरे पुत्र...।

जिस तरह लौकिक में कोई भी राजा अपनी seat तब ही अपने पुत्र को देता है जब वो इतना काबिल बन जाए कि वो उसके राज्य को सुरक्षित रख सकें...।
इसी तरह drama का अब अन्तिम समय का भी अंत होने वाला है ... तो मैं बाप, आप बच्चों को अपनी post अर्थात् मास्टर भगवान बना, यह दुनिया आपके हवाले कर देता हूँ कि अब इन सबकी (सभी आत्माओं की) पुकार सुन इनका कल्याण करो...।

परन्तु इससे पहले मैं आपको वो सारी चमत्कारी शक्तियाँ दे देता हूँ जिससे आप अपना कार्य accurate ढंग से कर सको...।

बच्चे, कभी आपने सोचा हैं कि बाबा में कौन-कौन सी शक्तियाँ हैं...?

जो बाप (परमात्मा पिता) की सबसे बड़ी शक्ति है, वो यह है कि वो सब कुछ कर सकता है परन्तु फिर भी साक्षी हो समय का इंतज़ार करता है अर्थात् उसे पता है कि किस कार्य को, किस समय, किस रीति करने में कल्याण समाया हुआ है और बाप को drama पर 100% निश्चय है कि drama कल्याणकारी है।

इसी तरह इस समय बाप को आप बच्चों पर भी इतना निश्चय है कि "हैं तो यह ही" ... चाहे अभी समय ले रहे हैं ... मेरी post सम्भालने के लायक भी यह ही बनेंगे...।
इसलिए निश्चिन्त स्थिति में रह आप बच्चों को रोज़-रोज़ समझानी देता हूँ।

फिर बाबा ने कहा...
बस बच्चे, अब आपको इस drama से साक्षी हो अपनी seat पर 100% set रहना है, तब ही वो चमत्कारी शक्ति आप बच्चों के पास आयेगी और आप मास्टर भगवान बन सभी आत्माओं की पुकार सुन उनका कल्याण करोगे...।

आपको हर परिस्थिति में बिल्कुल निश्चिन्त रहना चाहिए।
जैसे एक इंसान की जब lottery निकल जाती है और उसे पता होता है कि कुछ समय के बाद ही उस lottery के सारे पैसे मुझे मिल जायेंगे, तो वो किसी बात की भी कोई चिन्ता ना कर अपने आने वाले पैसों की खुशी में खुश रहता है...।

इसलिए बच्चे, अब आप बार-बार अपने स्वमान की seat पर आ, शिवबाबा के संग अर्थात् शान्ति के सागर के संग बैठ चारों तरफ शान्ति की किरणें फैला दो ... और मौन में रहने का अभ्यास करो ... साधारण और व्यर्थ संकल्पों का द्वार बन्द कर दो .... अर्थात् स्वयं के संकल्पों पर 100% attention दे साधारण और व्यर्थ संकल्पों की छुट्टी कर दो।

यह एक-एक दिन का किया गया ऊँचा अभ्यास आपको permanent अपनी seat पर set कर देगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti

31.07.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, जो आप daily का विभिन्न स्वरूप या स्वमान का अभ्यास कर रहे हो, उसे बहुत alert होकर करना है।
यह नहीं कि योग तो लगा रहे हैं, गलत तो कर नहीं रहे, बस ठीक है ... नहीं...!

बच्चे, यदि ऊँचा पुरुषार्थ करना है, तो daily के पुरुषार्थ का अच्छे से मन्थन करो।
उस स्वरूप में स्थित होने से आपकी स्थिति कितनी ऊँची होती है अर्थात् आप इस दुनिया से कितने न्यारे, हल्के और निश्चिन्त रहते हो - यह checking अपनी हर पल होनी चाहिए।
फिर बहुत carefully रात को check कर अपने marks देने है।

जैसे आपका जो आनन्द स्वरूप का स्वमान है ... अब आनन्द स्वरूप की स्थिति कितनी ऊँची है...।
अतिन्द्रिय सुख अर्थात् फरिश्तों के समान ऊँच स्थिति, बाप-समान स्थिति है...।

इसी तरह जो आपका स्वमान है - मास्टर सर्वशक्तिवान् ... पहले इस स्वमान का अच्छी तरह से मन्थन करो ... फिर हर कोई दो-दो point स्वमान के according लिखे, जिससे आपको enjoy भी होगा और इसका अभ्यास easy भी हो जाएगा...।

इसी तरह knowledgeful होकर ही हर स्वरूप का अभ्यास करना है, तब ही आप powerful बन सकते हो ... और powerful आत्मा ही स्व-परिवर्तन सो विश्व-परिवर्तन का कार्य कर सकती है।

इसलिए बाप को याद करने के साथ, स्वमान का अभ्यास भी करना है।
केवल बाप की याद में बैठने से बुद्धि इधर-उधर चली जाती है और आपको पता भी नहीं चलता...!

इसलिए स्वयं पर full attention दे तीव्र पुरुषार्थ करो। हिम्मत रखने पर ही बाप (परमात्मा पिता) की मदद है और बाप की मदद है तो सफलता है ही है...।

बाबा ने आप सभी को कई स्वमान दिये है ... जितना आप मन-बुद्धि से इन स्वमान को स्वीकार करते जाओगे, उतनी ही जल्दी आप जागृत हो अपनी seat पर set हो जाओगे...।

जैसे;
हम ही हैं बाप-समान ... हम ही हैं आदि रत्न ... विजयी रत्न ... विश्व-कल्याणकारी ... पूर्वज आत्मा ... आधार-मूर्त, उद्धार-मूर्त ... हम ही हैं विश्व-परिवर्तक ... श्रेष्ठ पूज्यनीय आत्मा ... सारी दुनिया इस दुःख के समय हमें ही पुकार रही है ... हम ही हैं विध्न-विनाशक ... श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ परमात्मा बाप के मस्तक के ताज ... दुःखहर्ता-सुखकर्ता ... हम ही हैं बाप की आशाओं को पूर्ण करने वाले ... ज़िम्मेवार आत्मा...।

इस तरह समय प्रति समय अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित हो अपनी चमक द्वारा विश्व-परिवर्तन का कार्य जल्दी से जल्दी सम्पन्न करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
01.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...

बच्चे, मैं (परमात्मा शिव) तुम सब बच्चों को लेकर जाने के लिए आया हूँ ... परन्तु मैं तुम्हें तभी लेकर जा सकता हूँ जब तुम अपनी सारी स्थूल और सूक्ष्म ज़िम्मेवारी कहो, इच्छा कहो, संकल्प कहो से न्यारे नहीं हो जाते अर्थात् इस पुरानी दुनिया से न्यारे नहीं हो जाते...।

इसलिए मैं बार-बार कहता हूँ - बच्चे, मेरे प्यार में समा जाओ ... खो जाओ ... अर्थात् 100% समर्पण हो जाओ...।

फिर बाबा ने कहा...
बच्चों की इच्छा भी यहीं है कि हम शिव बाप के संग जल्दी से जल्दी जायें, परन्तु फिर भी बार-बार स्वयं को किसी ना किसी संकल्प से बाँध लेते है...।

देखो बच्चे, आप स्वयं के संकल्पों पर attention देकर ही इस दुनिया से न्यारे हो सकते हो।
न्यारे होने के लिए ही बाबा ने कई अभ्यास बताए हैं - हर बात बाप को दे दो अर्थात् सबसे पहले बाप से share करो ... फिर भी उसके संकल्प आए तो attention दे स्वयं के उच्चतम् स्वमान में अर्थात् अपने इस पुराने जीवन से न्यारे हो, जो बाप ने आपको नए-नए उच्चतम् स्वमान दिए हैं, उसकी स्मृति में स्थित हो जाओ...।
उस स्वमान के according अपनी मन्सा-वाचा-कर्मणा रखो ... अर्थात् साधारणता में भी विशेषता ले आओ...।

जब बाप आप बच्चों की 100% guarantee ले रहा है फिर आप निश्चिन्त रहो ना...!

देखो, आपके इस दुनिया से न्यारे होते ही मैं आपको अपने समान बना ... आपकी स्थूल और सूक्ष्म सारी ज़िम्मेवारियाँ आप द्वारा ही पूरी करवा, विश्व-परिवर्तन का कार्य आप द्वारा ही पूरा करवाऊँगा...।
बस आप एक छोटे बच्चे की तरह मुझ पर समर्पण हो जाओ...।

बाबा बार-बार कह रहा है कि बाबा ने आपको मौज में रखा है तो आगे भी मौज में ही रखेगा, यह छोटी-छोटी सी परिस्थितियाँ बस आपको परिपक्व बनाने के लिए ही आ रही है। इसलिए इनका मन्थन मत करो...।

मन्थन करने से परिस्थितियों के vibrations फैलते हैं, जोकि आपको और आपके सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को और भारी कर देते है।

और जबकी आप ज़िम्मेवार आत्मा हो तो आपके हल्के होने पर ही सभी आत्मायें हल्की होगी...।

कोई बड़ी से बड़ी बात जो आप समझते हो कि यह बड़ी बात है वो सुनकर कोई जल्दी से और संकल्प ना चला अपने उच्चतम् स्वमान में स्थित हो शिव बाप को वो बात सुना, हल्के हो, सामने आने वाली आत्मा को हल्का कर दो...।

आपके positive संकल्प ही आपकी परिस्थितियों को हल्का कर देंगे और बाप तो आपके संग है ही ... वो क्या नहीं कर सकता...!

परन्तु इस समय मैं केवल आप बच्चों को ही तैयार कर रहा हूँ और आप परिस्थितियों को cross कर अर्थात् परिस्थितियों के समय भी हल्का रहकर ही स्वयं को सम्पन्न बना सकोगे...।
बस बच्चे, बाप पर निश्चय रख आगे से आगे बढ़ो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
02.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, मैं (परमात्मा शिव) इस दुनिया से न्यारा होते हुए भी अर्थात् बन्धनमुक्त होते हुए भी आपके प्यार में हर पल बंधा रहता हूँ अर्थात् आप बच्चों से अलग होते हुए भी अलग नहीं हूँ।

देखो, जैसे-जैसे आप इस स्थूल दुनिया से न्यारे होते जा रहे हो ... वैसे-वैसे सूक्ष्म खेल बढ़ता जा रहा है। बस आप attention दे स्वयं की मन-बुद्धि को 100% इससे न्यारा कर दो अर्थात् इस दुनिया का स्थूल कर्तव्य करते हुए भी इसके प्रभाव से न्यारे अर्थात् रुहानी प्रभु के मिलन की मस्ती में मस्त रहो...।

देखो, आपका ज्ञान से भरपुर सच्चा दिल मुझे खींचता है ... जिससे आपमें इससे न्यारे होने की शक्ति अत्यधिक हो जाती है। बस थोड़ा-सा attention और दो...।

कोई भी पुराने स्वभाव-संस्कार, हिसाब-किताब की परवाह किये बिना मेरी श्रीमत् प्रमाण मेरे प्यार में लीन हो जाओ ... तो मेरे प्रेम की खिंचावट आपको ऊपर खींच लेगी...।
जो बच्चे बाप पर समर्पण हो जाते है उनकी विजय निश्चित है। इसलिए, समर्पण की गुह्यता को समझो...।

देखो बच्चे, मैं भी एक आत्मा हूँ, मुझमें भी मन-बुद्धि है। मैं सभी चीज़ को enjoy करता हुआ भी इससे न्यारा हूँ क्योंकि अपनी seat पर हूँ ... मैं सदा शिव हूँ...। मुझे कभी भी, किसी भी बात का प्रभाव नहीं पड़ता ... किन्तु आप बच्चे जोकि इस दुनिया में अर्थात् पाँच तत्वों के बीच रहते हो तो इसके प्रभाव से प्रभावित हो जाते हो...।

परन्तु अब जबकि आप बच्चों को बाप (परमात्मा पिता) की seat लेनी है तो इनके बीच रहते, इन पाँच तत्वों के प्रभाव से न्यारा रहना है, तब ही आप विजयी बन सभी आत्माओं का और प्रकृति का कल्याण कर सकोगे ... और इस काबिल बनाने के लिए बाप आपको पढ़ा भी रहा है और सूक्ष्म में मदद भी कर रहा है।

बस, आप केवल अपने पर 100% attention रखो। बाप साथ है तो हुआ ही पड़ा है...।

इसलिए, जो आप daily का अभ्यास कर रहे हो, वो पूरी लगन के साथ करो ... शिव बाप को अपने अंग-संग जान अर्थात् बाप की हर second आप पर नज़र है ... यह जान कर, आपकी पूरी लगन से किया गया अभ्यास आपको आगे से आगे लेकर जा रहा है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
03.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...

बच्चे, जो पढ़ाई अभी बाप ने आपको पढ़ाई है और भिन्न-भिन्न अभ्यास आपको बताए हैं उसी अनुसार स्वयं पर attention दे चलते चलो।
भिन्न-भिन्न स्वमान का अभ्यास करते रहो।

बार-बार अपनी seat पर set हो जाओ।
कभी light रूप में, कभी भिन्न-भिन्न पूज्य स्वरूप में, और कभी चलता-फिरता light house - might house फरिश्ता रूप में...।

जितना-जितना आप attention दे यह अभ्यास करोगे उतनी ही जल्दी आपकी प्रत्यक्षता शुरू हो जायेगी।

फिर बाबा ने कहा...
देखो पहले से बहुत परिवर्तन हो चुका है, बस निरन्तर attention से आपकी प्रत्यक्षता होनी शुरू होगी। जैसे ही आप प्रभाव-मुक्त हो seat पर set हो जाओगे, तो आपका कार्य शुरू हो जायेगा...।

देखो बच्चे, बाप (परमात्मा पिता) तो गुप्त है, करावनहार है, करनहार आप हो...। तो विभिन्न देवी-देवता रूप में प्रत्यक्ष भी आप होंगे...। आपका शिव बाप तो केवल light रूप में ही जाना जायेगा।

फिर बाबा ने कहा कि जितना आप इच्छा मात्रम् अविद्या अर्थात् सम्पन्न, संतुष्ट ... स्वयं में भरपूरता महसूस करोगे अर्थात् no question - no complaint ... एक single second के लिए या एक single संकल्प में, तब ही आप दाता बन सबका कल्याण करोगे...।

बस बच्चे, आप निश्चिन्त रह स्वयं पर 100% attention रख जैसे बाप कहें वैसे करते जाओ...। काफी परिवर्तन हो चुका है जो आपको पता नहीं...! इसलिए last में कुछ percent अचानक ही परिवर्तन हो जायेंगे, क्योंकि हर कार्य slow start होता है फिर जब करना आ जाये तो finish भी एक second में हो जाता है अर्थात् अचानक हो जाता है और पता भी नहीं चलता...!
क्योंकि यह एक ऐसा कार्य है जो दिख नहीं रहा, बस आप अनुभव द्वारा ही जान सकते हो...।

बच्चों ने जो प्रेम स्वरूप का और पवित्र स्वरूप का attention रखा, वह बहुत अच्छा है। इस अभ्यास को दिल वा जान, सिक वा प्रेम से करना ... full attention देकर करना।
यह ही अभ्यास आप बच्चों को आपके original स्वरूप तक पहुँचाएगा।

आप बच्चे गुणों और शक्तियों के साथ-साथ विभिन्न ज्ञान के points का मंथन कर उस पर भी attention रख स्वयं की स्थिति ऊँची कर सकते हो।

यह उड़ती कला का अभ्यास है, क्योंकि यह attention आपके मन-बुद्धि को busy कर देता है। बस बच्चे, alert होकर करते रहना।

यदि कोई गलती हो भी जायें या आप किसी कारणवश दिन का कुछ समय attention ना भी दे पाओ तो दिलशिकस्त मत होना ... पूरे उमंग-उत्साह के साथ करना...।

आप इस तरह का अभ्यास स्वयं के लिए और बाप के लिए कर रहे हो अर्थात् बाप भी तो आपको आपके लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए आया है। इसलिए, daily अपना chart भी देना है।
संगठन में करने से attention अच्छा रहता है।

देखो बच्चे, यदि कभी attention की कमी के कारण जैसा आप चाहते हो उतना नहीं कर पाते, तो भी निश्चिन्त स्थिति में स्थित हो अपना chart लिखना, क्योंकि बाप आप सब बच्चों की लगन को जानता है ... बस bore नहीं होना है।

बहुत प्रेम से अपने लक्ष्य को सामने रख करना है। हिम्मत रखोगे तो बाप (परमात्मा पिता) की मदद है ही है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
04.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

आज बच्चों ने बाबा से पूछा...
बाबा, oneness का अर्थ क्या है...?

तो बाबा ने कहा oneness - मैं एक समान ... अर्थात् आपका व्यवहार स्वयं के साथ और सभी आत्माओं के साथ एक समान हो...।

जब जीव आत्मा ज्ञानी होती है तो स्वयं को तो श्रेष्ठ समझ या स्वयं से अत्यधिक प्यार करने के कारण कोई गलती होने पर दूसरे को दोषी ठहरा देती है और दूसरों को जल्दी से क्षमा भी नहीं कर पाती...!

और जब ज्ञानवान बन जाती है, तो दूसरों को तो क्षमा करना चाहती है परन्तु स्वयं की गलती का मनन कर लेती है, जिस कारण गलती संकल्पों में चली जाती है...!

परन्तु बच्चे, 100% balance चाहिए ... अर्थात् कोई बात भी हो जायें, उसे बाहर की समझ उसे झट से बाहर ही साफ कर अपनी स्थिति में स्थित हो जाना चाहिए ... क्योंकि यह अन्तिम समय तमोप्रधानता का चल रहा है, जहाँ गलती होना स्वाभाविक है...।
बस उसे झट बिन्दु लगा, अपने ऊँचे स्वमान में स्थित होना ही high vibration में स्थित होना है...।

देखो बच्चे, बाबा (परमात्मा पिता) को इस दुनिया में अमीर-गरीब ... सुन्दर-कुरूप ... मेरा-तेरा कुछ दिखाई नहीं देता...।
बस बाप को तो आत्माओं की capability नज़र आती है ... अर्थात् किस आत्मा में कितनी चमक है और वो कितना अपना भाग्य बना पायेगी...!
जिस कारण बाबा सभी आत्माओं पर एक समान रहम और कल्याण करता है, किन्तु योग्य आत्माओं को समझानी दे स्वयं के समान बना, स्वयं के समीप ले आता है...।

अब आप बच्चों का भी बाप-समान व्यवहार कहो, शुभ भावना, शुभ कामना होनी चाहिए।
बस बच्चे, अब तो आप बच्चे बाप-समान 100% seat पर set होने ही वाले हो और बाप को तो परिवर्तन भी नज़दीक ही दिख रहा है।

वैसे भी जो date fix हो चुकी है उससे पहले ही सारी तैयारी हो जायेगी, जिससे कार्य शान्ति और सफलतापूर्वक सम्पन्न होगा।

देखो, यह आपके संगठन की vibrations परिवर्तन के कार्य की speed को तीव्र कर देती है ... और जब train आने की announcement हो जाती है, तो सामान लेकर खड़े हो जाते है और उस समय सभी तरफ से किनारा कर लेते है अर्थात् हलचल को समाप्त कर देते हैं...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
05.08.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, 100% निश्चयबुद्धि बन बाप की एक-एक बात को महीनता से समझ धैर्यतापूर्वक आगे बढ़ो।
जब स्वयं परमात्मा बाप आ गया है तो ज़िम्मेवारी बाप की है ... आपकी नहीं...।
निश्चयबुद्धि बन, निश्चिन्त रहो...।

निश्चयबुद्धि विजयी रत्न अर्थात् आपकी highest स्थिति अर्थात् बाप-समान स्थिति...।
जिस स्थिति में आपका हर गुण, आपकी शक्ति बन गई...।

फिर बाबा ने कहा...
शक्तियों के द्वारा ही विजय होती है ना अर्थात् आपने शान्ति, प्रेम, आनंद, सुख, पवित्रता का शक्ति रूपी कवच पहना हुआ है, जिस कारण आपको कोई भी आत्मा, माया और प्रकृति हिला नहीं सकती अर्थात् आपने हर तरह की opposition पर विजय प्राप्त कर ली है, तब ही तो बने ना विजयी रत्न...!

बच्चे, विजय का आधार है निश्चयबुद्धि ... और निश्चयबुद्धि आत्मा ही हर second, attention दे बाप की श्रीमत् प्रमाण स्वयं को विजयी बना विश्व-परिवर्तन का कार्य कर सकती है...।

बच्चे, अब आपको अचल, अडोल, एकरस स्थिति में स्थित रहना है क्योंकि आपको निश्चय है हम ही विजयी रत्न है और वैसे भी जिन बच्चों के साथ परमात्मा बाप है उनकी विजय कौन रोक सकता है...?

बस, आप तो attention रखो, जिससे जल्दी से जल्दी आप अपनी seat पर पहुँच मुझ बाप से मिलन मना सको...।

इसलिए बच्चे, अब समय अनुसार आप बच्चों को 100% साक्षी हो जाना है ... अर्थात् अब आपकी मन-बुद्धि किसी भी आत्मा या किसी भी बात में नहीं जानी चाहिए...।

फिर बाबा ने कहा...
जैसे ही आप बच्चों की मन-बुद्धि अपने लक्ष्य से या बाप से हटती है तो कई तरह के प्रश्न आ जाते हैं, जिससे आपकी speed कम हो जाती है।

इसलिए स्वयं पर 100% attention रखो ... और कोई भी बात मन-बुद्धि में आये उसे समय गँवाये बगैर, बाबा को समर्पण कर दो।
हर पल मौज में रहो ... बस हमारी मंज़िल हमारे नज़दीक ही है...। बाप की इस बात पर 100% निश्चय रख जल्दी से जल्दी अपनी मंज़िल पर पहुँचों।
बस बाप आपकी इन्तज़ार में है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
06.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, यह मार्ग मेहनत का नहीं, मोहब्बत का है...। इसलिए इसे सहज कहा जाता है।

जिस बच्चे ने परमात्मा बाप से सच्ची मोहब्बत की है, उसने 100% बाप पर स्वयं को समर्पण कर दिया है ... और वो बहुत सहज ही बुद्धियोग के द्वारा ज्ञान को भली-भान्ति समझ, अपने सारे पुराने स्वभाव-संस्कार को त्याग, निमित्त बन अपने part को play करता है।

उसकी यह सच्ची मोहब्बत बाप (परमात्मा पिता) की power को स्वयं में भर लेती है अर्थात् उसका मैं और मेरा-पन 100% खत्म हो ... 100% बुद्धि परमात्मा बाप की श्रीमत प्रमाण चलती है, जिससे वो सहज ही बाप-समान बन जाता है...।

बस बच्चे, स्वयं से, बाप से वफादार रहना अर्थात् जहाँ बाप बिठायें ... जो खिलायें ... सब मंज़ूर...।

फिर बाबा ने कहा...
देखो, बाबा बार-बार कहता है मैं क्या नहीं कर सकता..., बाप ऐसे ही नहीं कहता...!
शिव बाप drama का रचयिता है और वो जब चाहे drama को जिस रीति भी घुमा सकता है...।

बाप सर्वशक्तिमान् है ... अर्थात् उसकी power असीम है, बस वो तो जाने से पहले आपको 100% योग्य बनाने के लिए, साक्षी हो, आपको सब paper से गुज़ारता है, ताकि बाप के जाने के बाद, आप इस कल्प वृक्ष की सही रीति सम्भाल कर सको...।

देखो बच्चे, आप परमात्मा बाप से सच्चा प्यार करते हो, तो बाप भी आपसे असीम प्यार करता है, और वो आपके लिए एक second से भी कम समय में कुछ भी परिवर्तन कर सकता है...।

इसलिए अपने प्यार पर और बाप पर 100% निश्चय रख, आगे से आगे बढ़ो...।
बाप भी आपकी सम्पूर्णता के इन्तज़ार में है...।

बस बच्चे, आपके अन्दर विश्व की हर चीज़ के लिए ... हर आत्मा के लिए ... केवल प्रेम हो और कोई संकल्प नहीं...।
एक परमात्मा बाप से मिलन की खुशी और प्रेम...।

बच्चे, जब आप इस तरह प्रेम से भरपूर हो जाओगे ... तो शिव बाप भी आपसे मिलन की खुशी में भाव विभोर हो, प्रकृति का आधार ले, आपसे मिलन मनायेगा...।

बस, आप मेरे प्यार में खो जाओ ... समा जाओ...।
यह पवित्र प्रेम ही पवित्र दुनिया को लायेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
07.08.2018

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, जब तुम बच्चे यहाँ अपना 100% attention दे, उमंग-उत्साह में रह आगे से आगे बढ़ते हो अर्थात् हर तरह के paper easily cross करते हो अर्थात् उसमें अपनी मन-बुद्धि ना लगा ... बाप (परमात्मा पिता) को समर्पण हो जाते हो, तो तुम्हारे सम्पन्न स्वरूप की speed तीव्र हो जाती है, जिससे बहुत जल्द ही बेहद की सेवा का कार्य finish हो जायेगा...।
और इस समय तो बाप का भी एक ही लक्ष्य है कि बाप-समान बच्चों को बाप की post पर बिठा कार्य को सम्पन्न करें...।

बस बच्चे, आप भी इसी तरह उमंग-उत्साह में रह तीव्र गति से आगे बढ़ो। बाप जानता है कि विजय मेरे इन बच्चों की ही होगी...। बस आप भी निश्चय रख आगे से आगे उमंग-उत्साह में रह एक second भी waste किये बिना आगे बढ़ो।

वाह बच्चे वाह ... 100% समर्पण बुद्धि वाले बच्चों की विजय समय से पहले निश्चित है।

देखो बच्चे, बाप है प्यार का सागर, विश्व कल्याणकारी और त्रिकालदर्शी - उसे तो आत्माओं को जब वो प्रकृति, माया या स्वभाव-संस्कार वश ऐसा कोई कार्य करती है, जो उन्हें नहीं करना चाहिए ... तो बाप को तो उनके प्रति बहुत प्रेम आता है कि यह आत्मा क्या कर रही है...! व्यर्थ ही अपना हिसाब-किताब बना रही है...!

और फिर बाप तो विश्व-कल्याणकारी है, वो तो उन आत्माओं के प्रति और ही कल्याण की भावना रखता है।

फिर बाबा ने कहा...

बच्चे, बाप कभी भी किसी भी आत्मा को सज़ा नहीं दे सकता ... हर आत्मा अंत में अपने किये गए कर्म के according ही अपनी सज़ा fix करती है...।

परन्तु आपकी और मेरी शुभ भावना और शुभ कामना उन आत्माओं को इतनी शक्ति देती है कि वो सहज रीति अपने कर्मों के बन्धन से मुक्त हो घर (परमधाम) जाते हैं।

इसलिए बच्चे, अब तो आप बच्चों को भी हर हाल में हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखनी है ... क्योंकि आप ही तो बाप-समान बच्चे हो ... दृढ़ता पूर्वक love and light का अभ्यास कर जो आपने अपना chart बनाया है उसमें 100% marks लो ताकि जल्द से जल्द बाप-समान स्थिति में स्थित हो बाप के साथ विश्व-परिवर्तन का कार्य कर सको...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
08.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बच्चों ने अपना बहुत परिवर्तन किया है और त्याग भी, परन्तु अभी भी कभी-कभी अपना पुराना स्वभाव आ जाता है..., अर्थात् अभी flawless नहीं बने हैं...!

देखो बच्चे, जब numberone बनना है, तो अपना स्वभाव लौकिक रीति 100% नम्बर एक बनाना पड़ेगा...।
परन्तु बच्चों की speed अच्छी है। बस थोड़ा-सा attention देते ही अपनी seat पर set हो जाओगे...।

इसलिए, अब अपना attention और बढ़ाओ...। देखो, यदि numberone बनना है, तो checking भी सूक्ष्म रीति होनी चाहिए। हर बात की तरफ full attention देना चाहिए ... पुराने स्वभाव-संस्कार से 100% विदाई ... तब ही बाप-समान बन सकेंगे...।
वैसे सभी बच्चों का पुरुषार्थ अच्छा है ... और attention भी रख रहे हैं...।

देखो बच्चे, वैसे सब अच्छा है।
जो कुछ भी हो रहा है, सब अच्छा है।
सभी का कल्याण हो - जिन बच्चों के अन्दर यह संकल्प है, वो ही स्व-कल्याणी से विश्व-कल्याणी बन सकते हैं।

बस शुभ भावना, शुभ कामना और हर आत्मा के प्रति और हर परिस्थिति में positive संकल्प होना बहुत ज़रूरी है।
परन्तु साथ ही साथ drama की समझ होनी भी बहुत ज़रूरी है अर्थात् loveful के साथ-साथ lawful होना...।

जिस तरह इस समय बाप अपना part play कर रहा है अर्थात् बच्चों को बाप-समान बनाने के लिए बाप का loveful के साथ-साथ lawful होना बहुत ज़रूरी है।
फिर कुछ आत्माओं के लिए बाप भी वरदानी मूर्त बन जाता है, क्योंकि वो आत्मायें कमज़ोर अर्थात् नम्बरवार होती है।

इस समय स्थिरता के साथ-साथ समझ होना भी अति आवश्यक है ... क्योंकि यह बिल्कुल तमोप्रधान दुनिया और तमोप्रधान आत्मायें हैं ... इनके बीच रहते स्वयं की समझ के साथ ही अर्थात् हर आत्मा के साथ किस रीति adjust होना है, इस समझ के साथ ही सदा स्थिर रह सकते हो...।

देखो, टीचर की पढ़ाई तो खत्म हो चुकी है अर्थात् टीचर का role खत्म हो चुका है ... किन्तु बाप अपने बच्चों को अपनी seat देने से पहले अर्थात् बाप का role finish कर आपको बाप के समान बनाने से पहले आपको महीनता से समझानी दे रहा है, ताकि आप ठीक रीति अपनी ज़िम्मेवारी सम्भाल सको...।

देखो, बाबा अन्त तक आपके साथ रहेगा, परन्तु अब बाप (परमात्मा पिता) का यह अन्तिम कर्तव्य चल रहा है, फिर बाप विभिन्न रूप से आपसे मिलन मनायेगा और अन्त में सतगुरु बन अपने सतगुरु बच्चों के साथ सारे विश्व का कल्याण कर घर (परमधाम) चला जायेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
09.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बच्चे, सम्पूर्ण रीति समर्पण हो जाओ अर्थात् अब आपके पास कुछ भी पुराना नहीं है।

• यह तन अर्थात् तन की कोई भी, किसी भी तरह की problem...
• यह मन, मन की हर तरह की कमी, कमज़ोरी...
• धन अर्थात् आपके कारोबार का फायदा और नुकसान...
• सम्बन्ध-सम्पर्क, आपके contact में आने वाली चाहे वो आपकी माँ, पत्नी या पुत्र ... कोई भी, हर तरह की आत्मा...
• स्वभाव-संस्कार, स्वप्न ... सब बाप का है अर्थात् आप आत्मा केवल बाप की हो ... और आपका मेरा, एक बाप (परमात्मा पिता) ही है...।

जो कुछ भी आपके पास आए सब बाप को दे दो और निश्चय रखो कि जब बाप को दिया है, तो जो भी कुछ हो रहा है वो बाप का हो रहा है ... और एक-एक कार्य में, बात में ... केवल कल्याण समाया हुआ है...।

अब बाप की direct नज़र आप बच्चों पर है।
शिव बाप अपने समान आज्ञाकारी, वफादार, फरमानबरदार और ईमानदार अर्थात् अपने दिल के टुकड़े की सम्भाल नहीं करेगा ... तो किसकी करेगा...!

बस आप तो बाप पर बलिहार चले जाओ...।
बाप तो आपकी मन-बुद्धि जिसे आप अपना समझते हो, उसे भी best तरीके से चला उसी के द्वारा कमाल पर कमाल शुरु करवा देगा...।

बस बच्चे, अब सोचना बन्द करो...। कुछ भी हो एक second से कम समय में बाप को दे दो। बस निश्चय और धैर्यता की ज़रुरत है ... निश्चिन्त होते ही विजय हुई पड़ी है...।

बस बच्चे, चारों तरफ light ही light फैला दो..., ताकि जल्दी से जल्दी सभी आत्मायें अपनी-अपनी seat पर set होना शुरू हो जायें...।

बस आपके अन्दर यही लगन होनी चाहिए कि अब जल्द से जल्द यह कार्य सम्पन्न हो...।

"Charity begins at home...”

बस अपनी ज़िम्मेवारी समझ अर्थात् ज़िम्मेवार बन, अब समय अनुसार अपनी अलौकिक नांव को किनारे पर लगाओ ... सब आपको पुकार रहे हैं...।

अभी नवीनतायें तो होनी ही है। पहले से बता देने पर आप उसको enjoy नहीं कर पाओगे...।
बस wait and watch की ज़रूरत है ... wait कभी भी खत्म हो सकती है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
10.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा बार-बार कह रहा है कि मैं आ गया हूँ केवल आप बच्चों के लिए ... और मैं स्वयं ही सब कुछ कर दूँगा...।
बस मुझे आपके संकल्प का सहयोग चाहिए।

बच्चे, बाप जो-जो बात कह रहा है उस पर विश्वास रखो ना...। बाप ऐसे ही थोड़ेही कह रहा है...!

जो बाप कह रहा है कि परिवर्तन हो रहा है, तो हो ही रहा है ... मंज़िल के समीप हो, तो हो ही...। बस आप तो संकल्प की स्थिरता के द्वारा अपनी seat पर set रहो।

देखो, set का भी अर्थ समझो ... set माना set - कोई हलचल नहीं...।
आपके संकल्पों का minor सा भी ऊँचा-नीचा अर्थात् पता नहीं, क्या, क्यों, कैसे, ऐसे, वैसे ... बाप के कार्य की speed कम कर देता है।

बस अब तो आप knowledgeful बन seat पर set रहो, फिर तो झट-पट कार्य सम्पन्न हो जायेगा...।
बस अपनी seat पर set हो अन्य आत्माओं के कल्याण की भावना रखनी है।

अब बहुत जल्द से जल्द उससे भी जल्द आपके संकल्प सिद्ध होने शुरू हो जायेंगे...।
लेकिन उससे पहले आपके एक-एक संकल्प की भावना बहुत ऊँच, कल्याणकारी अर्थात् किसी भी आत्मा के कर्मों के according नहीं होनी चाहिए। क्योंकि इस समय लौकिक और अलौकिक ... सभी आत्मायें बहुत कमज़ोर हो चुकी है।
इसलिए आप तो केवल अपनी विशेषताओं के according ही अर्थात् उच्चतम् स्वमान के according ही अपने संकल्प और भाव रखो...।

आपके संकल्पों की vibrations आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनती है ... तो साथ ही साथ उन्हें अपनी post तक पहुँचने में रोकती भी है...।

बस आप तो बाप-समान seat पर अर्थात् सभी आत्माओं के पिता बन सबके कल्याण के निमित्त बन जाओ...।

देखो बच्चे, जो बाप आपको पढ़ाई पढ़ा रहा है ... यह बाप के कार्य की speed और समय की speed को दर्शाता है।
बस आप तो स्वयं पर 100% attention रख आगे से आगे बढ़ो ... attention में minor सा भी हल्का ना हो ... हल्के रह परमात्मा बाप के कार्य को सम्पन्न करने में सहयोगी बनो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
11.08.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

शिवबाबा कहते हैं ... मैं जो हूँ, जैसा हूँ मुझे उसी रूप में जान और मान और आप भी अपने आपको जैसे भी हो वैसे मान मुझे याद करो अर्थात् बाप ever पवित्र है, शुद्ध है ... वो कभी प्रकृति के प्रभाव में नहीं आता ... अर्थात् उसमें कभी भी, किसी भी तरह की कोई मिलावट नहीं होती, वो हमेशा अपने original स्वरूप में ही रहता है।

और इस समय बाप ने हमें स्मृति दिलाई है कि आप शुद्ध, पवित्र आत्मा हो।
आप बाप के समीप रहने वाली हो ... और हम जितना स्वयं को पवित्र मान, बाप (परमात्मा पिता) के साथ योग लगाते है, उतनी ही जल्दी अपने original स्वरूप में स्थित हो सकते हैं..., और तब हम प्रकृति के बीच में रह अपने original स्वरूप में स्थित हो, प्रकृति को भी light अर्थात् प्रकृति के भी original स्वरूप को जान और मान..., बस प्रकृति के लिए इतना ही सोचते हैं कि तुम तो बहुत पवित्र हो क्योंकि तुम्हारा original स्वरूप भी पवित्र ही है...।

तो बहुत ही जल्दी हमारे संकल्पों से प्रकृति पवित्र बन, पवित्र दुनिया स्थापन कर देगी ... क्योंकि प्रकृति ही दुनिया है...।

इसी तरह हम किसी भी आत्मा के बारे में कोई भी संकल्प ना चला केवल उसे उसके original स्वरूप में देखें, तो वो बहुत जल्दी हमारे संकल्पों से परिवर्तन हो जायेगा...।

जैसे; सोने में कोई मिलावट नहीं तो वो पवित्र है ... दूध में, घी में कोई मिलावट नहीं अर्थात् वो अपने शुद्ध स्वरूप में है ... और हर चीज़ को पवित्र बनाने के लिए अग्नि का प्रयोग किया जाता है...।

अग्नि अर्थात light ... जब हम स्वयं को original स्वरूप अर्थात् light समझ सबको उसके original स्वरूप में देखने या संकल्प मात्र से भी ... अर्थात् यह पवित्र light से सब कुछ पवित्र light में परिवर्तन हो जायेगा...।

बच्चे, महसूस करो कि सब light ही light है ... बस light ही light है ... अर्थात् जो कुछ भी इन आँखों से देखते हो और महसूस करते हो, वो सब light है...।

हर पल आपके अन्दर यह संकल्प होना चाहिए कि मैं इन सबकी मालिक अपने पिता point of light के संग इन सबके कल्याण अर्थ यहाँ अवतरित हुई हूँ...।
बस अब इन सबका अर्थात् इस विश्व का कल्याण हुआ की हुआ...।

न्यारा अर्थात् प्रभाव-मुक्त ... न्यारी आत्मा ही सबकी प्यारी बनती है ... न्यारी आत्मा ही सभी का कल्याण कर सकती है...।

अच्छा। ओम् शान्ति

Om Shanti
12.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा का इस समय एक ही लक्ष्य है कि जल्दी से जल्दी आप बच्चों को अपनी seat पर set करें...।

फिर बच्चों ने बाबा से पूछा कि बाबा, आप तो कहते हो कि जल्दी नहीं करनी...?

तो बाबा ने कहा ... बच्चे, बाप त्रिकालदर्शी है। वो अपनी seat पर set हो बहुत युक्तियुक्त ढंग से अपना कार्य करता है।

लेकिन आप बच्चे जब जल्दबाज़ी करते हो, तो अपनी seat से उतर स्थूल रीति कार्य करना शुरु कर देते हो ... अर्थात् आप यह सोचते हो कि समझानी देकर या उससे बात करके, उसे ठीक कर दें...!

देखो, अब जबकि हर आत्मा वातावरण के according कमज़ोर हो चुकी है, तो या तो वो दिलशिकस्त हो जाती है ... या अभिमान वा अपमान महसूस करती है...।
इस कारण कार्य की speed slow हो जाती है अर्थात् उन आत्माओं के vibrations वायुमण्डल में speed से फैलते है।

इसलिए जब आप अपनी seat पर set हो सूक्ष्म रीति उन आत्माओं की पालना करोगे तो जल्दी से जल्दी समस्या भी solve होगी और vibrations भी positive होंगे..., जिससे बाप के कार्य की speed और बढ़ जायेगी...।

बस बच्चे, आप धैर्यतापूर्वक अपनी seat पर set रह बाप (परमात्मा पिता) की श्रीमत प्रमाण चलो...। फिर तो जल्दी से जल्दी बहुत-बहुत-बहुत ही wonderful कार्य होने है ... drama के हर second के हर scene पर वाह-वाह होगी...।

यह समय आपके लिए बहुत ही आनन्दमय होगा, जोकि अभी तक आपके संकल्प और स्वप्न में भी नहीं है...!
उस समय आप अपनी seat पर भी होंगे और साथ ही साथ हर सुख का, आनन्द का गहराई तक अनुभव करोगे ... अर्थात् आपको अपने थोड़े से भी थोड़े किये गये पुरुषार्थ की value का अनुभव होगा कि हमने थोड़ा-सा कर इतना अधिक अर्थात् असीम पाया ... और अन्य आत्माओं ने इतना गँवाया...!

और जिन आत्माओं ने अपने पुरुषार्थ के attention में कमी रखी उनकी प्राप्ति में भी इतना difference रहा ... चाहे नम्बरवार हैं, फिर भी आत्माओं को feel तो होगा ना...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
13.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बच्चे, सम्पूर्ण केवल वो ही आत्मायें बनेंगी, जिन आत्माओं ने 100% बाप की श्रीमत प्रमाण स्वयं पर attention रख पुरुषार्थ किया है।

देखो, अभी भी समय है कि आत्मायें ज्ञान को भली-भान्ति समझ अर्थात् knowledgeful बन जो light का अभ्यास बताया है, इस पर full attention दे स्वयं को हर चीज़ से, आत्माओं से न्यारा करती जायें...।

कोई भी पुराना स्वभाव-संस्कार आये उसे एक second में ही बिन्दी लगा अपनी seat पर set हो जायें...।
इसके लिए बाबा ने आप बच्चों को विभिन्न युक्तियाँ भी बतलाई हैं।

इस समय जो बच्चा स्वयं पर full attention रख समर्थ संकल्प और समर्थ वाचा में आयेगा, वो आत्मा ही अपनी seat पर set है ... और उसके कुछ दिन की ही ऐसी practice और attention से उसकी प्राप्तियाँ शुरु हो जायेगी...।

देखो बच्चे, किसी तरह की भी प्राप्तियों का शुरु होना अर्थात् attention पर बिन्दी लग जाना...। इसलिए अभी आप बच्चों के लिए पुरुषार्थ सहज भी हो रहा है और कभी-कभी थोड़ी बहुत प्राप्ति भी होती है, परन्तु 100% प्राप्ति अर्थात् सदैव की प्राप्ति के लिए सदा seat पर set रहना अति आवश्यक है।

केवल अनन्य बच्चे ही अपनी seat पर set हो पायेंगे ... वो भी नम्बरवार...।

देखो बच्चे, अति के बाद अन्त होती है। इसलिए आप निश्चिन्त रहो ... मैं आपका ही नहीं सभी का बाप हूँ ... और इस ईश्वरीय परिवार की सभी आत्माओं के ऊपर मेरी विशेष नज़र है।
बस आप तो अपनी seat पर बैठे रहो सब ठीक हो जाएगा और होना ही है...।

देखो, दुनिया में तमोप्रधान वायुमण्डल का और माया की ग्रहचारी दिनों दिन बढ़ती जा रही है ... जिससे हर आत्मा दुःखी है, परेशान है और जैसे-जैसे second-by-second पास हो रहा है, इसकी speed और तीव्र हो रही है।

इसलिए बाबा कहता है; बच्चे जल्दी करो ... जल्दी करो...। क्योंकि बाप (परमात्मा पिता) नहीं चाहता कि इस ईश्वरीय परिवार की, जिसे बाप sample बना रहा है उन आत्माओं का अर्थात् मेरे विशेष बच्चों को कोई touch भी करें...!

बस, आप हल्के रहो...।

बहुत जल्द और उससे भी जल्द, बाप आप सबको तमोप्रधान वायुमण्डल से न्यारा कर देगा। बच्चे, अब तो आनन्दमय दिन आयो की आयो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
14.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बच्चे, महसूस करो कि सब light ही light है ... बस light ही light ...।
मैं भी light ... बाप भी light ...।

फिर बाबा ने कहा...
यह light ही सबकुछ परिवर्तन कर देगी..., अर्थात् जितना आप संकल्पों द्वारा यह अनुभव करोगे कि जो कुछ मैं आँखों से देख रहा हूँ ... सुन रहा हूँ ... महसूस कर रहा हूँ ... सब पवित्र light है...।

यह पवित्र light का अभ्यास ही परमधाम की लाइट को नीचे लायेगा ... तब ही Supreme light ceremony होगी...।

बच्चे, अपने एक-एक संकल्प की value को समझो ... आपके संकल्प से ही दुनिया बनी ... आपके संकल्प से ही भगवान धरा पर आया ... और अन्त में आप अपने संकल्प की power से ही विश्व-परिवर्तन का कार्य करोगे...।

देखो बच्चे, आप स्वयं के साथ-साथ परमात्मा बाप को भी विश्व में प्रत्यक्ष करने वाली आत्मायें हो ... तो आपका एक-एक संकल्प और बोल पर attention होना चाहिए...।

बच्चे सोचते हैं कि जल्दी से जल्दी कुछ परिवर्तन दिखें...!

परन्तु बच्चे, बाबा पहले भी बता चुका है कि जब तक आप सम्पूर्ण नहीं बनते तब तक कुछ नहीं होगा ... क्योंकि परिवर्तन करने वाले आप ही हो ... आप महीनता से अपनी checking करो कि मैं बन्धन-मुक्त अर्थात् किसी भी तरह का कोई बन्धन नहीं ... अर्थात् अपनी seat पर set बेहद में रह, विश्व-कल्याण के निमित्त हूँ ... मैं बिल्कुल हल्की, सन्तुष्ट और खुश हूँ...?

तब ही तो आप सभी आत्माओं को मुक्ति ... अर्थात् बन्धनमुक्त जीवनमुक्ति ... अर्थात् आत्माओं को यथाशक्ति गुणों और शक्तियों का दान दे सकते हो...।

बच्चे, आप योग लगाने वाली नहीं बल्कि योगयुक्त रह सारी आत्माओं का, प्रकृति का, कल्याण करने वाली आत्मा हो। तब ही तो आप प्रकृतिपति, विश्व की सभी आत्माओं के मालिक बन ... सभी का परिवर्तन कर दोगे...।

बच्चे, अब हर पल अपनी seat पर set रह अपना कार्य शुरु करो। अब हर पल शिव बाप को संग रख, स्वयं की और सेवा की रुप-रेखा change कर, सहज और जल्द से जल्द सफलताओं के अधिकारी बनो। बाप समेत सभी आत्मायें आपकी इंतज़ार में हैं...।

इसलिए बच्चे, अब समय अनुसार ना सोचो ... ना बोलो ... बस बाप (परमात्मा पिता) के संग रह बाप की श्रीमत प्रमाण चलते चलो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
15.08.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा ... परिवर्तन ... परिवर्तन ... परिवर्तन...।

देखो, पुरानी दुनिया का नई दुनिया में परिवर्तन होना ... अर्थात् पुरानी दुनिया की हर वस्तु ... देह ... आत्मायें ... सभी का परिवर्तन हो जाना..., और आप बच्चे हो परिवर्तन कर्ता...। आप बच्चों की स्मृति, वृत्ति, दृष्टि के परिवर्तन होने पर ही विश्व-परिवर्तन होगा...।

स्मृति का परिवर्तन होना अर्थात् - आपको हर पल स्मृति में रहें कि हम आत्मायें और पाँचों तत्वों से बनी हर चीज़ light है, पवित्र light अर्थात् हर चीज़ की originality की स्मृति में रहना...।

वृत्ति का परिवर्तन होना अर्थात् - आपकी वृत्ति बेहद की अर्थात् हम सब आत्मायें एक ही घर से आये हैं ... और सबने भिन्न-भिन्न पाँच तत्वों से बने light के वस्त्र पहने हुए हैं ... और सभी पवित्र है और अब सबको घर (परमधाम) जाना है...।

दृष्टि का परिवर्तन होना अर्थात् - सभी को बहुत प्रेम-पूर्वक, उनके पवित्र स्वरूप अर्थात् उनके original स्वरूप में देखना...।

बच्चे, जब आपकी 100% स्मृति, वृत्ति, दृष्टि परिवर्तन हो जायेगी तो झटके से विश्व-परिवर्तन हो जायेगा...।

देखो बच्चे, आपका यह अभ्यास काफी natural होता जा रहा है ... और बाबा ने यह भी देखा है कि बच्चे स्वयं पर 100% attention रख बाप को संग रख, सफलता प्राप्त कर रहे हैं। बस बीच-बीच में थोड़ा-सा attention में हल्के हो जाते हैं जिससे परिवर्तन की जो vibrations फैल रही है, उसकी speed slow हो जाती है ... फिर speed तीव्र करने में समय लगता है...।

इसलिए बच्चे, एक बल-एक भरोसे रह, विदेही बन, अपने कार्य में तत्पर रहो ... आप परिवर्तन के समीप ही हो अर्थात् स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन गाया हुआ है और बाप (परमात्मा पिता) तो आप बच्चों के साथ ही है, तो अब कोई भी शक्ति आपको रोक नहीं सकती...!

परन्तु बाप चाहता है कि अब यह परिवर्तन speed से हो जायें और मेरे बच्चे प्राप्तियों को सदा अनुभव करें...।

इसलिए, अब आप बच्चे अपनी मन-बुद्धि को इस पुरानी दुनिया से detach करो ... तो बाबा का नया कार्य शुरु हो।
इसके लिए सबकुछ करते इससे न्यारे रहो अर्थात् हर छोटी से छोटी बात भी बाप को समर्पण कर दो।

जब बाप ने आप बच्चों के द्वारा विश्व-परिवर्तन का अर्थात् बहुत बड़ा काम करवाना है ... तो आपकी 100% ज़िम्मेवारी भी तो बाप ही सम्भालेगा ना...।
बस बच्चे, निश्चय रख स्वयं को समर्पण कर दो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
16.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बच्चे, इस समय बाप (परमात्मा पिता) आपसे जुदा नहीं...!
पहले जहाँ बाप वहाँ बच्चे ... और अब तो जहाँ बच्चे हैं, वहाँ बाप है...।

जो यह बिल्कुल अंतिम समय अर्थात् यज्ञ की अंतिम आहुति का समय जा रहा है, तो सारे परिवार के प्यार से ही sample तैयार होता है।

देखो, बाप आपके साथ-साथ आपकी देह का भी बहुत सहज रीति स्वयं खड़ा हो, परिवर्तन करवा रहा है ... आप बैफिक्र रहो ... जो कुछ हो रहा है ... उसे बहुत प्यार से और खुशी-खुशी cross करो...।

बच्चे, किसी भी चीज़ का परिवर्तन सहज नहीं होता ... और यहाँ तो बाप आपकी देह को भी तमोप्रधान प्रकृति के बीच रहते सतोप्रधान बना रहा है..., जोकि पूरे कल्प में अभी तक किसी की भी नहीं हुई है...।
इतने बड़े काम में थोड़ा समय तो लगता है...!

बस, अब तो यह कार्य भी सम्पन्ता की तरफ है। आप अब सहज रीति बस बाप को समर्पण हो आगे से आगे बढ़ते रहो...।

इसलिए बच्चे, जो आप यह अभ्यास कर रहे हो, ये बहुत उच्चतम् अभ्यास है। इसी अभ्यास से आप 100% बाप-समान बन जाओगे...।

जो आप बार-बार पुराने को खत्म कर बाप-समान ऊँच authority रूपी स्वमान में स्थित हो जाते हो और हर पल मौज में रह रहे हो, ये आपको झटके से इस दुनिया से न्यारा और बाप-समान बना सारी दुनिया का प्यारा बना देगा...।

ये अभ्यास आप सभी को बताओ, ताकि सब जल्द से जल्द अपनी seat पर पहुँच सकें...। जैसे; जब भी दर्पण के सम्मुख जाते हो, तो उसी समय महसूस करो कि ये मैं नहीं हूँ ... मैं तो एक श्रेष्ठतम् आत्मा हूँ...।

इसी तरह इस तन को जब कुछ खिलाओ-पिलाओ, तो भी यह ध्यान रखो कि - ये मैं नहीं ... मैं इस तन की ... इस परिवार की care taker हूँ...।

कोई भी पुरानी बात, पुराना हिसाब-किताब सम्मुख आता है तो उसी पल ध्यान रहे कि - यह तो मेरा role है ... मैं तो बाप-समान विश्व-कल्याणकारी, विश्व-परिवर्तक आत्मा हूँ...।
इससे आपकी स्थिति निश्चिन्त, हल्की, सन्तुष्ट और खुशनुमा हो जायेगी, और हर पल अपने बाप और अपने धाम (शान्तिधाम और सुखधाम) की स्मृति में रहो ... साथ ही साथ रूहानी नशे में भी जो आपको आनन्द से भरपूर कर देगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
17.08.2018

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बच्चे, आपको सभी आत्माओं के प्रति केवल शुभ-भावना, शुभ-कामना ही रखनी है।
आपकी शुभ-भावना ही सभी आत्माओं का कल्याण करेगी।

सभी आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनने के लिए आपको 100% साक्षी बनना पड़ेगा। अर्थात् आत्माओं के कर्म और व्यवहार को ना देख, उन्हें नासमझ और कमज़ोर जान अर्थात् एक छोटा बच्चा मान

... जिस तरह एक छोटा बच्चा ज़िद में आ छोटी-छोटी बातों में रोता भी रहता है और छोटी-सी प्राप्ति में खुश भी हो जाता है...।

इसलिए इस समय सभी आत्माओं के मात-पिता बन, इनके कल्याण के निमित्त बनो...।

बच्चे, यह कलियुग का भी अन्तिम चरण जा रहा है जोकि हिसाब-किताब clear करने का है ... तो घर जाने से पहले वो clear तो होने ही है।

बस आप तो अपनी प्रेम और रहम की भावना बनाए रखो और सभी आत्माओं को बाप हवाले कर दो...।

इस ईश्वरीय परिवार की सभी आत्माओं पर बाप (परमात्मा पिता) की नज़र है और बाप इस समय सभी के जल्द से जल्द और सहज से सहज रीति हिसाब-किताब पूरे करवा रहा है...।
इसलिए, आप इन आत्माओं से भी साक्षी हो जाओ अर्थात् बाप हवाले कर दो...।

यदि कोई भी सलाह देने की आवश्यकता महसूस करते हो तो बाप को बुला कुछ समझानी दो ... फिर बाबा आपके द्वारा ही इन आत्माओं का कल्याण करवा देगा...।

बस बच्चे, आप निश्चिन्त रह अर्थात् अपने उच्चतम् स्वमान की seat पर set रह, हर तरफ अपनी शुभ-भावना, शुभ-कामना की vibrations फैला दो...।

तो बच्चे, अब समय अनुसार आप बच्चों के एक-एक संकल्प समर्थ होने चाहिए अर्थात् व्यर्थ और साधारण मुक्त...।

बस, अब आप बच्चों को अपनी गुणों और शक्तियों रूपी seat पर set हो अर्थात् स्वयं और विश्व-कल्याण अर्थ ही संकल्प करने हैं। अब वो समय आ चुका है, जब आप बच्चों को अपने संकल्पों की सिद्धि प्राप्त होनी शुरू हो जायेगी।

बच्चे, आप अपने संकल्पों की power को भली-भान्ति समझ संकल्प करो ... आपके एक-एक संकल्प आपको सिद्धि दिलायेंगे...। बस आप अपने संकल्पों को सही रीति use करो...।

आपको 100% निश्चय होना चाहिए कि मेरे एक-एक संकल्प सिद्ध होंगे अर्थात् मेरे संकल्प और बोल वरदानी मूर्त बन जायेंगे...।

अब आपके संकल्प के द्वारा कमाल पर कमाल शुरू होगी। बस धैर्यतापूर्वक अपने संकल्पों को use करना शुरु करो।

बच्चे, बाप हर पल आप बच्चों के साथ है इसलिए स्वयं पर 100% निश्चय रखो।
बाप (परमात्मा शिव) जो कह रहा है, वो 100% सत्य है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
18.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बच्चे, शिव बाप आकर पढ़ाता तो सभी बच्चों को है, लेकिन बच्चे नम्बरवार बन जाते हैं।
जबकि ज्ञानी भी हैं, योगी भी हैं और सेवा भी करते हैं और सच्चा दिल भी है ... परन्तु knowledgeful ना बनने के कारण कहीं ना कहीं त्याग में अर्थात् स्वयं को परिवर्तन करने में कमज़ोर बन जाते हैं...।

अर्थात् हल्का सा भी मैं-पन के कारण ज्ञान को समझते हुए भी नासमझ बन जाते हैं ... जिस कारण बाप (परमात्मा पिता) पर पूर्ण रीति बलिहार कहो, समर्पण कहो ... नहीं हो पाते और स्वयं को नम्बरवन के बजाए नम्बरवार में ले आते हैं...!

देखो, बाप की इस गुह्य से गुह्य पढ़ाई ... गुह्य part को मेरे कुछ बच्चे ही समझ पाते हैं ... और वो ही बाप पर बलिहार जा आगे से आगे बढ़ जाते है...।
लेकिन, जो बच्चे स्वयं को सम्पन्न समझ रुक जाते हैं, उनकी seat वहीं fix हो जाती है...।

देखो, कुछ बच्चे हैं ... जो बाप की समझानी कहो, knowledge कहो, श्रीमत कहो ... को ठीक रीति समझ उसी according चलते हैं - यही difference माला के मणकों में number बनने का आधार हो जाता है...।

इसलिए बच्चे, drama के किसी भी तरह का कोई भी scene देख, क्या-क्यों करने वाली आत्मा आगे नहीं बढ़ सकती है...।

देखो, जिन बच्चों ने बाप की श्रीमत प्रमाण शुरू से ही त्याग और तपस्या की है ... उनके सारे हिसाब-किताब अब पूरे हो चुके है। जो भी छोटी-मोटी परिस्थिति, paper के रूप में आ रही है ... वो बस आप बच्चों को आपकी seat पर set रखने के लिए आ रही है...।

इसलिए थोड़ा-सा धैर्य और रख, सब बाप को समर्पण कर, अपनी seat पर set रहो...।

जो आप बच्चे प्रेमपूर्वक pure light की vibrations स्मृति, वृत्ति और दृष्टि द्वारा फैला रहे हो, तो यह vibrations बहुत speed से अपना कार्य कर रही है, चाहे अभी आपको महसूस नहीं हो रहा...!
परन्तु बहुत ही जल्द आप अपनी निःस्वार्थ भाव से फैलाई गई vibrations का प्रत्यक्ष फल अनुभव करोगे...।

देखो, इस समय परिवर्तन की speed तीव्र हो चुकी है अर्थात् attention रखने वाले बच्चों को बाप का भी और अपने ऊँच साथी, सहयोगी बच्चों की भी पूरी मदद है अर्थात् सूक्ष्म vibrations उन्हें भी उनकी seat पर set करने का कार्य कर रही है।
बस बच्चे, निश्चय रख आगे से आगे बढ़ो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
19.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, आप हो विश्व-कल्याणकारी आत्मायें...।

सभी आत्माओं समेत सारी प्रकृति को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने वाली...।

इसलिए, विश्व-परिवर्तन से पहले अपनी शक्तियों रूपी अग्नि से देह रूपी प्रकृति को सतोप्रधान बनाने में use करो ... अर्थात् मालिक बन अपनी शक्तियों को order करो कि वह अब देह को सतोप्रधान बनाये..., साथ ही साथ आप अपनी मन-बुद्धि को इस संकल्प में एकाग्र कर दो और 100% निश्चय के साथ निश्चिन्त रहो...।

बच्चे, आप बच्चों के संकल्प सिद्ध नहीं होंगे तो फिर बताओ किसके होंगे...?
अभी भी आपकी powerful vibrations कार्य कर रही हैं ... परन्तु अभी संकल्पों में एकाग्रता नहीं है, जिस कारण जो सफलता आप चाहते हो, वो प्राप्त नहीं हो रही...।

इसलिए संकल्पों को निश्चयबुद्धि बन एकाग्र करो। दृढ़तापूर्वक करने से अर्थात् संशय को 100% समाप्त कर, अपनी शक्तियों पर 100% निश्चय रख, उन्हें use करो ... फिर सफलता आपके पांव चुमेगी...।

बच्चे, charity begins at home.
Starting में किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने में कई बार थोड़ा time लग जाता है, परन्तु आप धैर्यतापूर्वक शक्तियों को use करो।
एक सफलता प्राप्त होने के बाद आपकी speed तीव्र हो जायेगी...।

बस बच्चे, सबकुछ होना ही है। और जिन बच्चों को बाप का 100% सहयोग है, वो ही बच्चे बाप-समान स्थिति में स्थित हो सफलतामूर्त बन जाते हैं...।

देखो, बाप (परमात्मा पिता) की पढ़ाई का सार ही है - शान्त रहो ... खुश रहो ... हल्के रहो ... और सन्तुष्ट रहो...।
इन सब गुणों से भरपूर आत्मा ही बाप-समान स्थिति में स्थित हो विश्व-कल्याण का कार्य कर सकती है।

बस बच्चे, बाप पर 100% निश्चय रख, स्वयं की checking कर, आगे से आगे बढ़ो...।
देखो, कुछ भी हो आप बच्चों ने अपने उच्चतम् स्वमान की seat नहीं छोड़नी है...।
शिव बाप आपके साथ है, इसलिए हर बात में स्वयं का कल्याण समझ स्थिर अर्थात् अचल-अडोल रहना है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
20.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, बिल्कुल शान्तचित हो जाओ ... अर्थात् अब आपके पास केवल निश्चय और नशे के ही संकल्प होने चाहिए ... अर्थात् आपको अपने एक-एक संकल्प पर निश्चय होना चाहिए कि जो भी संकल्प मैं कर रहा हूँ उसमें मुझे 100% सफलता मिलेगी ... और जिस बच्चे को अपनी instant सफलता पर 100% निश्चय है, उसकी सफलता अर्थात् हर कार्य में विजय हुई ही पड़ी है...।

बच्चे, बाबा की एक-एक बात पर 100% निश्चय रखो। जो बाबा कह रहा है कि थोड़ा-सा धैर्य रखो तो थोड़ा सा ही है ... और अब तो आपकी speed भी बढ़ चुकी है। तो थोड़ा सा तो कभी भी खत्म हो सकता है ना...!

परन्तु होता क्या है कि जब कोई भी बात आती है तो निश्चय के साथ-साथ सूक्ष्म में यह भी संकल्प कर लेते हो कि पता नहीं कब होगा ... कैसे होगा...?

परन्तु बच्चे, आपके 100% सकारात्मक अर्थात् positive, विजय भरे संकल्प होने से अभी-अभी होगा...।

आपका संशय का minor सा भी संकल्प या कमज़ोर संकल्प आपको आपकी सफलता से दूर कर देता है...।

आप बच्चों को powerful अनुभव भी हो रहा है और स्वयं में परिवर्तन भी दिख रहा है, फिर भी बच्चे जल्दबाज़ी के कारण क्या, क्यों, कैसे, कब ... में आ जाते हैं...! जिस कारण आपकी विजय में समय लग जाता है...!

आप अपनी विजय के एक ही संकल्प में एकाग्र हो जाओ ... फिर देखो कमाल पर कमाल...। शिव बाप आपके साथ है। बस आप 100% निश्चय रखो और आगे से आगे बढ़ो ... मंज़िल के समीप पहुँचकर जल्दबाज़ी के कारण मंज़िल से दूर नहीं होना है...।

आप ही तो हो बाप के विजयी रत्न ... आप ही बाप (परमात्मा पिता) की हर आशा को पूर्ण करने वाले मस्तक के ताज हो...।

इसलिए बच्चे, जितना-जितना आप light का अभ्यास अपनी daily की दिनचर्या में बढ़ाते जाओगे, उतनी ही जल्दी आप अपनी seat पर set हो जाओगे अर्थात् प्रभावमुक्त हो जाओगे। अर्थात् कोई भी परिस्थिति, कोई भी तरह की बीमारी ... अन्य किसी भी तरह की कोई भी problem आपको हिला नहीं सकेगी...।

बस बच्चे, light ही light है...। यह light ही आपके कार्य को सम्पन्न करेगी...।

आप बच्चे ही मेरे दिलतख्तनशीन बच्चे हो, जो बाप की श्रीमत् पर 100% चल अर्थात् अपने एक-एक कर्म बाप-समान बना, परमात्मा बाप को विश्व में प्रत्यक्ष करते हो।

देखो, जैसे छोटे बच्चे को किताब दिखाकर यह बताया जाता है कि यह हाथी है, यह शेर है ... इसी तरह आपको केवल एक ही पाठ पक्का करना है कि सबकुछ light है ... बस पवित्र light है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
21.08.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...

बच्चे, जो present का समय जा रहा है, इस समय में यह महत्व नहीं रखता कि आपने परिस्थितियों का सामना किस रीति किया...!

बल्कि महत्व इस बात का है कि present में आप किस स्थिति में स्थित हो अर्थात् आप बीजरूप स्थिति में कितनी जल्दी अर्थात् सारे drama के ज्ञान के राज़ को समझ और समाकर, कितनी जल्दी आप अपने original स्वरूप में स्थित हो जाते हो।

अर्थात् बिल्कुल शान्त ... कोई past के संकल्प नहीं ... केवल कल्याणकारी संकल्पों से भरपूर अर्थात् बाप-समान स्थिति में स्थित हो जाना...।
इस समय केवल इसी स्थिति का महत्व है ... साथ ही साथ जितने कम समय में आप अपने अनादि स्वरूप में स्थित होते हो, उतने ही माला के नज़दीक के मणके हो...।

कई बच्चे सोचते हैं कि कुछ हो तो रहा नहीं...!
परन्तु देखो, आपकी love and light की vibrations अपना कमाल कर रही है ... अर्थात् प्रकृति को भी अब यह acceptance आ गई है कि हमारा असली स्वरूप light का ही है..., चाहे वह इस समय pure होने में थोड़े हलचल के vibrations create कर रही है...।

अर्थात् आप रचता के आगे थोड़ा opposition कर रही है, परन्तु आपकी loveful vibrations, जो आपने अभी तक जितनी फैलाई है ... उतनी ही प्रकृति आपकी मित्र भी बन गई है...।

इसलिए, आप love के साथ purity के vibrations फैलाओ...।

देखो बच्चे, आप सबको भी तो स्वयं का, बाप (परमात्मा पिता) का और drama की reality समझने में कितना समय लगा...! परन्तु अब जबकी आप रचता powerful स्थिति अर्थात् बाप-समान स्थिति में स्थित हो, जब इन्हें loveful, pure दृष्टि से देखते हो और अपनी वृत्ति की स्थिर vibrations फैलाते हो, तो आपकी रचना यह प्रकृति झट से परिवर्तन होने का attention दे रही है...।

आपकी vibrations सारे विश्व के पाप सदा के लिए खत्म कर रही हैं...।
और अब तो सभी हार चुके हैं ... बस अब आपका एक ही powerful संकल्प इन सबका परिवर्तन करने में सहयोगी बन जाएगा।

बस बच्चे ... स्वयं पर, स्वयं के कार्य पर, बाप पर 100% निश्चय रखो ... सबकुछ हुआ ही पड़ा है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
22.08.2018

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, इस स्थूल दुनिया का स्थूल कोई भी कार्य हो या ना हो, उसका कोई महत्व नहीं रखता...।

महत्व है सिर्फ आपके अपने स्वमान की उच्चतम् seat पर बैठने का अभ्यास natural हो जाना, अर्थात् आप अपने संकल्पों द्वारा अपनी seat पर set हो ही हो, उसके लिए कोई भी efforts ना करने पड़े अर्थात् स्वयं को स्मृति ना दिलाना पड़े...।

देखो, जो शक्तियों और आपके बीच में पर्दा था, वो अब उठ चुका है अर्थात् आप शक्ति सम्पन्न बन चुके हो। बस आप अपनी seat पर set होने के बाद संकल्पों से हिलो मत...।

देखो बच्चे, आप सोचते हो हमारे पास कोई भी शक्ति हो और उसका प्रभाव स्वयं में दिखें, तब तो हमारा स्वमान natural हों...! लेकिन आप अपनी शक्तियों को इस समय use करो परन्तु उसके result को ना देख, उस खुशी में रहो...।

यही दुनिया का सबसे difficult कार्य हैं, जिसे करवाने के लिए स्वयं आपका बाप और दुनिया वालों का भगवान आता है।
आप बाप पर निश्चय रख बस थोड़ा-सा ही समय अपनी शक्तियों रूपी seat पर set रहो, फिर अचानक ही आपका परिवर्तन हो जायेगा...।

अब जबकि समय अनुसार यह परिवर्तन हो जाना चाहिए ... और बाप आप बच्चों के इस परिवर्तन के इंतज़ार में ही है।

बस बच्चे, अब अपनी seat पर स्थिर रहो ... बाकी सारा कार्य बाप (परमात्मा पिता) स्वयं कर देगा...।

देखो, जो कुछ भी हो रहा है उन सब चीज़ों के प्रभाव से प्रभाव-मुक्त हो जाओ। अब किसी भी चीज़ में कोई तन्त (सार) नहीं रहा ... और इस समय परिवर्तन की परिक्रिया बहुत speed से चल रही है और कभी भी परिवर्तन हो सकता है...।

इसलिए, आप सब अपनी numberone seat पर set हो उसी खुशी और उमंग-उत्साह में रहो...।

जैसे किसी भी आत्मा को बड़े सम्मान के साथ कोई ऊँच पद की seat दी जाती है, तो उसे कितनी खुशी होती है।
इसी तरह आप सब तो पूरे विश्व के numberone hero-heroine की seat पर set हो ... तो आपको खुशी कितनी ना होनी चाहिए...!

बस, आपकी खुशी ही आप बच्चों का झटके से परिवर्तन कर देगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
23.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, अपना 100% दे बहुत प्रेमपूर्वक पवित्रता की vibrations फैलाते रहो ... अर्थात् love, light और purity की vibrations फैलाते रहो...।

यह vibrations कितनी कमाल का कार्य कर रही है..., यह अभी आपको पता नहीं चल रहा है, परन्तु बहुत ही थोड़े से थोड़े समय में आपकी vibrations का कमाल आपके सामने आयेगा।

बस alert होकर यह कार्य करते रहो ... इसमें अलबेले नहीं होना है।

बच्चे, देखो तमोप्रधान दुनिया ... तमोप्रधान वातावरण के बीच रहते आपको सतोप्रधान vibrations फैलाने हैं, और अब जबकि कई बच्चों का यह अभ्यास natural हो गया है अर्थात् उनके अन्दर हर आत्मा, हर चीज़ के लिए प्रेम और पवित्रता की भावना natural हो गई है, तो यह natural संकल्प अपना कमाल कर रहे हैं ... और यह कार्य भी अभ्यास से ही हुआ है...।

इसलिए, अब सभी बच्चे love और light की तरफ attention दे अपना स्वभाव naturally ही love और light और pure thoughts का बनायें...। परिवर्तन तो हुआ ही पड़ा है, बस आपके full attention की ज़रूरत है...।

इसलिए बच्चे, अब ना कुछ सोचने की ज़रूरत है और ना कुछ बोलने की...।
सब कुछ light है ... आप भी light हो, मैं (परमात्मा शिव) भी light हूँ ... सब कुछ light ही light है ... यह light ही सब कुछ परिवर्तन कर देगी...।

देखो, आप बच्चे अब एक ऐसे barrier को cross कर चुके हो जहाँ आकर किसी भी बात का कोई महत्व ही नहीं है।

बस आप अपना 100% दे light का अभ्यास करते रहो ... बहुत प्यार के साथ पवित्रता के vibrations फैलाते रहो ... यह पवित्र vibrations ही सम्पूर्ण परिवर्तन का कार्य कर देंगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
24.08.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, कुछ भी होता रहें, चाहे स्वयं के द्वारा ... दूसरों के द्वारा ... या किसी भी तरह की काई भी बाहरी बात आये, सब कुछ मन-बुद्धि द्वारा छोड़ते जाओ...।

देखो बच्चे, बाप आप बच्चों के परिवर्तन की इंतज़ार में ही है और जब आप खुश और हल्के रह light ही light है ... light ही light है अर्थात् सारा दिन बहुत प्रेमपूर्वक, पवित्र light को स्वयं में समा, चारों ओर भी light ही light फैलाते रहते हो ... तो यही light का अभ्यास आपको, सभी जीव-जन्तु, प्रकृति और वातावरण का परिवर्तन कर सतोप्रधान बना देता है...।

इसलिए बच्चे, निश्चिन्त रह, यह अभ्यास करते रहो ... आपका बाप हर पल आप बच्चों के साथ ही है।

देखो, यह अभ्यास अति-अति आवश्यक है।
परिवर्तन light के अभ्यास पर ही depend है।

देखो बच्चे, परिवर्तन तो होना ही है और करने वाले भी आप ही हो। बस यदि आप attention दे यह light का अभ्यास करते हो तो परिवर्तन झटके से हो जायेगा...।

देखो, जब आप निश्चिन्त रहते हो तब ही आप हल्के रह light का अभ्यास कर सकते हो...।

बच्चे, अब किसी भी बात में कोई सार नहीं रहा।
चाहे आपको पता नहीं चल रहा, परन्तु बाप तो सब देख रहा है...।

जैसे एक काली रात में चलता मुसाफ़िर सुबह की इंतज़ार में होता है ... परन्तु सुबह होने से पहले रात और काली हो जाती है ... परन्तु वो अधिकतम रात का काला समय नई सुबह का शुभ सन्देश लेकर आता है, जिसे मुसाफ़िर नहीं जानता...!

परन्तु यहाँ स्वयं शिव बाप आपको सब बता रहा है कि बस बच्चे, परिवर्तन की नई सुबह शुरू होने ही वाली है...।

अच्छा।

Om Shanti
25.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, अब किसी भी बात में कोई सार नहीं रहा।

बस बच्चे, शान्त स्थिति में स्थित हो प्रेमपूर्वक पवित्रता की light फैलाते रहो...।
आप निश्चिन्त और हल्के रहो।

देखो बच्चे, यह अभ्यास सरल नहीं है, इसलिए भगवान को स्वयं बाप रूप में आकर आप बच्चों को बहुत प्रेमपूर्वक आगे से आगे बढ़ाना पड़ता है।

इस तमोप्रधान दुनिया में, तमोप्रधान vibrations में रहते हुए सतोप्रधान संकल्प उत्पन्न करना और साथ ही साथ जो दिख रहा है वा महसूस हो रहा है, उस तरफ attention ना दे बाप की श्रीमत प्रमाण संकल्पों द्वारा उसे पवित्र light समझ परिवर्तन कर देना ... यह कार्य आप कुछ ही बाप (परमात्मा पिता) के चुने हुए बच्चे ही कर सकते हो।

बस बाप पर और स्वयं पर निश्चय रख आगे से आगे बढ़ो...। जितना भी कर सकते हो, हल्के और खुश रहकर करो।
आपका बाप आपके साथ है, फिर तो हुआ ही पड़ा है ना...।

बच्चे, बाबा साथी बन आप बच्चों का हर पल साथ निभा रहा है। बस बाप की श्रीमत प्रमाण हिम्मत रख, स्व-परिवर्तन और देह-परिवर्तन का कार्य थोड़ा-सा जो रह गया है, वो कर लो।

बाप बार-बार कह रहा है कि कभी भी परिवर्तन हो सकता है, तो ऐसे ही नहीं कह रहा...!

बस खुश रहो ... हल्के रहो, क्योंकि इस परिवर्तन के कार्य में आपका खुश और हल्के रहना अत्यधिक आवश्यक है।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
26.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
देखो, बाप आया ही है परिवर्तन के लिए और अब तो बाप को भी परिवर्तन का ही इंतज़ार है।

बस थोड़ा-सा और प्रेमपूर्वक पवित्रता की light का अभ्यास करो ... बस देखते ही देखते परिवर्तन हो जायेगा...।

सभी बच्चों का आगे से आगे बढ़ने का लक्ष्य है लेकिन अब समय अनुसार अर्थात् अन्त के भी अन्त का भी अन्त जा रहा है, तो रहा हुआ व्यर्थ का खाता किसी भी रूप में, किसी भी आत्मा के पास आ सकता है और साथ ही साथ देह के परिवर्तन के कारण भी दिनचर्या में ऊपर-नीचे हो सकता है...।

इसलिए, इन सब बातों की परवाह किये बिना अपने स्वमान की seat पर set हो silence और साक्षीपन की seat का full अभ्यास रखना है और साथ ही साथ हर second का स्वयं पर attention ज़रूरी है कि मैं अपनी seat पर set प्रभाव-मुक्त हूँ...?

बस घबराना नहीं है...।
दृढ़तापूर्वक light का अभ्यास करते रहना है।

परिवर्तन भी होना है और परिवर्तन-कर्ता भी आप ही हो और केवल आप बच्चों के साथ ही बाप (परमात्मा पिता) है...।

इन बातों पर अटूट निश्चय रख, निश्चिन्त रह आगे से आगे बढ़ना है ... लक्ष्य कभी भी सामने आ सकता है।

देखो, जहाँ-जहाँ बाप-समान बच्चों के कदम पड़ते है, वो एक-एक कदम अनेकों ही आत्माओं के कल्याण के निमित्त बन जाते हैं।
बस बच्चे, अपने स्वरूप में स्थित रहना ... आपका बाप आपके संग ही है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
27.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
जो बच्चे, 100% बाप की श्रीमत प्रमाण चलते हैं, तो बाप भी उन बच्चों का 100% ज़िम्मेवार है ... और बाप की इस समय एक ही श्रीमत है कि निश्चिन्त रहो ... खुश रहो ... और हल्के रह attention दे, light का अभ्यास करते रहो...।

और यदि कोई भी कमी-कमज़ोरी आती है, तो attention दे, सच्चे दिल से बाप को समर्पण हो जाओ, तो बाप आप बच्चों की कमी-कमज़ोरी तो दूर करेगा ही, साथ ही साथ आगे बढ़ने के लिए शक्ति भी देगा...।

बस बाप की श्रीमत को follow करने के लिए स्वयं पर attention बहुत ज़रूरी है...।

जब आप हल्के हो समर्पण हो जाते हो, तब ही तो बाप आप बच्चों का सहयोगी बन सकता है, और जब आप स्वयं ही छोड़ना नहीं चाहते, तो बाप भी साक्षी हो जाता है...!
क्योंकि बाप है lawful और वो समर्पण बुद्धि बच्चों का ही सहयोगी बन सकता है।

देखो, जितना आप मन-बुद्धि से बाप की श्रीमत प्रमाण हल्के रहते हो, तो उतनी ही जल्दी ही लक्ष्य के समीप पहुँच सकते हो...।

आप बच्चों को आपके लक्ष्य तक पहुँचाने की ज़िम्मेवारी बाप की है और बाप (परमात्मा पिता) है इस drama का रचयिता।
बस आप तो बाप पर 100% निश्चय रख, बाप की श्रीमत प्रमाण अपनी seat पर set रहो ... बाप सबसे सहज और शीघ्रता से लक्ष्य तक पहुँचाने की विधि द्वारा ही आप बच्चों को आपके लक्ष्य तक पहुँचा रहा है...।
बस अपनी मन-बुद्धि ज्यादा use मत करो।

जो भी drama का scene आपके सामने आ रहा है, उसे सहज रीति पार करो, जिससे आप बच्चे बाप के सहयोगी बन जाते हो और बाप का कार्य भी जल्दी-जल्दी पूरा हो जायेगा, अन्यथा पूरा तो होना ही है, जिसे कोई भी ताकत रोक नहीं सकती...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
28.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
जो बच्चा 100% निश्चयबुद्धि होगा, वो ही अपना 100% समर्पण कर अर्थात् अपना सूक्ष्म से सूक्ष्म संकल्प भी बाप को समर्पण कर सकेगा।

क्योंकि उसे बाप (परमात्मा पिता) पर निश्चय है कि बाप इस समय केवल मेरा है ... और वो मुझे हर हाल में शीघ्र से शीघ्र seat पर set कर देगा अर्थात् बाप-समान seat पर set कर विश्व-परिवर्तन का कार्य

करवायेगा ... और वो निश्चिन्त स्थिति में स्थित रह हर उतार-चढ़ाव को easily cross कर बाप की श्रीमत को 100% follow करेगा...।

देखो, बाप तो आपको अभी की अभी सम्पन्न बना दें, परन्तु आप बच्चों को बेहद के कार्य करने है, जो आप हर रास्ते को cross करने पर ही कर सकते हो और आपको तो full उमंग-उत्साह में रहना चाहिए कि इस अन्तिम दु:ख भरे समय में आपका साथी कौन बना है...! और वो आपको भी अपने समान ही दु:खहर्ता-सुखकर्ता बना रहा है...।

और बच्चे वैसे भी आपका परिवर्तन आपको बता कर नहीं होगा, अचानक ही होगा...।

इसलिए उमंग-उत्साह में रहो और जो बाप ने कहा कि कभी भी हो सकता है, तो इस बात पर भी 100% निश्चय रखो।

बस बाप भी सहज से सहज समय में आपका परिवर्तन करवाना चाहता है ... बनना तो आपको ही है ना...!
आप सभी तो मेरे वाह-वाह बच्चे हो...।

इसलिए बच्चे, खेलो ... हँसों ... नाचो ... गाओ अर्थात् बेफिक्र रहो ... खुश रहो ... आबाद रहो...।
अपने जीवन के हर पल को enjoy करो...।
बस अब आनन्द ही आनन्द है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
29.08.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

आज बाबा ने कहा...

बच्चे, आपके सामने छोटी-छोटी जो परिस्थितियां आ रही है, उनके कारण और निवारण को ना जानने के कारण आप अपनी स्थिति को ऊपर-नीचे करते रहते हो...।

Actually में आप बच्चों के आगे यह परिस्थितियां कुछ है ही नहीं...।

क्योंकि आप बहुत अधिक शक्तिशाली हो, परन्तु अभी अपनी शक्तियों का भली-भान्ति ज्ञान ना होने के कारण थोड़ा भारी हो जाते हो...!

और मैं बाप, इस समय केवल आप बच्चों को सर्वशक्तिवान् की seat पर set करने के लिए श्रीमत दे रहा हूँ...।

इस समय ना तो मैं बाप आपकी क्षण भंगुर छोटी-छोटी सी परिस्थितियां जिनकी कोई value ही नहीं है, उसे ठीक कर रहा हूँ ... और ना ही आपकी तपस्या का उसपर कोई प्रभाव है, क्योंकि इस समय आपका स्वयं पर attention बहुत ज़रूरी है...।

परिस्थितियों का क्या है, वो तो एक जाएगी और दूसरी आएगी...!

इसलिए बाप (परमात्मा पिता) का full attention आप पर ही है और बहुत ही जल्दी आपकी शक्तियां एक गुण के साथ बाहर आयेगी और आपकी सभी परिस्थितियां एक सपने की तरह खत्म हो जायेगी...।

बस स्वयं पर और बाप पर 100% निश्चय रख अपने कार्य पर तत्पर रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
30.08.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...

बच्चे, बाप आप बच्चों को जो भी संकल्प दे रहा है, उसे अपनी बुद्धि रुपी तिजोरी में समा, उसे अपने दिनचर्या में हर पल use करो।

• सब मेरे हैं, मुझे सभी से एक समान प्यार करना है...।

• मुझमें हर पल प्यार का सागर बहता रहें...।

• सभी आत्मायें जैसी भी हैं, मुझे accept है ... हर कोई drama में 100% accurate part play कर रहा है, चाहे उसका part villain का, मूर्ख का, स्वयं को hero ना होते हुए भी hero समझने का ... अर्थात् स्वयं को ऊँच और समझदार समझने का हो..., परन्तु हर हाल में मुझे हर आत्मा accept है और मुझे ही हर आत्मा का, हर पल, हर हाल में कल्याण करना है...।
परन्तु उससे पहले स्वयं को, स्वयं की seat पर set कर 100% सन्तुष्ट और खुश रखना है, वो भी बाप (परमात्मा पिता) के according...।

• मुझे अपने पाँचों तत्वों से बने इस तन को love और light के साथ-साथ purity के vibrations देते हुए, इसके कल्याण के निमित्त इसे समझानी देनी है।

इसे इसका original स्वरूप, अर्थात् light का transparent स्वरूप की स्मृति देनी है...। हर हाल में इसे प्रेमपूर्वक समझानी देनी है।

• स्वयं से और स्वयं के part से सन्तुष्ट रहना अति आवश्यक है।
सन्तुष्ट आत्मा ही बाप के कार्य में सहयोगी बन सकती है...।

इस तमोप्रधान दुनिया के बीच रहते उदासी के, भारीपन के या कोई भी problem के संकल्प आये, उसे conscious में आते ही एक side में कर, बाप के according संकल्प करने है।

यदि कहीं पर भी मूँझते हो या कुछ समझ ना आये, तो बार-बार स्वयं को स्वयं के संकल्पों समेत बाप के आगे समर्पण कर देना है।

देखो बच्चे, इस समय प्रकृति अर्थात् आपका तन आपके संकल्पों को समझ स्वयं को परिवर्तन करने का attention रख रहा है।
इसलिए आप consciously कोई भी कमज़ोरी का संकल्प नहीं लाना...!

अधिक से अधिक स्वयं को conscious अवस्था में रखने का attention रखना है ... क्योंकि जब आप aware रह स्वयं के तन को positive vibrations देते हो या खुश वा हल्के रहते हो, तब आपके तन का परिवर्तन speed से हो रहा होता है ... और जब आप स्मृति स्वरूप नहीं होते, तो आपके तन के परिवर्तन का कार्य रुक जाता है...।

और इस समय बाप की श्रीमत के according अर्थात् बाप के प्यार में समाये रहने वाले अर्थात् निश्चयबुद्धि रहने वाले बच्चों के तन पर केवल positive effect ही रहता है, positive संकल्पों का...।

अन्यथा कार्य चाहे रुक जाये परन्तु opposite direction पर नहीं जा रहा है...।

जो बच्चे 100% निश्चयबुद्धि बन बाप की एक-एक समझानी को स्वयं में practical apply कर रहे हैं, उनका बाप 100% ज़िम्मेवार भी है और उनका परिवर्तन का कार्य झटके से कभी भी सम्पन्न हो सकता है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
31.08.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
जो बाप स्वयं आकर आप बच्चों को विशेष पालना दे, विशेष ज्ञान दे रहा है ... जो आज तक ना ही कहीं सुना है और ना ही ऐसे परिवर्तन के बारे में भी सुना है..., जो बाप स्वयं आ आप बच्चों का कर रहा है...।

इसलिए बाप की पढ़ाई के एक-एक शब्द पर निश्चय रखो...। जिस समय, जिस संकल्प की ज़रूरत होती है, बाप उसी according आप बच्चों के संकल्प परिवर्तन कर देता है।

देखो, संकल्पों से ही दुनिया बनी और संकल्प से ही परिवर्तन होगा। बस आप उसी according अपने संकल्प रखो, जो बाप कह रहा है...।

बाप आप बच्चों के द्वारा ही सारा कार्य करवाता है, वैसे बाप क्या नहीं कर सकता...!
आप सबके तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क ... हर तरह की problem एक second से भी कम समय में ठीक कर सकता है।

परन्तु बाप आप बच्चों को आप-समान बना, विश्व-परिवर्तन का कार्य आप द्वारा ही करवाता है...। बस आप हर तरह की, हर बात समर्पण कर वो ही संकल्प करो, जो बाप कह रहा है।

बच्चे, अब इस तमोप्रधान दुनिया के किसी भी चीज़ में कोई सार नहीं रहा है ... ना ही कहीं खुशी है और ना ही कहीं दुःख...।

बस आप तो इन सबसे न्यारे हो स्वयं के संकल्पों पर attention रख परिवर्तन के कार्य को सम्पन्न करो। सभी आपके इंतज़ार में है...।

परिवर्तन तो होना ही है। बस आप बच्चों के attention देने से झटपट हो जायेगा..., अर्थात् बिल्कुल थोड़े से ही attention से परिवर्तन हो जायेगा...।

बस न्यारेपन की स्थिति चाहिए अर्थात् सब कुछ करते भी मन-बुद्धि से न्यारे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
01.09.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, आप बच्चों का बाप विश्व-कल्याणकारी है, तो आप बच्चों का कल्याण तो हर second में है ही है ना...।

बस आप सब कुछ बाप हवाले कर दो अर्थात् जो भी कीचड़ पट्टी है, जोकि इस दुनिया के हिसाब से बहुत valuable है, सब बाप हवाले कर दो...।

आपका भविष्य अर्थात् आने वाला कल अर्थात् इस जन्म का भविष्य प्राप्तियों से भरपूर है ... किसी भी तरह की कोई कमी महसूस नहीं होगी...।

हर तरफ से अर्थात् तन, मन, धन, जन से भरपूर रहोगे अर्थात् healthy, wealthy और happy रहोगे...।

बस बच्चे, बाप को अपना मान अर्थात् मेरा बाप है, और है भी कौन...!
अर्थात् मुझसे ज्यादा भाग्यशाली कोई नहीं ... यह मान सहज रीति परिवर्तन के process को पूरा करो...।

हर समय, हर हाल में बाप आपके साथ है, बस आप मन-बुद्धि से बाप के आगे समर्पण हो जाओ ... ज्यादा सोचो मत...।

बच्चों के कल्याण के निमित्त मैं आ गया हूँ, तो अकल्याण तो हो ही नहीं सकता...।
बस, हल्के रहो ... खुश रहो...। यह वरदान बाप ने बच्चों को दिया है...।

देखो, आप बच्चे इस समय स्वयं को सभी शक्तियों और गुणों से भरपूर कर, अपने तन के मालिक बन, फिर तन को चलाते हो।

आपका full attention स्वयं पर होता है कि "मैं हूँ पॉवरफुल" इस प्रकृति के बीच में रह, प्रकृति को परिवर्तन करने वाला...।

जिस कारण आप केवल अपने तन को तन्दुरुस्त ही नहीं रखते बल्कि इसे हीरे तुल्य बना लेते हो...।
जिससे यह पूरा विश्व ही परिवर्तन हो जाता है।

विश्व में केवल आप कुछ एक बच्चे ही हो जो यह कार्य कर पाते हो, अर्थात् बाप-समान बनते भी हो और साथ ही साथ बाप (परमात्मा पिता) की महिमा के जो गायन हैं, वो सिद्ध भी करते हो।

बस बच्चे स्वयं पर attention रखो, हुआ ही पड़ा है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
02.09.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, महसूस करो ... चारों तरफ पवित्र light है ... आपका कमरा पवित्र light का बना हुआ है। इसी तरह के अभ्यास से यह प्रकृति आपकी सहयोगी, साथी बन जायेगी...।

जिस तरह से विश्व-परिवर्तन के कार्य के लिए बाप (परमात्मा पिता) ने आपको सहयोगी, साथी बनाया है, इसी तरह आप प्रकृति के द्वारा विश्व-परिवर्तन का कार्य सम्पन्न करोगे।

बच्चे, परिवर्तन तो होना ही है अर्थात् हुआ ही पड़ा है।
बस आप बच्चे परिवर्तन के लिए तैयार रहो, बाबा सब सम्भाल लेगा...।
क्योंकि ज़िम्मेवारी बाप की है, आप की नहीं...। आप तो निमित्त मात्र हो।

देखो, केवल कुछ बच्चे ही ऐसे हैं जो निश्चयबुद्धि बन अर्थात् बाप की हर बात पर निश्चय रख बाप-समान बनते हैं, और असलियत में बच्चा केवल वो ही होता है जो बाप-समान हो ... और बाकी तो नम्बरवार बनते हैं जोकि कहने मात्र के लिए ही बच्चे हैं, अन्यथा बाप उनके लिए भगवान ही है...!

देखो, अपने गुणों रूपी शक्तियों को और जो light आपने अपने शरीर में बनाई है, उसे use करो ... जितना ज्यादा आप इसे use करोगे, उतना अधिक अपनी seat पर set रहोगे और जितना अधिक आप

अपनी seat पर set रहोगे, उतनी जल्दी परिवर्तन का कार्य शुरू हो जायेगा ... और फिर तो सहज ही बाप-समान बन विश्व-परिवर्तन का कार्य सम्पन्न कर दोगे।

बच्चे, हो तो आप सब ही ना, कल्प-कल्प के बाप के दिलतख्तनशीन, नूरे रत्न, मस्तकमणी, बाप-समान बच्चे...।

बाप को भी आप बच्चों पर नाज़ है ... निश्चयबुद्धि विजयन्ति...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
02.09.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, महसूस करो ... चारों तरफ पवित्र light है ... आपका कमरा पवित्र light का बना हुआ है। इसी तरह के अभ्यास से यह प्रकृति आपकी सहयोगी, साथी बन जायेगी...।

जिस तरह से विश्व-परिवर्तन के कार्य के लिए बाप (परमात्मा पिता) ने आपको सहयोगी, साथी बनाया है, इसी तरह आप प्रकृति के द्वारा विश्व-परिवर्तन का कार्य सम्पन्न करोगे।

बच्चे, परिवर्तन तो होना ही है अर्थात् हुआ ही पड़ा है।
बस आप बच्चे परिवर्तन के लिए तैयार रहो, बाबा सब सम्भाल लेगा...।
क्योंकि ज़िम्मेवारी बाप की है, आप की नहीं...। आप तो निमित्त मात्र हो।

देखो, केवल कुछ बच्चे ही ऐसे हैं जो निश्चयबुद्धि बन अर्थात् बाप की हर बात पर निश्चय रख बाप-समान बनते हैं, और असलियत में बच्चा केवल वो ही होता है जो बाप-समान हो ... और बाकी तो नम्बरवार बनते हैं जोकि कहने मात्र के लिए ही बच्चे हैं, अन्यथा बाप उनके लिए भगवान ही है...!

देखो, अपने गुणों रूपी शक्तियों को और जो light आपने अपने शरीर में बनाई है, उसे use करो ... जितना ज्यादा आप इसे use करोगे, उतना अधिक अपनी seat पर set रहोगे और जितना अधिक आप अपनी seat पर set रहोगे, उतनी जल्दी परिवर्तन का कार्य शुरू हो जायेगा ... और फिर तो सहज ही बाप-समान बन विश्व-परिवर्तन का कार्य सम्पन्न कर दोगे।

बच्चे, हो तो आप सब ही ना, कल्प-कल्प के बाप के दिलतख्तनशीन, नूरे रत्न, मस्तकमणी, बाप-समान बच्चे...।

बाप को भी आप बच्चों पर नाज़ है ... निश्चयबुद्धि विजयन्ति...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
03.09.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
आप बाप के प्यार में खो जाओ ... समा जाओ ... और आप सबको कुछ नहीं करना...।

बस प्रेम की मुरली बजाते रहो ... और जो आत्मा हमेशा खुश रहेगी, वो ही आत्मा सदा के लिए प्रेम की मुरली बजा सकती है...।

बच्चे, इस प्रेम की मुरली में सभी शास्त्रों से अधिक ताकत है और इसी की धुन नई दुनिया को समीप ला रही है और पुरानी दुनिया के परिवर्तन के निमित्त बन रही है।

बस, खुश रहो ... आबाद रहो...।

देखो, आप बच्चों के अन्दर अर्थात् मन-बुद्धि में यह समा जाना चाहिए कि बाप हमारे परिवर्तन का कार्य कर चुका है और इसी feeling में रहना है...।

यदि बाहरी कोई बात आये भी तो निश्चिन्त रह वो बाप को समर्पण कर देना है। इससे आपको स्वयं के परिवर्तन की result स्पष्ट नज़र आने लग जायेगी, जिससे आपका देह सहित सम्पूर्ण परिवर्तन जल्द से जल्द सम्भव हो जायेगा...।

बस आप बच्चों को तो खुशी में नाचना, गाना ही है और तो कुछ करना नहीं...!

अभी भी हर बच्चे के साथ practical में बाप (परमात्मा पिता) है और जब तक बाप आप बच्चों को अपनी seat नहीं देता, तब तक आपका 100% ज़िम्मेवार भी है...।

अभी भी हर राधा के साथ कृष्ण है ... अर्थात् मैं बाप हूँ...।
यही feeling आपको जल्द से जल्द बाप के मिलन का practical अनुभव करायेगी...।

इसलिए अब निश्चिन्त रहना है और हर तरह का हर संकल्प बाप को समर्पण कर खुशी में झूमते रहना है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
04.09.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, जो भी संकल्प, जिस तरह के भी संकल्प हों, वो बाप को समर्पण करते जाओ।
ऐसा करने पर आप अपनी यात्रा में आगे की तरफ ही चल रहे हो और आगे चलना अर्थात् बाप-समान बनते जाना...।

और देखो, आपका बाप (परमात्मा पिता) इस सारे विश्व का रखवाला है और बाप की श्रीमत पर 100% चलने वाले बच्चों से तो बाप असीम प्यार करता है...।

बाप आप बच्चों के लिए हर पल हाज़िर है...। फिर भी एक second से भी कम समय में बिल्कुल हल्का अर्थात् आप बच्चों से भी न्यारा हो जाता है।

बाप का यह विशेषतम् गुण है ... अर्थात् सबसे प्यार करते हुए भी ... अर्थात् 'न्यारा और प्यारा' - यह गुण आप बच्चों में इस दुनिया में रहते समर्पण भाव से ही आ सकता है...।

देखो, जितना-जितना आप बच्चों का light का अभ्यास powerful होता जा रहा है, उतना ही आप स्वयं के साथ-साथ अपने पाँचों तत्वों से बने शरीर को भी पवित्र light बना, इन तत्वों से न्यारा कर लेते हो ... और धीरे-धीरे जितना आपका इस दुनिया से न्यारेपन का अभ्यास बढ़ता जायेगा, उतनी जल्दी आप बाप से बाप-समान बनने की शक्ति लेने के काबिल बन जाओगे...।

कई बच्चे सोचते हैं कि सबकुछ हमें ही करना पड़ेगा...!
परन्तु बच्चे शक्ति तो बाप देगा ही ... साथ ही साथ बाप आपकी बुद्धि रूपी बर्तन को पवितत्रम् light बनाने की युक्ति भी बता रहा है ... और वो तो आपको बाप से शक्ति लेने के लिए, अपनी बुद्धि रूपी बर्तन को clear अर्थात् साफ तो करना ही पड़ेगा ना...!

बस थोड़ा-सा attention देते ही झटके से परिवर्तन हो जायेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
05.09.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, बाप का इस समय एक ही लक्ष्य है कि आप बच्चों को हर हाल में जल्दी से जल्दी आपकी seat पर set कर अपनी ज़िम्मेवारी पूरी करें...।

जिस तरह लौकिक में भी कोई teacher अपने सभी students में से कुछ एक student को doctor बनाने का लक्ष्य रख लें, तो उसका full attention अपने उन्हीं बच्चों पर रहेगा कि कैसे मेरे बच्चे doctor बनें...!

और वैसे भी बच्चे, हर कार्य की सम्पन्नता की एक limit तो है ही ना...!
और यहाँ तो स्वयं बाप (परमात्मा पिता) ने teacher बन आप बच्चों को select किया है, विश्व के इलाज के लिए..., जहाँ बीमारी रोज़ multiple हो रही है...।

तो बताओ स्वयं भगवान, है तो सबका बाप ही ना...।
तो बाप भी तो जल्दी से जल्दी अपने सभी बच्चों के दुःखों को खत्म करेगा ना और वो दुःख खत्म होने शुरु होंगे, आप बच्चों के अपनी seat पर set होने पर...।

बस बच्चे, आप खुश रहो ... निश्चिन्त रहो ... ज़िम्मेवार आप नहीं, मैं हूँ..., आपको अपने लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए...।

देखो, आप सब बच्चों की एक ही मंज़िल अर्थात् एक ही train होते हुए भी, उसी मंज़िल तक पहुँचने का तरीका अर्थात् train भी अपनी-अपनी है...!

इसलिए आप किसी और को मत देखो..., driver बन अपनी train को full attention से आगे बढ़ाते चलो ... कुछ समझ में ना आये, तो सहयोग ले सकते हो, परन्तु संकल्पों में अन्य आत्माओं के पुरुषार्थ की विधि के बारे में मत सोचो...।
यदि किसी का तरीका अच्छा अर्थात् accurate लगे, तो वो अपना लो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
06.09.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, आप बच्चों के साथ जो कुछ भी हो रहा है अर्थात् आपके मन में, तन में और सम्बन्ध-सम्पर्क में जो भी परिवर्तन हो रहा है अर्थात् आपके जीवन में जो भी up-down हो रहे हैं, उसे easily accept कर आगे बढ़ो क्योंकि यही आगे बढ़ने का way है...।

देखो, मन का प्रभाव तन पर ... और मन और तन का प्रभाव सम्बन्ध-सम्पर्क पर पड़ता है और इस समय परिवर्तन की speed अत्यधिक तीव्र होने के कारण आप समझ नहीं पा रहे हो कि क्या हो रहा है...!

इसलिए आप स्वयं को हर बात से स्वतन्त्र रख, स्वयं को हल्के और खुश रखने का attention रखो और यदि attention रखते-रखते भी मन में हलचल होती रहती है, तो वो भी बाप को समर्पण कर दो, क्योंकि इस समय हर second आपका परिवर्तन हो रहा है, इसलिए निश्चय और समर्पण चाहिए ... no question mark, only acceptance चाहिए...।

देखो बच्चे, मैं आया ही हूँ आप बच्चों के परिवर्तन के लिए और मुझे आप बच्चों से भी ज्यादा जल्दी है ... परन्तु जो यह आप बच्चों के परिवर्तन का process है, वो system से ही पूरा होगा अर्थात् बिल्कुल accurate ढंग से पूरा होगा...।

और बाप आप बच्चों के सूक्ष्म से सूक्ष्म हर second के संकल्प को जानता है।
बाबा किसी भी तरह के एक भी संकल्प से अनभिज्ञ नहीं है और साथ ही साथ बाप यह भी जानता है कि इस तमोप्रधान दुनिया में रहते देह सहित परिवर्तन का कार्य केवल आप बच्चे ही कर सकते हो, क्योंकि आप बच्चे ही बाप के सच्चे और सिकीलधे बच्चे हो, जो बाप की श्रीमत प्रमाण अपना 100% देना चाहते है, और दे भी रहे हैं...।

और यदि कोई कमी है, तो उसके पीछे कई कारण है ... आप निश्चिन्त रहो...।
आपका बाप आप बच्चों के संग है और परिवर्तन भी ऐसी स्थितियों के बीच होगा...।

बस आप तो बाप के प्यार में खोये रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
07.09.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा कि जो बच्चे बाप की यह पढ़ाई पढ़ रहे हैं और उन्होंने निश्चयबुद्धि बन बाप के प्यार में समा, बाप की श्रीमत प्रमाण अपनी मन-बुद्धि को अधिक से अधिक समर्पित करने का attention भी रखा है, उन्हें देख बाबा खुश है।

देखो, मणके नम्बरवार हैं ... तो बाप की श्रीमत प्रमाण मन-बुद्धि को समर्पित करना भी नम्बरवार है...।

कई बच्चों ने तो मेहनत को भी मोहब्बत में परिवर्तन कर अपना number आगे बढ़ा लिया है और कई तो केवल मोहब्बत में ही झुमते रहते है, वो मेहनत शब्द से ही अनभिज्ञ है...!

परन्तु अब जो समय जा रहा है, वो speed से परिवर्तन का है। चाहे आप अनुभव नहीं कर पा रहे हो, परन्तु आपके साथ-साथ आपके चारों तरफ भी परिवर्तन की speed तीव्र है..., जिस कारण स्वयं पर attention रखते-रखते भी मन-बुद्धि इधर-उधर हो जाती है अर्थात् मन-बुद्धि में कई तरह के संकल्प उत्पन्न हो रहे हैं...।

परन्तु बच्चे, आप बच्चों की मोहब्बत में समा आपका बाप आपको एक ही बात कहता है कि हर तरह के संकल्प बाप को समर्पण कर दो।
बाप अपने हर बच्चे को खुश देखना चाहता है...।

देखो, लौकिक में भी critical समय, किसी भी परिस्थिति का बिल्कुल थोड़ा-सा ही होता है ... बस उस समय बिल्कुल थोड़ा-सा ही धीरज रखने पर विजय हो जायेगी।

इसलिए बच्चे, अपने बाप (परमात्मा पिता) के प्यार में समाये रहो...।

देखो, मैं अपने हर बच्चे के संग हर पल हूँ, चाहे वो मुझे अनुभव ना भी करें, परन्तु मैं हर पल साथ निभा रहा हूँ...।

जो बाप के सिकीलधे, लाडले बच्चे होते हैं, यदि वो थोड़ी-सी भी problem में हों तो उनका बाप जी-हाज़िर हो जाता है...। इसी तरह इस अन्तिम घड़ी में मैं भी अपने हर बच्चे के साथ हर पल हूँ...।
अब तो परिवर्तन हुआ कि हुआ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
08.09.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, इस समय आपके संकल्पों की power बढ़ती जा रही है। आपका तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क और परिवर्तन की speed सब आपके संकल्पों पर अर्थात् जो आप बुद्धि द्वारा अनुभव करते हो, उसी पर निर्भर करते हैं।

जितना आप भरपूरता का ... सुख, प्रेम, शक्ति और आनन्द का अनुभव करते हो अर्थात् बाप की एक-एक बात पर निश्चय रख उमंग-उत्साह में रहते हो, उतनी ही परिवर्तन की speed, multiple हो जाती है...।

और आपके कमज़ोर संकल्प जोकि इस तमोप्रधान दुनिया के हैं, वो हर कार्य की positive speed को slow कर देते है।

जितना आप बाप पर निश्चय रखोगे, उतना ही आपको अभी से प्राप्तियों का अनुभव होना शुरु हो जायेगा...!
और परिवर्तन के बाद तो आनन्द ही आनन्द हो जायेगा...।

लेकिन होता क्या है...?
बाप (परमात्मा पिता) के प्यार में, बाप के according बुद्धि को चलाने की कोशिश करते हो और result बहुत जल्दी चाहते हो...!

और थोड़ा-थोड़ा result मिल भी रहा होता है परन्तु जल्दबाज़ी के कारण अपनी मन-बुद्धि को बाप की श्रीमत के साथ-साथ result में busy कर देते हो...!

जब मन-बुद्धि में दो संकल्प हो जाते हैं अर्थात् होना तो चाहिए, पर हो तो रहा नहीं...! तो result भी slow हो जाता है...।

अब जबकि किनारे पर पहुँच गये हो, तो एक ही संकल्प रखो ... कुछ भी हो, चाहे कितनी बड़ी problem हो, मुझे बाप पर 100% निश्चय रख अर्थात् किसी भी बात पर attention दिये बिना, खुश और उमंग-उत्साह में रहना है ... तो झटपट पार हो जाओगे अर्थात् अभी-अभी हो जायेगा...।

देखो, बाप आपको आप समान बना रहा है, तो आपको इस दुनिया के संकल्पों से 100% न्यारा होना पड़ेगा ना...!

परन्तु इसके लिए आपको करना कुछ नहीं है, बस जो भी संकल्प आये वो बाप को समर्पण करते जाना है और हर पल हल्के रहना है ... एक second के लिए भी भारी नहीं होना...।

देखो, बाप-समान post तक पहुँचने की सीढ़ी ही है, हल्के रहना...। और एक यही सीढ़ी है जो आपको बाप-समान बनायेगी, और हल्का वो ही रह सकता है जो मन-बुद्धि से समर्पित है और समर्पित आत्मा ही खुश है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
09.09.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा ने कहा...
देखो बच्चे, बाप आप बच्चों को सर्वशक्तिमान् बना रहा है।
फिर एक है सर्वशक्तिमान् और दूसरा है शक्तिमान्...।

• शक्तिमान् अर्थात् अपनी शक्तियों का अपनी कर्मन्द्रियों द्वारा किसी भी रीति प्रदर्शन कर positive रूप से आत्माओं का कल्याण करना...।

• और दूसरा है ... सर्वशक्तिमान् अर्थात् बाप-समान स्थिति अर्थात् बेहद की शक्तियाँ होते हुए भी सभी शक्तियों को स्वयं में समा लेना अर्थात् अपनी शक्तियों का प्रयोग सूक्ष्म रीति करना...।

देखो बच्चे, आपको आपका बाप स्वयं से भी ऊँचा बना रहा है और यह कार्य केवल मैं (परमात्मा शिव) ही कर सकता हूँ...।

आप बच्चों को इस तमोप्रधान दुनिया के बीच रख आपको सर्वशक्तिमान् बना देता हूँ ... अर्थात् सभी आत्माओं की कर्म कहानी को भली-भान्ति जानते हुए अर्थात् उनके संकल्पों में क्या चल रहा है, यह जानते हुए भी आप बिल्कुल शान्त स्थिति में स्थित रहते हो क्योंकि आपके अन्दर प्रेम की गंगा बह रही होती है...।

और आपको इस बात का भी ज्ञान है कि पाँच तत्वों के तन द्वारा अपनी शक्तियों को use करते ही हमारी सूक्ष्म शक्ति की कमाल बहुत कम रह जायेगी...।

इसलिए आप शान्त स्थिति में स्थित रह अपने संकल्पों की power द्वारा सभी आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनते हो।

जिसे जिस दिव्य गुण वा शक्ति की ज़रूरत होती है, उसे वही गुण और शक्ति का दान दें, उसके कल्याण के निमित्त बन जाते हो...।

देखो, तब ही तो बाप बार-बार कहता है कि अब अन्तर्मुखी बनो, ताकि आपकी सूक्ष्म सेवा की कमाल शुरु हो...।

बस बच्चे, जब आप अपनी सूक्ष्म शक्तियों की कमाल को भली-भान्ति जान लोगे अर्थात् आपके अन्दर से पूर्ण रीति acceptance आ जायेगी कि विश्व-परिवर्तन का कार्य तो इसी रीति होगा, तो आपका सम्पन्न स्वरूप आपको धारण कर अपना कार्य शुरु कर देगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
10.09.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

(आज बच्चों ने बाबा से पूछा ... बाबा, आप सारी दुनिया की आत्माओं से एक समान प्यार करते हो या हम बच्चों से ज्यादा...?)

तो बाबा ने कहा...
देखो बच्चे, मैं हूँ तो सभी का बाप ना..., इसलिए मैं सभी को एक समान प्यार करता हूँ...।

किन्तु मैं हूँ निराकार, जिस कारण मुझे कुछ एक आत्मायें ही भली-भान्ति पहचान, मेरे वर्से की अधिकारी बन पाती है ... अर्थात् मुझे अपना बाप मान मुझसे पुत्र का रिश्ता निभा, मेरे गुणों और शक्तियों की मालिक बन जाती है।

देखो, गायन है ना कि “जो करेगा, सो बनेगा...” और यही drama का नियम है और जो मुझ समान बनता है, वो ही मुझसे मिलन मना पाता है, अन्यथा मिलना असम्भव है...।

देखो बच्चे, मैं बाप हूँ प्यार का सागर किन्तु सागर में से प्यार हर आत्मा यथाशक्ति ही भर पाती है...!

किन्तु मैं सबका बाप हूँ ... इसलिए आप बच्चों को जो साकार रूप में हैं, उन्हें आप-समान बना सभी आत्माओं का कल्याण करता हूँ।

बच्चे, बाप (परमात्मा पिता) loveful के साथ-साथ lawful भी है और drama का यही नियम है कि “जो करेगा, सो बनेगा...” और “जो जैसे कर्म करेगा, वैसा फल पायेगा...” और इसी नियम के आधार पर drama चलता है।

मैं तो एक-समान ही सबको प्यार करता हूँ, किन्तु बच्चे लेने में नम्बरवार है...!

बाप का तो गायन ही एक का है ... आप स्वयं ही स्नेह के धागे में पिरो मेरे समीप आते जाते हो और जितने मेरे समीप आते हो, उतना ही मेरे समान बन जाते हो।

आप बच्चे तो बाप को भी अपने प्यार में बांध लेते हो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
11.09.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...

जिन बच्चों ने जबसे बाबा ने पढ़ाना शुरू किया है, तब से ही बाप की श्रीमत प्रमाण अपना तन, मन, धन, जन सफल किया है, उनकी प्रालब्ध का समय शुरू हो गया है अर्थात् उन्हें अपने किये गये त्याग का फल मिलना शुरू हो गया है और यह प्रालब्ध समय के साथ-साथ बढ़ती जायेगी...।

और जिन बच्चों ने बाप की श्रीमत प्रमाण चलने का पुरुषार्थ तो किया है, परन्तु अभी भी उनकी मन-बुद्धि पुरानी दुनिया में कहो ... माया में कहो ... रावण कहो ... खींचती है अर्थात् उन्हें अभी भी बार-बार स्वयं पर attention रखना पड़ता है, पुरानी दुनिया से मुक्त होने के लिए..., तो उन्हें light के अभ्यास की तरफ attention बढ़ाना पड़ेगा।

बार-बार मन-बुद्धि को बाप (परमात्मा पिता) के आगे समर्पण करना पड़ेगा, तब ही वो सहज रीति अपने परिवर्तन के कार्य को सम्पन्न कर पायेंगे।

इस समय आप सब बच्चे तमोप्रधानता के बीच में रह रहे हो, इस कारण कभी-कभी तमोप्रधानता का प्रभाव आता है। जिसे attention देते ही जो finish कर देते हैं, यह हैं numberone बच्चे...।
और उनके प्रालब्ध का समय भी शुरू हो गया है और जिन बच्चों को पुरानी दुनिया खींच रही है अर्थात् अभी भी उन्हें अपना attention और समय देना पड़ता है, बाप की श्रीमत पर रहने के लिए, तो उन्हें अभी light के अभ्यास की आवश्यकता है।

देखो बच्चे, परिवर्तन के कार्य की speed बहुत तीव्रता से कार्य कर रही है और जल्द ही यह कार्य finish हो जायेगा अर्थात् परिवर्तन हो जायेगा...।

जिस समय के लिए बाप (परमात्मा पिता) ने इतने लम्बे समय तक अर्थात् यज्ञ के आदि से ही बच्चों को पालना दें, पढ़ाई पढ़ा, पूरा स्नेह और सहयोग दिया ताकि बच्चे बाप-समान दुःखहर्ता-सुखकर्ता बन विश्व-कल्याण का कार्य कर सके...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
12.09.2018

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
आप बच्चे कहीं भी जाते हो, चाहे किसी भी position में हों, परन्तु इस समय 100% बाप (परमात्मा पिता) की छत्रछाया के नीचे हो अर्थात् बाप की light के shower के नीचे हो।
बस आप खुश रहो..., सभी बाप की श्रीमत प्रमाण चलते रहो...।

जो बच्चा स्वयं पर attention रखेगा अर्थात् बार-बार स्वयं को अपनी seat पर set कर अपना तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क सब बाप को समर्पण कर देगा, वो अपना number माला के नज़दीक बनाता जायेगा...।

बस अब परिवर्तन से पहले-पहले सब अपनी final seat पर set हो जायेंगे अर्थात् माला के मणके तो इकट्ठे हो गए हैं, बस अब माला ही बनानी है ... इसलिए सभी आत्मायें स्वयं पर full attention रखें।

स्वयं का attention ही स्वयं को माला के मणके के नज़दीक लायेगा...।

देखो, इस ईश्वरीय परिवार की सभी आत्मायें विशेष हैं ... और आपके समीप सम्बन्ध में आने वाली सभी आत्मायें भी विशेष हैं।

देखो, माला तो नम्बरवार है और यहाँ पर भी अर्थात् परिवार की सभी आत्माएं भी नम्बरवार हैं। कुछ आत्मायें तो जल्दी से जल्दी स्वयं पर attention रख अपना number आगे ले लेंगी और कुछ चमत्कार से चलेंगी, जिससे उनका number पीछे हो जायेगा...!

देखो, पुरूषार्थ तो सभी आत्माओं को करना है, परन्तु इस अन्तिम घड़ी में आपको attention रख number आगे लेना पड़ेगा क्योंकि अब बाहरी अर्थात् इस जन्म के थोड़े बहुत जो संस्कार emerge रूप में हैं, वो attention दे finish करने पड़ेंगे ... और थोड़ा-सा attention देते ही हो जायेगा, क्योंकि बहुत हल्के संस्कार हैं, जिसे बदलने में समय नहीं लगता परन्तु बदलेंगे attention देने पर ही..., attention ना देने पर अपना number पीछे कर लेंगे...।

इसलिए सभी attention दे, अपना number आगे लें अन्यथा पछताना तो पड़ेगा ही ना...।
अब तो final result out होने वाली है।

देखो, बस महसूस करो कि मैं एक बहुत ही shinning star हूँ ... ये body crystal की हो गई है .... मैं फरिश्ता बन उड़ रहा हूँ ... बस यह सोचते-सोचते ही आपका सम्पन्न स्वरुप आपको धारण कर लेगा और अनायास ही परिवर्तन हो जायेगा...।

देखो;

• काम, आनन्द में...
• क्रोध, शक्तियों में...
• लोभ, खुशी में...
• मोह, प्यार में...

और

• अहंकार, समर्पण में convert हो जायेगा...।

बस बिल्कुल निश्चिन्त और समर्पणबुद्धि रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
13.09.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा कि बाबा का कार्य बहुत speed से चल रहा है और बाप को अपने कार्य को सम्पन्न करने की जल्दी है, परन्तु साथ ही साथ स्थिरता अर्थात् शान्ति है, प्रेम है ... जिससे कार्य बिल्कुल accurate अर्थात् 100% successful और समय से पहले ही finish हो जायेगा...।

सम्पन्नता का कार्य बहुत speed से परन्तु सहज तरीके से हो रहा है, ताकि आप सहज और जल्द से जल्द अपने सम्पन्न स्वरुप को धारण कर स्वयं परिवर्तन सो विश्व-परिवर्तन का कार्य कर सको...।

निश्चिन्त स्थिति में स्थित रहो...। अब तो कार्य हुआ ही पड़ा है।

बस बच्चे, आप light का अभ्यास करते रहो और आपको कुछ नहीं करना...।

आप बच्चे हो परिवर्तन-कर्ता, तो बाप सबसे पहले आप बच्चों के परिवर्तन का कार्य करवाता है, जिससे आपका प्रभाव प्रकृति पर पड़ना शुरु होता है, और वो कार्य अब शुरु हो चुका है...।

और इस समय प्रकृति full force में परिवर्तन की तरफ चल रही है, जिस कारण वो हलचल में हैं और आप भी इस प्रकृति (प्रकृति अर्थात् पाँच तत्वों से बना यह तन...) के बीच में रहते हो, जिस कारण थोड़ा बहुत उसका प्रभाव आप पर पड़ जाता है...!

देखो, कोई भी चीज़ परिवर्तन होने से पहले वो full opposition करती है, उसके बाद ही वो परिवर्तन को स्वीकार करती है ... इसलिए आप निश्चय रखो, जिस भी कार्य की अभी ज़रुरत है वो हो रहा है, और जिस कार्य की कोई value ही नहीं उसे ठीक करने का कोई भी फायदा नहीं...।

क्योंकि आप बच्चों के तन के परिवर्तन के बाद सब कुछ परिवर्तन हो जायेगा और हर चीज़ आपके सामने नए रुप से आयेगी...।
बस निश्चय रखो...।
बच्चे, बाप को आपसे भी ज्यादा जल्दी है...।

बस महसूस करो कि एक powerful light की धारा मुझ पर आ रही है ... और मेरे through मेरे तन की सफाई हो रही है...।

देखो, जो difficult कार्य था, वो बाप ने कर दिया...। अब जो थोड़ा-सा सफाई का कहो ... परिवर्तन का कहो, कार्य है, वो यह light स्वयं ही कर देगी...।

अब यह कार्य हुआ ही पड़ा है ... अब सारा कार्य automatically हो जायेगा, क्योंकि process बहुत speed से चल रहा है...।

बाबा तो आप बच्चों की मोहब्बत में समा, आपको हर रोज़ पढ़ाई पढ़ा रहा है ताकि आप खुश रहो, अन्यथा कार्य तो होना ही है और ज़िम्मेवार कौन है...? स्वयं बाप (परमात्मा पिता)...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
14.09.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
देखो बच्चे, अब वो समय आ गया है कि आप कुछ एक बच्चों के संकल्प से पुरानी दुनिया का विधि पूर्वक परिवर्तन और नई दुनिया की स्थापना का कार्य होगा अर्थात् सभी आत्माएं चाहे वो अलौकिक हैं ... या लौकिक दुनिया की, सभी कल्प वृक्ष के अपने-अपने धर्म में नम्बरवार set होती जायेंगी, और उसी according सतयुग में आयेंगी...।

इसलिए, इस समय मैं आपका बाप आपके संकल्पों को ठीक रीति चलाने का direction दे रहा हूँ, ताकि आप अपना कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सको अर्थात् सम्पूर्ण रूप से सम्पन्न हो, बिना विघ्न के अपना कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न करो...।

देखो, बाप आप बच्चों के एक-एक संकल्प को जानता है और उसे यह भी पता है कि जीवन-मुक्त आत्मा ही सभी आत्माओं का कल्याण कर सकती है अर्थात् जब तक आप स्वयं की हर तरह की तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क की problem से बाहर नहीं निकलते अर्थात् 100% निर्बन्धन बन सम्पन्न नहीं बन जाते अर्थात् इच्छा-मुक्त नहीं बन जाते ... अर्थात् 100% संतुष्ट आत्मा ही सभी आत्माओं के कल्याण के निमित्त बन सकती है...।

और साथ ही साथ एक ज्ञानवान, बुद्धिमान आत्मा ही विधिपूर्वक, युक्ति-युक्त ढंग से अपना कार्य सम्पन्न कर सकती है...। क्योंकि यह कार्य कोई छोटा-मोटा कार्य नहीं है। सभी आत्माओं को मुक्ति और जीवन-मुक्ति का वर्सा देना है, वो भी नम्बरवार...।

बस बच्चे, अब बाप (परमात्मा पिता) के एक-एक बोल पर निश्चय रखो। इस समय आप तमोप्रधान दुनिया के according चलने वाली मन-बुद्धि की तरफ attention ना दे, बाप की बातों पर 100% निश्चय रख खुशी-खुशी अर्थात् उमंग-उत्साह से आगे बढ़ो...।

आप बच्चों ने तो अभी तक त्याग और तपस्या ही की है ... अब आपका बाप बस आपको आपकी seat पर set करने के बाद तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क किसी भी तरह की कोई भी problem आने ही नहीं देगा...! क्योंकि आगे तो आनन्द ही आनन्द है...।

यह problems जो आपको अनुभव हो रही है वो कुछ भी नहीं है। बस आपको अनुभवी-मूर्त ही बना रही है ... और साथ ही साथ इस समय जो directions आपको बाप दे रहा है, उसे अपनी बुद्धि रूपी तिजोरी में सम्भाल लो, ताकि आप उसे आने वाले निकटतम् समय में सफलतापूर्वक use कर सको...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
15.09.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा कि बाबा देख रहा था कि परिवर्तन का कार्य बहुत speed से चल रहा है...।

हर कोई अपना 100% दे भी रहा है और इच्छा भी एक ही है कि बस अब परिवर्तन हो जाना चाहिए...।

बच्चे, बाप की भी बस एक यही शुभ इच्छा है परन्तु बाप है knowledgeful, अर्थात् वो आप बच्चों को भी आप समान बना रहा है...।

Knowledgeful अर्थात् आत्मा और प्रकृति के पाँचों ही तत्व के कार्य करने की विधि को भली-भान्ति जानता है अर्थात् बाप को पता है आत्माओं को किस रीति परिवर्तन करना है और साथ ही साथ आत्मा के powerful अर्थात् गुणों से भरपूर संकल्पों से प्रकृति अर्थात् इस शरीर का परिवर्तन किस तरह करवाना है...!

बस, बाप की एक-एक बात को समझ इसे practical apply कर अपने को सहज से सहज रीति परिवर्तन करो...।

बस इस समय आपको अपनी समझ को practical use करना है।
जितना आप इसे use करोगे उतना ही आप powerful result अनुभव करोगे।

देखो, बाप की नज़र हर बच्चे पर है और बाप आपके एक-एक संकल्पों को जान उसी according आपको संकल्प दे रहा है...।

बस, आप हल्के रह एक-एक संकल्प को स्वयं पर practical apply करो ... इसमें अलबेले मत बनना, फिर ज़िम्मेवार बाप है...।

बच्चे, हर कार्य को सहज समझ और सहज ही मान कर करो।

देखो, मेहनत और मुश्किल word तो बाप की dictionary अर्थात् मन-बुद्धि में भी नहीं है, तो आप भी तो बाप-समान बच्चे हो...!

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
16.09.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, बाबा बार-बार कहता है कि बाप की समझानी अपनी बुद्धि रूपी तिजोरी में रख लो...।

अर्थात् इस समय आप बच्चों के बाप-समान संस्कार बन रहे हैं, जोकि पूरे कल्प चलते हैं।
चाहे इनकी percentage धीरे-धीरे कम होती जाती है, परन्तु अन्त के समय तक बीज तो रहता ही है ना, जिसे बाप (परमात्मा पिता) आकर फिर से प्रफुल्लित कर देता है...!

और जो संस्कार आत्मा के बन जाते हैं, उन संस्कारों को कार्य में आने के लिए मन-बुद्धि की आवश्यकता नहीं पड़ती अर्थात् वो naturally अपना कार्य करते हैं।
बस आप इस समय स्वयं पर checking रखो...।

देखो, इस समय आप तमोप्रधानता के बीच रह रहे हो, जिस कारण बाहर से कोई भी आसुरी बात आए उसे बाहर ही बाहर साफ कर स्वयं की seat अर्थात् बाप-समान seat पर set हो जाओ..., जिससे आपके संस्कार naturally ही कार्य करने लग जायेंगे...।

और इस समय बाप के संस्कार केवल विश्व-कल्याण के हैं ... अर्थात् एक-एक आत्मा और हर तरह की आत्मा का कल्याण करना।

बाप के संस्कार सो आपके संस्कार ... आपके संस्कार सो बाप के संस्कार...।

देखो, किसी भी चीज़ की भरपूरता हो तो उसके बारे में सोचा नहीं जाता और ना ही किसी को दिखाया जाता है...।
वो चीज़ तो अपने आप अपना कार्य करती है...।

अर्थात् जैसे ही आपका परिवर्तन हो जायेगा, आपकी vibrations naturally कार्य करेंगी...।

आप चाहे स्वयं को साधारण रूप में ही रखोगे, फिर भी आत्माओं को आपकी vibrations के द्वारा नम्बरवार साक्षात्कार होने शुरू हो जायेंगे।

बस आप तो अपने संस्कार के according ही कार्य करोगे। आपके कार्य करने की अर्थात् विश्व-कल्याण की भावना आपकी vibrations को बढ़ा कार्य की गति को तीव्र कर देगी..., जिससे दलदल में फँसती जा रही आत्माएं जल्द से जल्द नम्बरवार स्वयं को बचा, घर (परमधाम) को जायेंगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
17.09.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा ने कहा कि अब तो बच्चों की समझ में अच्छी रीति आ गया होगा कि सारा खेल संकल्पों का ही है ... वो भी natural संकल्प...।

अर्थात् जब आपके अन्दर से अर्थात् विश्वास के साथ कोई भी संकल्प निकलता है, तो वो सिद्ध हो जाता है...।

अब जबकि आपके संस्कार भी बाप-समान बनते जा रहे हैं, तो आपके सभी संकल्प सिद्ध होंगे...।

देखो, बाबा का जो वायदा है कि बाप आप बच्चों को बाप-समान बनायेगा ही बनायेगा..., वो वायदा पूरा करने के लिए बाबा को कई तरह की विधियां कहो ... युक्तियां कहो..., अपनानी पड़ती है...।

क्योंकि बाप को पता है कि तमोप्रधान दुनिया में रहते सतोप्रधान बनाने की यही एक विशेषतम् विधि है..., otherwise आत्मा का इस दुनिया में रहते बाप-समान बनना असम्भव है...!

क्योंकि इस समय तमोप्रधानता का प्रभाव स्वयं के ऊपर पड़ता रहता है और चारों तरफ से तो बाप के कार्य को रोकने का full force है ही है ... परन्तु बाप हर तरह की विधि को अपना, आप बच्चों को आप-समान बना ही लेता है...।

बाप (परमात्मा पिता) को आप बच्चों पर ही तो पूरा निश्चय है कि यही मेरे विजयी रत्न है..., चाहे कुछ समय के लिए हल्का-सा ऊपर-नीचे होंगे..., परन्तु फिर अपनी मंज़िल की तरफ speed से बढ़ना शुरू हो जायेंगे...!

और इस समय जो बच्चा बाप की बाप-समान बनाने की विधि को यथार्थ समझ अपने attention को 100% बनाये रखेगा, वो ही बाप-समान बनेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
18.09.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, आप सब बच्चे स्वयं को बाप-समान बना रहे हो, जोकि एक बहुत ऊँची मंज़िल है ... जिस पर आप अपनी power से ही पहुँच सकते हो...।

और बाप आप बच्चों का साथी, सहयोगी बन बहुत सहज रीति आपकी power के according आपको आपकी मंज़िल तक पहुँचाता है।
परन्तु चलना आपको ही पड़ता है...!

आप बच्चे जितना-जितना light का अभ्यास करते हो और बाप की याद में रहते हो, उतना ही आप बच्चों में powers आती जाती है, जिससे सहज ही आप अपनी मंज़िल पर पहुँचते हो...।

अच्छा, पॉवर कौन-सी...?
स्वयं को चेक कर स्वयं के संस्कारों को बाप-समान बनाने की...।

इसके लिए पहले तो स्वयं को परिवर्तन करने की acceptance चाहिए, तभी तो आप अपनी योग-अग्नि के द्वारा अपने कठोर संस्कारों को जला, हर संस्कार को एकदम soft बना, स्वयं को बाप-समान बना लेते हो...।

देखो, आप बच्चों का सम्पन्न स्वरूप प्रेम से भरपूर है ... तो इस समय आप बच्चों को भी loveful बनना है।

जितना-जितना loveful बनते जाओगे, उतना ही सहज होता जायेगा...।

बस बच्चे, स्वयं की बुद्धि ना चला, बाप की बुद्धि के according चलो..., जिससे सहज ही और बहुत ही जल्दी आप अपनी मंज़िल पर पहुँच जाओगे...।

देखो, आप अपने तन के मालिक हो और आपके सूक्ष्म से सूक्ष्म संकल्प का भी प्रभाव तन पर पड़ता है..., जितना आप flawless बनते हो, उतना ही आपका तन सहज ही flawless बन जाता है ... अन्यथा आप जितना मर्ज़ी योग लगाते रहो ... light का अभ्यास करते रहो ... किन्तु आपका एक भी सूक्ष्म-सा कठोर संस्कार, ना तो आपको आपकी मंज़िल तक पहुँचने देगा और ना ही आपका परिवर्तन होगा...।

बस, बाप की हर समझानी को सहज ही accept कर स्वयं को परिवर्तन कर, परिवर्तन-कर्ता बन विश्व-परिवर्तन का कार्य सम्पन्न करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
19.09.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, बाप चाहता है कि बच्चे हँसते, नाचते, हल्के रह खुशी-खुशी के साथ आगे बढ़ें...।

क्योंकि आपका यह रास्ता है ही संकल्पों का ... और जितना आप हल्के और खुश रहते हो, उतनी जल्दी ही आप मंज़िल पर पहुँच जाते हो...।

परन्तु जब आप अपनी मन-बुद्धि चला क्या, क्यों, कैसे में आ जाते हो, तो भारी हो जाते हो...!
जिससे आपकी speed slow हो जाती है।

देखो, बाप है त्रिकालदर्शी, जानीजाननहार और उसकी इस समय full नज़र आप बच्चों पर है और आप बच्चे ही तो बाप (परमात्मा पिता) का दिल हो..., फिर बताओ बाप आप बच्चों का ध्यान नहीं रखेगा तो किसका रखेगा...!

बस, आप स्वयं को बाप के आगे समर्पण कर दो अर्थात् जहाँ बिठायें ... जो खिलायें ... जहाँ भी ले जायें, वहाँ हल्के रह खुशी-खुशी से रहो...।

बाप को पता है कि इस बिल्कुल अन्तिम अर्थात् ना के बराबर जो समय रह गया है, इसमें केवल आप बच्चों की स्थिति अर्थात् आपका हल्का और खुश रहना अति आवश्यक है।

स्वयं को समय, संकल्प, हर चीज़ से निर्बन्धन कर बाप के प्यार के बन्धन में बाँध लो ... अर्थात् बाप पर 100% निश्चय रख आगे बढ़ो।

बाप आप बच्चों के according केवल आप बच्चों के कल्याणकारी बन आपको आपकी मंज़िल तक पहुँचा देगा, जिसमें ही सबका कल्याण समाया हुआ है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
20.09.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, बाप की हर पल नज़र आप बच्चों पर रही है ... रह रही है और रहेगी..., अर्थात् आपकी 100% ज़िम्मेवारी और आपके हर कर्म की भी ज़िम्मेवारी बाप की है।
बस आप बाप के according अपने संकल्प रखो ... ज्यादा सोचो मत...।

सोचना हो तो सोचो कि खुश कैसे रहें ... निश्चिन्त स्थिति, बाप-समान स्थिति में कैसे स्थित रहें...!

देखो, आपके साथ अर्थात् तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क में जो कुछ हो रहा है, वो एक process का part है, जिसमें से गुजरना भी आप बच्चों को पड़ेगा, चाहे बिना समय गँवाये अर्थात् सहज रीति गुजरो, चाहे तो अपने ही संकल्प चला-चला कर, सोच-सोच कर अर्थात् समय की अवधि बढ़ाकर गुजरो ... परन्तु इस रास्ते को तय आपको ही करना पड़ेगा...।

क्योंकि सम्पन्न स्वरूप अर्थात् आपकी ही शक्तियां आपमें आयेगी ही आयेगी...।

इसलिए आपको अपने को योग्य बनाना पड़ेगा और मन को भी 100% वैराग्य में लाना पड़ेगा अर्थात् हर तरह के question से free होना पड़ेगा अर्थात् बिल्कुल निश्चिन्त स्थिति ही आपकी मंज़िल है।

इस बात को समझो और अपना process finish करो, बाप भी आपकी इंतज़ार में ही है...।

बस, अब बिल्कुल शान्त रहो और चारों तरफ light ही light है - यह अनुभव करो...।

भगवान स्वयं अपनी seat देता है, अपनी seat पर स्वयं बिठाता है, ताज, तिलक देता हैं ... कितनी बड़ी बात है...!

जितने भी बच्चे हैं, इस समय सब बाप-समान है। इसलिए अब सभी points में 100% marks लो ... बस अपने संकल्प और बोल पर ध्यान दो ... अन्त की प्राप्ति 100 सतयुग के सुख से भी ज्यादा है - 'कहाँ सोना ... कहाँ डायमण्ड', उसकी प्राप्ति समुद्र से भी ज्यादा है...!

देखो बच्चे, बाप स्वयं आकर इस ईश्वरीय परिवार को sample बना विश्व के आगे प्रत्यक्ष करता है, तो ज़िम्मेवार भी बाप ही है ना...।

बस क्या, क्यों ना कर सर्व आत्माओं के लिए कल्याण की भावना रख, बाप हवाले करते जाओ...।

बाप तो एक second से कम समय में सभी आत्माओं को हल्का कर बाप-समान बना सकता है, परंतु इसमें बच्चों का कल्याण नहीं है और बाप तो विश्व कल्याणकारी है ... तो अपने बच्चों का तो कल्याण पे कल्याण ही करेगा ना...!

बस बच्चे, आप तो निश्चिन्त स्थिति में स्थित रह हर आत्मा को स्वभाव-संस्कार के साथ बाप हवाले कर दो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
21.09.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, अभी आप बच्चों की बाप-समान स्थिति नहीं है, परन्तु आप बच्चों ने स्वयं पर attention रख स्वयं को काफी ऊँचा तो किया है, पर बाप-समान स्थिति तो बिल्कुल निश्चिन्त स्थिति है...।
हर हाल में, हर पल खुश और बेफिक्र...।

आप बच्चों को संकल्पों से इस स्थिति में स्थित होना ही पड़ेगा, तब ही आपकी शक्तियाँ आपमें आयेगी...।

जैसे किसी भी post पर बैठने के बाद ही वो आत्मा उन शक्तियों को use कर सकती है, इसी तरह जब आप संकल्पों द्वारा इस तमोप्रधान दुनिया से न्यारे हो जाओगे, तब ही आपका परिवर्तन होगा।

जैसे किसी को 100% surety हो कि मेरी ही जीत होगी, तो उस समय वो पूरी खुशी और जश्न के साथ result की इंतज़ार में होता है..., इसी तरह जब आप बाप-समान स्थिति में स्थित हो जाओगे तो संकल्पों द्वारा अचल-अडोल स्थिति में स्थित हो अपनी सम्पन्नता को प्राप्त करोगे।

देखो, बाबा ने आते ही आप बच्चों की स्थूल दिनचर्या को परिवर्तन किया अर्थात् बाप ने कहा कि वो ही कार्य करो जो ज़रूरी है और सारे कार्य बाप को समर्पण कर दो...।

और अब जबकि वो समय आ गया है जबकि मन को अमन करना है अर्थात् मन में वो ही संकल्प उत्पन्न हों जो मुझे खुशी दे, उमंग-उत्साह में लायें और इस दुनिया से न्यारा करें...।

देखो, जब कुछ है ही नहीं और सब कुछ और सब कोई अच्छे हैं, तो किसी के बारे में सोचना, बोलना या समझानी देने की आवश्यकता ही नहीं है ... और यह संकल्प आपकी स्थिति को उपराम होने नहीं देता...।

बस बच्चे, बहुत धैर्यता के साथ अपने संकल्पों पर attention दो ... भारी नहीं होना है, परन्तु दृढ़तापूर्वक attention देना भी है, क्योंकि इसके result बहुत, बहुत, बहुत आनन्द देने वाले होंगे...।

क्योंकि आपके मन के अमन होने पर ही आपकी शक्तियाँ आपमें आयेंगी और वो full speed से परिवर्तन का कार्य शुरू कर देंगी।

थोड़ा-सा ही attention देने पर ही यह कार्य बहुत ही सहज रीति सम्पन्न हो जायेगा, क्योंकि इस समय आपका मन भी वो ही चाहता है जो आपका लक्ष्य है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti

22.09.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, बाप की हर पल नज़र आप बच्चों पर ही रही है। आप ही तो 100% बाप-समान बनने वाले ... और बाप को प्रत्यक्ष करने वाले ... बाप के विशेष बच्चे हो...।
फिर बाप आपकी सम्भाल नहीं करेगा, तो किसकी करेगा...!

बस बाप तो सहज से सहज रीति आपके बचे हुए थोड़े बहुत हिसाब-किताब पूरे करवाने के लिए आया है, जोकि बाप-समान post पर बैठने के लिए अति आवश्यक है।

इसलिए, आप बेफ्रिक रहो ... आपका शिव बाप आपके साथ है, और बहुत ही जल्दी अर्थात् बहुत ही थोड़े समय में कहो, अचानक कहो, किसी भी समय कहो, आपको प्रकृतिपति बना देगा...।

और जब आप प्रकृतिपति बन जाओगे अर्थात् जब आप प्रकृति के मालिक बन जाओगे तो सभी आत्माओं के साथ-साथ प्रकृति के पाँचों ही तत्व आपकी सेवा में हाज़िर हो आपकी जी-हज़ूरी करेंगे।
बस बच्चे, आप तो बाप के नयनों में समाए रहो...।

फिर बच्चों ने बाबा से पूछा ... बाबा, क्या हमारे ज्ञान को science prove नहीं करेगी...?

तो बाबा ने कहा...
बच्चे, prove उसे किया जाता है, जो प्रत्यक्ष ना हो...! परन्तु आप जब स्वयं प्रत्यक्ष हो जाओगे, तो सब कुछ स्वयं ही prove हो जायेगा...।

क्योंकि उस समय आप बच्चों का full connection केवल मेरे साथ ही होगा, अर्थात् आप बाप-समान बच्चे, जो बोलोगे, वो सत्य ही होगा...। उसे सिद्ध करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी...। प्रत्यक्ष को प्रमाण की ज़रूरत नहीं होती...।

इसलिए, कुछ भी होता रहे, चाहे स्वयं के द्वारा ... दूसरों के द्वारा ... या किसी भी तरह की कोई भी बाहरी बात आये, सब कुछ मन-बुद्धि द्वारा छोड़ते जाओ...।

देखो बच्चे, बाप आप बच्चों के परिवर्तन की इंतज़ार में ही है और जब आप खुश और हल्के रह light ही light है ... light ही light है ... अर्थात् सारा दिन बहुत प्रेमपूर्वक, पवित्र light को स्वयं में समा चारों ओर भी light ही light फैलाते रहते हो, तो यही light का अभ्यास आपको, सभी जीव-जन्तु, प्रकृति और वातावरण का परिवर्तन कर सतोप्रधान बना देता है।

इसलिए बच्चे, निश्चिन्त रह, यह अभ्यास करते रहो ... आपका बाप हर पल आप बच्चों के साथ ही है।

कुछ भी करो, किसी भी चीज़ की मना नहीं है...। परन्तु यह अभ्यास अति-अति आवश्यक है...।

परिवर्तन light के अभ्यास पर ही depend है।

देखो बच्चे, परिवर्तन तो होना ही है और करने वाले भी आप ही हो। बस यदि आप attention दे यह light का अभ्यास करते हो तो परिवर्तन झटके से हो जायेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
23.09.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा कि बच्चे, बाप-समान स्थिति अर्थात् उपराम स्थिति और आप तो बाप से भी ऊँचे बनते हो अर्थात् इस तन में रहते और सारे कर्म व्यवहार में आते, इन कर्मेन्द्रियों से न्यारे अर्थात् अपनी स्थूल कर्मेन्द्रियों को भी स्वेच्छा से कम से कम use करते हो और साथ ही साथ अपनी सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों को भी control में ले आते हो...।

अर्थात् स्थूल कर्मेन्द्रियाँ, सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों पर प्रभाव नहीं डालती, जिससे आपका सूक्ष्म मन, जिसे आप sub-conscious mind कहते हो, वो स्थूल रीति भी अपना कार्य शुरु कर देता है...।

अर्थात् आपकी शक्तियों और आपके बीच जो पर्दा है, वो खत्म हो जाता है और आप बाप से भी अधिक powerful बन जाते हो, क्योंकि आपके पास इस पूरे कल्प का पूरा experience होता है।

बस बच्चे, अब तो एक ही संकल्प करो कि ‘‘हुआ ही पड़ा है’’ ... ‘‘कुछ भी नहीं है और सब कुछ अच्छा है’’ - इन दो संकल्पों की natural nature ही इस तीसरे संकल्प अर्थात् ‘‘हुआ ही पड़ा है’’ की विजय है...।

इसलिए, अब आप बच्चों की मन-बुद्धि मुक्त अवस्था में आ जायें अर्थात् इस तमोप्रधान दुनिया के समय, सम्बन्ध, कर्म-व्यवहार ... हर कुछ निभाते हुए भी सबसे न्यारे और स्वयं और स्वयं के बाप (परमात्मा पिता) के original स्मृति में मस्त अर्थात् मैं भी light ... बाप भी light और सब कुछ light ही light है...। यह light का अभ्यास ही आपकी सूक्ष्म और powerful शक्तियों को आपसे मिला देगा...।

बस धैर्यतापूर्वक attention दे, अपने मन को अमन करो। सहज समझने से सहज ही यह कार्य सम्पन्न होगा और करना भी आप बच्चों को ही है और खुशी-खुशी रह अपनी मंज़िल को अपने सम्मुख जान और मान अपनी powerful powers को स्वयं में अनुभव करो।
शिव बाप हर पल आप बच्चों के साथ है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
24.09.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, आप बच्चों के परिवर्तन का process चल रहा है अर्थात् दिव्य light आपके परिवर्तन का कार्य कर रही है...।

आपका एक-एक संकल्प भी light है ... और जब आपके संकल्प खुशी के, उमंग-उत्साह के और गुणों से भरपूर होते हैं, तो परिवर्तन की speed तीव्र हो जाती है और जब आप भारी होते हो, उदास हो जाते हो, दिलशिकस्त हो जाते हो, चिन्ता या डर के संकल्प अर्थात् किसी भी तरह का, कोई भी negative संकल्प परिवर्तन के process को slow कर देता है...।

आपके सूक्ष्म से सूक्ष्म संकल्प का भी प्रभाव पड़ता है, इसलिए स्वयं पर attention रखो।

देखो, यदि कोई अचानक ही ऐसा-वैसा संकल्प आ जाये, तो उसे झट से बिन्दु लगा अपनी seat पर set हो जाओ।

यह कार्य तीव्रता से हो रहा है..., बस आपको दिखाई नहीं दे रहा...! परन्तु जल्दी ही आपका आश्चर्यजनक परिवर्तन हो जायेगा जोकि बिल्कुल अचानक होगा...।

देखो, बाप (परमात्मा पिता) आप बच्चों के साथ है ... इसे छोटी बात मत समझ अपने भाग्य के गीत गाते रहो ... खेलो, हँसो, नाचो, गाओ अर्थात् बेफिक्र रहो, खुश रहो, आबाद रहो...।
अपने जीवन के हर पल को enjoy करो ... बस अब आनन्द ही आनन्द है...।

जब आप निश्चिन्त रहते हो तब ही आप हल्के रह light का अभ्यास कर सकते हो।

(light का अभ्यास अर्थात् मैं भी light ... बाप भी light ... और चारों तरफ बस light ही light है ... अर्थात् जो कुछ भी इन आँखों से देखते हो और महसूस करते हो ... सब light है...)

देखो, अब किसी भी बात में कोई सार नहीं रहा, चाहे आपको पता नहीं चल रहा, परन्तु बाप तो सब देख रहा है...!

जैसे एक काली रात में चलता मुसाफिर सुबह की इंतज़ार में होता है, परन्तु वो अधिकतम् रात का काला समय नई सुबह का शुभ सन्देश लेकर आता है, जिसे मुसाफिर नहीं जानता...!

लेकिन यहाँ स्वयं बाप आपको सब बता रहा है कि बस बच्चे, परिवर्तन की नई सुबह शुरु होने ही वाली है।
इसलिए निश्चय रख, निश्चिन्त रह आगे बढ़ो, परिवर्तन भी आपकी इंतज़ार में ही है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
25.09.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
देखो बच्चे, मैं हूँ परमपिता शिव अर्थात् सभी आत्माओं का कल्याण करने वाला, कल्याणकारी पिता अर्थात् मैं ही सभी आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनता हूँ ... और रहता सबसे न्यारा हूँ अर्थात् 100% प्रभावमुक्त ... अर्थात् मैं सभी गुणों और शक्तियों से भरपूर हूँ...।

परन्तु इनके विपरीत मुझमें कुछ भी नहीं है, अर्थात् मैं सबकुछ जानते हुए भी अनुभव रहित हूँ।

देखो, आप बच्चे पूरे कल्प में part play करते हो और आपको पूरे ज्ञान के साथ-साथ full अनुभव भी है अर्थात् सुख के साथ दुःख ... खुशी के साथ गम ... मीठे के साथ कड़वा ... अच्छे के साथ बुरा ... अर्थात् हर तरह का अनुभव है और अनुभव वाली आत्मा ही पूरी तरह गिरी हुई आत्माओं का कल्याण कर सकती है...।

बस बच्चे, अब आप सतोप्रधान दुनिया लाने वाले हो, सो सतोप्रधान अनुभव भी करो...।

देखो, अभी आप बच्चों का cleansing process चल रहा है, जिस कारण आपके हर जन्म के किये गये negative अनुभव बाहर आ रहे हैं।

इसलिए, उन्हें क्या, क्यों किये बिना ... सहज रीति बाहर आने दो और positive अनुभव से स्वयं को सम्पन्न कर लो।

बाप आप बच्चों के समीप ही है...। बस सारा कार्य हुआ ही पड़ा है ... अब यही अनुभव करो...।

बस, आप 100% निश्चिन्त रह बाप की एक-एक बात पर 100% निश्चय रख, बाप की श्रीमत प्रमाण अपनी seat पर set रहने का attention देते रहो ... यह attention ही आपके present स्वरूप और आपके ही original स्वरुप के बीच का पर्दा उठायेगा.
बस, light का अभ्यास करते रहो...

(light का अभ्यास अर्थात् महसूस करो कि चारों तरफ light ही light है ... बस light ही light है ... मैं आत्मा अपने घर में हूँ ... परमधाम अपना घर केवल light ही light का है ... हज़ारों सूर्य से भी तेजोमय light ही light है ... यह light सुख, शान्ति, शक्ति, पवित्रता अर्थात् सभी गुणों से भरपूर है...)

देखो, अब आप बच्चों के अन्दर इतनी अधिक बाप की याद समा गई है कि आप सूक्ष्म रुप से भी बाप (परमात्मा पिता) के साथ का अनुभव करते ही रहते हो अर्थात् unconsciously भी आप बाप की याद में खोये रहते हो, जो आपको पता ही नहीं चलता...!

इसलिए बिल्कुल निश्चिन्त स्थिति में स्थित रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
26.09.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, इस तमोप्रधान दुनिया में जो कुछ इन आँखों से देखते हो, उसमें कोई सार नहीं है...। इस समय आँखों से दिखने वाली हर चीज़ बेमोल (valueless) है।

तमोप्रधान दुनिया की हर चीज़ तमोप्रधान होने के कारण आप बच्चों को तमोप्रधानता की तरफ ही लेकर जाती है ... इसलिए इनके बीच में रहते, इनकी देख-रेख करते, मन-बुद्धि से इन सब चीज़ों से न्यारे हो जाओ...।

देखो, अब आप बच्चों के अन्दर ऐसी शक्तियाँ आने ही वाली है कि आप रचता बन इस तमोप्रधान दिखने वाली हर चीज़ को ... चाहे वो तन है ... धन है ... वस्तु है ... को सतोप्रधान बना, उन्हें अपने use में लाओगे...।

परन्तु उससे पहले आपको यह समझना पड़ेगा कि इन चीज़ों का हमारे जीवन में कोई मूल्य नहीं है ... अर्थात् इनके होने या ना होने पर हमारे पर कोई असर नहीं पड़ता...।

और देखो, आपके तन और धन का रखवाला स्वयं शिव बाप है ... चाहे तन या धन थोड़ा ऊपर-नीचे हुआ हो..., परन्तु आप इन सब चीज़ों से भरपूर रहोगे - यह बाप (परमात्मा पिता) का आप बच्चों से promise है।

इसलिए बच्चे ... आप निश्चिन्त रहो, हल्के रहो, खुश रहो...। आपका बाप आप बच्चों के संग ही है और यह परिवर्तन का कार्य स्वयं बाप कर रहा है, जिसे किसी भी तरह की कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती...।

Light, जो सभी गुणों और शक्तियों की जननी कहो, परिवर्तन की शक्ति कहो, हैं ... और यह light आपके परिवर्तन के साथ-साथ आपके देह के भी परिवर्तन का कार्य शुरु कर चुकी है, जिसे अब कोई रोक नहीं सकता...!

जैसे पानी अपना रास्ता बना लेता है, उसी तरह यह light भी हर रुकावट को cross कर परिवर्तन का कार्य कर रही है ... और जब आप स्वयं भी light का अभ्यास करते हो, तो जैसेकि आप परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बन जाते हो।
फिर कार्य सहज और जल्दी हो जाता है, अन्यथा होना तो है ही...।

बस बच्चे, आप हल्के रह यह अभ्यास करते रहो, अपने प्रति single और छोटा-सा भी संकल्प कमज़ोरी का ना हो...।

"आप ही हो माना आप ही हो, बाप-समान...।"

बस निश्चय रख निश्चिन्त रहो..., फिर जल्दी ही आपका सम्पन्न स्वरूप आपको धारण कर लेगा, जिससे आप सम्पूर्ण और सम्पन्न बन जाओगे...।

आपका सम्पन्न स्वरूप भी आपकी देह के परिवर्तन की इंतज़ार में ही है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
27.09.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, अब समय और स्थिति प्रमाण आपके संकल्पों से मैं, मेरा, तेरा, छोटा, बड़ा, अच्छा, बुरा ... किसी भी तरह का कोई भी डर, यह सब संकल्प निकल जाने चाहिए ... अर्थात् इस तमोप्रधानता के बीच रहते स्वयं पर बार-बार attention दे, स्वयं के संकल्पों को इन सबसे मुक्त करो...।

अर्थात् किसी भी तरह की कोई भी परिस्थिति जोकि तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क की है ... यह कुछ भी नहीं है - ऐसा सोच light के अभ्यास में रमण करो अर्थात् स्वयं को सम्पन्न स्वरूप के साथ अनुभव करो ... बार-बार अनुभव करो कि मैं फरिश्तों की दुनिया में फरिश्ता हूँ, जहाँ केवल प्रेम, आनन्द और सुख ही सुख है ... कोई भी तरह का, कोई भी भेदभाव नहीं है। सब एक हैं...।

देखो, जब आप स्वार्थ भाव में आ जाते हो तो आप हद में फँस जाते हो और आपका सम्पन्न स्वरूप बेहद में है और उसका आपके साथ आकरके रहना, वो भी इस तमोप्रधान दुनिया में, यह कोई छोटी सी बात नहीं...!

इसके लिए आपको अपने संकल्पों को 50% तक तो उसके समान बनाना ही पड़ेगा अर्थात् बार-बार स्वयं के संकल्पों पर attention रख स्वयं के संकल्पों को बेहद में करना पड़ेगा, जिससे ही आपके और उसके बीच अभी के समय प्रमाण जो minor सी दूरी रह गई है, वो finish हो जायेगी।

जैसे आप बच्चे मास्टर सर्वशक्तिमान् वा अन्य किसी भी स्वमान का अभ्यास करते हो, तो स्वयं में परिवर्तन भी अनुभव करते हो...।

इसी तरह अब आप जब स्वयं के साथ सम्पन्न स्वरूप को अर्थात् अपने फरिश्ता स्वरूप को बार-बार अनुभव करोगे, तो वो जल्द ही आपके साथ आ मिलेगा ... और जो शक्तियों का आप attention रखते हो वो permanent आपकी हो जायेगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
28.09.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
जब बच्चे problem में होते हैं तो सोचते हैं ... बाबा कठोर है, वो drama के नियम में बंधा हुआ है, वो हमारे लिए कुछ नहीं करते...!

किन्तु बच्चे यह drama बना हुआ है कि आप अपने हिसाब-किताब स्वयं ही clear कर और इस तमोप्रधान दुनिया के बीच रहते प्रकृति और आत्माओं का भी कल्याण कर ... अर्थात् सभी challenges का सामना करते हुए भी सभी आत्माओं का और प्रकृति को प्रेम और रहम के भाव से परिवर्तन कर दोगे...।

इसी तरह विश्व की सभी आत्माएं भी स्वयं ही स्वयं के हिसाब-किताब clear करती है।
इसके बीच में कोई भी, किसी भी तरह का interfere नहीं कर सकता, क्योंकि इससे उन आत्माओं का ही अकल्याण अर्थात् हिसाब-किताब रह जाता है, जिसे बाद में चुक्तू करना अत्यधिक मुश्किल हो जाता है...।

देखो, भगवान के लिए गायन है कि "भगवान् के घर देर है, अंधेर नहीं..."
अर्थात् आत्माओं को सिर्फ अपने अच्छे कर्म और भक्ति का फल पूरा ही नहीं मिलता, बल्कि बिल्कुल अंत के समय भगवान् के घर से इतना भरपूर मिल जाता है कि आत्मा गदगद हो जाती है और उसके अन्दर भगवान् के प्रति इतनी भावना बैठ जाती है कि वो जब भी दुःख में होती है तो वो भगवान् को ही याद करती है...।

देखो, बाबा बार-बार आपको एक यही समझानी दे रहा है, ताकि आपके अन्दर तक ये बात समा जाए। बस, अब आप अपनी seat पर set रह संकल्पों द्वारा सबके प्रति शुभ भाव तो रखो ही, किन्तु उनके हिसाब-किताब clear करने की विधि से भी साक्षी हो जाओ...।

आपके अपनी seat पर set होते ही हिसाब-किताब clear करने की speed तीव्र हो जाएगी।

इसलिए बस अब आप कोई भी डर का या हल्का संकल्प ना लाओ। आपका बाप (परमात्मा पिता) आपके साथ खड़ा है। जो भी होगा ... बहुत अच्छा होगा।

बस, आप तो स्वयं को ठीक रखो, बाकी सारा कार्य तो बाप स्वयं कर देगा।

स्वयं को ठीक रखो ... अर्थात् बस, स्वयं को high vibrations में रखो अर्थात् बस positive संकल्पों में रखो और साथ ही अत्यन्त खुशी में और अब सारे पूराने संकल्पों को छोड़ दो।

देखो, यह सारा खेल vibrations का ही है अर्थात् संकल्पों का ही है। बस अब सारे संकल्प उम्मीदों से और खुशियों से भरपूर हों। खुशी से भरपूर आत्मा ही सबको खुशी दे सकती है और अब तो आपकी खुशी भी आनन्द में परिवर्तन होने वाली है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
29.09.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
बच्चे, बाप समय के अनुसार आप बच्चों को संकल्प देता है अर्थात् आपके संकल्पों की लहर को परिवर्तन कर देता है।

अब जबकि सारा कार्य और सारी समझानी complete हो गई है अर्थात् परिपक्व अवस्था बन गई है और अब वो समय है जबकि आप सम्पन्न बनने ही वाले हो ... तो आपको सर्व प्राप्तियों से भरपूर रहना है अर्थात् अब आपको खुशी से भरपूर रहना है...।

अब कल्प का वो समय आने वाला है, जो आप बच्चों के लिए अत्यधिक अर्थात् most, most, most valuable है ... अर्थात् हीरे तुल्य समय जोकि पूरे कल्प में नहीं मिलेगा ... चाहे आप सतयुग में होंगे ... स्थूल प्राप्तियों से भरपूर होंगे परन्तु इस हीरे तुल्य जन्म अर्थात् इस एक ही जन्म में दूसरा जन्म होगा जोकि maximum अर्थात् संकल्प और स्वप्न से भी बाहर ऐसी स्थूल प्राप्तियां भी होगी और सूक्ष्म प्राप्तियों का तो कहना ही क्या...! बाप किन शब्दों में आपके आनन्द को explain करें..., परन्तु बच्चे वह समय most wonderful होगा ... बस आप खुशी से झूमते रहो...।

देखो, यह कार्य भी यहाँ से ही शुरु होगा और आप सब मेहनत मुक्त हो जाओगे अर्थात् इस तमोप्रधान दुनिया के जो दुःख हैं, अशान्ति है, दर्द हैं ... वो खत्म हो जायेंगे अर्थात् अभी तक आप निश्चय के आधार पर धैर्यतापूर्वक चल रहे थे, अब इन गुणों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी ... आपके आगे सारा रास्ता clear हो जायेगा अर्थात् आप natural गुण स्वरूप बनना शुरु हो जाओगे।

जैसे station पर train की wait होती है ... पर train पर बैठ जाने पर एक राहत की महसूसता होती है ... इसी तरह आप train में बैठ जाओगे और यह train, non-stop उड़ती हुई आपको आपकी मंज़िल पर पहुँचा देगी...।

बस बच्चे, पूरे उमंग-उत्साह के साथ नाचते-गाते रहो...।
आप सब बच्चे 100% निश्चिन्त रहो। सभी बहुत उमंग-उत्साह के साथ अर्थात् high vibrations के साथ अपने-अपने कार्य को सम्पन्न करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
30.09.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, बाप सभी कुछ देख भी रहा है और आप बच्चों की पुकार सुन भी रहा है और साथ ही साथ बाप आप बच्चों के सच्चे दिल को भी जानता है और बाप सब कुछ अनुभव भी कर रहा है...।

परन्तु बाप को पता है कि बच्चों को इस process से निकालना ही पड़ेगा और इसमें केवल बच्चों का ही कल्याण समाया हुआ है...।

बस बच्चे, अब light का अभ्यास करते रहो। जल्दी ही यह light परिवर्तन का कार्य कर देगी...।

(light का अभ्यास अर्थात् महसूस करो कि मेरे चारों तरफ light ही light है ... बस light ही light है ... मैं आत्मा अपने घर में हूँ ... परमधाम, अपना घर केवल light ही light का है ... हज़ारों सूर्य से भी तेजोमय light ही light है ... यह light सुख, शान्ति, शक्ति, पवित्रता अर्थात् सभी गुणों से भरपूर है...)

बस बच्चे, अपने सम्पन्न स्वरूप को साथ रखने का attention रखते चलो। जितना आप attention रखोगे उतना ही आपका तन, मन और बुद्धि उसके समान बनती जाएगी, अर्थात् आप अपने सम्पन्न स्वरूप को स्वयं में धारण करने के capable हो जाओगे।

और धीरे-धीरे ऊपर की light, अर्थात् आपके सम्पन्न स्वरूप की light नीचे सब परिवर्तन कर देगी..., और उसके आने के बाद तो आपकी प्राप्तियां शुरु हो जाएगी।

देखो, बाप आप बच्चों को समय के अनुसार ही संकल्प देता है। अब जबकि आपका सम्पन्न स्वरूप आपके आस-पास ही है और उसकी light अपना कार्य भी कर रही है, बस आपके थोड़ा-सा ही attention रखने पर यह कार्य भी सम्पन्न हो जाएगा...।

बच्चे, निश्चयबुद्धि विजयन्ति, अर्थात् बाप पर सम्पूर्ण निश्चय रखने वाले बच्चे ही विजयी बनते है और जिनके बनते ही विश्व-परिवर्तन का कार्य शुरु हो जाता है...।

इसलिए, अब स्वयं के स्वभाव-संस्कार को कोमल बना लो। सुनते हुए भी ना सुनो, देखते हुए भी ना देखो, अर्थात् स्वयं का attention बाबा की याद पर ही रखो, फिर हर कार्य सहज हो जाएगा...।

देखो, जितना आप अपना स्वभाव soft बना लोगे, अर्थात् कुछ भी होने पर झट से ''कुछ भी तो नहीं है...'' - ये संकल्प आते ही किसी भी परिस्थिति में adjust हो पाओगे, अन्यथा हलचल में आ जाते हो...!

देखो, यदि कोई भी चीज़ soft हो और उसमें moulding power हो, तो वह easily adjust हो जाती है, अन्यथा adjust तो होनी ही है ... चाहे थोड़ा ऊपर-नीचे करके adjust हो।

इसलिए light का अभ्यास अति आवश्यक है। केवल स्वयं पर attention रख light का अभ्यास करते रहो, यही अभ्यास परिवर्तन की सूई है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
01.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, जैसे ही आप सम्पन्न बन जाओगे वैसे ही आपकी vibration सूक्ष्म और स्थूल रूप से अपनी कमाल दिखानी शुरू कर देगी ... और जो-जो आत्मायें आपके कहो या बाप (परमात्मा पिता) के कार्य में सच्चे दिल से सहयोगी बनी है या जाने-अनजाने भी सहयोगी बन गई है, नम्बरवार उन पर आपकी vibration कमाल करेगी ... अर्थात् उनकी शुभ इच्छायें पूर्ण होनी शुरू हो जायेगी...।

उस समय आपके अन्दर हर second की full acceptance होनी चाहिये, चाहे कोई आत्मा इस समय कैसी भी है और चाहे कितना भी दुःख उठा रही है या अपने part के according सुख भी उठा रही हो - full acceptance ... क्योंकि इस drama के नियम बाप ने और आप बच्चों ने मिलकर बनाये थे...!

अब जबकि आप परिवर्तन के बाद भी इस तमोप्रधान दुनिया में ही रहोगे और आप इसके full अनुभवी-मूर्त भी हो और साथ ही साथ प्रेम और रहम से भरपूर भी ... फिर भी आपके अन्दर full acceptance होनी चाहिये, वो भी धैर्यता के साथ...।

देखो, आपके अन्दर loveful के साथ साथ lawful का full balance होना चाहिये, अर्थात् आप धैर्यतापूर्वक हर आत्मा के लिए शुभ-भावना, शुभ-कामना से तो भरपूर रहोगे ही, साथ ही साथ उनके part से second में साक्षी हो जाओगे ... इसी में उन आत्माओं का कल्याण समाया हुआ है।

बच्चे, बाप तो हर रूप में अंत तक आप बच्चों के साथ ही है, बस आप अपने अन्दर धैर्यता और acceptance के गुण को समा लो...।

देखो, जो बाप ने कहा है कि आप तैयार रहो, तो बाप ने ऐसे ही नहीं कहा है...! बस आप हल्के रहो...।

देखो, जो आपने इतने समय से बाप की श्रीमत् प्रमाण light का अभ्यास किया है और इस अभ्यास ने परिवर्तन का कार्य भी काफी कर दिया है, अब थोड़ा-सा ही रह गया है अर्थात परिवर्तन का कार्य finish होते ही आप बच्चे स्वयं में एक विशेष परिवर्तन अनुभव करोगे।

इसलिए आप निश्चिन्त रहो, हल्के रहो...। बाप की हर बात पर 100% निश्चय रखो ... बाप क्या नहीं कर सकता अपने सकीलधे बच्चों के लिए...!
बस आप खुश रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
02.10.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, समय तो आगे बढ़ता जा रहा है परन्तु जिन बच्चों ने attention दे स्वयं को बाप के द्वारा बताए गए दो संकल्पों में अर्थात् "कुछ भी तो नहीं है ... और ... सब कुछ बहुत अच्छा है" स्थित कर लिया है अर्थात् हर हाल में बेफिक्र बादशाह बनने का attention दे रहे हैं अर्थात् बाप की एक-एक बात का regard रख स्वयं के संकल्पों को अचल-अडोल बनाने का attention दिया है, वो तो बहुत ही जल्द बाप-समान स्थिति में स्थित हो जायेंगे अर्थात् नॉलेजफुल बन जायेंगे, जिससे ही उनकी powers उनको मिलनी शुरू हो जायेगी और वो उड़ते-उड़ते powerful बन बाप-समान बन जायेंगे...।

और अन्य बच्चे निश्चय-बुद्धि होते हुए भी बाप के द्वारा दिए गए संकल्पों का regard ना रखने के कारण उन्होंने स्वयं को पीछे कर लिया है...!

बच्चे, बाप समान स्थिति में स्थित होने के लिए attention और अभ्यास की full ज़रूरत है। कोई भी आत्मा बिना attention रखे या अलबेले रह या इस तमोप्रधान दुनिया को enjoy कर बाप-समान नहीं बन सकती...!

बाप-समान बनने के लिए इस तमोप्रधान दुनिया में रहते इससे वैराग्य चाहिए, जो मेरे दिलतख्तनशीन, नूरे-रत्नों में आ चुका है अर्थात् वो हर हाल में संतुष्ट हैं, खुश हैं और जल्द ही powerful बन औरों के कल्याण के निमित्त बन जायेंगे...।

इसलिए बच्चे, जो भी कार्य करना है, कर लो ... परन्तु सोच-सोच कर उसमें अपनी मन-बुद्धि मत लगाओ। संकल्पों के द्वारा इस दुनियावी हर कार्य से न्यारे होते जाओ। आपका न्यारापन ही आपको उड़ाकर उस पार ले जायेगा...।

देखो, हर कार्य वैसे ही होगा जैसे होता आया है ... एक परसेन्ट भी परिवर्तन अनुभव नहीं होगा...! जो तमोप्रधान दुनिया की हर चीज़ गिरावट में जा रही है, वो बढ़ती जायेगी, परन्तु परिवर्तन आपके परिवर्तन के बाद ही दिखने लगेगा।

इसलिए बाबा कहता है कि स्वयं को हर बात से न्यारा कर लो, अपनी मन-बुद्धि में शिवबाबा को बसा लो अर्थात् बाबा के एक-एक बोल, बाबा की याद आपके अन्दर समा जाये...।

जिस समय आप बाबा को भूल जाते हो या unconsciously कोई गलती हो भी जाती है, तो उस समय को भी भूल जाओ। केवल संकल्पों में बाप की याद और बाप से हुई प्राप्तियों की अर्थात् अपने भाग्य की भी खुशी रहनी चाहिए...।

देखो, सभी आपके परिवर्तन के ही इंतज़ार में हैं और यह कभी भी झटके से हो जायेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
03.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, powerful बनकर ही आप बच्चे प्रकृति के साथ-साथ सारे विश्व का परिवर्तन कर दोगे और यह कार्य बहुत system के साथ होगा ... अर्थात् पहले अलौकिक परिवार में और उसके बाद सारे विश्व के परिवर्तन का कार्य सम्पन्न होगा...।

बस बच्चे, इस विशाल परिवर्तन के लिए अत्यधिक धैर्यता की आवश्यकता है...।

देखो, आप सबको आपकी seat पर set करने के लिए बाप कितनी युक्ति-युक्त ढंग से, विधिपूर्वक, full patience के साथ कार्य सम्पन्न कर रहा है।
बस आपको भी इसी तरह विश्व-परिवर्तन का कार्य करना है...।

देखो, आपके सम्पन्न बनने के बाद इस दुनिया की किसी भी बात का या किसी भी चीज़ का, आप बच्चों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा ... अर्थात् आप संतुष्टमणि, इच्छा मुक्त, प्रभाव मुक्त आत्मा बन जाओगे और जिस आत्मा पर किसी भी बात का कोई भी प्रभाव ना पड़े, उसी आत्मा का प्रभाव अन्य आत्माओं पर पड़ता है और यह प्रभाव दिनों-दिन बढ़ता जाएगा...।

इसलिए बच्चे, पहले तो यह मानो कि जो सम्पन्न स्वरूप अर्थात् आपका फरिश्ता स्वरूप है, वो आप ही हो..., और वो समोप्रधान light से भरपूर है अर्थात् उसमें असीम गुण और शक्तियां है ... बहुत ज्यादा bright है...।

जिस तरह शिव बाप अपनी सारी शक्तियाँ मर्ज करके आता है, क्योंकि बाप को पता है कि तमोप्रधान तन में ताकत नहीं बाप (परमात्मा पिता) की एक परसेन्ट शक्ति को भी धारण करने की...!

इसी तरह आपका सम्पन्न स्वरूप भी बाप-समान ही है ... और जबकी अब परिवर्तन का ही समय है तो सम्पन्न स्वरूप कुछ शक्ति साथ लेकर आयेगा ही, जिसके लिए आपको अपने तन को कम से कम रजोप्रधान तो बनाना ही पड़ेगा...!

बाप तो जल्दी-जल्दी परिवर्तन कर दे, परन्तु आपकी मन-बुद्धि सहज रीति ही परिवर्तन को accept कर आगे बढ़ती है, क्योंकि परिवर्तन में हलचल तो होती ही है...।

अब जबकि परिवर्तन का कार्य होने वाला ही है, तो बस आप हल्के रह light का अभ्यास करते रहो..., पूरे तन में पवित्रतम् light अर्थात् गुणों और शक्तियों से भरपूर light को चलता हुआ महसूस करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
04.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
बच्चे, यह जो समय जा रहा है वो मेरे नूरे रत्न बच्चों के लिए कल्प परिवर्तन की अंतिम घड़ियां हैं, जिस कारण चारों तरफ से cleansing process चल रहा है अर्थात् स्वभाव-संस्कार, प्रकृति, माया, हर कोई विदाई ले आप सबको आपकी विजय की बधाई दे, आपके आगे जी-हज़ूर करने ही वाली है।

बस बच्चे, अब तो मंज़िल भी नज़र आ रही है ... अर्थात् स्वयं को भी अनुभव हो रहा है कि मैं हर चीज़ से न्यारा होता जा रहा हूँ...। मैं मालिक बन हर स्थिति - परिस्थिति को easily cross कर रहा हूँ...।

देखो बच्चे, मैं दुनिया वालों के लिए तो भगवान हूँ, केवल आप कुछ एक बच्चों के लिए ही बाप बन आप सबको अपने समान बना लेता हूँ और इस process में स्थूल रीति आप बच्चों की मैं कोई मदद नहीं करता ... मेरी मदद केवल सूक्ष्म रीति ही आप बच्चों को मिलती है, जो आप महसूस नहीं कर पाते...!

यही एक तरीका है जिससे आप कुछ एक, 100% निश्चय-बुद्धि बच्चे ही बाप समान बन पाते हो ... अर्थात् आप स्वयं ही अपने हर paper को बाप की श्रीमत प्रमाण, हल्के और खुश रह cross कर अर्थात् "कुछ भी तो नहीं है ... सब कुछ अच्छा है..." - इन दो संकल्पों को अपनी natural nature बना अपनी seat पर set हो जाते हो..., तब ही तो बाप भी आप बच्चों के लिए कहता है - वाह..., मेरे महावीर बच्चों, वाह...!

देखो, जैसे ही आप दो संकल्पों के मास्टर अर्थात् "कुछ है ही नहीं या कुछ भी तो नहीं है ... और ... सब अच्छे हैं या सब कुछ अच्छा है", बन जाते हो तो आप कब, क्यों, क्या से बाहर निकल अर्थात् अशरीरी बन, बाप-समान बन इसी दुनिया में रहते बाप (परमात्मा पिता) से मिलन मनाने का सुख कहो, आनन्द कहो, उठा पाते हो...।
यही आपके इस अमूल्य जन्म की प्रालब्ध है।

देखो, बाप आप सभी बच्चों का ज़िम्मेवार है क्योंकि आप सब ही बाप के दिलतख्तनशीन बच्चे हो। इसलिए बाप आपको किसी भी कार्य के लिए मना नहीं करता...।

बच्चे, अभी तक हर बात में आप सबका कल्याण होता आया है और आगे भी होता रहेगा..., चाहे अभी आप बच्चों को ये पता नहीं चल रहा है परन्तु बहुत ही जल्दी आप सबको अनुभव होगा कि हम कौन हैं और कितनी सहज रीति हम अपनी मंज़िल पर पहुँचे हैं...!

फिर आप बच्चों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहेगा अर्थात् आप सब खुशी में झूम उठोगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
05.10.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा...
देखो, सतयुग में सभी knowledgeful हैं जिस कारण वहाँ कोई नियम नहीं है और ना ही छोटा-बड़ा, ऊँचा-नीचा, अच्छा-बुरा, काला-गोरा और ना ही कोई number है ... ये सब यहाँ है।

परंतु अब हमें वहाँ जाना है, इसलिए अब हमें इन सब चीज़ों से बाहर निकलना है ... वहाँ केवल प्रेम है ... प्रेम ही system है ... प्रेम ही regard है, जिस कारण सब कुछ विधिपूर्वक चलता है...।

बस अब आपके अन्दर केवल प्रेम ही प्रेम हो, प्रेम ही प्रेम हो ... प्रेम ही सुख है, प्रेम ही शक्ति है, प्रेम ही शान्ति है, प्रेम ही आनन्द है, प्रेम ही सतयुग की जननी है...।

बस बच्चे, खुश रहो, हल्के रहो और light का अभ्यास करते रहो। यह light परिवर्तन का कार्य कर रही है।

बच्चे, महसूस करो कि एक बहुत अधिक powerful light, जैसेकि एक छतरी की तरह गोलाकार रूप में ऊपर से नीचे तक और चारों तरफ light फैलती जा रही है और यह बहुत अधिक पवित्रतम् light है और यह light एक second में परिवर्तन का कार्य कहो ... कर देगी...।

जैसे ही आप बाप-समान संकल्प में स्थित हो जाओगे अर्थात् हर हाल में "कुछ भी नहीं है..." कहते ही आप हल्के हो जाओगे और "सब कुछ अच्छा है..." यह सोचते ही आप खुश हो जाओगे और यही वाला एक second आपका परिवर्तन कर देगा, क्योंकि ये दो संकल्प आपको अशरीरी बनाते है और अशरीरी होते ही आप और सम्पन्न स्वरूप एक हो जाओगे...। तब ही कहा जाएगा निश्चयबुद्धि विजयन्ति अर्थात् flawless diamond ... यहीं दो संकल्पों का अभ्यास या attention ही हमें निश्चिन्त और विजयी बनाता है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti

05.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
देखो, सतयुग में सभी knowledgeful हैं जिस कारण वहाँ कोई नियम नहीं है और ना ही छोटा-बड़ा, ऊँचा-नीचा, अच्छा-बुरा, काला-गोरा और ना ही कोई number है ... ये सब यहाँ है।

परंतु अब हमें वहाँ जाना है, इसलिए अब हमें इन सब चीज़ों से बाहर निकलना है ... वहाँ केवल प्रेम है ... प्रेम ही system है ... प्रेम ही regard है, जिस कारण सब कुछ विधिपूर्वक चलता है...।

बस अब आपके अन्दर केवल प्रेम ही प्रेम हो, प्रेम ही प्रेम हो ... प्रेम ही सुख है, प्रेम ही शक्ति है, प्रेम ही शान्ति है, प्रेम ही आनन्द है, प्रेम ही सतयुग की जननी है...।

बस बच्चे, खुश रहो, हल्के रहो और light का अभ्यास करते रहो। यह light परिवर्तन का कार्य कर रही है।

बच्चे, महसूस करो कि एक बहुत अधिक powerful light, जैसेकि एक छतरी की तरह गोलाकार रूप में ऊपर से नीचे तक और चारों तरफ light फैलती जा रही है और यह बहुत अधिक पवित्रतम् light है और यह light एक second में परिवर्तन का कार्य कहो ... कर देगी...।

जैसे ही आप बाप-समान संकल्प में स्थित हो जाओगे अर्थात् हर हाल में "कुछ भी नहीं है..." कहते ही आप हल्के हो जाओगे और "सब कुछ अच्छा है..." यह सोचते ही आप खुश हो जाओगे और यही वाला एक second आपका परिवर्तन कर देगा, क्योंकि ये दो संकल्प आपको अशरीरी बनाते है और अशरीरी होते ही आप और सम्पन्न स्वरूप एक हो जाओगे...। तब ही कहा जाएगा निश्चयबुद्धि विजयन्ति अर्थात् flawless diamond ... यहीं दो संकल्पों का अभ्यास या attention ही हमें निश्चिन्त और विजयी बनाता है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
06.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा...
देखो बच्चे, ये यात्रा संकल्पों की है...।

बस, आप जैसे ही कोई भी बात होने पर *"कुछ भी तो नहीं है या मेरे आगे क्या बड़ी बात है ... और यह सबकुछ बहुत अच्छा है..."* - इन संकल्पों में स्थित होते ही आप बाप-समान स्थिति में स्थित हो जाओगे।

जैसे आपके शिव बाप ने आपको हर हाल में देखा, परन्तु बाप को पता था इस समय मेरे बच्चों को स्थूल या सूक्ष्म रीति कोई कमी नहीं पड़ सकती, चाहे ये संकल्पों से हिल रहे हैं परन्तु जल्द ही बाप-समान स्थिति में स्थित हो जायेंगे।

बस इतनी ही निश्चिन्त स्थिति होते ही अर्थात् क्या, क्यों, ऐसे, वैसे finish होते ही आप और आपके सम्पन्न स्वरुप के बीच का पर्दा finish हो जाएगा और आप बाप-समान सर्वशक्तिमान की seat पर set होते चले जाओगे...।

बस अब एक ही संकल्प हो - मैं light, Supreme light और light का शरीर ... और साथ ही साथ एक ही संकल्प कि अभी-अभी परिवर्तन होगा...।

परिवर्तन तो हुआ ही पड़ा है...।

देखो, आप बहुत अधिक powerful हो। आप अपनी संकल्पों की शक्ति से कुछ भी कर सकते हो ... बस बच्चे, परिवर्तन हुआ कि हुआ...।

देखो, आप कहाँ से कहाँ पहुँच गए हो, यह आपको पता नहीं चल रहा है...!

अब तो माया भी आप बच्चों के आगे मूर्छित हो गई है, अर्थात् बिल्कुल हलचल में है ... और चारों तरफ से आप बच्चों की तपस्या में विघ्न रुप बनने का प्रयास कर रही है।

परन्तु बाप (परमात्मा पिता) के तपस्वी मूर्त बच्चों पर माया का हर वार असफल रहेगा...।

देखो, आप बहुत आगे बढ़ चुके हो ... बस 100% बाप पर निश्चय रख पूरे उमंग-उत्साह के साथ अपना हर दिन सफल कर सफलतामूर्त बन जाओ...।

परमात्मा बाप के बच्चे सफल नहीं होंगे तो बताओ कौन होगा...?

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
07.10.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

शिवबाबा कहते हैं...
बच्चे, अब समय अनुसार स्वयं की checking करो कि हम कितने percent निश्चिन्त आत्मा बने हैं...? अर्थात् संतुष्टमणी ... अर्थात् कोई complaint नहीं, कोई question नहीं, कोई इच्छा नहीं अर्थात् minor बसा भी ... यह तो होना चाहिए या यह सब ठीक हो जायें अर्थात् जिस हाल में भी हैं बिल्कुल संतुष्ट है, खुश है, उमंग-उत्साह में हैं...।

बाप (परमात्मा पिता) पर इतना निश्चय है कि मेरे हर कदम में कल्याण समाया हुआ है, इसलिए निश्चिन्त, संतुष्ट, हर्षितमुख और उमंग-उत्साह में है और एक ही इच्छा है कि परमात्मा बाप के कर्तव्य को अर्थात् पतित दुनिया को पावन बना सब आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा दे, घर (परमधाम) जाएं ... अपने बाप से ही अतिन्द्रिय सुख का अनुभव करें...।

देखो बच्चे...
• संतुष्टता ही सबसे बड़ा गुण है...
• जो नॉलेजफुल हैं, वह संतुष्ट है...
• जो संतुष्ट है, वो त्रिकालदर्शी है...
• जहाँ संतुष्टता है, वहाँ धैर्यता, अन्तर्मुखता, हर्षितमुखता, मधुरता, शीतलता, निर्भयता, निर्माणता आदि सारे गुण आ जाते हैं।
• जो अपनी seat पर set है, वो संतुष्ट है...
• जो संतुष्ट है, वो ज्ञान स्वरूप, प्रेम स्वरूप, शान्ति स्वरूप, शक्ति स्वरूप और सुख स्वरूप है...।
• वो अचल-अडोल, एकरस, स्थिर, हल्का और बाप के समीप होगा...।
• जितनी संतुष्टता है, उतनी खुशी है...
• जितनी खुशी है, उतना ही आप हल्के रहते हो, फिर अपने सारे हिसाब-किताब चाहे तन के, धन के, सम्बन्ध-सम्पर्क के बड़ी ही सहजता से चुक्तु कर सकते हो...। तब अपने पुरुषार्थ से भी आप बहुत संतुष्ट रहते हो और कभी अलबेले या दिलशिकस्त नहीं होते...।

बच्चे, जो आत्मा निश्चिन्त होगी वो एक second से भी कम समय में बिन्दु बन, बिन्दु बाप के संग बैठ विश्व-कल्याण का कार्य कर सकेगी ... उसे किसी भी प्रकार की कोई खिंचावट नहीं होगी...।

हिसाब-किताब चुक्तु करते भी उस आत्मा से ऐसे अनुभव होगा कि यह एक रमता योगी है अर्थात् संतुष्टता की झलक दिखेगी...।

बस, अब आप अपनी स्थिति प्रमाण अपनी checking कर सकते हो कि हमारी परिवर्तन की speed कितनी है और हम कितने समय में बाप-समान बन सकेंगे...?

अर्थात् आपकी अब निश्चिन्त स्थिति बढ़ती जाएगी ... हर हाल में आप शिव बाप के साथ का अनुभव कर खुश और संतुष्ट रहोगे और यह संतुष्ट रहने का पुरुषार्थ अर्थात् अपनी ज़िम्मेवारी, सारे हिसाब-किताब बाप को समर्पण करने का पुरुषार्थ ही आपको बाप-समान बना देगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
08.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

शिवबाबा का starting से पढ़ाई का लक्ष्य ही एक रहा है कि आत्मा स्वयं को पहचान, स्वयं के स्वरूप में स्थित हो, स्वयं को परिवर्तन कर दे ... अर्थात् स्वयं को ऊँच ते ऊँच light समझ, इस स्थूल तन, स्थूल मन, स्थूल बुद्धि, धन, सम्बन्ध, संपर्क, सबसे न्यारी हो जायें...।
एक न्यारी आत्मा ही संपूर्ण रीति स्वयं का परिवर्तन कर सकती है।

देखो, आपने अब तक केवल तमोप्रधान दुनिया की तमोप्रधान चीज़ों से स्वयं में वैराग्य ही लाया, अर्थात् इस तमोप्रधान दुनिया की तमोप्रधान चीज़ें - जैसे विकार, विकारी सम्बन्ध-संपर्क और खानपान..., परन्तु स्वयं को उन सब चीज़ों पर विजयी नहीं बना पाये...!

अर्थात् इस तमोप्रधान दुनिया के बीच रहते, यह तमोप्रधानता आप पर effect ही ना डालें, आप इन्हें अपने प्रेम भरे vibrations से स्वयं के मित्र बना, उन सबको भी परिवर्तन कर दो...।
ये powerful process आप इस जन्म में बाप (परमात्मा पिता) के सहयोग से ही कर पाते हो...।

देखो, शिव बाप आप बच्चों के हर पल साथ है और बाप को आपके एक-एक second की जानकारी है ... और यह सब एक process का part भी है, क्योंकि आप स्वयं को ही परिवर्तन नहीं कर रहे हो, बल्कि सभी आत्माओं का भी और प्रकृति के पाँचो तत्वों का भी परिवर्तन हो रहा है अर्थात् सभी अपनी-अपनी reality में आ अपने-अपने स्थान पर set हो रहे हैं...।

यह process बहुत सूक्ष्म रीति अपना कार्य कर रहा है, जिसे आप समझ नहीं पाते, परन्तु बहुत जल्द ही final round की final घड़ियाँ खत्म होते ही आपके सामने सब स्पष्ट हो जाएगा...।

बस, आपके पास जो कुछ भी आ रहा है, वो बाप को समर्पण कर, बाप की पढ़ाई के according न्यारे और प्यारे बन यह process की अंतिम घड़ियाँ भी शांतिपूर्वक, खुशी-खुशी finish करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
09.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

शिव बाप आप बच्चों को जो भी संकल्प दे रहा है, उसे अपनी बुद्धि रूपी तिजोरी में समा, उसे अपनी दिनचर्या में हर पल use करो।

• सब मेरे हैं, मुझे सभी से एक समान प्यार करना है...।
• मुझमें हर पल प्यार का सागर बहता रहें...।
• सभी आत्मायें जैसी भी हैं, मुझे accept है...।
• हर कोई ड्रामा में 100% accurate part play कर रहा है, चाहे उसका part villain का, मूर्ख का, स्वयं को hero ना होते हुए भी hero समझने का..., अर्थात् स्वयं को ऊँच और समझदार समझने का हो ... परन्तु हर हाल में मुझे हर आत्मा accept है और मुझे ही हर आत्मा का, हर पल, हर हाल में कल्याण करना है...।
• परन्तु उससे पहले स्वयं को स्वयं की seat पर set कर 100% सन्तुष्ट और खुश रखना है, वो भी बाप (परमात्मा पिता) के according...।
• मुझे अपने पाँचों तत्वों से बने इस तन को love और light के साथ-साथ purity के vibrations देते हुए, इसके कल्याण के निमित्त इसे समझानी देनी है ... इसे इसका original स्वरूप, अर्थात् light का transparent स्वरूप की स्मृति देनी है ... हर हाल में इसे प्रेमपूर्वक समझानी देनी है...।
• स्वयं से और स्वयं के part से सन्तुष्ट रहना अति आवश्यक है। सन्तुष्ट आत्मा ही बाप के कार्य में सहयोगी बन सकती है...।
• इस तमोप्रधान दुनिया के बीच रहते उदासी के, भारीपन के या कोई भी problem के संकल्प आये, उसे conscious में आते ही एक side में कर, बाप के according संकल्प करने है। यदि कहीं पर भी मूँझते हो या कुछ समझ ना आये, तो बार-बार स्वयं को स्वयं के संकल्पों समेत बाप के आगे समर्पण कर देना है।

देखो, आप consciously कोई भी कमज़ोरी का संकल्प नहीं लाना...! अधिक से अधिक स्वयं को conscious अवस्था में रखने का attention रखना है ... क्योंकि जब आप जागृत रह स्वयं को positive vibrations देते हो या खुश वा हल्के रहते हो, तब आपका परिवर्तन speed से हो रहा होता है और इस समय बाप की श्रीमत के according अर्थात् बाप के प्यार में समाये रहने वाले अर्थात् निश्चयबुद्धि रहने वाले बच्चों पर केवल positive effect ही रहता है, positive संकल्पों का...। अन्यथा कार्य चाहे रुक जाये परन्तु opposite direction पर नहीं जा रहा है...।

जो बच्चे 100% निश्चयबुद्धि बन बाप की एक-एक समझानी को स्वयं में practical apply कर रहे हैं, उनका बाप 100% ज़िम्मेवार भी है और उनका परिवर्तन का कार्य झटके से कभी भी सम्पन्न हो सकता है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
10.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

मैं, परमात्मा शिव इस दुनिया से न्यारा होते हुए भी अर्थात् बन्धनमुक्त होते हुए भी आपके प्यार में हर पल बंधा रहता हूँ अर्थात् आप बच्चों से अलग होते हुए भी अलग नहीं हूँ...।

देखो, जैसे-जैसे आप इस स्थूल दुनिया से न्यारे होते जा रहे हो ... वैसे-वैसे सूक्ष्म खेल बढ़ता जा रहा है। बस आप attention दे स्वयं की मन-बुद्धि को 100% इससे न्यारा कर दो अर्थात् इस दुनिया का स्थूल कर्तव्य करते हुए भी इसके प्रभाव से न्यारे अर्थात् रूहानी प्रभु के मिलन की मस्ती में मस्त रहो...।

देखो, आपका ज्ञान से भरपुर सच्चा दिल मुझे खींचता है ... जिससे आपमें इससे न्यारे होने की शक्ति अत्यधिक हो जाती है। बस थोड़ा-सा attention और दो।

कोई भी पुराना स्वभाव-संस्कार, हिसाब-किताब की परवाह किये बिना मेरी श्रीमत् प्रमाण मेरे प्यार में लीन हो जाओ ... तो मेरे प्रेम की खिंचावट आपको ऊपर खींच लेगी...।

जो बच्चे बाप पर समर्पण हो जाते है उनकी विजय निश्चित है। इसलिए, समर्पण की गुह्यता को समझो...।

देखो, मैं भी एक आत्मा हूँ, मुझमें भी मन-बुद्धि है। मैं सभी चीज़ को enjoy करता हुआ भी इससे न्यारा हूँ क्योंकि अपनी seat पर हूँ ... मैं सदा शिव हूँ...।
मुझे कभी भी किसी भी बात का प्रभाव नहीं पड़ता ... किन्तु आप बच्चे जोकि इस दुनिया में अर्थात् पाँच तत्वों के बीच रहते हो तो इसके प्रभाव से प्रभावित हो जाते हो। परन्तु अब जबकि आप बच्चों को बाप (परमात्मा पिता) की seat लेनी है तो इनके बीच रहते, इन पाँच तत्वों के प्रभाव से न्यारा रहना है, तब ही आप विजयी बन सभी आत्माओं का और प्रकृति का कल्याण कर सकोगे ... और इस काबिल बनाने के लिए बाप आपको पढ़ा भी रहा है और सूक्ष्म में मदद भी कर रहा है।

बस, आप केवल अपने पर 100% attention रखो। बाप साथ है तो हुआ ही पड़ा है...।

इसलिए, जो आप daily का अभ्यास कर रहे हो, वो पूरी लगन के साथ करो। शिव बाप को अपने अंग-संग जान अर्थात् बाप की हर second आप पर नज़र है ... यह जान कर, आपकी पूरी लगन से किया गया अभ्यास आपको आगे से आगे लेकर जा रहा है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
11.10.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

तुम्हारे चार ही subjects हैं - ज्ञान, योग, धारणा और सेवा...।

• पहला *‘ज्ञान’*...
ज्ञान सिर्फ यह नहीं कि मैं आत्मा परमात्मा की सन्तान हूँ, बल्कि मैं आत्मा सर्व गुण और शक्ति सम्पन्न हूँ और मेरे सब सम्बन्ध परमात्मा से हैं...।

• दूसरा *‘योग’*...
योग अर्थात् आत्मा और परमात्मा का प्यार भरा सम्बन्ध और बाप द्वारा सर्व गुणों और शक्तियों की प्राप्ति...।

• तीसरा *‘धारणा’*...
सिर्फ स्थूल धारणा ही नहीं बल्कि गुण और शक्ति स्वरूप बन कर्मक्षेत्र में आना...।

• चौथा *‘सेवा’*...
सेवा द्वारा सिर्फ ज्ञान देना या बाबा का परिचय देना ही नहीं है बल्कि अपने स्वरूप द्वारा अपने गुणों और शक्तियों का दान देना है...।

आपको इस तरफ ज्यादा attention देना है। अपने सभी गुणों और शक्तियों का अनुभव करना है, हर गुण का मनन करना है।

“मैं एक शान्त स्वरूप आत्मा हूँ ... और बाबा मुझे शान्ति की शक्ति से भरपूर कर रहा है ... अब मुझे कोई भी आत्मा अशान्त नहीं कर सकती...।”
ऐसे ही प्रेम, पवित्रता, आनन्द और सुख - इन सब गुणों को मनन कर अनुभव करना है...।

चलते-फिरते, कार्य करते इन गुणों में समा जाना है।
जितना-जितना आपका मनन और अनुभव बढ़ता जायेगा उतना ही आप गुण स्वरूप और शक्ति स्वरूप बनते जाओगे ... और योग में भी गुणों और शक्तियों को बढ़ाना है, यही बाप (परमात्मा पिता) के खज़ाने हैं...।

आप बच्चों को विशेष ध्यान रखना है कि चाहे योग के लिए, चाहे धारणा के लिए अपने मूल स्वरूप एवं स्थिति से नीचे नहीं आना है...।

चारों ही subjects का result जो हैं, वह गुण स्वरूप और शक्ति स्वरूप बन seat पर set होना है। इसलिए आप बच्चों को इस तरफ विशेष attention देना है।

सबकुछ बहुत हल्का होकर करना है और दिलशिकस्त नहीं होना है, क्योंकि संस्कार पुराने हैं और मन को भी बँधने की आदत नहीं है ... परन्तु धीरे-धीरे प्राप्ति बढ़ती जायेगी तो सहज ही परिवर्तन हो जायेगा।

अब आप बच्चों को बाप के प्यार का return देना है। अभी आपका कर्मणा में ठीक हुआ है, बोल और संकल्पों में अभी भी थोड़ी हलचल हो जाती है। इसलिए अभी कोशिश करो कि हर बोल और संकल्प बाप-समान हो...।

देखो, स्व-पुरुषार्थ का यही limited समय है, चाहे दुनिया वालों के लिए अभी थोड़ा-सा समय है, पर आप लोगों का जल्दी ही वरदाता का part शुरू हो जायेगा...।

समय limited होने के कारण और रास्ता अभी बाकी होने के कारण पीछे मुड़कर नहीं देखना है और ना ही थकना और रुकना है, नहीं तो माया पीछे की तरफ ले जायेगी...।
इसलिए आगे-ही-आगे उड़ते जाना है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
12.10.2018

★ 【 आज का पुरुषार्थ】 ★

जहाँ आकर्षण है, वहाँ असंतुष्टता है ... और जहाँ असंतुष्टता है वहीं हलचल है...।

जबकि इस तमोप्रधान दुनिया में आकर्षण बहुत बढ़ रहा है तो हलचल भी बहुत बढ़ रही है, जिससे सभी आत्मायें बहुत दुःखी और परेशान हो रही हैं और यह सब कुछ अति में जाना ही है।

चाहे लौकिक परिवार, चाहे अलौकिक सब जगह परेशानियाँ बढ़नी ही है...।
ऐसे समय में जबकि बाप आप बच्चों को सभी जगह से न्यारा कर विशेष पालना दे रहा है, तो आप बच्चों को भी अपनी स्व-स्थिति की तरफ विशेष attention रखना चाहिए।

यदि आप सोचते हो कि मैं वाचा, कर्मणा या संकल्प द्वारा इन सब परिस्थितियों को दूर कर दूँ, तो यह सम्भव नहीं है...! क्योंकि आपको पहले स्वयं को सम्पूर्ण रीति तैयार करना पड़ेगा अर्थात् इन सब तरह की बातों से स्वयं को न्यारा कर powerful बनाना पड़ेगा, तब ही आपकी powerful स्थिति आपके आस-पास की हलचल को खत्म कर सकेगी।

इसलिए स्वयं को अचल-अडोल बनाना है, जो आप केवल बाप की श्रीमत प्रमाण ही कर सकते हो...।

आपको यह स्मृति रहनी चाहिए कि मेरी स्वयं की स्थिति से ही परिस्थिति खत्म होगी और जितनी मेरी स्व-स्थिति powerful होगी, उतना ही उसका प्रभाव दूर-दूर तक जायेगा...।

इस समय स्वयं को हर बात से न्यारा कर अपनी स्व-स्थिति बनानी है ... फिर यही आपकी स्व-स्थिति आपको स्वयं ही सबका प्यारा बना देगी ... इसलिए, स्वयं पर full attention रखो...।

देखो, यही समय है पुरुषार्थ का ... फिर कल्प में कभी भी आपको यह समय नहीं मिलेगा..., और पुरुषार्थ के बिना प्रालब्ध भी नहीं बन सकती...!

इसलिए स्वयं को हर बात से न्यारा कर अपनी हर समस्या, चाहे किसी भी तरह की हो, बाप को संकल्पों द्वारा समर्पण कर बाप की श्रीमत् पर पूरा-पूरा चलने का पुरुषार्थ करना है।

अब पुरुषार्थ का समय बहुत ही limited रह गया है...।

आप सभी को भी अपने को सदा चमकता हुआ सितारा अनुभव करना है।
आपको सदा feel होना चाहिए कि आप light house - might house बन मस्तक के बीच चमक रहे हो।

जितना-जितना आप स्वयं को अनुभव करते जाओगे, उतना ही औरों को आपसे साक्षात्कार होगा।
इसलिए आप अपना attention और अभ्यास बढ़ाओ, तभी आप स्वयं को अनुभव कर पाओगे।

जब आप अपने को यह शरीर ना समझ light house और might house समझोगे तब आपको इतनी खुशी और शान्ति की अनुभूति होगी जो अभी तक आपने कभी नहीं की...।

देखो, आपके एक-एक second की planning बाप की है, इसलिए जब आप कार्य-व्यवहार में आते हो, तो कोई कुछ गलत करता है या कोई नुकसान करता है ... तो आप बाबा (परमात्मा पिता) को साथ रख उसे बहुत प्यार से समझानी दे दो और फिर वो सारी बात बाप को दे, उससे न्यारे हो अपने पुरुषार्थ में लग जाओ...।

आपको अपनी संतुष्टता की seat को कभी नहीं छोड़ना है ... क्योंकि बाबा आपके साथ है और वो हर अकल्याण को कल्याण में बदल देगा परन्तु तब जब आप अपनी seat पर set रहोगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
13.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बच्चे, समय के महत्व को समझते हो क्या..? यह समय कौन-सा जा रहा है...?

अन्त का भी अन्त अर्थात् last घड़ियाँ जा रही हैं। यह समय आपको फिर कभी नहीं मिलेगा अर्थात् इस कल्प में जैसा पुरुषार्थ किया वैसा ही हर कल्प कर पाओगे...।

देखो, बाबा बार-बार कह रहा है - attention ... attention ... attention ... पर आप बच्चे अलबेलेपन में समय और संकल्प व्यर्थ से व्यर्थ वा साधारण रीति use कर रहे हो।

बताओ, यदि आप इस तरह करते रहे तो बाबा भी क्या करेगा...?

बाबा तो आप बच्चों को विशेष पालना भी दे रहा है, स्नेह भी, सहयोग भी और शक्ति भी दे रहा है ... परन्तु पुरुषार्थ तो आप बच्चों को ही करना है।
इसलिए attention please...!

अपने अभ्यास को बढ़ाओ ... एक-एक second की value को समझकर अपना संकल्प वा समय समर्थ करो...।
आज का समय साधारण वा व्यर्थ के लिए नहीं है...।

आपने अपनी checking की, कि कितनी उन्नति की है या फिर अभी भी माया के साथ खेलते रहते हो...?
नहीं बच्चे नहीं..., अभी वह समय नहीं है...!

अभी तो बाबा आप बच्चों को बहुत प्यार से चला रहा है, यदि अभी भी आप attention नहीं दोगे तो बाबा भी साक्षी हो जायेगा।
इसलिए, अब जल्दी करो...।

गृहस्थ व्यवहार में प्रेम-पूर्वक चलते रहो परन्तु न्यारेपन का अभ्यास करो। आप सागर के बच्चे हो, स्थूल सागर भी अपने में बड़े-से-बड़े स्टीमर को समा लेता है, तो क्या आप अपने संकल्पों को समाकर बीज-रूप स्थिति में स्थित नहीं हो सकते...?

अपने अभ्यास को बढ़ाओ, उमंग-उत्साह से आगे बढ़ो...।
सोचो तो सही आपका साथ निभाने के लिए कौन आया है...?

पूरा कल्प सब कुछ मिलेगा परन्तु स्वयं परमात्मा, जो हर सम्बन्ध से आपके साथ है, वो नहीं मिलेगा...! इसलिए बाबा को हर पल अपने साथ रख बार-बार अपने original स्वरूप को, अपने गुणों को और शक्तियों को emerge करो और जल्द ही अपने सम्पूर्ण स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन करो...।

देखो, paper के समय में attention और अभ्यास को और अधिक बढ़ाया जाता है, अलबेलेपन में समय को व्यर्थ नहीं गँवाया जाता...।

इसलिए अब सदैव attention रख अपनी seat पर set रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
14.10.2018

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बच्चे, संस्कार-परिवर्तन का समय यही है। स्वयं का परिवर्तन, सम्बन्धों का परिवर्तन, वायुमण्डल का परिवर्तन और युग-परिवर्तन का समय यह थोड़ा-सा ही रहा हुआ है...।

क्या समझते हो, बाबा ऐसे ही बोल रहा है या यह बाबा की युक्ति है...? नहीं बच्चे...।

बाबा अब अन्तिम समय की warning दे रहा है, इसलिए इस भूल में मत रह जाना...।
यदि आप परिवर्तन नहीं करोगे तो कोई और करेगा...! इसलिए गायन है - "जो करेगा सो पायेगा"।

अब अलबेलेपन के संस्कार को खत्म करो...।
एक मिनट, दो मिनट, पाँच मिनट, आधा घण्टा, एक घण्टा - इस तरह कब तक बर्बाद करते रहोगे...?

भगवान स्वयं विशेष पालना दे रहा है, फिर भी पुराने संस्कारों से सदाकाल की मुक्ति नहीं...?
दो-चार दिन तक ठीक चलता है, फिर ढीले हो जाते हो ... आखिर ऐसा कब तक चलेगा...?

इसलिए attention को कम मत करो, कुछ ही समय में परिवर्तन का कार्य शुरू हो जायेगा, फिर क्या करोगे...?

अभी हिम्मत है उन scenes को देखने की क्या...?
इसलिए बाबा बार-बार कह रहा है - जल्दी करो, जल्दी करो...। अपने पुराने संस्कारों को भस्म करो, नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा ... क्योंकि वह समय भी बहुत ही नज़दीक है।

बाबा तो रोज़-रोज़ आकर ऊँच-से-ऊँच समझानी दे देता है, परन्तु करना तो आप बच्चों को ही है। इसलिए स्वयं ही स्वयं से बात कर अपनी बुद्धि को बाप के साथ जोड़ो, नहीं तो आप भी देवता की बजाए लेवता की list में आ जाओगे...। चाहे एक प्रतिशत लो, चाहे दो प्रतिशत लो, लेवता तो लेवता ही कहा जायेगा...।

इसलिए सम्पन्न बनो, सम्पूर्ण बनो...।
यह आप तभी बन पाओगे, जब हर second ऊँच स्वमान की और बाप की याद होगी।

इसलिए याद रखो, अभी मतलब अभी से, नहीं तो फिर कभी नहीं...।

देखो, स्नेह, सहयोग और शक्ति भी किसे मिलेगी...? जो पूरी हिम्मत रख बाप (परमात्मा पिता) के हर direction को अमल में लायेगा।

अपने सम्पन्न स्वरूप और सम्पूर्ण स्वरूप को अपने सामने देखो और अनुभव करो कि उसमें से भिन्न-भिन्न रूप के, रंग की किरणें निकल रही है...। आह्वान करो अपने सम्पन्न स्वरूप का...।
उसमें से तेज़ सफेद रंग की किरणें निकल रही है...।

एक ही काम करना है, हर समय स्मृति में रखो - "मैं कौन हूँ, किसका हूँ, कहाँ से आया हूँ और मुझे क्या करना है...?"

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
15.10.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बच्चों के अन्दर एक ही इच्छा है कि हम बाप-समान बन जायें...। फिर भी बाप-समान बनने में कमी क्या रह जाती है, अर्थात् कारण क्या है..?

कारण हैं - "वैराग्य की कमी और शक्तियों की कमी" ... इसलिए ना चाहते हुए भी अपने स्वमान को वा बाप (परमात्मा पिता) को भूल साधारणता में आ जाते हो...।

देखो बच्चे, जब भी कोई वस्तु परिपक्व होती है तो वह सभी जगह से अपने किनारे छोड़ देती है और बिल्कुल न्यारी हो जाती है, इसलिए सबकी प्यारी बन जाती है...।

तो आप भी अपनी checking करो कि आपकी मन-बुद्धि कहाँ-कहाँ जा रही है..? जहाँ जा रही है, वहाँ किसी-न-किसी प्रकार का लगाव है...?

जैसे; आप चाहते हो कि हम वाचा में ना आयें, फिर भी आप आ जाते हो, क्योंकि अभी भी इस दुनिया से प्यार है ... वाचा में आने के बाद सोचते हो कि हम कुछ हल्के हो गये...!
परन्तु नहीं बच्चे..., सूक्ष्म रीति आप भारी हो जाते हो क्योंकि जिस संस्कार को खत्म करने का पुरुषार्थ कर रहे हो और यदि आप बार-बार उस संस्कार को use करोगे, तो आपका वह संस्कार कैसे खत्म होगा...?
और ना ही आप इस दुनिया से न्यारे हो पाओगे...!

इसलिए अपने आप से बार-बार बात करो कि आप क्या चाहते हो..., और यदि बाप-समान बनना चाहते हो तो रास्ते में जो भी रुकावट है, उसे खत्म तो करना पड़ेगा ना...!

दूसरा, आपको बार-बार अपने मास्टर सर्वशक्तिमान् की seat पर set होना है अर्थात् आपकी जो भी शक्तियाँ हैं - जैसे समाने की शक्ति, दृढ़ता की शक्ति, controlling power, ruling power आदि-आदि..., उन सबको revise करो और बार-बार उन्हें use करो...।

जैसे आप कोई संकल्प चाहते हो कि ना आये तो उस समय समाने की शक्ति को use करके दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ो...।

जितना-जितना आप इन शक्तियों को use करोगे, उतना-उतना ही आप अपने आपको मास्टर सर्वशक्तिमान् अनुभव करोगे। इसलिए हर शक्ति को अपनी दिनचर्या में use करो, क्योंकि विजयी रत्न तो आप बच्चों को ही बनना है...।

बाप, आप बच्चों का सच्चा दिल और एक ही इच्छा देख विशेष पालना करने आ गया है, तो पुरुषार्थ भी सच्चे दिल से करो अर्थात् जैसे बाप कहें, वैसा करते जाओ..., तो ऐसा हो ही नहीं सकता कि आपको सफलता ना मिले, पर थोड़ा-सा attention को और बढ़ाओ...।

शिव बाप हर कदम में आप बच्चों के साथ है...।

बच्चे, अब इस दुनिया में आप बच्चों के लिए कुछ भी नहीं रहा है ... इसलिए इससे अब सम्पूर्ण रीति वैराग्य लाओ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
16.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बच्चे, विस्तार से सार में आओ...।

अभी भी कभी-कभी आप बहुत विस्तार में चले जाते हो ... इसलिए अब आपको मन्सा-वाचा-कर्मणा अर्थात् संकल्पों में भी कोई बात आती है, जिसका आपको निर्णय लेना है तो सार स्वरूप में वह कार्य कर उसे बिन्दु लगा दो।

इसी तरह वाचा में भी उतना ही बोलो जितना आवश्यक है।
यदि आप किसी से कोई बात कर रहे हो और वो बात लम्बी करता है, तो आप बाबा-बाबा करते रहो।
इससे वो आत्मा भी शान्ति की अनुभूति करेगी और धीरे-धीरे चुप हो जायेगी...।

इसी तरह से कर्मणा में भी करना है ... जो कार्य आप करने वाले हो अर्थात् आपको लगता है कि मेरे बिना इस कार्य में सफलता नहीं मिलेगी, वह कार्य आप करो, परन्तु अपने समय पर भी attention रखो क्योंकि बच्चे, अब जल्दी ही आपको बिन्दु बन बिन्दु बाप (परमात्मा पिता) के साथ मिलन मनाना है ।

विस्तार को सार में लाने के लिए एक तो परखने की शक्ति और दूसरा समेटने की शक्ति चाहिए। इसलिए इन शक्तियों को use कर आगे बढ़ो।

अभी भी जब कोई पुराना स्वभाव-संस्कार आता है तो बच्चे मूँझ जाते हैं...।
बच्चे, इसके लिए बार-बार बाप के पास, अपने रूहानी घर (परमधाम) में जाकर बैठ जाओ।

शिवबाबा से आती शक्तियों का स्वयं में अनुभव करो जिससे आप शक्तिशाली हो जाओगे और अपने पुराने स्वभाव-संस्कार पर जीत भी पा लोगे...।

इसका अभ्यास आपको चलते-फिरते करना है। हर समय अपने संकल्पों पर attention हो कि "मैं कितना समय याद स्वरूप हूँ" ... यदि attention में कमी होगी तो अलबेलापन आयेगा और आप आगे नहीं बढ़ पाओगे।

हर कार्य में बिन्दु बन बिन्दु बाप को use करो और हमेशा ही अपने भाग्य की स्मृति में रहो जिससे आप थकावट भी महसूस नहीं करोगे और हल्के होकर पुरुषार्थ करते रहोगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
17.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बच्चे, दुनिया में बहुत दुःख-दर्द है और आने वाले समय में बहुत कुछ होने वाला है...।

सभी आत्मायें बुरी तरह से 'मैं और मेरेपन' में फँस जायेंगी और विकार भी अपना विकराल रूप ले लेगा और प्रकृति का भी बड़ा खेल शुरू हो जायेगा।
फिर बताओ, आप बच्चों का क्या कर्तव्य होगा...?

यदि आप अभी भी मैं या मेरेपन या छोटी-छोटी समस्याओं से मुक्त नहीं होंगे, तो उन सभी परेशान आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता कौन बतायेगा...?

इसलिए बच्चे, अपने ऊँच कर्तव्य की स्मृति में रहो। जब आप बेहद के कार्य में busy हो जाओगे, तो आपकी छोटी-छोटी समस्या खुद ही खत्म हो जायेगी - चाहे वह व्यर्थ संकल्पों की है, स्वभाव-संस्कार या सम्बन्धों की है...।

बच्चे, सदा अपने को विश्व-कल्याणकारी समझ, दुःखी आत्माओं का कल्याण करो। अभी इस सेवा की बहुत-बहुत आवश्यकता है।

यदि आप ही अपने आप में फँसे रहोगे, तो इनका कल्याण कौन करेगा...?

देखो, इन सब आत्माओं के कल्याण के निमित्त आप सब बच्चे हो। इसलिए अपने भिन्न-भिन्न ऊँच स्वमान में स्थित हो, शिव बाप को संग रख, विश्व में powerful vibrations फैलाओ...।

भिन्न-भिन्न रूप धारण कर इन आत्माओं का कल्याण करो। अपने कर्तव्य के महत्व को अच्छी रीति समझ, अपनी मन-बुद्धि को चारों तरफ से निकाल, बेहद की सेवा में लग जाओ...।

स्वयं भगवान यहाँ आपका मददगार है ... वो आपकी सारी ज़िम्मेवारी सम्भाल, आपको आपके लक्ष्य तक पहुँचा देगा...। बस आप खुदाई-खिदमदगार बन खुदा के कर्तव्य में सहयोगी बन जाओ...।

अपने संकल्प और बोल की value समझ, उन्हें ठीक रीति use करो ... क्योंकि महान् आत्माओं का हर कर्तव्य महान् होता है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti

18.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

देखो बच्चे, स्वयं भगवान को धरा पर आकर पढ़ाते हुए लगभग 80 साल हो गये हैं और पढ़ाई भी क्या हैं - स्वयं को आत्मा समझ परमात्मा को याद करो..., ताकि आप अपने original स्वरूप में स्थित हो अपने घर (परमधाम) जा सको...।

पढ़ाई का सार तो यहीं है ना, जिसे भिन्न-भिन्न रीति से शिवबाबा पढ़ा रहा है ... और यह पढ़ाई है मन-बुद्धि द्वारा अनुभव करने की, कि "मैं कौन-सी वाली आत्मा हूँ...?"

देखो बच्चे, यह पढ़ाई इतनी सहज नहीं है, इसलिए स्वयं भगवान को आना पड़ता है, पढ़ाने के लिए..., अर्थात् बच्चों को विस्मृति से स्मृति में लाने के लिए...।

दुनिया में कोटों में कोई और कोई में भी कोई बच्चे इसे समझ पाते हैं ... उसमें से भी बहुत थोड़े आप बच्चे हो, जिन्हें special भगवान पढ़ाने आया है और पक्का कराने आया है कि तुम बहुत ऊँच आत्मायें हो...।

बस, इसके लिए बार-बार अभ्यास की ज़रूरत है, क्योंकि 2500 वर्ष के संस्कारों को परिवर्तन करना है...।

आप बार-बार अपने ऊँच स्वमान को, अपने संकल्पों द्वारा, वाणी द्वारा अनुभव करो। बार-बार स्वयं को याद दिलाओ कि मैं कौन हूँ, मुझे पढ़ाने कौन आया है, मेरा इस दुनिया में क्या part है और मुझे किस रीति इस दुनिया में रहना है...?
बार-बार अभ्यास के द्वारा ही परिवर्तन करना है...।

बस बच्चे, उल्टे को सुल्टा ही तो करना है...। देह समझने के बजाए, जो हम आत्मा हैं, वहीं तो समझना है। चलते-फिरते, उठते-बैठते आपके अन्दर एक जाप सा चलना चाहिए कि "मैं एक बहुत महान् आत्मा हूँ..., परम पवित्र आत्मा हूँ..., खुदाई-खिदमदगार हूँ..., परमधाम से आई हूँ... और बस अब वापिस जाना है...।

इस तरह से भिन्न-भिन्न अभ्यास आपके अन्दर हर second चलते रहने चाहिए, क्योंकि बार-बार अपने आपको याद दिलाने से ही आप अपने original स्वरूप में स्थित हो सकते हो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
19.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बच्चे, बन्धन-मुक्त बनो...। यदि कोई सूक्ष्म से सूक्ष्म तार से भी मन-बुद्धि को बाँधा तो उड़ नहीं पाओगे..!

इसलिए खुद को double light आज़ाद पंछी बनाओ ... चाहे तो बिन्दी रूप में, चाहे तो फरिश्ता रूप में...।

यदि कहीं भी ज़रा-सा भी फँसें, तो उड़ नहीं पाओगे...! मंज़िल ऊँची हैं, तो पुरुषार्थ भी ऊँचा करना पड़ेगा...!
इसलिए स्वयं को हर बन्धन से मुक्त करो...! कोई छोटा-सा बन्धन भी बाँध सकता है।

देखो, खुदा खुद आया है आप थोड़े से बच्चों के लिए...!
तो अपने ऊँच भाग्य और ऊँच part को समझो और सब कुछ बुद्धि से बाप को समर्पण कर दो।

आप सबके पास है क्या...? कीचड़-पट्टी ही तो है, बस उसे अपना समझ सोचते हो कि समय पर काम आयेगा...!
लेकिन नहीं..., काम नहीं आयेगा, बल्कि दुःख देगा।
इसलिए इससे बाहर निकलो।

देखो, खुद खुदा आया है तुम्हें अपने संग, अपने समान बनाकर, घर (परमधाम) ले जाने के लिए...।

यदि तुम स्वयं ही कहीं फँसे रहोगे तो बाप भी क्या करेगा...? इसलिए स्वयं को स्वयं ही मुक्त कर बाप-समान बन, बाप (परमात्मा पिता) के सभी खज़ानों के अधिकारी बनो।
यह सब खज़ाने आपके ही हैं।

जितने हल्के रहोगे, उतनी ही तेज़ और ऊँची उड़ान उड़ सकोगे अर्थात् तीव्र पुरुषार्थ कर पाओगे...। अब इस समय के महत्व को समझ समय को सफल करो।

बुद्धिवान बच्चे ही ठीक रीति हर संकल्प को परखकर अपने पर attention रख, ऊँच पुरुषार्थ कर रहे हैं, उन्हें प्राप्तियाँ भी बहुत जल्दी अनुभव होनी शुरु हो जायेंगी ... और बाप भी उन्हें ही सहयोग देगा, जो हिम्मत रख बाप की हर श्रीमत का पालन कर रहे हैं।

जिस आत्मा ने स्वयं को किसी भी बन्धन में चाहे कर्म-व्यवहार में, चाहे परिस्थिति में, चाहे स्वभाव-संस्कार के साथ, चाहे सम्बन्ध के साथ बाँधा हुआ है, तो इस बन्धन के कारण फिर भारी हो उसकी हिम्मत कम हो जाती है, जिससे वह बाप की मदद का पात्र भी नहीं बन पाता...!

इसलिए दृढ़ रह सब कुछ बाप हवाले कर पुरुषार्थ करो। फिर परिस्थितियाँ भी हल्की हो जायेगी और आत्मा भी हल्की हो जायेगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
20.10.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बच्चे, आप हर पल अपने ऊँच स्वमान में स्थित रहते हो...?

ऊँच स्वमान में स्थित होना अर्थात् आपकी मन्सा-वाचा-कर्मणा भी उसी अनुसार होगी...।

जैसे जब आप सोचते हो कि ''मैं एक परम पवित्र आत्मा हूँ'' तो आपकी मन्सा पवित्रता से भरपूर अर्थात् कल्याण और रहम की भावना से भरपूर होगी क्योंकि आपको पता है कि आत्मिक रूप से हम सभी भाई-भाई है।

वाचा भी आपकी सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् आपके शब्द बहुत थोड़े और बहुत मधुर होंगे।

कर्मणा आपकी गुण सम्पन्न होगी अर्थात् आप निमित्त बन हर कार्य करोगे।
इसमें आपको एक विशेष बात का ध्यान रखना है कि आपको संकल्प, बोल और कर्म के प्रभाव से न्यारे रहना है अर्थात् आपमें हर आत्मा के प्रति बहुत शुभ, कल्याणकारी और रहम भाव से भरपूर संकल्प और कर्म हो, परन्तु साथ-साथ आप उस आत्मा के part से साक्षी भी हो...।

देखो बच्चे, अब आपको बाप-समान बनना है, तो आपको बाप-समान सबका कल्याण कर उनसे न्यारी स्थिति में स्थित भी रहना है।

किसी भी चीज़ के result के प्रभाव में आना अर्थात् स्वयं को बन्धन में बाँधना...!
इसलिए न्यारे बनो...।

और फिर साथ-साथ वाचा पर भी आपको विशेष attention रखना है।
गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए सभी आत्माओं से उतना ही बोलना है, जिससे वह सन्तुष्ट रहें। परन्तु ध्यान रहे कि आपको अपने स्वमान में स्थित रह, बात करनी है...।

जितने आपके बोल कम होते जायेंगे, उतनी आपकी मन्सा powerful होगी और आपकी सेवा भी बढ़ जायेगी।

इसलिए अपने पर full attention रखो...।

देखो, जब तक आप अपने को इस दुनिया के प्रभाव से न्यारे नहीं करते हो, तब तक आप बाप-समान नहीं बन सकते...!

बाबा आपको विशेष आत्मायें समझ आपकी विशेष पालना कर रहा है, तो आप स्वयं को भी उतना ही विशेष समझो...।

अभी आपको बेहद के कार्य करने हैं, बाप को आप बच्चों से बहुत उम्मीदें हैं, तो आप भी अपने महत्व को समझो और हर पल बाबा (परमात्मा पिता) के संग रह कार्य व्यवहार में आओ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
21.10.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

बच्चे, आप अपने संकल्पों की शक्ति को जानते हो क्या...?

संकल्प शक्ति के आधार पर ही आप pass with honour, first division या नम्बरवार बनते हो। इसलिए संकल्प शक्ति को जान उसे सही रीति बाप की श्रीमत् प्रमाण use करो...।

जो बच्चा अमृतवेले से रात तक अपनी मन-बुद्धि को बाप की श्रीमत प्रमाण अर्थात् स्वयं को ऊँच स्वमान की स्थिति में स्थित कर बाप (परमात्मा पिता) को संग रख चलता है अर्थात् अपने ऊपर full attention रख पुरूषार्थ कर रहा है, तो बाप भी उसका full ज़िम्मेवार है।
इसलिए बाप की इस श्रीमत को महीनता से समझो...।

देखो बच्चे, आप यात्रा पर हो तो आपको स्वयं के रास्ते की हर side scene से मुक्त हो आगे बढ़ना है...।

रास्ते में रूकावट आयेगी अर्थात् drama के scene change होंगे ... कभी यह आपके according चलेंगे और कभी आपके past के कर्मों के according...!

तो उन scenes को देख हलचल में मत आओ ... क्या, क्यों के question में मत फँसो और ना ही यह सोचो कि बाप ही कुछ करें...!

यह कम बात है क्या ... बाप स्वयं आकर आपको पढ़ा भी रहा है और परिस्थिति से बाहर निकलने की युक्ति भी बता रहा है...!
इसलिए इन युक्तियों को use कर परिस्थितियों से मुक्त बनो...।

यदि परिस्थितियों में ही अपने संकल्पों को उलझा दोगे, तो ना ही अपने स्वमान में स्थित हो पाओगे और ना ही बाप को संग रख पाओगे...!

इसलिए drama की हर scene को accept करो।
बाबा बार-बार कहता है हल्के रहो ... परन्तु जब कुछ भी आपके according नहीं होता है तो आप संकल्पों द्वारा भारी हो जाते हो, फिर ना चाहते हुए भी उन संकल्पों में फँस जाते हो...!

फिर स्वयं ही सोचो ऐसे मंज़िल तक कैसे पहुँच पाओगे...?

बाबा जबकि कह रहा है कि अपनी problem मुझे दे दो, हल्के रह पुरुषार्थ करो, तो करना तो आपको ही है ना...!

बाबा जानता है मन-बुद्धि, संस्कारों वश भागती है, यदि आप attention नहीं दोगे और अलबेले रहोगे, तो वो तुम्हारे संस्कार और भी शक्तिशाली हो जायेंगे...।

इसलिए स्वयं को भिन्न-भिन्न ऊँच स्वमान दो - "आप मास्टर सर्वशक्तिवान् हो ... सर्वशक्तिवान् बाप आपके साथ है" ... यह सोचते ही समस्यायें कमज़ोर हो जायेगी...।

देखो, बाप की मदद भी आपको तभी मिलेगी, जब आप दृढ़तापूर्वक हिम्मत रख बाप की हर श्रीमत की पालना करोगे...।

63 जन्म के तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क ... हर तरह के हिसाब-किताब हैं, जो आपने अपने लिए स्वयं ही बनाये हैं तो चुक्तु भी आपको ही करने पड़ेगे...!

अभी तो आपको बाप का पूरा-पूरा सहयोग है ... बाबा सहयोग के साथ शक्ति भी भर रहा है, ताकि आप सहज रीति अपना हिसाब-किताब चुक्तु कर अपनी प्रालब्ध भी ऊँच बना पाओ, परन्तु बाप की मदद का पात्र आपको स्वयं ही बनना पड़ेगा...।

महीनता से बाप की हर श्रीमत समझ आगे बढ़ो...।

• बाप पर निश्चय अर्थात् बाप की हर श्रीमत पर निश्चय...
• Drama पर निश्चय अर्थात् drama में हर रोज़ की दिनचर्या में आने वाले हर scene पर निश्चय...
• स्वयं पर निश्चय अर्थात् अपने part पर निश्चय...
• परिवार पर निश्चय अर्थात् परिवार की हर आत्मा के act पर निश्चय...

यह निश्चय ही आगे बढ़ने का साधन है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
22.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

हम किसी भी आत्मा के बन्धन से छूटना चाहें, पर हम छूट नहीं सकते और हम किसी भी आत्मा के साथ उतना ही रह सकते हैं जितना कि हिसाब-किताब है, चाहे हम कितना भी चाहें ... यह आत्मा मुझसे दूर ना जायें...!

यह एक drama का नियम कहो या आपका हिसाब-किताब कहो ... इसलिए आपको हर हाल में निश्चिन्त रहना है ... यह निश्चिन्त स्थिति कहो, साक्षी स्थिति कहो, यह उड़ाने वाली है...।

इसलिए धीरे-धीरे इस देह से, इस देह के हिसाब-किताब से, संस्कार, सम्बन्ध, वैभव, वस्तु हर चीज़ से साक्षी होते जाओ...।

जितना आप साक्षी होने का पुरुषार्थ करोगे तो धीरे-धीरे उन सबका खींचाव कम होता जायेगा...।

इसके लिए अशरीरीपन की drill बार-बार करो और स्वयं को परमधाम निवासी समझो ... निमित्त बन कार्य किया और न्यारे हो गये।

देखो, बिल्कुल थोड़ा-सा drama ऐसा रह गया है कि जिसमें आपको निरसंकल्प हो अर्थात् क्या, क्यों को छोड़ बाप (परमात्मा पिता) को संग रख चलते जाना है, फिर जल्दी ही drama आपके according चलेगा अर्थात् आपके संकल्पों के आधार पर चलेगा...।

बच्चे ... आपकी दृष्टि से, बोल से, संकल्प से एक मुरझाया हुआ फुल भी खिल जायेगा, जैसे पारस होता है, जो लोहे को सोना बना देता है, इसी तरह आपकी power से ... रोगी, निरोगी बन जायेगा ... अशान्त, शान्ति में आ जायेगा ... दुःखी, सुखी हो जायेगा...।

इस तरह सब असम्भव कार्य सम्भव होंगे, परन्तु तब जब आप अपनी दृष्टि, बोल, संकल्प में एक तो पवित्रता की शक्ति भरोगे, दूसरा इनकी value को समझोगे...।
जितनी valuable चीज़ होती है, उसे बहुत सोच-समझकर use किया जाता है और साथ ही जो चीज़ कम quantity में होती है, उसकी value बढ़ती है...।
इसलिए अपने महत्व को समझ पुरूषार्थ करो...।

देखो ... जिस आत्मा को बहुत बड़े-बड़े कार्य करने होते हैं, वो छोटी-छोटी बातों में अपने मन को नहीं उलझाती...!

इस दुनिया में भी बड़े कार्य करने वाला मनुष्य, अपने छोटे-छोटे कार्य अपने assistant को दे देते हैं ... और यहाँ तो स्वयं भगवान कह रहा है कि तुम्हारे हर कार्य की ज़िम्मेवारी मेरी है..., परन्तु तभी, जब आप अपनी मन-बुद्धि को बेहद के कार्य में लगाओगे...।

इसके लिए स्वयं को स्वीकार करो कि "मैं ही दुनिया को परिवर्तन करने वाली चमत्कारी आत्मा हूँ..., मेरे संकल्प से ही विश्व-परिवर्तन होगा..., मैं ही दुःखी आत्माओं को सुखी बनाने वाली अर्थात् दुःखहर्ता-सुखकर्ता, मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता हूँ..., मैं ही मास्टर भगवान हूँ..."।

जब स्वयं को ऐसा समझोगे तो छोटी-छोटी problem में आप अपना समय व्यर्थ नहीं कर सकते...।

इसलिए स्वयं के स्मृति स्वरुप बन न्यारे अर्थात् कार्य करने से पहले, कार्य करते समय और कार्य करने के बाद भी कार्य के संकल्पों से निरसंकल्प स्थिति...।

बन्धन-रहित आत्मा की महीनता से definition निकालो और लिखो, फिर check करो कि मुझे कौन-कौन से बन्धन है..., जहाँ मेरी मन-बुद्धि जाती है...?
फिर बाप (परमात्मा पिता) को संग रख, अपने ऊँच स्वमान में स्थित हो, अपने कार्य की स्मृति से स्वयं को बन्धन-मुक्त बनाओ...।

निर्बन्धन आत्मा ही बेहद का कार्य कर सकती है, बाप की हर श्रीमत का महीनतापूर्वक पालन कर सकती है...।

देखो, समय को समीप लाना है तो एक-एक second का हिसाब रखना पड़ेगा ... चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक कार्य हो अर्थात् हर कार्य बाप को संग रख, हल्के हो करोगे तो सफलता आपका आह्वान करेगी अर्थात् कदम-कदम में सफलता मिलेगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
23.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बच्चे, अब समय को व्यर्थ करने की margin नहीं है। यह बात गुह्यता से हर बच्चा समझ नहीं पा रहा है...!

दिल भी सच्चा है, लगन भी एक है, फिर भी सारा दिन अपना समय सफल नहीं कर पा रहे हैं...!

देखो, बाबा अपना accurate part play कर रहा है, जबकि बाप स्वयं यज्ञ रचता है तो यज्ञ की रक्षा करना भी बाप का ही फर्ज़ है, इस बात को गुह्यता से समझो...।

जबकि यह climax period चल रहा है, तो हर आत्मा के अभी तक बजाये गये part की reality सामने आ रही है क्योंकि अन्त समय में कोई भी स्वयं को छिपा नहीं पायेगा, सभी transparent रूप में सामने आयेंगे...।

अभी तो फिर भी चला रहे हैं, परन्तु बिल्कुल थोड़े से ही समय में सब कुछ open हो जायेगा...।

परन्तु आप बच्चों को इन सब बातों का संकल्प ना चला, इस drama रुपी film में अपना hero part fix करना है।

चाहे आप राजयोग का अभ्यास करो, drill करो, रुह-रिहान करो, मंसा सेवा ... गुणों और शक्तियों का, स्वमान का अनुभव करो, आत्मिक दृष्टि का अभ्यास, ज्ञान मंथन अर्थात् साकार और अव्यक्त मुरली का पढ़ना और चिन्तन करना, चाहे तो स्वयं को समझानी देना, बाप के साथ का स्थूल में भी अनुभव करना..., इस तरह अपने समय को सफल करना...।
बाप से आप सभी अपनी दिनचर्या की स्थूल बातें भी कर सकते हो, मतलब बाप को अपना साथी बनाना...।

बच्चे, drama के पट्टे पर सीधे चलते चलो ... drama पर accurate चलने पर आपकी स्थिति अचल और अडोल बन जायेगी ... drama के हर scene में आपका कल्याण समाया हुआ है, यह जान और मान अपने पुरुषार्थ में अपना 100% दो, ताकि आप अपना present और future ... bright बना सको।

देखो, बाबा आपको पढ़ा रहा है और सार रूप में आपको सारी पढ़ाई पढ़ा भी दी है, इसलिए स्वयं ही स्वयं की result check करो कि पहले और अब में कितना परिवर्तन हुआ है...?
और daily की पढ़ाई को अपनी practical life में apply करो ... जबकि आप अपने व्यवहार से ही स्वयं को प्रत्यक्ष करोगे, इसलिए खुद को check करो कि मुझसे मेरे सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाले क्या अनुभव करते हैं...?

देखो, समय के समीपता को महीनता से समझो और आगे बढ़ो...।

परिवर्तन तो होना ही है।

जो बच्चे स्वयं के पुरुषार्थ से बाप की श्रीमत प्रमाण चलकर वा चलने का 100% attention दे परिवर्तन करते हैं, वो नम्बरवन बनते हैं...।
और जिनका परिवर्तन अन्त में बाप (परमात्मा पिता) को करना पड़ता है, अर्थात् जो बच्चे इस समय अपने समय, संकल्प, बोल की अथवा बाप की श्रीमत के महत्व को ना समझ थोड़ा-थोड़ा भी अलबेले रहते है, वो नम्बरवार बन जाते हैं...।

इसलिए हर आत्मा स्वयं ही स्वयं के पुरुषार्थ से स्वयं को प्रत्यक्ष करती है...।

जबकि इस समय भी बाबा स्वयं आकर आप बच्चों को same पढ़ाई पढ़ा रहा है, फिर भी नम्बरवार बन जाते हो...!

जितना स्वयं को बाप-समान समझकर चलोगे, उतना ही बाप के समीप आते जाओगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
24.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बच्चे, यदि विजय माला में आना है तो स्वयं को विजयी रत्न बनाना पड़ेगा अर्थात् अपने अमृतवेले से रात तक की दिनचर्या में सम्पूर्ण विजयी ... चाहे paper तन, मन, धन, बुद्धि, सम्बन्ध, सम्पर्क, स्वभाव, संस्कार, कमी, कमज़ोरी अर्थात् कोई बड़े से बड़ा हिमालय जैसा paper भी हो, तो उसमें भी विजयी...।

अभी के विजयी बनने के संस्कार, आपको विजयी बना देगा...।

इसलिए स्वयं ही स्वयं की result check करो कि; मैं कितने percent विजयी बना हूँ...?

अभी तो बाप (परमात्मा पिता) का सहयोग है, फिर भी हारते रहोगे, तो फिर कब विजयी बनोगे...! आगे चलकर तो परिस्थितियां बढ़नी ही है।

इसलिए अभी से स्वयं पर full attention रख स्वयं को परिवर्तन करो...।

बाप की हर श्रीमत को महीनता से समझ follow करो ... daily अपना chart देखो और पहले दिन से compare करो।

यदि विजय माला का दाना बनना है तो सभी क्या, क्यों, ऐसे, वैसे को छोड़ विजयी बनने के संस्कार बनाने पड़ेगे...।

देखो, यदि कोई paper बड़े रूप में आता है और आप समझते हो कि इसमें मेरी हार हो गई या उस paper को cross करने में संकल्प और समय लगा..., तो फिर से हिम्मत और दृढ़तापूर्वक पुरुषार्थ में लग जाओ और सोचो मैं एक विजयी रत्न हूँ..., कल्प-कल्प का विजयी हूँ..., सर्वशक्तिवान् मेरे साथ है, तो आगे मेरी विजय अवश्य होगी ... attention दे, हिम्मत रख, दृढ़ता और हल्के रह स्वयं को विजयी बनाओ...।

यदि हार जाते हो तो फिर power भरो, लेकिन दिलशिकस्त नहीं होना, दिलशिकस्त होना अर्थात् हमेशा की हार...।
इसलिए दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ो...।

अपने स्वमान को अपने साथ रखो। गुणों और शक्तियों को use करो ... बाबा आपके साथ है..., हर समय आपको सहयोग दे रहा है, पर कर्मभोग और हिसाब-किताब आपके हैं, जो आपको ही चुक्तु करने हैं ... यदि हिम्मत रख, बाप की श्रीमत प्रमाण चलोगे तो बाप का भी full सहयोग ले पाओगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
25.10.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

देखो बच्चे, बाप है अपने बच्चों का कल्याणकारी और उसकी हर श्रीमत में बच्चों का केवल कल्याण समाया हुआ है, इसलिए बाबा चाहता है कि हर बच्चा अपने स्वयं के पुरुषार्थ से विजयी बने...।

नहीं तो अंत में बाबा तो बच्चों को उनके सम्पन्न स्वरूप तक पहुँचा ही देता है..., परन्तु जो बच्चे स्वयं के पुरुषार्थ से प्रालब्ध बनाते हैं वो सबके ईष्ट बन जाते हैं ... और इस समय जो बच्चे बाप (परमात्मा पिता) की श्रीमत को 100% follow नहीं कर पा रहे हैं वो तो reality में अपने थोड़े से पुरुषार्थ के द्वारा बनाए गए प्रालब्ध या त्याग के द्वारा प्राप्त भाग्य को अच्छी तरह अनुभव नहीं कर पा रहे है...।

यह समय संगमयुग का है जबकि स्वयं परमपिता परमात्मा जिनको पाने के लिए बहुत सारी आत्माओं ने अपने जीवन का और इस दुनिया का त्याग किया, फिर भी प्राप्ति क्या थी..., वो आप सब जानते हो...!

वो परमात्मा आकर आप बच्चों को पढ़ा रहा है ... सतयुग से लेकर कलियुग तक आप भिन्न-भिन्न आत्माओं के संग रहते हो, परन्तु यह बिल्कुल थोड़ा-सा समय है जब आप बच्चे परमात्म श्रीमत पर चल इसी जीवन में वह सुख कहो, आनन्द कहो प्राप्त करते हो जिसके आगे सतयुग का सुख कुछ नहीं...!

देखो, बाप सतुयग में तो आप बच्चों के संग नहीं जायेगा ना...! तो आप जो परमात्म प्राप्ति का सुख है, वो अभी ही तो प्राप्त करोगे...।

जब तक आप सम्पूर्ण पावन नहीं बनते तब तक पुरुषार्थ है, त्याग है ... त्याग भी क्या है...? पुरानी दुनिया के सब सुख के बीच रहते मन को मनमनाभव करना है और बुद्धि द्वारा योग लगाना है।
फिर यह पुरुषार्थ तो आनन्द में परिवर्तित हो जायेगा...।

प्रालब्ध के आगे पुरुषार्थ कुछ भी नहीं है और अब तो पुरुषार्थ का समय बिल्कुल थोड़ा-सा ही रह गया है...। फिर तो अपने पुरुषार्थ के according प्राप्तियाँ शुरु हो जायेंगी।

इसलिए बच्चे, अब समय व्यर्थ ना कर, हिम्मत रख दृढ़तापूर्वक पुरुषार्थ करो, यह पुरुषार्थ आगे चलकर थोड़े से ही समय में बहुत, बहुत, बहुत, बहुत सुख देने वाला है ... जिस सुख के बारे में आप सोच भी नहीं सकते हो ... अन्यथा बच्चे बहुत-बहुत पछताना पड़ेगा...!

बाबा को भी अच्छा नहीं लगेगा कि मेरे बच्चे जिन्हें विशेष पालना दी, वो भी नहीं कर पायें...!

समझदार हो, इसलिए सोच समझकर अपना समय और संकल्प समर्थ करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति

Om Shanti
26.10.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

देखो बच्चे, बाबा तो हर बच्चे को विशेष गुणों और शक्तियों से भर भी रहा है और पढ़ाई भी पढ़ा रहा है, परन्तु बच्चे ठीक रीति पढ़ाई को अर्थात् बाप की श्रीमत को समझ नहीं पा रहे हैं...!

इसलिए बैठते हैं बाप की याद में और बुद्धि भाग जाती है अपने ही हिसाब-किताब में...!
फिर बाबा भी क्या करेगा...!

क्या बाबा ने कहा है कि अपने सभी बोझ अपने ऊपर रखो...?

बाप तो कहता है ... बच्चे, अपने सभी हिसाब-किताब, कमी-कमज़ोरी चाहे तन की, मन की, धन की, जन की है ... बाप (परमात्मा पिता) को दे दो और स्वयं हल्के रहो, परन्तु बच्चे क्या करते ... एक तरफ तो कहते हैं बाबा आपका है, आपका है ... और दूसरी तरफ सोच-सोच कर भारी हो जाते हैं...!

फिर कभी सोचते है;
हम तो इतना पुरुषार्थ कर रहे हैं, फिर यह हिसाब आया ही क्यों...?

क्या बाबा ने कह दिया है कि आपके paper नहीं होंगे...! बाबा तो कह ही रहा है कि जब तक सम्पूर्ण नहीं बनते तब तक किसी ना किसी रूप में paper आयेंगे, हर बच्चे के पास...।

परन्तु आप बच्चों को अपने सभी papers का बोझ बाप को सौंप, हल्के रह पुरुषार्थ करना है।

जब आप स्वयं सोच-सोच कर भारी हो जाते हो तो बाप भी साक्षी हो जाता है...! इसलिए बाप की श्रीमत को सही रीति समझो ... paper means ही मुश्किल होता है, परन्तु आप बच्चे उसी समय वो बोझ बाप को दे दो।

जैसे देखो ... आपको कोई तन का हिसाब आया है, चुक्तु तो आपको ही करना है ... फिर आप हल्के रह अपने तन को बाप को समर्पण करो ... बार-बार करो...।
बाबा के पास जाकर बैठ जाओ। तन के साथ मन को भारी मत करो...!

ज्यादा बात है, तो गोली खा लो ... परन्तु ज्यादा सोचो मत क्या करें, कैसे करें...? रूहानी exercise करते रहो ... फिर बहुत जल्द बाप की मदद का अनुभव होगा।

इस तरह मन का, धन का, जन का, कमी-कमज़ोरी का paper हो तो बाप को समर्पण कर दो। यदि आप स्वयं भारी रहोगे तो बाप की मदद नहीं ले पाओगे और अंत में जब result out होगी तो सोचोगे ... था बहुत सहज, कईयों ने किया, लेकिन हम नहीं कर पायें..., फिर पश्चाताप भी स्वयं को ही करना पड़ेगा...!

बाप तो आप बच्चों को महीनता से ज्ञान भी समझा रहा है, मदद भी दे रहा है ... पर करना तो आप बच्चों को ही पड़ेगा...!

इसलिए पूरे उमंग-उत्साह के साथ, हिम्मत रख, दृढ़ता पूर्वक करो...।

सदा अपने को साक्षी समझने से कर्मभोग के वश नहीं होंगे। हर कर्मभोग सुली से काँटा अनुभव होगा।

भविष्य जन्म-जन्मान्तर कर्मभोग से मुक्त होने की खुशी इस कर्मभोग को चुक्तु करने के लिए औषधि का रूप बन जाती है...।
खुशी दवाई की खुराक बन जाती है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
27.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

देखो बच्चे, बाबा ने आकर बहुत महीनता से आपको विजयी माला का दाना बनने के लिए सार रूप में सारी पढ़ाई पढ़ा दी है। अब तो केवल आपके उमंग-उत्साह के लिए वो ही पढ़ाई repeat कर रहा है।

बाबा तो आपका उमंग-उत्साह बढ़ा रहा है, परन्तु हिम्मत तो आप बच्चों को ही रखनी पड़ेगी...।

बाबा के द्वारा पढ़ाई गई पढ़ाई को पढ़, उमंग-उत्साह में आते हो, लेकिन बस थोड़े से समय के लिए...! फिर दिनचर्या में आते ही हिम्मतहीन हो जाते हो और कहते हो क्या करें, कैसे करें, समझ नहीं आता...!

अभी तक यह question mark आपको शोभा नहीं देता...! जिन्हें भगवान् ... सर्वशक्तिमान् स्वयं आकर पढ़ा रहा हो उन बच्चों के बोल भी ऐसे होने चाहिए क्या...?

देखो, बाप का तो घर जाने का समय हो गया है, वो तो केवल कुछ बच्चों के लिए extra रुका हुआ है, फिर भी आखिर कब तक...?

बाप की पढ़ाई बाप-समान बनाने की है अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिवान् बनाने की है, विजय माला का दाना बनाने की है ... जिसमें हिम्मतहीन अर्थात् कमज़ोर बच्चे नहीं आ सकेंगे...!

इसलिए खुद ही सोच-विचार कर लो अब हमें क्या करना है...? बार-बार सोचकर भारी हो जाना है या बाप समान हल्के रह बाप के संग जाना है...।

भारी होना अर्थात् संकल्पों द्वारा व्यर्थ सोचते रहना और जिस सोच का कोई result भी नहीं निकलता...!

कभी अपनी परिस्थितियों के बारे में सोचते हो और कभी अपने ही संस्कारों वश की गई गलती के बारे में...।

एक गलती तो संस्कार वश हो गई, दूसरी गलती उस गलती को सोच-सोच कर भारी होने की करते हो...! बिन्दी लगानी नहीं आती, फिर बिन्दु रूप भी नहीं बन पाओगे...! और ना ही बाप के संग घर ही जा पाओगे...!

जो बच्चे दृढ़तापूर्वक हिम्मत रख बाप की श्रीमत को अपना 100% दे, follow कर रहे हैं अर्थात् paper तो उन बच्चों के पास भी आते हैं परन्तु बार-बार वो अपना सब कुछ बाप को समर्पण कर आगे बढ़ रहे हैं और उन्हें बाप (परमात्मा पिता) की भी पूरी-पूरी मदद मिल रही है।

बाप तो बच्चों को ऊँचे से ऊँचे स्वमान की स्मृति दिलाता है ... कि आप तो मास्टर सर्वशक्तिमान् हो, कल्प-कल्प के विजयी हो अर्थात् विजयी रत्न हो और कहता है कि इस ऊँच स्वमान में स्थित रहो ... परन्तु बच्चे क्या कहते...?
कि...
मैं कमज़ोर हूँ, मुझसे हो नहीं पा रहा है..., क्या करूँ, कैसे करूँ...?
ऐसे कमज़ोर स्वमान में स्थित रहते हैं, ना ही हिम्मत रखते हैं और ना ही दृढ़ता ... फिर ऊँच पद कैसे पायेंगे...?

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
28.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बच्चे ... हिम्मत रख, दृढ़तापूर्वक कदम आगे बढ़ाते चलो, तो बाप स्वयं ही सारे कार्य सम्पन्न करवा देगा।

बस आप निश्चय रख निश्चिन्त रह आगे बढ़ो ... ना ही past के बारे में सोचो, ना ही future के बारे में ... बस present में स्वयं को आत्मा समझ बाप (परमात्मा शिव) के संग रहो...।

जितना आप बाप की श्रीमत को follow करते हो अर्थात् अपना सब कुछ बाप को समर्पण कर निश्चिन्त अवस्था में रहते हो, उतने ही स्थूल और सूक्ष्म खज़ानों से भरपूर रहते हो...।

भगवान के बच्चे भरपूर नहीं होंगे तो बताओ कौन होंगे...?

बस अब बिल्कुल थोड़ा-सा हिसाब-किताब रह गया है, वो भी 100% बाप (परमात्मा पिता) हवाले कर दो और निश्चिन्त रहो...।

जितना percent निश्चिन्त, उतना ही percent बाप की मदद के पात्र बनोगे ... और जो बच्चे इस समय 100% बाप को follow कर रहे हैं, वो बाप की कमाल देखेंगे...!

बस, आप स्वयं को बाप से मिले हुए हर सूक्ष्म खज़ाने से भरपूर रखो ... उन गुणों और शक्तियों को अपनी दिनचर्या में use करो...।

आप मालिक हो तो मालिक बनकर use करो..., पुराने संस्कारों का चिन्तन छोड़ दो...।

अब आपके संस्कार बाप समान हैं ... बाप के सभी खज़ाने आपके हैं - इसी स्मृति में रहो...।
जितना स्वयं को भरपूर समझोगे उतना ही सम्पन्नता की ओर बढ़ोगे...।

बस अभी-अभी को याद रखना, अगर आप कभी करोगे तो बाप भी कभी-कभी कर देगा...!

देखो बच्चे, वही बच्चे विजयी बनेंगे जो 100% सम्पन्न होंगे अर्थात् सुख, शान्ति, प्रेम, शक्तियाँ, आनंद, पवित्रता से भरपूर ... 1% भी कम नहीं ... दाता के बच्चे हो तो स्वयं को 100% सम्पन्न बना दाता बनना, माँगने वाले नहीं...!

निश्चय है, निश्चिन्त अवस्था है, तो विजय आपकी ही है...।

बाप भी आपके future को देख खुश होता है और आपके वाह-वाह के गीत गाता है।
आप भी खुशी-खुशी से कदम आगे बढ़ाओ और अपने भाग्य और भाग्य-विधाता के गीत गाओ...।

वरदानी बच्चे हो तो वरदानों से सम्पन्न रहो...। आत्मिक दृष्टि, वृत्ति और स्मृति की तरफ attention बढ़ाओ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
29.10.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

देखो बच्चे, बाप (परमात्मा शिव) आते हैं बिल्कुल कलियुगी अन्धियारी रात में..., सम्पूर्ण पतित आत्माओं को सम्पूर्ण पावन आत्माएं बनाने...!

बताओ, पतितों को सम्पूर्ण पावन बनाने की कमाल किसकी है...? (बाबा आपकी...)
बाप के साथ-साथ आप बच्चों की भी कमाल है, जोकि आप गुप्त रीति आए हुए भगवान को तुरन्त पहचान कहते हो ... यह तो सच में भगवान ही है, मेरा ही बाप है...।

फिर बाबा भी कहते हैं ... हाँ, यह मेरे कल्प पहले वाले बिछुड़े हुए सिकीलधे बच्चे हैं।

बच्चे बाप पर बलिहार जाते हैं, तो बाप भी बच्चों पर बलिहार चला जाता है।

देखो बच्चे, बाबा के पास कैसा भी बच्चा आये बाबा कभी नहीं सोचते कि यह पतित है, विकारी है या अपकारी है...। बाप तो हर बच्चे को accept कर लेते हैं ... जबकि बाप जानते भी हैं कि कई बच्चे बाप का नाम बदनाम करेंगे या वापस जाकर विकारी बन जायेंगे...!
फिर भी बाप सभी को बड़े प्यार से accept कर लेते हैं।

इसी तरह आप बच्चों को भी करना है, जबकि आपको बनना बाप समान है तो बाप समान ही तो सबका कल्याण करना पड़ेगा...!

चाहे कोई आत्मा कितनी भी विकारी हो अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से भरपूर हो ...
कल्याण तो आपको ही करना पड़ेगा ना...!

अर्थात् आपको संकल्पों द्वारा हर आत्मा को क्षमा कर प्रेम और रहम की दृष्टि रखनी है..., या आप सोचते हो कि कुछ एक आत्मा का कल्याण ना हो तो भी चलेगा...!
फिर तो आप विश्व कल्याणकारी नहीं बन पाओगे...!

इसलिए जैसी भी आत्मा हो, हर आत्मा को साथ लेकर जाना है ... तो हर आत्मा का कल्याण भी करना पड़ेगा...।

बाप-समान बनना है तो बाप बन हर आत्मा को नासमझ समझ, माफ करना पड़ेगा...।

स्वयं को गुणों और शक्तियों से भरपूर रखोगे और अपने ऊँच स्वमान में स्थित रहोगे तो हर कार्य सहज हो जाएगा...।

बाप की श्रीमत प्रमाण चलते चलो ... यह मत सोचना यह कार्य तो मुश्किल है...! मुश्किल सोचने से, और मुश्किल हो जाएगा और विश्व कल्याणकारी के title से बाहर आ जाओगे ... फिर विश्व महाराजन् भी नहीं बन पाओगे...!

इसलिए अपने संकल्पों को शुभ-भावना, शुभ-कामना से सम्पन्न रखो और दृष्टि रहम और प्यार भरी हो।

बाप ने यह ज़िम्मेवारी आप बच्चों को ही दी है अर्थात् यह कार्य आप बच्चों को सौंपा है, तो कार्य ठीक रीति करना...।

यह मत देखो कि वो क्या कर रहा है, हमेशा यह देखो और सोचो की मुझे क्या करना है...।
समझा...।

अच्छा। ओम् शान्ति

Om Shanti
30.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा ... बच्चे, आप अपना attention मन, बुद्धि की ओर बढ़ाओ...। अभी आपकी मन, बुद्धि आपको सहयोग दे रही है, फिर भी संस्कारों वश इधर-उधर भाग जाती है, पर आप attention दे जल्दी ही उसे पकड़ लो अन्यथा time बहुत waste हो जाता है।

देखो, इतना ऊँचा भाग्य प्राप्त करना है तो थोड़ा बहुत तो त्याग करना ही पड़ेगा...!

बाबा चाहता नहीं है कि बच्चे मेहनत करें...! बाबा तो कहता है कि मोहब्बत में खो जाओ ... परन्तु बच्चे मोहब्बत में खोने के लिए भी मेहनत करते है...!

बच्चे, बाप के साथ की company और companionship को बढ़ाओ...।
जब अनुभव होना शुरु होगा, तो सहज हो जायेगा।

बस आप बच्चों को अपनी बुद्धि को इस पुरानी दुनिया से सम्पूर्ण रीति उपराम रखना है।

दुनिया में आकर्षण, सुख, सुविधा के साधन अति में जाने वाले हैं ... अति के बाद ही तो अंत होगा ना...।

दुनिया में सभी इस आकर्षण में, सुख-सुविधा के साधनों में ... अति में चले जायेंगे। फिर जल्दी ही उन्हें feel होगा कि इन सब चीज़ों से शान्ति वा सुख नहीं मिल सकता, बस परेशानियां ही बढ़ती है...!

दूसरी तरफ, आप बच्चे अभी शान्त स्वरुप, सुख स्वरुप बनने का अभ्यास करते हो जिससे आपके संस्कार शान्ति के और सुख के हो जाते हैं।
फिर आप इन सब सुख-सुविधा के साधनों को use करते भी उनसे न्यारे रहते हो।

देखो, यह सब साधन आप बच्चों के लिए ही बन रहे हैं और आप बच्चों को अंत तक किसी भी चीज़ की, कोई भी कमी नहीं रहेगी...। बाप (परमात्मा शिव) के बच्चों के भण्डारे भरपूर रहेंगे ... यह आप बच्चों के साथ बाप का promise है।

पर अभी आप केवल वो करो जो बाप कहता है - "attention, check और change" - इसमें अलबेले मत बनना...।

एक आत्मिक स्मृति और light के शरीर का अभ्यास बढ़ाओ - यह भी attention से ही बढ़ेगा ... चलते-फिरते यही सोचो कि मैं point of light हूँ, light के शरीर में हूँ ... बाप की छत्रछाया के नीचे हूँ ... बस...।

अच्छा। ओम् शान्ति

Om Shanti
31.10.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा ... आप बच्चों को मास्टर ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, सुख वा प्रेम का सूर्य बन विश्व को रोशन करना है।

सारे विश्व को light-might देने वाले बच्चे छोटी-छोटी बातों में अपनी मन-बुद्धि नहीं लगाते...!

कोई भी कार्य हो उसे करो फिर उससे न्यारे हो जाओ...। यदि उस काम के या बात के संकल्प मन-बुद्धि में चले गए तो वो आपको disturb करेंगे...।

इसलिए स्मृति स्वरूप बन मन-बुद्धि की तरफ attention बढ़ाओ।

देखो, समय बहुत कम है ... यदि अभी से समय को सफल करोगे तो समय से पहले अपनी मंज़िल पर पहुँच पाओगे और यदि अभी थोड़ा भी समय अलबेलेपन में रह व्यर्थ किया, तो मंज़िल पर पहुँचना नामुमकिन हो जाएगा...!
क्योंकि जल्दी ही तमोप्रधानता के vibrations बढ़ेंगे, जो आपको आगे बढ़ने नहीं देंगे...।

इसलिए एक-एक second की importance समझ उसे सफल करो ... अर्थात् अपनी मन-बुद्धि पर full attention रखो, फिर भी यदि बुद्धि इधर-उधर जाती है तो फिर से उसे पकड़ लो, लेकिन अलबेलेपन में वा थककर वा दिलशिकस्त हो वा आलस्य में आ..., मन-बुद्धि को खुला नहीं छोड़ो...।

समय अचानक परिवर्तन हो जाएगा और आप देखते रह जाओगे...!

जो अपने समय को 100% सफल करेगा उसे तो बाप (परमात्मा शिव) आप समान बना लेगा और दूसरे यथाशक्ति ही अपनी मंज़िल पर पहुँच पायेंगे...।

बस, हिम्मत रख दृढ़तापूर्वक चलो अन्यथा बाप भी कुछ नहीं कर पाएगा ... और जो बच्चे कर रहे हैं, उन्हें तो समय से पहले मंज़िल पर पहुँचना ही है ... इसलिए full attention....!

अच्छा। ओम् शान्ति

Om Shanti
01.11.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा ... बच्चे, आप अपने हर संकल्प के महत्व को समझो ... क्योंकि आप संकल्पों द्वारा ही स्वयं परिवर्तन सो विश्व परिवर्तन करते हो।

इसलिए आपको हमेशा संकल्पों से light रहना है और संकल्पों में हमेशा शुभ भावना, कल्याण की भावना, प्रेम की भावना, रहम की भावना emerge रूप में रहें, स्व प्रति और विश्व प्रति भी...।

जब भी कोई परिस्थिति वा बात आ जाती है ... और आप क्यों, क्या, ऐसा, वैसा, कब, अर्थात् question mark में फँस जाते हो, तो परिस्थितियाँ भी आगे से आगे बढ़ती जाती है और आप स्मृति स्वरूप की बजाए complaint स्वरूप बन जाते हो ... चाहे तो complaint स्वयं से, अन्य आत्माओं से वा परमात्मा से रहती है...!

इसलिए बिन्दु रूप बन, बिन्दु लगाने का अभ्यास बढ़ाओ। चाहे बात छोटी से छोटी हो वा बड़ी से बड़ी, बिन्दु लगाते-लगाते आपकी हर परिस्थिति को बिन्दु लग जाएगा और आप बिन्दु बन, बिन्दु लगा, बिन्दु बाप (परमात्मा शिव) के पास रह विश्व परिवर्तन का कार्य कर पाओगे...।

इसलिए स्वयं के संकल्पों पर attention रख संकल्पों की रचना करो...।

समय कम है, इसलिए अभ्यास और attention को बढ़ाओ...। हिम्मत और दृढ़ता सम्पन्न आत्मा ही स्वयं परिवर्तन सो विश्व परिवर्तन का कार्य कर पायेगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
02.11.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा ... बच्चे, धीरे-धीरे चारों तरफ से खिंचावट बढ़ेगी क्योंकि तमोप्रधानता दिनों-दिन बहुत speed से बढ़ रही है, आत्माएं ना चाहते हुए भी परवश होती जा रही है।

प्रकृति के पाँचों तत्व, पाँचों विकारों के साथ अलबेलापन, आलस्य, दिखावा, competition एक तूफान की तरह आगे से आगे बढ़ रहा है ... जिसकी लपेट में सभी आत्माएं आ रही है, चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक...।

इसलिए बाबा बार-बार कह रहा है कि ... बच्चे, जल्दी करो समय व्यर्थ मत करो...।

बाप (परमात्मा शिव) ने समय से पहले अपने सच्चे दिल वाले, सच्ची लग्न वाले बच्चों को पढ़ाना शुरु कर दिया है ... ताकि बच्चे इस जल्दी ही आने वाले तूफानों से बच अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें...।

देखो बच्चे, बाप ने तो आप बच्चों को नयनों में बसाया हुआ है, परन्तु drama के नियम प्रमाण चलना तो आपको ही पड़ेगा...।

बस अपने लक्ष्य को अर्थात् अपने सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरुप जोकि गुणों और शक्तियों की dress में हैं, अपने नयनों में बसाना पड़ेगा...।

जैसे अर्जुन की आँख केवल अपने लक्ष्य की तरफ थी..., यदि नज़र इधर-उधर गई तो समय पर अपनी मंज़िल पर नहीं पहुँच पाओगे...!

आप अपने hero part के महत्व को समझ जल्दी ही आने वाली प्राप्तियों को स्मृति में रख पुरुषार्थ करो।

अभी आप बच्चों को बाप का full सहयोग है, इसलिए अपना full attention दो...।

देखो बच्चे, इस दुनिया की किसी भी चीज़ चाहे वो तन है, सम्बन्ध, सम्पर्क, वस्तु, वैभव जो भी कुछ है, इनसे वैराग्य लाओ ... यह सब विनाशी है...।
अगर उधर attention गया तो वो आपको भी अपनी तरफ खींच लेंगे ...!

इसलिए, पहले हर चीज़ से न्यारे बन अर्थात् अपनी स्व-स्थिति में स्थित हो, फिर प्यारे बनना है।

जैसे-जैसे आपमें शक्तियां बढ़ती जाएगी तो सभी चीज़ें आपके अधीन होती जायेंगी और आप अधिकारी बन उन्हें use करोगे...।

बाबा तो चाहते हैं कि अपने प्यारे-प्यारे बच्चों को गोदी में बिठा उस पार ले जाएं, पर बाप भी drama के बंधन में है ... इसलिए चलना आपको ही पड़ेगा ... बस attention दे, हिम्मत और दृढ़ता रख पुरूषार्थ करो ... मंज़िल सामने ही है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
03.11.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा ने कहा कि बच्चे अभी भी कई बार साधारणता में आ जाते हैं क्योंकि अपने ऊँच स्वमान, ऊँच पढ़ाई और बाप (परमात्मा शिव) को भूल जाते हैं...!

परन्तु बच्चे यह साधारण बात नहीं है कि स्वयं परमपिता परमात्मा स्वयं भगवान आप बच्चों को पढ़ाने आता है...।

बार-बार साधारणता में आना ठीक नहीं है ... यह साधारणता व्यर्थ को भी ले आती है, जिस कारण मंज़िल दूर हो जाती है...।

बाबा बार-बार एक ही बात कह रहा है कि मन-बुद्धि की तरफ attention दो, संस्कार परिवर्तन का समय यही है, दृढ़ता की शक्ति emerge रूप में अपने साथ रखो।

हिम्मत तो रखते हो, साथ-साथ दृढ़ भी रहो...।

जब knowledge मिल गई है कि क्या सोचना है, क्या करना है, किस स्वरूप में स्थित रहना है फिर बार-बार विस्मृत हो साधारणता में क्यों आ जाते हो...?

Attention बढ़ाओ, दृढ़ता कि शक्ति बढ़ाओ ... तभी मंज़िल पर पहुँच पाओगे।

लौकिक में भी विशेष आत्माएं अपनी विशेषता को नहीं भूलती और यहाँ तो स्वयं परमात्मा के बच्चे, जिन्हें daily भगवान आकर स्वयं पढ़ाता है ... और बच्चे विस्मृत हो साधारणता में आ जाए, इसे क्या कहेंगे...!

ऊँच पद की प्राप्ति करनी है तो हमेशा ऊँच स्वमान में स्थित रह ऊँच पुरुषार्थ करना पड़ेगा...।

यदि स्व-परिवर्तन में ही इतना समय लगाओगे तो विश्व परिवर्तन कब करोगे...?
स्व-परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन है।

विजय माला का मणका बनना है, तो ऊँच पुरुषार्थ करना पड़ेगा ... attention, दृढ़ता, उमंग-उत्साह हिम्मत अपने साथ emerge रूप में रखना पड़ेगा ... अर्थात् रूहानी नशे में हर पल रहना पड़ेगा। अन्यथा समय पर पहुँच नहीं पाओगे...!

"जो करेगा, वो बनेगा" ... इसलिए attention please ... अब नहीं तो कभी नहीं...।

छोटी-छोटी परिस्थितियों में समय ना गँवा अपने पुरुषार्थ में तत्पर रहो।
यदि परिस्थितियों के बारे में ज्यादा सोचोगे तो परिस्थितियां बढ़ेगी, कम नहीं होंगी...!

इसलिए परिस्थितियों के बारे में सोचना बंद करो ... स्व-स्थिति के पुरुषार्थ को बढ़ाओ...।

बाप का आना और बाप का पढ़ाना साधारण मत समझो...।

जो बच्चे अपने ऊँच भाग्य, ऊँच भाग्य विद्याता, ऊँच पढ़ाई और ऊँच कर्तव्य के स्मृति स्वरूप हैं, वो ही ऊँच पद प्राप्त करेंगे।

साधारणता में रहने वाली आत्मा साधारण पद की अधिकारी है...!

समझदार हो ... स्वयं ही स्वयं को समझानी दे अपने हर संकल्प, बोल और कर्म में दृढ़ रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
04.11.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा ... बच्चे, महसूस करो ... मैं आत्मा light, light के कार्ब में हूँ और मेरे चारों तरफ light ही light है।

बच्चे, बाबा ने आपको सारी पढ़ाई पढ़ा दी है। यह सम्पन्न बनने की यात्रा जो है, वो मन-बुद्धि की है, अर्थात् संकल्पों की है।

कहते हैं कि ... सृष्टि की स्थापना ब्रह्मा के शुभ संकल्प से हुई ... केवल ब्रह्मा के ही नहीं, ब्राह्मणों के शुभ संकल्प से नई सृष्टि की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश होता है।

तो क्या आप इतना ही अपने संकल्पों की power को समझते हो...?

जब आप अपने संकल्पों में व्यर्थ वा साधारण संकल्प mix कर देते हो, तो आपके संकल्पों की power आधी रह जाती है...!

• संकल्पों के द्वारा ही आप स्व-परिवर्तन सो विश्व परिवर्तन करते हो।
• संकल्प जो हैं, वो हर कार्य का बीज है।
• संकल्प द्वारा ही आप स्वमान में स्थित हो परमधाम की यात्रा करते हो।
• विश्व कल्याण का कार्य करते हो।
• बाप के साथ का अनुभव करते हो, और...
• संकल्पों द्वारा ही गिरावट की तरफ जाते हो...!

अब जो समय जा रहा है उस according आपके एक-एक संकल्प समर्थ होने चाहिए।

स्वयं को शुभ संकल्पों के stock से भरपूर रखो ... alert रह संकल्पों को check करो।
यदि व्यर्थ वा साधारण संकल्प हैं, तो उसे change करो, समर्थ संकल्पों में...।

करना तो आप बच्चों को ही है...! बाबा तो हर पल आप बच्चों के सहयोग के लिए हाज़िर है।

बस आप सही रीति श्रीमत पर चलो।

आपके सच्चे दिल की एक पुकार पर बाबा हाज़िर हो जाएगा। बस दृढ़तापूर्वक हिम्मत रखो ... बाप की मदद मिलती रहेगी...।

समय के according अपनी speed को तीव्र करो। आपकी सम्पन्नता से ही अर्थात् जब आप सम्पूर्ण सम्पन्न बन जाओगे, तभी स्थापना का कार्य finish हो विनाश का कार्य शुरू होगा।

स्वयं सम्पन्न बन मणकों को भी तैयार करो ... जो ओटे सो, अर्जुन बनो।

अच्छा। ओम शान्ति।

★(संकल्प शब्द से हमारा तात्पर्य हमारी सोच और विचारों से है ... अर्थात thought power)

Om Shanti
05.11.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा ... बच्चे, निश्चयबुद्धि विजयन्ती - इस बात को महीनता से समझो...।

जब नम्बरवन बनना है तो समय से पहले ही अर्थात् सारी दुनिया से पहले अपने सारे हिसाब-किताब clear कर, अपनी seat पर set होना पड़ेगा...।

इसके लिए स्वयं पर 100% attention ज़रूरी है और साथ ही साथ, धैर्यता का गुण जो निश्चय के साथ बंधा हुआ ही है...।

• निश्चय अर्थात् निश्चिन्त स्थिति...
• निश्चय अर्थात् एक बल, एक भरोसा...
• निश्चय अर्थात् एक बाप (परमात्मा पिता) दूसरा ना कोई, हर छोटी-बड़ी परिस्थिति में...
• निश्चय अर्थात् खुशनुमा चेहरा, सदैव हल्का, संतुष्टता से भरपूर मन...
• निश्चय अर्थात् रमता योगी...

• निश्चय अर्थात् no question, no complaint...

जो बच्चा निश्चय और धैर्यता के गुण को अपनी शक्ति बना लेगा वो ही मास्टर सर्वशक्तिमान् बन, मास्टर भगवान् बन जायेगा ... अर्थात् कल्प-कल्प की विजयी आत्मा...।

इसलिए बच्चे, आप सभी बातों से न्यारे रहो..., बाबा बैठा है...।
हर बात में 100% कल्याण समाया हुआ है क्योंकि हर आत्मा अपना accurate part play कर रही है ... drama का अन्त अर्थात् climax period चल रहा है, जिसमें हर आत्मा के छिपे हुए संस्कार-स्वभाव सामने आ विदाई ले रहे हैं...।

आप अपनी शुभ भावना, शुभ कामना सभी आत्माओं के लिए बनाये रखो, जिससे सभी का कल्याण हो - यही बाप-समान बच्चों का कर्तव्य है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
06.11.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा ... बच्चे, स्वयं को light समझ मुझ Supreme light को याद करो...।
बस, यही है अन्तिम पढ़ाई और सारी पढ़ाई का सार भी...।

जितना आप स्वयं को light अनुभव करते जाओगे, उतना ही आपको अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध अर्थात् प्राप्तियाँ मिलनी शुरु हो जायेंगी...।

स्थूल और सूक्ष्म, हर रुप से सिद्धि स्वरुप बन जाओगे...।

बस love and light का अभ्यास करते चले जाओ, फिर शुरु होगी कमाल पर कमाल ...

(LOVE & LIGHT का अभ्यास अर्थात् इन आंखों से सबको उनके original स्वरुप् अर्थात् light देखना है ... वो भी बहुत प्रेम के साथ ... और महसूस करना है कि; मैं आत्मा point of light ... light

के शरीर में हूँ ... और मुझसे प्रेम का प्रकाश फैलता चला जा रहा हैं ... जोकि सभी आत्माओं के साथ-साथ प्रकृति के पाँचों तत्वों को भी पहुँच रहा है...। मेरे चारों तरफ बस light ही light है ... बस light ही light है ... जो कुछ भी मुझे इन आँखों से दिख रहा है, सबकुछ light है...)

यह अभ्यास भी वही आत्मा सही रीति कर पायेगी जिसने अभी तक बाप की श्रीमत को 100% follow किया होगा..., और उसके लिए यह पुरुषार्थ बहुत सहज भी है और मंज़िल भी बिल्कुल समीप...।

देखो बच्चे, जब अब बाप (परमात्मा शिव) direct पढ़ाने के लिये आ गया है तो समय से पहले बनना तो सभी को पड़ेगा ही..., चाहे तो स्वयं के पुरुषार्थ से बनो, जोकि सबसे सहज रास्ता है अन्यथा बाप स्वयं बनायेगा, जिससे आपका पद भी पीछे हो जायेगा और सज़ाओं का भी अनुभव होगा...।

इसलिए समय के महत्व को समझ स्वयं ही स्वयं को तैयार करो...।

बहुत जल्द से जल्द प्राप्ति स्वरुप बच्चों को देख कई बच्चों का पश्चाताप शुरु हो जायेगा ... अर्थात् वो अनुभव करेंगे कि कर तो मैं भी सकता था क्योंकि बहुत ही सहज था..., परन्तु अलबेलेपन के संस्कार ने मुझे कल्प-कल्प के लिए पीछे कर दिया...!
और अब पूरा कल्प मेरा part मुख्य actor या actress में नहीं होगा...।

इसलिए बच्चे अभी भी समय है, पुरुषार्थ कर कुछ तो अपना number आगे कर लो...!

बस, सच्चाई और सफाई के साथ स्वयं के संस्कारों को परिवर्तन कर बाप की श्रीमत प्रमाण चलते जाओ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
07.11.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा कि बच्चे love and light का अभ्यास करते रहो...।

देखो, जब आप बच्चों के अन्दर निःस्वार्थ प्यार है तो आप सभी गुणों और शक्तियों से भरपूर हो...।

प्यार एक ऐसी शक्ति है...
• जो आपके जीवन की सभी obstacles को खत्म कर देती है...।
• आप शुभ भावना, शुभ कामना से भरपूर हो जाते हो...।
• आपके अन्दर कोई question नहीं रहता और complaints नहीं रहती...।

LOVE ... सभी को नज़दीक लाता है ... निःस्वार्थ प्यार एक ऐसी शक्ति है जिससे आप negative को positive में परिवर्तन कर सकते हो...।

आप बच्चों के अन्दर जो सच्चा प्यार है, वो किसी भी आत्मा या चीज़ की quality के कारण नहीं है ... अर्थात् आपका प्यार किसी भी चीज़ पर depend नहीं है, बल्कि आपकी nature है प्यार करना...।

• यह प्यार की किरणें ही सभी को मिलाकर एक कर देंगी...।
• यह आपका प्यार ही परमात्मा को प्रत्यक्ष करेगा...।

इसलिए आप प्यार के महत्व को समझो और इसे अपने जीवन में हर पल use करो...।

यह love and light का अभ्यास ही जादू में परिवर्तन हो जायेगा...।

*LOVE & LIGHT का अभ्यास अर्थात अब आँखों को जब भी use करो तो सबकुछ light ही देखो..., वो भी बहुत प्रेम के साथ ... और महसूस करो ... मैं आत्मा point of light, अपने पिता Supreme point of light की छत्रछाया के नीचे प्रेम स्वरूप बैठा हूँ...। मेरे चारों तरफ light ही light है ... बस light ही light है...। मैं आत्मा अपने घर में हूँ..., परमधाम अपना घर केवल light ही light का है..., हज़ारों सूर्य से भी तेजोमय light ही light है ... प्रकाश ही प्रकाश है ... यह light सुख ... शान्ति ...शक्ति ... पवित्रता अर्थात् सभी गुणों से भरपूर है ... यह light मन को शीतल और आनन्दमय करने वाली है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
08.11.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा ... बच्चे, सारे ज्ञान का सार है - मैं आत्मा light ... परमात्म light के नीचे हूँ...।
बस, सब तरफ light ही light है ... यह light ही परिवर्तन का कार्य करेगी...।

बस अब सब तरफ से मन-बुद्धि निकाल इसी का अभ्यास करना है ... मैं भी light, बाप (परमात्मा शिव) भी light और सब तरफ परमात्म light ही light है...।

बच्चे...
• जब आप किसी भी बच्चे को ज्ञान देते हो, तो जैसेकि doctor किसी भी छोटी-सी बीमारी के लिए रोगी को दवाई देता है...
• और जब आप किसी आत्मा के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रखते हो, तो जैसेकि उसे injection देना है...
• और जब आप किसी भी आत्मा को उसके original स्वरुप के साथ परमात्म light के नीचे देखते हो, तो यह जैसेकि anesthesia देना है, अर्थात् उसे उसका पुराना जन्म भुला, उसे नया जन्म देना है...।

इसलिए अब आप स्वयं पर full attention रखो जिससे आपकी powerful परमात्म vibrations अन्य आत्माओं का परिवर्तन कर दे - यही है न्यारे और प्यारेपन का अभ्यास ... यही है, स्वयं पर attention रखने का अभ्यास ... और यही अभ्यास है परिवर्तन का आधार...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
09.11.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा ... बच्चे, इस पुरानी जड़जड़ीभूत तमोप्रधान दुनिया से कोई मोह अर्थात् किसी भी प्रकार की प्राप्ति की इच्छा नहीं रखनी है।

आप बच्चों को सारा दिन स्वयं को point of light समझ बार-बार अपने घर, अपने बाप के पास जाने का पुरुषार्थ करना है।

यह पुरुषार्थ चलते, फिरते, काम करते, खाना खाते, सोते हुए भी हो सकता है ... और यही पुरुषार्थ आपको सम्पूर्ण सम्पन्न बनाएगा...।

बस, अब इस पुरुषार्थ का attention दे इसे अपनी दिनचर्या में बढ़ाओ...।

देखो बच्चे, समय बहुत speed से आपके पीछे आ रहा है ... drama का चक्र पूरा होने वाला है, जिसे कोई रोक नहीं सकता...।

इसलिए आप अपनी speed समय से तेज़ रखो ... यदि समय आपके साथ पहुँच गया तो आप पुरुषार्थ नहीं कर पाओगे और बाबा भी साक्षी हो जाएगा ... इसलिए स्वयं को check करो कि आज के समय प्रमाण मेरी मन-बुद्धि कितना समय इस पुरानी दुनिया में जाती है...?

यदि अभी भी आप इस दुनिया से लगाव मुक्त नहीं हुए हो अर्थात् इस दुनिया से आपको अभी भी प्राप्ति की इच्छा है, तो मंज़िल पर पहुँचना नामुमकिन हो जाएगा...!

और यदि पुराने संस्कार वश आपकी मन-बुद्धि पुरानी दुनिया में जा रही है तो संस्कार परिवर्तन करो...। क्योंकि आगे के समय प्रमाण संस्कार परिवर्तन बहुत-बहुत difficult हो जाएगा...।

अब पुराने संस्कारों के बीज को समाप्त करो। यही समय है, नहीं तो सज़ा खानी पड़ेगी...!

बाबा ने देखा कि बच्चों का योग की तरफ अच्छा attention है, परन्तु पूरी दिनचर्या पर attention रखो...।

अब का पुरुषार्थ सदाकाल का होना चाहिए ना कि 6-8 घण्टे का...!

जब तक आप स्वयं पर full attention नहीं रखोगे तब तक आपकी natural nature change नहीं होगी...!

यही थोड़ा-सा समय है बाप समान बनने का अर्थात् स्वयं को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाने का। यदि आप नहीं करोगे तो कोई और करेगा...!

समय की समाप्ति तो होनी ही है...। बाबा अभी तो प्यार भरी समझानी दे रहा है, ताकि बच्चे समय से पहले अपने लक्ष्य को प्राप्त कर बाप के सहयोगी बने।

समझा...।
महीनता से समझो और आगे बढ़ो...।

देखो बच्चे, अब ना ही भारी होना है और ना ही दिलशिकस्त ... बाप इस समय आप बच्चों के साथ है, इसलिए बड़े प्यार से खुशी-खुशी अपनी तरफ attention रख स्वयं को विश्व के आगे प्रत्यक्ष करो क्योंकि आपके द्वारा ही बाप (परमात्मा शिव) प्रत्यक्ष होगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
10.11.2018

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा ने कहा ... बच्चे, अब वो समय आ गया है जब आप बच्चे बाप समान बन, बाप के विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोगी-साथी बन, बाप के कार्य को सम्पन्न कर अपना नया राज्य लाओगे...।

जैसे बाबा (परमात्मा शिव) बाप बन बच्चों की पालना करता है ... टीचर बन सृष्टि चक्र का ज्ञान देता है ... और सतगुरु बन सबको साथ ले जाता है...।

इसी तरह आप बच्चों की मंसा इतनी शुभ भावना, शुभ कामना अर्थात् प्रेम और रहम से भरपूर हो कि हर आत्मा आपसे अपनेपन का और सुख-शान्ति का अनुभव करें ... और वाचा में इतनी निर्माणता, प्रेम और मधुरता हो कि हर आत्मा के अन्दर आपके प्रति यही संकल्प हो कि यह महान आत्माएं हमारे लिए भी कल्याण के दो बोल, बोल दें...।

और आपके कर्म भी निःस्वार्थ और निर्माणता से भरपूर हो, जिससे हर आत्मा आपसे शिक्षा ले कि हमें भी ऐसा ही बनना चाहिए ... अर्थात् जब सभी आत्माओं को आपसे सुख-शान्ति, प्रेम, पवित्रता और शक्ति की प्राप्ति का अनुभव होगा तो वो आपको follow कर यथा योग्य, गति-सद्गति को प्राप्त करेंगी...।

इसलिए, हे मेरे मीठे-मीठे प्यारे-प्यारे बच्चों ... अब आपको अपनी-अपनी seat fix कर अर्थात् अपना number fix कर विश्व परिवर्तन का कार्य करना है।

इस समय बाप का और समय का आप बच्चों को full सहयोग है, इसलिए full attention दे अपने लक्ष्य को प्राप्त करो...।

आप बच्चों के ऊपर स्वयं के साथ-साथ सारे विश्व की ज़िम्मेवारी है।

जैसे लौकिक में भी यदि किसी आत्मा को सिर्फ अपने लिए ही करना हो तो वो अलबेला हो सकता है, परन्तु यदि उसे पता हो कि उसके पीछे उसके बहुत सारे बाल-बच्चे हैं, जिनकी पालना उसे करनी है तो वह अलबेलेपन का त्याग कर दिन-रात अपने कार्य में busy रहेगा...।

इसी तरह आप भी सभी आत्माओं के पूर्वज हो ... आप अकेले नहीं हो...।
अपने कर्तव्य को स्मृति में रख अब तीव्र पुरुषार्थ करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
11.11.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा ... बच्चे light house - might house बन विश्व गगन में अपनी light फैलाओ...।
इसी light से विश्व परिवर्तन का कार्य होगा।

बच्चे, दृढ़तापूर्वक पुरुषार्थ करना है अर्थात् हर second का पुरुषार्थ...।

पुरुषार्थ में उतराव-चढ़ाव को ना देख दृढ़तापूर्वक पुरुषार्थ करते रहो ... फिर आपकी नैय्या का खिवैया बाबा बन जायेगा...।
और जिस नैय्या का खिवैया स्वयं भगवान् हो वो समय से पहले मंज़िल पर ना पहुँचे, यह हो नहीं सकता...!

इसलिए निश्चय से, नशे से, निश्चिन्त हो अपनी मंज़िल की और बढ़ो...।

बच्चे, आप स्वयं ही स्वयं के पुरुषार्थ को check करो ... जो बच्चे तीव्र पुरुषार्थी है अर्थात् जिनका 100% अपने मन-बुद्धि-संस्कार के ऊपर attention है या केवल स्वयं को ही परिवर्तन करने के इच्छुक हैं, उनका बाप 100% ज़िम्मेवार है और वो बच्चे बेफिक्र होकर पुरुषार्थ करें ... यह ना सोचें कि अभी तक पुराने संस्कार आ रहे हैं या परिवर्तन नहीं हो रहा है...!

बच्चे, तीव्र पुरुषार्थी बच्चों का अनायास और आश्चर्यजनक सूक्ष्म और स्थूल रीति परिवर्तन होगा...। इसलिए, एकरस पुरुषार्थ करते रहो...।

जो बच्चे यथाशक्ति पुरुषार्थ कर रहे हैं अर्थात् अभी भी क्या, क्यों, ऐसे, वैसे - question mark में फँसे हुए हैं, उन्हें अभी भी समय है कि अपना 100% समय सफल करें...।

बाबा ने पहले भी बताया है कि paper हर आत्मा के पास भिन्न-भिन्न रूप में आ रहे हैं ... परन्तु तीव्र पुरुषार्थी बच्चे 100% बाप को समर्पित कर, बेफिक्र हो अपने परिवर्तन में लगे हुए है ... परन्तु कुछ बच्चे अपने संस्कारों के वशीभूत हो अपने समय को व्यर्थ कर रहे हैं...!

देखो बच्चे, बाबा कोटों में कोऊ ... कोऊ में कोऊ ... और उसमें से भी कुछ बच्चों को आकर personal पालना दे रहा है...। तो इसके महत्व को समझ स्वयं के समय को सफल करो अन्यथा अन्त में बहुत-बहुत पछताना पड़ेगा...!

आपका भाग्य आपके हाथ में है ... स्वयं ही स्वयं से पूछो कि नम्बरवन में आना है या नम्बरवार में...?

बाप अभी भी उन बच्चों को full सहयोग देगा जो बच्चे आज से तीव्र पुरुषार्थ करना शुरु कर देंगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
12.11.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा हम बच्चों का श्रेष्ठ स्वमान और श्रेष्ठ भाग्य देख रहा था, तो बाबा ने देखा कि ... बच्चे ऊँच स्वमान को जान भी गए हैं और मानते भी हैं कि मैं ही हूँ...।

लेकिन सारा दिन उस ऊँच स्वमान के नशे में स्थित हो चलने में नम्बरवार हैं...।

फिर बाबा ने कहा ... बच्चे, जितना आप अपने ऊँच स्वमान के निश्चय और नशे में रहोगे उतना ही आपका पुरुषार्थ सहज हो जाएगा अर्थात् मेहनत मुक्त होते जाओगे...।

आपका सम्पन्न स्वरुप अर्थात् फरिश्ता स्वरुप, शक्तियों और गुणों से भरपूर है ... उसके आगे कोई परिस्थिति टिक नहीं सकती..., वो तो विश्व परिवर्तन का कार्य करने वाला है...।

इसलिए आप बच्चों में इतना निश्चय और नशा होना चाहिए कि मैं ही हूँ ... विश्व-परिवर्तक आत्मा...। यह स्वयं परमात्मा ने आप बच्चों को स्मृति दिलाई है कि आप कौन हो, फिर तो आपको अपने स्वरुप में स्थित रह गुणों और शक्तियों को use करना चाहिए...।

अब आप अपनी दिनचर्या में इस अभ्यास को बढ़ाओ ... स्मृति स्वरुप बनो...।

देखो, लौकिक में भी किसी के पास कितना भी धन हो, वो जानता भी हो और मानता भी हो परन्तु उस धन को स्वयं के लिए use ना करे तो उस धन का तो उसके लिए कोई फायदा नहीं है ना...!

इसी तरह जब तक आप अपनी शक्तियों और गुणों को emerge रख use नहीं करते तब तक आप कमज़ोर रह हार खाते रहते हो ... इसलिए अब विस्मृति से स्मृति स्वरुप बन स्वयं के साथ-साथ विश्व का भी कल्याण करो...।

देखो, समय कम है और लक्ष्य ऊँचा है, तो अब बार-बार अपने सम्पूर्ण स्वरुप को धारण करो। अंत में यही अभ्यास आपको बाप समान बना देगा।

स्मृति का switch हमेशा on रखो ... स्वयं को परिवर्तन कर सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं का भी परिवर्तन करना है, तो विश्व का भी...। इसलिए विस्मृत हो समय व्यर्थ मत करो...।

बच्चे, अब महसूस करो कि ... मैं आत्मा light हूँ ... और मेरे चारों तरफ शान्ति ही शान्ति है ... इस शान्ति में प्रेम, पवित्रता, सुख और आनंद है ... असीम आनंद है...।

बस बच्चे, आप अपने मंसा-वाचा-कर्मणा पर attention रखो...।

दृढ़ संकल्पधारी बच्चों को हर पल बाप (परमात्मा शिव) की मदद है, पर करना तो आप बच्चों को ही है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
13.11.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा ... बच्चे, हिम्मत रख उमंग-उत्साह में और हल्के रह दृढ़तापूर्वक अपना पुरुषार्थ करते रहो। बाप (परमात्मा शिव) का सहयोग हर पल आप बच्चों के साथ है।

फिर बाबा ने कहा ... जितना आप बच्चों का बाबा से प्यार है उससे काफी ज्यादा बाबा का बच्चों से प्यार है...। आप बच्चे बाबा के उस प्यार में मस्त हो जाओ।

हमेशा combined स्वरूप की स्मृति में रह अपना hero part play करो...।

बच्चे, जैसे-जैसे समय आगे बढ़ रहा है तो पुरुषार्थ का समय कहो ... या स्व-परिवर्तन का समय कहो ... थोड़ा-सा रह गया है, इसलिए जबकि यह समय स्व-परिवर्तन का है तो कोई भी पुराना स्वभाव-संस्कार, संकल्प में आता है ... तो उसे संकल्पों द्वारा ही बाबा को समर्पण कर, भस्म कर दो...।
वाचा और कर्मणा तक मत आने दो।
और संकल्पों द्वारा जितनी जल्दी समाप्त कर सकते हो, कर दो...।

इसके लिए full attention और checking की ज़रूरत है...।

जैसे किसी दाग को निकालना होता है, तो उसपर दूसरा दाग नहीं लगाते ... बल्कि उसे मिटाने का ही पुरुषार्थ किया जाता है...।

बच्चे, अब आपका 100% attention स्व-परिवर्तन की तरफ होना चाहिए।

बाप समान बनना है, तो बाप समान न्यारे रह स्वयं का और सबका part देखो...।

जैसे और सभी आत्माओं के लिए शुभ भावना रखते हो, इसी तरह स्व के लिए भी शुभ-भावना, शुभ-कामना और शुभ-संकल्प रखने हैं...।

आप बच्चे ही बाप के नूरे रत्न दिलतख्तनशीन, और मस्तक मणी बच्चे हो ... इतना भाग्य की स्मृति रख पुरुषार्थ करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
14.11.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा ... बच्चे, आप बाप-समान विश्व परिवर्तन करने के लिए ज़िम्मेवार आत्मा हो ... विश्व परिवर्तन की आधारमूर्त आत्मा हो...।

परन्तु इस समय जबकि स्व-परिवर्तन का समय है, तो आप स्थूल रीति स्वयं के ही ज़िम्मेवार हो, अर्थात् आपका full attention अपनी हर activity पर होना चाहिए ... और सूक्ष्म रीति अर्थात् संकल्पों में हर आत्मा के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना हो ... अर्थात् शुभचिंतक मणी बनो...।

आप बच्चों को स्थूल रीति अर्थात् सम्बन्धों में बहुत प्यार से silence में रह अपनी सारी ज़िम्मेवारी निभानी है, परन्तु full attention स्वयं पर ही हो...।

जब तक आप बाप समान सर्वशक्तिवान् नहीं बन जाते हो तब तक silence में रहने का पुरुषार्थ कर स्वयं को powerful बनाना है ... एक powerful आत्मा ही ठीक रीति अपनी हर ज़िम्मेवारी को चाहे स्थूल हो या सूक्ष्म, निभा सकती है...।

जैसे लौकिक में भी एक सम्पन्न अर्थात जिसका सम्पूर्ण विकास हो गया हो, वो अपनी ज़िम्मेवारी जितनी सफलतापूर्वक निभा सकता है ... उतनी सफलतापूर्वक दूसरी आत्मा, जिसका अभी विकास होने का समय हो, वो नहीं निभा सकता...।
यदि उस पर ज़िम्मवारी डाल दी जाये तो उसका स्वयं का विकास रुक जाता है...।

इसी तरह समय से पहले बाप-समान सम्पन्न बन, विश्व परिवर्तन की सम्पूर्ण ज़िम्मेवारी आप बच्चों को ही निभानी है।

बच्चे, अभी तो बाबा आप बच्चों के साथ है ... इसलिए समय को सामने रख तीव्र पुरुषार्थ कर अपनी मंज़िल पर पहुँचो, चलना आपको ही है...।

तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को बाप (परमात्मा शिव) का पूरा-पूरा सहयोग है, इसलिए हर बात को बिन्दी लगा जल्दी से जल्दी आगे बढ़ो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
15.11.2018

★ 【 आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा ... बच्चे, आपको अब सम्पन्न बनने में और कितना समय चाहिए...?

समय तो थोड़े का, थोड़े का भी थोड़ा-सा रह गया है...! अगर अभी भी अपने संस्कार ईश्वरीय वा देवताई नहीं बनाए, तो अंत समय बहुत पछताना पड़ेगा...।

यदि अभी भी पुराने संस्कारों को use करते रहे तो नये संस्कार बन नहीं पायेंगे...!

और जो बच्चे अपने संस्कार बाप समान बना लेंगे वो ही बच्चे बाप (परमात्मा शिव) के साथ का अनुभव कर पायेंगे...।

यह जो बाबा बार-बार कह रहा है संस्कार परिवर्तन करो ... इस बात को हल्का मत लो..., अन्यथा आप बच्चों को भी पछताना पड़ेगा...।

अभी बाप के सहयोग और शक्ति को पूर्ण रीति use कर दृढ़तापूर्वक अपने संस्कारों को परिवर्तन करो...।

बाप के तो घर जाने का समय आ पहुँचा है, इसलिए योग में attention के साथ-साथ स्वभाव-संस्कार को परिवर्तन करने का खुद attention दो।

संस्कार परिवर्तन करना ... अर्थात् अपने अनादि स्वरुप का अनुभव करना ... बाप के साथ का अनुभव करना...।
Check and change करो..., तभी समय से पहले मंज़िल पर पहुँच पाओगे...।

जो बच्चे अपने संस्कार परिवर्तन नहीं करेंगे वो स्वयं ही स्वयं के ज़िम्मेवार हैं, बाप उनका ज़िम्मेवार नहीं बनेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
16.11.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा ... बाबा बच्चों के पुरुषार्थ की speed देख रहा था ... तो बाबा ने देखा कि कई बच्चों ने पुरुषार्थ की तरफ attention दे अपने पुरुषार्थ को बढ़ाया है ... और तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को स्वयं को उमंग-उत्साह दिला अपने पुरुषार्थ को आगे ही बढ़ाना है ... क्योंकि अब समय नहीं है अपने पुरुषार्थ को ऊपर-नीचे करने का...!

साथ ही बच्चों को अपने स्वभाव-संस्कार की तरफ भी full attention रखना है।

देखो बच्चे, जब किसी चीज़ का परिवर्तन किया जाता है तो विशेष attention रखा जाता है, फिर वो परिवर्तन natural हो जाता है।

इसी तरह आपको भी थोड़े समय के लिए ही 100% attention रखना है, फिर तो सब कुछ natural हो जाएगा...।

वैसे भी तीव्र पुरुषार्थी बच्चों का तो बाप (परमात्मा शिव) full ज़िम्मेवार है।

जो बच्चे अभी भी अलबेले हैं जबकि बाप special आकर पढ़ा रहे हैं, तो वो बच्चे अपने हर कार्य के ज़िम्मेवार स्वयं ही है ... क्योंकि हिम्मत रखने वाले बच्चों को ही बाप की मदद मिलती है।

अब साधारण पुरूषार्थ का समय नहीं है और ना ही साधारण पुरूषार्थ से कुछ परिवर्तन हो पायेगा...!

इसलिए, full attention चाहिए...।

बाप के सहयोगी, स्व-परिवर्तक बच्चे ही बन सकते हैं ... और जो बच्चे इस समय बाप के सहयोगी बनते हैं, उन्हें बाप का सहयोग पूरे कल्प मिलता है।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
17.11.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा कि बाबा बच्चों को देख रहा था कि बच्चे अपने पुरुषार्थ में लगे हुए हैं और बच्चों के अन्दर एक ही लग्न है..., परन्तु कई बार बच्चे सोचने लग जाते हैं कि इतना समय हो गया जो परिवर्तन होना चाहिए, वो हो तो रहा नहीं...!

देखो बच्चे, आपको पढ़ाने वाला बाप है ... यदि आप बच्चे attention दे हिम्मत से कर रहे हो तो यह impossible है कि परिवर्तन ना हो...!

कई बार बीमारी पुरानी होने के कारण समय लग जाता है, परन्तु यह मत सोचो कि बीमारी ठीक नहीं हो रही ... आपका सर्जन तो स्वयं भगवान है ... इसलिए बेफिक्र रहो, ज्यादा सोचो मत, हिम्मत रख आगे बढ़ते चलो...।

किसी भी बात में संकल्पों द्वारा भारी नहीं होना है, क्योंकि बोझ वाली आत्मा ऊँचा उड़ नहीं पाएगी।

देखो, आपका मददगार कहो ... साथी-सहयोगी कहो ... स्वयं परमपिता परमात्मा बना है, फिर बताओ आप विजयी रत्न नहीं बनोगे तो कौन बनेगा...?

आप बच्चों को इतना निश्चय होना चाहिए कि हम ही हैं, कल्प-कल्प के विजयी रत्न ... बाप (परमात्मा शिव) के लाडले बच्चे, हम ही हैं ... बाप की हर श्रीमत का पालन कर विश्व परिवर्तन का कार्य हम बच्चों को ही सम्पन्न करना है, पर बिल्कुल हल्के रहना है...।

यदि किसी परिस्थिति वश पुरुषार्थ कम हो, तो कोई हर्ज़ा नहीं, बस attention दे उमंग-उत्साह में रह फिर high jump दे दो ... परन्तु अलबेले मत बनना ... दृढ़तापूर्वक करते रहना फिर विजय आप बच्चों की ही है...।

अपना हर second सफल करते अपनी मंज़िल पर पहुँचों, बाप आप बच्चों का साथी है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
18.11.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★
बाबा ने कहा ... बच्चे attention दे पुरुषार्थ में लगे हुए हैं...।

जितना-जितना मन-बुद्धि की तरफ attention बढ़ेगा, तो पुरुषार्थ भी बढ़ता चला जाएगा और बाप के स्नेह और सहयोग का भी अनुभव बढ़ेगा...।

बाबा ने निर्विघ्न रहने का और संकल्पों में व्यर्थ मुक्त होने का जो homework दिया है, उस तरफ विशेष attention रख अपना पुरुषार्थ करो।

सब कुछ बाप को समर्पण कर बाप के साथ के अनुभव को बढ़ाते चलो...।

समय कम है, तो मंज़िल भी समीप है ... इसलिए हल्के बन उड़ते चलो...।

देखो, बच्चों को बाप से प्यार है ... इसलिए बाबा की हर श्रीमत का पालन कर आगे बढ़ रहे हैं..., और बाप (परमात्मा शिव) को भी बच्चों से अति प्यार है ... इसलिए वो daily परमधाम छोड़ विशेष पालना देने के लिए आता है...।

लौकिक में भी प्यार उस मनुष्य आत्मा से होता है जिसके बारे में पता होता है कि यह मेरा है ... यह मेरापन प्यार को बढ़ाता है..., दूसरा उसके गुणों से ... और तीसरा उससे प्राप्त सहयोग के कारण उससे प्यार हो जाता है...।

यहाँ तो तीनों ही बातें है...।
बाप मेरा है ना, या कोई और मेरा है...?
गुणों का सागर है और हर पल सहयोग और शक्ति दे रहा है...।
बस, इस अनुभव को बढ़ाते चलो ... जितना-जितना मेरेपन का अनुभव बढ़ेगा उतना ही प्यार का अनुभव बढ़ेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
19.11.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा ... बच्चे, आप अपने भाग्य को जानते हो कि आपका भाग्य कितना ऊँचा है...?

देखो, स्वयं भगवान् रोज़ आकर आप बच्चों की विशेष पालना कर रहा है ... वो केवल भाग्य बनाने की विधि ही नहीं बता रहा है, बल्कि भाग्य की लकीर लम्बी खिंचने के लिए सहयोगी-साथी भी बन गया है...!

दूसरी तरफ;

दुनिया में देखो बेचारी, परवश आत्मायें जोकि दूर से ठीक लगती हैं ... परन्तु अन्दर से वो दुःख, इच्छाओं और विकारों के कारण खोखली हो गई है...!
उन्होंने ऐसा रास्ता पकड़ लिया है जो उन्हें दलदल में फँसाने वाला है...।

और आप बच्चों को भाग्य विधाता बाप (निराकार शिव) ने पकड़ लिया, जोकि आपको ऊँच ते ऊँच खुशियों के खज़ाने की तरफ लेकर जा रहा है...।

देखो बच्चे, बाबा हमेशा कहता है अपनी कमी-कमज़ोरी, चिन्तायें ... अर्थात् जो भी बोझ हैं वो मुझे दे दो ... मैं सम्भाल लूँगा...।
बस, आप बच्चे बेफिक्र रह अपना भाग्य ऊँचा बनाते रहो...।

यह जो अन्तिम से अन्तिम समय हिसाब-किताब चुक्तु करने का चल रहा है, इसे खुशी-खुशी चुक्तु करो ... ज्यादा सोचो मत...।

देखो, जैसे कोई पुरानी बीमारी का इलाज किया जाता है, तो बीच-बीच में जब वो पुरानी बीमारी किसी भी रूप में बाहर आती है, तो वो मनुष्य को हिला देती है...। अगर उस हाल में रोगी दवाई लेता रहे, तो फिर वो बीमारी खत्म हो जाती है...।

इसी तरह, जब आप बच्चों का हिसाब-किताब बड़े रूप में आ जाता है तो वो आपकी स्व-स्थिति को हिला देता है, परन्तु उस समय आप हिम्मत रख बार-बार स्वयं के स्वमान में स्थित रह ... बाप को साथ रख ... ज्ञान मंथन कर ... अर्थात् बाप और बाप की समझानी को सम्मुख रख, पुरुषार्थ करते रहो..., बीमारी के बारे में ज्यादा सोचो मत...।
सब कुछ बाप हवाले कर बिन्दी लगाने का पुरुषार्थ करते रहो, फिर देखना ... आत्मा पहले से भी ज्यादा हल्की हो, तीव्र गति से ऊँचा उड़ेगी...।

बस, बाप की हर श्रीमत को सामने रख दृढ़तापूर्वक पुरुषार्थ करते रहना है, फिर तो विजय आप बच्चों की ही है ना...!

जिसका साथी भगवान बन जाये, तो अन्तिम विजय उन बच्चों की ही होती है ... इतना निश्चय और नशा रखो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
20.11.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा ... बच्चे, आप यात्रा पर हो ... और आपको यह ज्ञान है कि रास्ते के तरह-तरह के scene, ऊँचा-नीचा मार्ग आदि..., कई रुकावटें आपकी यात्रा में बाधा डालती है।

साथ ही आपको यह भी ज्ञात है कि हमने अपनी मंज़िल पर पहुँचने का समय निश्चित किया हुआ है, जोकि limited सा है।

इसलिए आप बच्चों को इस समय सर्वशक्तिवान् को साथ रख अपने सारे बोझ बाप को समर्पण कर अपनी मंज़िल पर पहुँचना है...।

Alert रह अपनी मन-बुद्धि की checking करनी है, ताकि आप बाप समान बेदाग हीरा बन मंज़िल तक पहुँच पाओ...।

देखो, जब कोई बड़ा हिसाब-किताब आ जाता है तो बच्चे मूँझ जाते हैं...!

परन्तु बच्चे, आप बच्चों के साथ तो सर्वशक्तिवान बाप है इसलिए आप अपनी सभी कमी-कमज़ोरी बाप को समर्पण कर हल्के रह आगे बढ़ो। आपका हर बात में कल्याण समाया हुआ है ... इसलिए बार-बार अपने ऊँच स्वमान में स्थित होते जाओ और हर रुकावट पर बिन्दु लगा आगे बढ़ते जाओ...।

जब आप अपने सारे हिसाब-किताब बाप को बार-बार समर्पण करने का पुरुषार्थ करते हो, alert रहकर..., तो बाप आपसे भी ज्यादा अच्छी तरह आपके हिसाब-किताब चुक्तु करवाता है और आपको इतना ऊँच बना देता है कि आपके मार्ग में रुकावट डालने वाले आपसे प्राप्ति की आशा रखेंगे...।

इसलिए इस समय आपको हर आत्मा के प्रति शुभ-भावना रखनी है...।

देखो बच्चे, आप बच्चों की विजय तो निश्चित है ... इसलिए इस निश्चय और नशे में रहो कि मैं कौन हूँ और मेरे साथ कौन है...?

बस थोड़ा-सा ही समय रह गया है पुरुषार्थ का ... वो आप alert रह, attention देकर करो।
विजय मेरे आज्ञाकारी बच्चों की ही है।

देखो drama में हर कार्य का समय निश्चित है ... लेकिन आप बच्चे, बाप (परमात्मा शिव) की हर आज्ञा का पालन कर अपने भाग्य को कहो या अच्छे समय को कहो, नज़दीक लाते हो।

इसलिए ज्ञान को अच्छी तरह समझ स्वयं ही स्वयं से पूछो कि मैं बाप की हर आज्ञा का पालन करता हूँ क्या...?

आज्ञाकारी बच्चों का हर बात में कल्याण होना ही है - यह बाप की guarantee है...।

बस महीनता से बाप की हर आज्ञा का पालन करो।
आप परिवर्तन होंगे, तो आपका भाग्य भी परिवर्तन हो जाएगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
21.11.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा ... बच्चे, जैसे बाबा सूर्य के समान सारे विश्व को light-might की किरणें देता है ... ऐसे ही आपको भी सारे विश्व को light-might की किरणें देनी है...।

यह आप तब दे सकते हो जब हद के सारे किनारे छोड़ बेहद की स्थिति में स्थित हो जाओगे ... अर्थात् जीवनमुक्त अवस्था का अनुभव करोगे...।

इसके लिए आप हद की दुनिया में रहते भी देह और देह की दुनिया से बेहद का वैराग्य रखो।

देखो, अब आप बच्चों का इस पुरानी दुनिया से लंगर उठ चुका है और इस समय इस बेहद की सेवा की, अति आवश्यकता है ... क्योंकि दुनिया में दुःख-दर्द बहुत speed से बढ़ रहा है ... आपकी यह powerful मंसा सेवा ही जल्दी से जल्दी आपका अपना राज्य लायेगी।

अब आप बच्चों को जीवनमुक्त बन मंसा सेवा करने का पुरुषार्थ करना है।

जितनी आपकी मंसा सेवा बढ़ती जायेगी, उतना ही आपको हद से वैराग्य आता जाएगा ... और वैसे भी आपका जो सम्पन्न स्वरूप है वो तो बेहद में है और जब आप भी बेहद में रहोगे तो आपका सम्पन्न स्वरुप भी जल्द ही आपको धारण कर लेगा...।

इसलिए, अब हद की छोटी-मोटी बातों से किनारा रख बेहद में रहो। बेहद के बाप के संग रह, बेहद की सेवा करो...।

देखो, लोगो की परेशानी बढ़ती जा रही है ... तो हे दुःखहर्ता, सुखकर्ता, विश्व का नव-निर्माण करने वाली महान आत्माओं ... अब अपने कार्य को सम्पन्न करो...।

बच्चे, चलते फिरते light house - might house बन जाओ ... ज्यादा सोचो मत...।

स्वयं को बेहद सेवा में busy रखो। आपका ज़िम्मेवार बाप (परमात्मा शिव) है और आप विश्व परिवर्तन के कार्य के ज़िम्मेवार बन जाओ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
22.11.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा ... बच्चे, आप बच्चों को हर हाल में हल्के रहना है।

हल्के रहना अर्थात् अपने स्वमान के आसन पर स्थित रहना ... अर्थात् स्मृति स्वरुप रहना...।

स्मृति स्वरुप किसके...?
स्वयं के ... बाप के ... drama के और परिवार के...।

कितनी भी बड़ी बात आ जाये, चाहे तो अपने कमज़ोर संस्कार के कारण वा कोई हिमालय जैसी परिस्थिति के कारण ... तो भी आप बच्चों को अचल-अडोल रहना है ... बिल्कुल हल्के रहना है...।

हल्की आत्मा ही high jump दे, बाप-समान बन सकती है...।

Knowledgeful, powerful आत्मा ही हल्की रह सकती है...।

कुछ भी हो ... बिन्दु लगा, बिन्दु बन, बिन्दु बाप के पास जाकर बैठ जाओ, सब सहज हो जायेगा...।

कोई भी बात आने पर यदि आप थोड़ा-सा भी भारी हो जाते हों, तो पुरुषार्थ मुश्किल हो जाता है ... और मुश्किल कार्य करने से आत्मा थक जाती है ... और जिससे रास्ता भी लम्बा लगने लग जाता है...!

फिर बताओ, समय से पहले कैसे पहुँचोगे...?

इसलिए, सब कुछ बाप हवाले कर, हल्के रह, पुरुषार्थ करो...।

हल्के रहना अर्थात्...
• उमंग, उत्साह और खुशी में रहना...।
• सदा स्वयं को शुभ संकल्पों से भरपूर रखना...।
फिर सहज ही आप, बाप-समान बन, बाप से मिलन मना पाओगे...।

हल्के रहने वाली आत्मा पर व्यर्थ संकल्प वा माया किसी भी तरह का वार नहीं कर सकती।

वो आत्मा निर्विघ्न रह आगे से आगे कदम बढ़ा अपनी मंज़िल समीप ले आती है।
सो attention दे पुरुषार्थ करो, ना ही अलबेला होना है ... और ना ही दिलशिकस्त...।

आप बच्चे तो बाप के दिलरुबा बच्चे हो ... इसलिए, बाप (परमात्मा शिव) के प्यार में खोए रहो ... यह बाप का प्यार ही बाप-समान बना देगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti

23.11.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने कहा ... बच्चे, आप जब कोई भी कार्य शुभ भावना और शुभ कामना से करते हो तो निष्फल नहीं जाता ... आप निश्चिंत रहो...।

जब कोई भी बच्चा अपना तन, मन, बुद्धि और अपना हर कार्य बाप को समर्पण कर देता है, तो उसका ज़िम्मेवार बाप हो जाता है ... और सोचो तो सहीं, जिसका ज़िम्मेवार बाप (परमात्मा शिव) होगा;
• उसका तन ... जन्मों-जन्म तक निरोगी, प्रभावशाली और शीशे की तरह चमकदार बन जायेगा।
• मन ... निर्मल, स्वच्छ और शान्त बन जाएगा।
• बुद्धि ... इतनी दिव्य बन जायेगी कि सभी आत्माएं उससे राय लेने आयेगी।
• और आपके हर कर्म ... गायन और पूजन योग्य बन जायेंगे।
बस समर्पण 100% होना चाहिए...।

दूसरा, आपके एक-एक संकल्प श्रेष्ठ और शुभ हों, चाहे स्व प्रति ... चाहे दूसरों के प्रति...।

संकल्पों में व्यर्थ, वा साधारण और negative की mixing नहीं होनी चाहिए।

बाबा ने आपको श्रेष्ठ संकल्पों का खज़ाना दिया है जैसे;
• ऊँचे से ऊँचा स्वमान
• ऊँचे भाग्य की स्मृति
• गुणों और शक्तियों की स्मृति आदि...।

अब इन संकल्पों में आप बच्चों को रहना है, जैसे सारे स्वमान...
• भगवान् मेरा हो गया
• वो मेरे साथ है
• मैं बाबा का दिलरुबा बच्चा हूँ
• नूरे रत्न हूँ
• दिलतख्तनशीन हूँ
• दुनिया में सबसे अधिक भाग्यशाली हूँ
• कल्प-कल्प का विजयी हूँ

• सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है
• मैं शिव बाप की सजनी हूँ
• मैं तीव्र पुरुषार्थी हूँ
• मेरी विजय निश्चित है ... आदि - आदि...।

बस इन संकल्पों में अपनी बुद्धि busy रखो ... सूक्ष्म-सा भी कमज़ोर संकल्प मन में ना आये...!

जब आप बच्चों का सहयोगी और साथी स्वयं भगवान है, उन बच्चों के अन्दर कितना नशा होना चाहिए...!

• जितना निश्चय ... उतना नशा,
• जितना नशा ... उतनी ही खुशी,
• जितनी खुशी ... उतना हल्का,
• और जितना हल्का होगा ... उतना ही सबका सहयोगी होगा...।

बस बच्चे, बाप के साथ नाचो, गाओ और कुछ नहीं करना...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
24.11.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा ने कहा ... बच्चे, हर कर्म को बड़े प्रेम पूर्वक, शान्ति से और बाप के संग रहकर करना है। किसी भी कार्य में जल्दबाज़ी या हड़बड़ी नहीं करनी...।

यह नहीं सोचना कि जल्दी से कार्य खत्म हो और मैं योग में बैठूँ...!
बैठकर योग लगाना बहुत अच्छा है, परन्तु उससे भी ज्यादा ज़रूरी है हर second अपनी स्थिति में रहना अर्थात् बाप के साथ रह और अपने स्वमान की स्मृति में रहकर कार्य करना...।

और आप बच्चे जब बाप की याद में रहकर कर्म करते हो तो आपकी double कमाई हो जाती है - एक मंसा और एक कर्मणा...।

इसी तरह, जब आप बाप की याद और स्वमान में स्थित होकर बात करते हो, तब भी double कमाई हो जाती है - इसे कहते हैं हर कदम में पदम...।

और जिस बच्चे के हर कदम में पदम होंगे, वो तो बहुत जल्दी ही बाप समान बन जायेगा...।

बाप की याद में रहकर कर्म करने से एक तो वातावरण बनता है, दूसरा पहले से कई गुणा ज्यादा कार्य में सफलता मिलती है।

इसलिए हमेशा धैर्यता और शान्ति के गुण को अपने साथ रखो...।

आप बच्चों को ना तो कर्म के बंधन में बंधना है और ना ही समय के बंधन में..., बस बाप (परमात्मा शिव) के प्यार के बंधन में स्वयं को बांध लो अर्थात् मंसा, वाचा, कर्मणा हर पल ... बाबा ही बाबा और बाबा की श्रीमत हो...।

जब आप बच्चे इस तरह से अपनी दिनचर्या व्यतीत करोगे तो बाप से 100% स्नेह, सहयोग और शक्ति ले, अपने सारे खज़ाने भरपूर कर अर्थात् 100% बाप समान बन, बाप के संग घर (परमधाम) जाओगे...।

बाबा को हर पल अपने साथ रखने वाले बच्चों को बाप भी हर पल guide करता रहेगा ... और उनका 100% ज़िम्मेवार भी होगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
25.11.2018

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा ने कहा ... बच्चे, बाबा तो बच्चों के ऊपर ज्ञान, गुण, शक्तियों की वर्षा कर रहा है। परन्तु..., जिन बच्चों ने अपना बुद्धियोग बाप के साथ जोड़ा हुआ है, वो बाप के वर्से को अपना बना, powerful बनते

जा रहे हैं ... और जिन बच्चों का बुद्धियोग इधर-उधर लगा हुआ है, उन तक बाप का वर्सा आता है, परन्तु वापिस लौट जाता है...!

देखो बच्चे, जिन बच्चों को बाप के ज्ञान रत्नों का महत्व हैं ... वो तो बाप से अपना पूरा वर्सा ले स्वयं को बहुमूल्य अर्थात् विश्व का महाराजा बना रहे हैं।

जैसे..., एक जौहरी को हीरे के साथ हीरे की जरकन (वेस्ट) का भी, अर्थात् बारीक से बारीक हीरे के मूल्य का पता होता है ... और वो उसे भी सम्भाल जवाहारत बनाने में use करता है।

इसी तरह..., जो बच्चे बाप की छोटी से छोटी श्रीमत को या ज्ञान का महत्व समझ, उसे अपने जीवन में practical धारण करते हैं, वो ही बहूमूल्य बन जाते हैं...।

बच्चे, समय बहुत, बहुत, बहुत, बहुत नाज़ुक बस आने वाला ही है..., परन्तु बच्चे अनजान बने हुए हैं...! वो सोचते हैं कि कर तो रहे हैं ... हो ही जाएगा ... सब कुछ छोड़ना अर्थात् त्याग करना तो मुश्किल है, अर्थात् उन्हें बाप पर निश्चय नहीं है...।
इसलिए वो बच्चे समर्पण बुद्धि नहीं बन पाते...!

समर्पण अर्थात् त्याग ... और त्याग से ही भाग्य है...।

जो इस समय 100% बाप की श्रीमत पर चलने का attention दे रहे हैं, उन बच्चों की ज़िम्मेवारी बाप लेता है - “मैं उन बच्चों को सम्पन्न बना, साथ ले जाऊँगा...।” और अंत समय जोकि आने वाला ही है, उस समय ... बाप समान बच्चे अपने भाग्य की स्मृति में नाचते हुए भी सभी आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनेंगे और दूसरे हाहाकार के समय उन्हीं का एक हिस्सा बन, पश्चाताप की अग्नि में जलेंगे...।

बाबा के अंदर बच्चों के प्रति अत्यधिक रहम है, पर करना तो आप बच्चों को ही पड़ेगा ना...!

बाप की समझानी के महत्व को समझों...। कागज़ के टुकड़ों के लिए ... ईंटों के मकानों के लिए ... या अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं के कारण अपने समय को व्यर्थ मत करो...।
यह भाग्य बनाने का समय, फिर कभी नहीं आयेगा...!

देखो बच्चे, बाप तो आप बच्चों की इंतज़ार में आपको ज्ञान, गुण, शक्तियां देने के लिए ही बैठा है ... और जैसे ही आप बच्चे सच्चे दिल से मुझे याद करते हो, तो मैं आपको सम्पन्न बनाना शुरु कर देता हूँ..., परन्तु याद तो करो ना...!
फिर ही तो बाप (परमात्मा शिव) का वर्सा ले पाओगे...!

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
26.11.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा ने कहा ... बच्चे, जब आप योग में powerful संकल्प करते हो अर्थात् बाप समान बन वा विश्व कल्याणकारी बन बाप के साथ जाकर बैठते हो, तो आप कम समय में अधिक शक्तिशाली बन जाते हो...।

Powerful संकल्पों का आधार है - 'अटूट निश्चय' ... और अटूट निश्चय से ही हर कार्य में सफलता मिलती है।

देखो बच्चों ... स्वयं परमपिता परमात्मा आकर आप बच्चों की पालना कर रहा है ... रोज़ ऊँच से ऊँच समझानी दे रहा है..., तो आपको भी उसी नशे में रहना चाहिए...!

बाबा बार-बार कह रहा है कि बच्चे, हिम्मत रख, दृढ़तापूर्वक पुरूषार्थ करो। दिलशिकस्त वा अलबेला नहीं होना है..., क्योंकि यह मार्ग ऊँचाई का है अर्थात् हिसाब-किताब खत्म कर सम्पन्न बनने का है ... इसलिए अंत तक परिस्थितियां भी आयेगी और कमज़ोर संस्कारों का भी वार होगा..., परन्तु आप दृढ़तापूर्वक अपनी स्व-स्थिति के आसन पर स्थित होने का पुरूषार्थ करो अर्थात् अपनी मन-बुद्धि की तरफ attention रखो।

जो समय बैठकर योग करने का fix करते हो, उस समय भी दृढ़तापूर्वक योग मे बैठ जाओ...। चाहे योग लगे या ना लगें, परन्तु मन-बुद्धि की तरफ attention रखना ... अलबेले मत बनना...।

कर्म के समय भी कर्मयोग का अभ्यास करो। जितना percent आप attention रखोगे, उतने ही percent आप बच्चों को बाबा की मदद मिलेगी...।

हिम्मत रखना ... और ... attention देना - यहीं पुरूषार्थ का आधार है।

और आप बच्चे जब बाप की श्रीमत प्रमाण पुरूषार्थ करते हो तो विजय आप बच्चों की है - यह बाप (परमात्मा शिव) का आप बच्चों के साथ promise है...। परन्तु महीनता से स्वयं की checking करना, और change करते जाना...।

आप बच्चों का काम तो केवल अपनी मन-बुद्धि पर attention देना ही है और तो सारा कार्य बाबा ही कर देते हैं...।

इसलिए निश्चिन्त रह, उमंग-उत्साह के साथ खुशी-खुशी आगे बढ़ो...।
बाप की हर पल नज़र आप बच्चों पर ही है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
27.11.2018

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

आप बच्चों की सारी पढ़ाई का सार है बाप समान बनना ... अर्थात् अपने original स्वरूप में स्थित हो जाना...।

• आपका पहला subject है - ज्ञान..., अर्थात् अपने original स्वरूप की पहचान...
• दूसरा subject है - योग..., अर्थात बाप (परमात्मा शिव) की याद से, बाप से गुण और शक्तियां ले, अपने original स्वरूप में स्थित होना...
• तीसरा subject है - धारणा..., अर्थात् स्थूल और सूक्ष्म धारणायें जो हैं, वो भी आपको बाप-समान ही बनाती हैं...
• चौथा subject है - सेवा..., अर्थात् सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना जोकि आपके सारे हिसाब-किताब finish कर आपको न्यारा और प्यारा बना देती है...।

बच्चे, बाप समान बनना है ... तो याद के साथ-साथ मन्सा-वाचा-कर्मणा की full checking होनी चाहिए...।

Check करो...,
• आपकी मंसा स्वयं के लिए और सर्व के लिए शुभ भावना, शुभ कामना से भरपूर है...?
• दूसरा वाचा ... आपकी वाचा, मधुरता और प्रेम से भरपूर होनी चाहिए।
• कर्मणा अर्थात् ... आपको हर कर्म, शान्ति और खुशी के साथ करना है, जिससे आपके हर कर्म आपको भी और सभी को सुख देने वाले बन जायें...।

बच्चे, आपकी मंसा, वाचा, कर्मणा बिल्कुल accurate होनी चाहिए...।
जो आपके संकल्प हैं वो बीज हैं, इसलिए आपका full attention अपने संकल्पों पर हो।

अब आप बच्चों को अपने संकल्प व्यर्थ नहीं करने है, क्योंकि व्यर्थ संकल्प घाटा डाल देते हैं ... परन्तु अभी समय है, कमाई का...।

बच्चे, जल्दी-जल्दी check and change करते जाओ...।

अपने व्यवहार को बाप के साथ मिलाकर check करो, फिर change करो ... क्योंकि बाप आपके व्यवहार से ही प्रत्यक्ष होगा...।

और जो आत्मा जितनी हल्की होगी, उतना ही उसका व्यवहार बाप-समान बनता जायेगा।
इसके लिए स्व-स्थिति के आसन पर स्थित रहो...।

बच्चे, आप बच्चों की विजय निश्चित है ... इस नशे में रह पुरुषार्थ करो, फिर हर कर्म में सफलता आप बच्चों को ही मिलेगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
28.11.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बच्चे सोचते हैं, इतना समय हो गया कोई विशेष परिवर्तन तो हो नहीं रहा…!

देखो, बाप को तो बच्चों से भी ज्यादा जल्दी है, क्योंकि बाप तो सब कुछ देख रहा है। बाप के घर (परमधाम) जाने का समय अर्थात् परिवर्तन का समय आ पहुँचा है जोकि जयजयकार के साथ-साथ अति हाहाकार का भी होगा … और बाप चाहता है कि मेरे सपूत बच्चे जिनकी पालना स्वयं बाप आकर कर रहा है, उनकी जयजयकार हो।

इसलिए बाप बच्चों को स्नेह, सहयोग और शक्ति दे रहा है … साथ ही साथ, सहज से सहज रीति हिसाब-किताब भी चुक्तु करवा रहा है, ताकि बच्चे हल्के रह, ऊँच पुरुषार्थ कर समय से पहले अपना ऊँचे से ऊँचा भाग्य बना, अपनी मंज़िल पर पहुँचे।

इसलिए बाप पर full निश्चय रखो और निश्चिन्त होकर पुरुषार्थ करो … आपका हाथ स्वयं भगवान ने पकड़ा है।

बाबा चाहते हैं कि बच्चे स्वयं ही अर्थात् अपने पुरुषार्थ के बल से अपने सारे हिसाब-किताब चुक्तु कर सम्पन्न बने … अन्यथा बाप तो है सर्वशक्तिवान्, वो क्या नहीं कर सकता…!

अंत समय में … एक second में आत्माओं का सबकुछ परिवर्तन कर देगा … अर्थात् उनका हिसाब-किताब चुक्तु करवा उन्हें यथाशक्ति तैयार करवा देगा। परन्तु वो बच्चे नम्बरवार होंगे…। और स्वयं ही परिवर्तन होने वाले numberone…।

इसलिए … इस समय जो कुछ भी हो रहा है उसे खुले दिल से स्वीकार कर, बाप जैसे कह रहे हैं, वैसे करते चलो।

जब बाप ज़िम्मेवार है तो बुद्धि से हल्के रहो … ज्यादा क्यों, क्या, करने वालों को queue में लगना पड़ेगा…!

परन्तु बाप चाहते हैं;
मेरे V.V.I.P. बच्चे, बड़े सम्मान के साथ अन्त समय अपनी seat पर आकर बैठें। बस पुरुषार्थ सही और सहज रीति करना है अर्थात् अपनी बुद्धि को बाप की श्रीमत से भरपूर कर हल्के रहकर पुरुषार्थ करना है।

जब आप बच्चों की बुद्धि बाप की श्रीमत से भरपूर होगी तभी आप उमंग-उत्साह के साथ आगे बढ़ सकते हो...।

• श्रीमत ... अर्थात् बाप की हर छोटी-बड़ी direction से बुद्धि भरपूर हो।
• बाप को साथ रखना ... अर्थात् बाप से अपने दिल की हर छोटी-बड़ी बात share करना।

ऐसे मत समझो कि बाप दिखता तो है नहीं...! दिखती तो आत्मा भी नहीं है, परन्तु स्वयं को अनुभव करने के साथ-साथ बाप को भी 100% अपने साथ अनुभव करो, फिर देखो बाप की कमाल...।

दुनियावी काम में अपनी बुद्धि का ज्यादा इस्तेमाल मत करो ... बाप की श्रीमत प्रमाण चलते चलो ... क्योंकि अब विनाशी चीज़ों का विनाश होने वाला है, इससे कुछ भी प्राप्ति नहीं...। और बाप तो अंत तक बच्चों के साथ है और आपकी हर सूक्ष्म और स्थूल ज़रूरतों को 100% पूरा करने के लिए बंधा हुआ है।

चाहे दुनिया में हाहाकार होगा परन्तु आप बच्चे मौज में होंगे ... परन्तु केवल वो बच्चे जो इस समय 100% बाप की श्रीमत प्रमाण चल रहे हैं...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
29.11.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाप-समान बनने वाली आत्माओं की क्या निशानी होगी...?

उनके पास positive संकल्पों का खज़ाना भरपूर होगा, अर्थात् वो आत्मायें शुभ-भावना, शुभ-कामना से भरपूर होंगी...।

कोई कैसी भी आत्मा हो ... चाहे उसने आपका कितना भी अपकार किया हो, परन्तु आपकी नज़र जैसे ही उस आत्मा पर पड़ेगी तो आपके अंदर क्षमा, रहम और उसके कल्याण की भावना emerge रूप में होगी ... अर्थात् उसके प्रति कोई भी कमज़ोर, व्यर्थ और negative संकल्प merge होंगे।

ऐसे ही स्वयं के भी, कोई भी कमज़ोर संस्कार को देखते आपके अंदर यही संकल्प होगा कि यह paper रूप में आया है, पर मैं तो विजयी रत्न आत्मा हूँ ... अर्थात् केवल positive संकल्प...।

Positive संकल्पों का खज़ाना भरपूर होना, अर्थात्...,
• आपकी न्यारी-प्यारी स्थिति हो...
• आप बाप-समान साक्षी दृष्टा हो...
• आप double light फरिश्ता हो...
• आप light house - might house हो..., अर्थात् स्व-स्थिति के ऊँच स्वमान में स्थित हो...।

जब आप बच्चों के अंदर बाप, बाप की श्रीमत अर्थात् समझानी ... या आप, बाप के according अपने कर्म व्यवहार में आ रहे हो, तो बाप आप बच्चों के साथ ही है।

इसलिए, ज्यादा सोचो मत ... संकल्पों द्वारा इस मार्ग को मुश्किल मत करो...।
सहज समझते जाओगे, तो सहज होता जाएगा ... और सहज कार्य तो हुआ ही पड़ा है ना...!

बस मैं, मेरा बाबा और बाप की समझानी ... इसी से ‘मैं numberone बन जाऊँगा...’।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
30.11.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बच्चों के अंदर एक ही लगन है कि बाप जैसे कहें, वैसे करना ही है ... हमें ऊँचे से ऊँचा पुरुषार्थ करना ही है और कर भी रहे हैं...।

बस, अपने पुरुषार्थ को दृढ़तापूर्वक आगे से आगे बढ़ाते रहना है..., ना ही अलबेला होना है और ना ही दिलशिकस्त और ना ही हार खानी है...।

हमेशा संकल्पों में यह ही रहे कि; "मैं एक विजयी रत्न आत्मा हूँ ... मुझे special भगवान पढ़ाने के लिए आया है ... मेरे से ज्यादा भाग्यवान दुनिया में कोई नहीं...!"

ऊँच संकल्प ही ऊँच पुरुषार्थ का आधार है...।

देखो, यह मार्ग ऊँचाई का है अर्थात् चढ़ाई का है, पर यह मार्ग खुशियों, आनन्द और प्राप्तियों से भरपूर है ... और बाप जब स्वयं अंगुली पकड़कर चला रहा है तो क्या मुश्किल है...?
बस, बाप की समझानी को साथ रख चलते चलो...।

दूसरी तरफ;
जो दुनिया में जाने का रास्ता है, वो नीचे की ओर ले जाने का है ... अर्थात् देखने में आकर्षक लगता है, परन्तु वो रास्ता दुःखों से, काँटों से भरपूर है...। उस रास्ते में जाना अर्थात् दुःखों को, मुश्किलों को, आमंत्रित करना है ... और साथ ही साथ कल्प-कल्प के लिए अपने भाग्य को ठोकर मार देना है...।

दुनियावी मार्ग इस समय सभी को अपनी ओर खींच रहा है ... और इस समय जो बच्चा माइनर-सा, अपनी मन-बुद्धि इस जड़जड़ीभूत दुनिया में फँसायेगा, वो तो बुरी तरह ही फँस जाएगा..., फिर उससे निकलना नामुमकिन है...!

इसलिए स्वयं ही स्वयं की संभाल कर अपना तन, मन, धन, जन, बुद्धि, कमी, कमज़ोरी ... अर्थात् संकल्पों सहित बाप को समर्पण हो जाओ..., फिर ही बाप आप बच्चों का ज़िम्मेवार बन, आपकी सूक्ष्म और स्थूल इच्छाओं को पूर्ण कर, आपको अपनी मंज़िल तक पहुँचा देगा..., परन्तु पुरुषार्थ धैर्यतापूर्वक करना है।

बस, बाप (परमात्मा शिव) के संग चलते चलो ... फिर पहुँचे कि पहुँचे...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
01.12.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

स्वयं भगवान आकर थोड़े से थोड़े, उसमें भी थोड़े से बच्चों को विशेष पालना भी देता है और विशेष स्नेह, सहयोग और शक्ति भी...।
फिर भी बच्चे नम्बरवार ही बनते हैं...!

जो बच्चे बाप की श्रीमत को 100% मन-बुद्धि में रखकर चलते हैं अर्थात् उनका केवल बाप ही संसार है ... उन बच्चों का अपने ऊपर full attention है ... और उन बच्चों का परिवर्तन भी speed से हो रहा है ... अर्थात् वो बच्चे ही बाप-समान बच्चे बनते हैं ... और वो बच्चे ही बाप के;
• मस्तकमणी,
• दिलतख्तनशीन,
• नूरे-रत्न बच्चे हैं,
• बाप की आशाओं को पूरा करने वाले बच्चे हैं...।

दूसरी तरफ;
वो बच्चे हैं ... जिनका भी अपनी तरफ attention हैं ... इनको भी एक ही लगन है कि बाप-समान बनना ही है...।
परन्तु कभी-कभी दुनिया में बुद्धि भी जाती, संस्कारों से भी हार जाते, अर्थात् बार-बार connection जोड़ने का अभ्यास करते हैं..., परन्तु फिर भी इन बच्चों से बाप को बहुत प्यार है, इसलिए यह बच्चे बाप के गले की माला अर्थात् सिमरणी माला के दाने बन जाते हैं...।

और फिर तीसरी तरफ...
यह बच्चे जो हैं, वो पुरुषार्थ तो करने की इच्छा रखते हैं और चाहते भी यही है कि हम भी बाप-समान बनें...! परन्तु बहुत जल्दी ही हार खा लेते हैं..., क्यों...?
क्योंकि दुनिया से वैराग्य नहीं है...! अभी भी बहुत सारी इच्छाएं हैं, दुनिया से ही प्राप्ति की इच्छा है ... इस कारण भगवान् के द्वारा full सम्पन्न नहीं बन पाते ... और इन बच्चों के एक ही बोल हैं कि सारा दिन थोड़े ना ही योग लग सकता है...!

परन्तु, योग क्या है...?

योग है एक प्यार ... जोकि हमें इस समय केवल एक बाप (निराकार शिव) से करना है, अर्थात् सब सम्बन्धों का सुख, वैभव, वस्तुओं का सुख केवल बाप से ही अनुभव करना है ... और इस सुख, आनन्द, खुशी और संतुष्टता के आगे दुनिया से प्राप्त होने वाला सुख, मिट्टी के बराबर है...।

बस, थोड़ा-सा समय दृढ़तापूर्वक करना पड़ता है। जितना बाप को combined रखोगे, उतनी ही जल्दी प्राप्तियां शुरु हो जायेंगी, फिर तो सहज हो जायेगा...।

इसलिए, अब स्वयं ही स्वयं का निर्णय करो कि हमें कौन-से number में आना है...?
अंत काल भी स्मृति में रखना, क्योंकि वो scene बहुत भयानक, हाहाकार वाला और full पश्चाताप वाला होगा...।

गृहस्थ में रहकर हर कार्य करना है, परन्तु 100% समर्पण बुद्धि अर्थात् न्यारा रहकर, करनकरावनहार की स्मृति में रहकर करना है..., फिर आपका ज़िम्मेवार बाप है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
02.12.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

यदि विश्व महाराजा वा विश्व महारानी बनना है ... तो पुरानी देह, देह के सम्बन्ध, वस्तु, वैभव, पुराने स्वभाव-संस्कार, सबसे मरना पड़ेगा...!

अर्थात् हमेशा स्वयं को ऊँच स्वमान में स्थित कर बाप (परमात्मा शिव) के संग रह, निरसंकल्प स्थिति में रहना पड़ेगा...।

इसके लिए एक तो कोई भी कार्य करते हुए अर्थात् कोई भी कर्मइन्द्रिय द्वारा कर्म किया फिर उससे न्यारे हो, निरसंकल्प स्थिति अर्थात् उस कार्य, परिस्थिति, बोल के प्रभाव से न्यारे हो जाओ...।

और दूसरा;

कार्य को शुरू करने से पहले, वो कार्य बाप को समर्पण कर दो ... और कार्य finish कर, कार्य का result भी बाप को सौंप दो..., फिर आपके हर कार्य का ज़िम्मेवार बाप हो जाएगा...।
और जिस कार्य का ज़िम्मेवार बाप होगा, उस कार्य में आप बच्चे विजयी ना बनो ... यह तो असम्भव है...!

देखो, आपके देवी-देवता स्वरूप में भी हर्षित और शान्त चेहरा दिखाते हैं ... वो केवल ज़रूरत के शब्द बोल, उससे न्यारे हो जाते हैं ... क्योंकि उन्हें पता है कि अन्तिम विजय हमारी ही है...। इतना निश्चय आप बच्चों को भी होना चाहिए, तभी आपकी स्थिति अचल-अडोल होगी...।
और जब इस स्वरूप में रहोगे, तभी आप साक्षात्कार मूर्त बनोगे...।

बस, इसके लिए attention वा अभ्यास की ज़रूरत है...।

वैसे भी अब आप बच्चे मंज़िल के समीप हो ... इसलिए यह पुरुषार्थ भी सहज ही हो जायेगा। बस बाप के संग रह, अपने ऊँच स्वमान में स्थित रहना है ... और यही पुरुषार्थ कम से कम समय में आपको बाप-समान बना देगा...।

बच्चों के अन्दर लगन बहुत अच्छी है, बाबा खुश है ... और जिन बच्चों पर बाप खुश हो, उनकी सफलता निश्चित ही है...।

इसी तरह उमंग-उत्साह में रह उड़ते रहो। जब आप बच्चे हर कार्य के प्रभाव से न्यारे हो जाओगे तब आपका प्रभाव निकलेगा।
बिल्कुल निश्चिन्त स्थिति में स्थित रहना है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
03.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बस, तेरा-तेरा ही करते जाना है। हमेशा स्वयं को बाप-समान समझ कर्म व्यवहार में आना है।

किसी भी आत्मा का कैसा भी part देख ... क्या, क्यों, ना कर उस आत्मा के प्रति 100% शुभ-भावना रख, स्वयं के प्रति full attention रखना है ... क्योंकि drama बिल्कुल accurate बना हुआ है।

स्वयं को बिल्कुल अचल-अडोल स्थिति में स्थित रखना है, चाहे कोई पहाड़ जैसी परिस्थिति भी आये, तब भी...।
क्योंकि, परमात्मा आप बच्चों के संग है ... कोई भी आप बच्चों का बाल बांका भी नहीं कर सकता..., तो परिस्थितियां आप बच्चों के आगे क्या चीज़ है...!

परन्तु कई बार किसी बात में कुछ समय भी लगता है तो भी आप निश्चिन्त रहो क्योंकि बाबा आपका well-wisher के साथ-साथ त्रिकालदर्शी भी है और बाप को ही पता है कि किस बात में आपका कल्याण है।

इसलिए निश्चय रख, निश्चिन्त रहो ... उचित समय आने पर जिस समय केवल आप बच्चों का कल्याण होगा, वो कार्य आपका सम्पन्न हो जाएगा...।

बस तेरा-तेरा करना है, यह नहीं - मेरा संस्कार है ... मैं कमज़ोर हूँ, नहीं...!
मेरा बाप-समान संस्कार है ... मैं तो हूँ ही बाप-समान।
बस, और कुछ नहीं सोचना...।

जब विजयी रत्न, सफलतामूर्त बनना है, तो अभी से ही तो हर कार्य में विजय और सफलता मिलेगी ... तभी तो आपका गायन होगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
04.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा हमेशा कहता है कि;
किसी भी प्रकार की हलचल को देख हलचल में मत आओ। फिर भी आप बच्चे हलचल में आ जाते हो..., क्यों...?

क्योंकि अभी तक मेरा-मेरा बहुत ज्यादा है और यह मेरा-मेरा ही दुःख और अशान्ति का कारण है।

देखो, जबकि आप बच्चे अब संगम के भी अन्तिम चरण में हो जोकि आगे चलकर अर्थात् बहुत थोड़े से थोड़े समय में हाहाकार वाला होगा।

उस scene को देखने और सामना करने की शक्ति बहुत थोड़े से बच्चों में होगी, जिन्होंने 100% बाप की श्रीमत को पालन करने का पुरुषार्थ किया होगा, केवल उनमें...।

जबसे बाबा आया है, तबसे यही कह रहा है कि हर जगह से बुद्धि निकाल लो ... अन्यथा यह तन, मन, धन, जन, सुख, सुविधा ... सब, आपको ना चाहते हुए भी बुरी तरह से अपनी तरफ खींचेंगे...।

क्योंकि अन्तिम समय प्रकृति के पाँच तत्व और पाँच तत्वों से बना यह सारा संसार बुरी तरह से हलचल में होगा और ऐसे समय में अचल स्थिति में वो ही स्थित रह सकेगा जिसमें एक तो सम्पूर्ण रीति समर्पण भाव होगा, दूसरा अशरीरी बनने का full अभ्यास होगा।

इसलिए अब अपनी तरफ attention बढ़ाओ। अपने हर संकल्प को खुद check करो कि आपके संकल्प किस दिशा में जा रहे हैं...?
और अन्त के समय में कोई भी बहानेबाज़ी नहीं चलेगी...!

इसलिए इन सब अर्थात् देह और देह से सम्बन्धित हर चीज़ से 100% न्यारे हो सारी अर्थात् सम्पूर्ण ज़िम्मेवारी बाप को सौंप दो। इसमें अलबेले मत बनना अन्यथा बहुत पछताना पड़ेगा...।

100% समर्पण बुद्धि वाले बच्चों के साथ बाप (परमात्मा शिव) का भी 100% promise है कि अन्त के समय में भी जब दुनिया हाहाकार में होगी, पर बाप के बच्चे मौज में होंगे...।

बाप पर निश्चय रखो और स्वयं को 100% बाप हवाले कर अर्थात् बाप जहाँ बिठायें, जो खिलायें, बाबा आपकी मर्ज़ी ... और अपनी मन-बुद्धि को बाप की याद में, बाप के प्यार में लगा दो।

अपने पूरे कल्प के इस महत्वपूर्ण समय के महत्व को समझ अपना एक-एक second सफल करो, क्योंकि त्याग के आगे प्राप्ति पदमगुणा ज्यादा है।

करना भी कुछ नहीं है - बस समर्पण हो जाओ...।

हर कमज़ोर संस्कार, संकल्प सबकुछ बाबा को बार-बार देने का पुरुषार्थ बढ़ाते जाओ। आपके इस पुरुषार्थ से ही बाप समय आने पर आपको बिल्कुल हल्का कर देगा और आपकी ऊँच प्रालब्ध भी बना देगा।

बस attention देना है...,
• हल्के रहना है
• ना ही अलबेले होना है
और
• ना ही दिलशिकस्त
और
• ना ही हार खानी है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
05.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

इन कर्मन्द्रियों से प्राप्त सुख अल्पकालिक है, अर्थात् विनाशी है ... और जब तक आप बच्चों को इनसे प्राप्तियों का रस अनुभव होगा, तब तक आप अविनाशी सुख और शान्ति का अनुभव सदाकाल नहीं कर सकते...!

जैसेकि;
किसी भी सुन्दर चीज़ को देखकर खुश होना..., सुख-सुविधा के साधनों से प्राप्ति का अनुभव होना..., अर्थात् महीनता से checking करो कि मन को कहाँ-कहाँ से सुख की प्राप्ति हो रही है...?

यदि इस देह और देह की दुनिया से ही सुख की प्राप्ति होती रही, जोकि अभी-अभी सुख और अभी-अभी दुःख देने वाली है ... तब आप सदाकाल के लिए अतिन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं कर सकते...।

ऊँच पद की प्राप्ति करनी है तो checking भी महीनता से करनी पड़ेगी...।

यह त्याग, सुखों का त्याग नहीं दु:खों का त्याग है, क्योंकि कुछ ही समय में यह पाँच तत्वों से बना संसार अत्यधिक दु:ख में परिवर्तन होने वाला है।

बस, सबकुछ करते भी अपनी मन-बुद्धि सब चीज़ों से निकाल, एक बाप में लगा लो ... अर्थात् स्वयं को विशेष आत्मा समझ परमात्मा के प्यार में खो जाओ, क्योंकि परमात्म प्यार से प्राप्त सुख ही अविनाशी सुख है।

यह मत सोचो कि इसका भी त्याग करना है..., इसका भी त्याग करना है..., नहीं...।
केवल आपको इन सब चीज़ों का ज्ञान होना चाहिए ... परन्तु संकल्पों द्वारा, परमात्मा द्वारा प्राप्त खुशी, सुख अर्थात् बेहद और अविनाशी प्राप्तियों में रमण करो...।

इसके लिए केवल संकल्पों के direction को change करो, क्योंकि परमात्म सुख ही हमारी संगमयुग की प्रालब्ध और भविष्य की प्रालब्ध बनाता है।

जब त्याग-त्याग करते हो, तो भारी हो जाते हो ... और जब प्राप्त हुई प्राप्तियों और प्राप्त होने वाले सुख के बारे में सोचते हो तो automatically उमंग-उत्साह में आ आगे से आगे बढ़ने लग जाते हो...।

कोई भी त्याग हठ-पूर्वक नहीं बल्कि ज्ञानी तू आत्मा बन परमात्म प्यार से करना है ... फिर वो त्याग, त्याग नहीं रहेगा बल्कि ऊँचा भाग्य बनाने का साधन बन जायेगा।

यही सच्चा परमात्म प्यार आप बच्चों को ज्ञान स्वरूप, गुण स्वरुप और शक्ति स्वरूप बना देगा...।

आप सब बच्चों को बस बाबा (निराकार शिव) के साथ बैठ अपने original स्वरूप और original कर्तव्य की स्मृति में रहना है।

अतिन्द्रिय सुख आत्मा और परमात्मा के मिलन में है, ना कि इन पाँच तत्वों से बनी देह और देह की दुनिया में है...!
इसलिए इससे सम्पूर्ण रीति वैराग्य लाओ...। यह बहुत सहज है, क्योंकि इस समय बाबा का full सहयोग है।

बस संकल्पों द्वारा इसे बिल्कुल सहज समझकर करो...।

देखो, यह अतिन्द्रिय सुख आप पूरे कल्प में केवल इसी समय अनुभव करते हो और तो आप हमेशा कर्मन्द्रियों के सुख में ही रमण करते हो...!
इसलिए, इस समय इन कर्मन्द्रियों के सुख से न्यारा होना सहज नहीं लगता...!

आप बच्चों को इन सब चीज़ों के बीच में रहते अपनी मन-बुद्धि को इन सबसे न्यारा करना है अर्थात् आपको कोई खींच ना हो, केवल एक ही लगन हो कि मुझे स्वयं को अनुभव कर, बाप को अनुभव करना है और बाप के कर्तव्य को पूरा करना ही अपनी ज़िम्मेवारी समझना है।

इसलिए, उमंग-उत्साह से सम्पन्न संकल्पों को अपने साथ रखो ... वैसे भी जब बाबा साथ है, तो हुआ ही पड़ा है ना...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
06.12.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

आप अपने ऊँचे भाग्य को जानते हो...? और इस ऊँचे भाग्य के नशे में रहकर चलते हो क्या...?

देखो, आप बच्चों पर direct भगवान की नज़र है ... सो आपके अंदर कितना ना खुशी और उमंग-उत्साह होना चाहिए...!

देखो, बाबा हर पल आप बच्चों के साथ है, पर फिर भी प्रत्यक्ष रूप में तो बच्चे ही हैं ... और उन्हें ही हर परिस्थिति का सामना करना पड़ता है ... और बच्चे जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं, तो परिस्थिति नये-नये रूप में आती है...।

परन्तु आप बच्चे उसे paper ना समझ, आगे बढ़ने की lift समझ पार कर लो ... अर्थात् बाप की श्रीमत और बाप को अपने संग रखो।
फिर सब सहज हो जाएगा...।

देखो, इस रास्ते में आगे बढ़ने का साधन...,
• उमंग,
• उत्साह,
• खुशी,
• धैर्यता,
• निश्चय,
• नशा,
• दृढ़ता
और
• हिम्मत है ... तो फिर बाप का भी साथ है ही है...।

बस, अपने ऊँचे से ऊँचे भाग्य के स्मृति स्वरूप बन अपने ऊँचे लक्ष्य को सामने रख पुरुषार्थ करो...।

इस पुरुषार्थ में...,
• ना तो थकना है,
• ना ही घबराना है
और
• ना ही दिलशिकस्त होना है
• ना ही अलबेला होना है...। बिल्कुल हल्के रहकर पुरुषार्थ करना है...।

कोई भी बात हो, बाप से रुह-रिहान कर बाप को वो बात सौंप दो...। फिर धैर्यतापूर्वक बाप के संग बैठ जाओ अर्थात् wait and watch ... फिर देखो, कैसे सफलता और विजय आप बच्चों के पांव चुमती है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
07.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

आपका अपनी मन-बुद्धि की तरफ कितना percent attention है...?

यह जो अंत के भी अंत का समय जा रहा है, यह समय स्वयं को ऊँच से ऊँच स्वमान में स्थित कर, बाप के संग रह, बेहद की सेवा का है ... क्योंकि, यह जो पुरानी जड़जड़ीभूत दुनिया में मनुष्य आत्माओं को देह, देह के सम्बन्धों, वैभवों और प्रकृति के पाँच तत्वों से जो अल्पकाल का सुख मिल रहा है, वो अब दुःख में परिवर्तन होने वाला है...।

इसलिए आप बच्चों को वो समय आने से पहले 100% अपनी मन-बुद्धि इस पुरानी दुनिया से detach करनी है।
बाद में अर्थात् समय के नज़दीक आने पर इससे detach होना, असम्भव है...।

अभी आप बच्चों को समय का भी और बाप का भी full सहयोग है ... इसलिए ज्यादा सोचो मत कि कोई भी या किसी भी तरह का दुनियावी कार्य मेरा है वा मुझे ही करना पड़ेगा, वा मेरी ही duty है...!

इस समय आपकी duty केवल स्वयं को अनादि स्वरुप में स्थित कर, बाप (निराकार शिव) के संग रह, बेहद की सेवा करने की है - और यही पुरुषार्थ करना अर्थात् अपनी मंज़िल की तरफ कदम बढ़ाना है...।

और दूसरी तरफ;
आप जब अपनी स्थूल हर तरह की ज़िम्मेवारी, कमी, कमज़ोरी 100% बाप को समर्पण करते हो अर्थात् बाप पर 100% निश्चय रख, बाप के कार्य में मददगार बनते हो ... तो अंत तक बाप आपका ज़िम्मेवार बन, आपके हर कार्य में आपका 100% साथ निभायेगा...।

अब आपको स्वयं ही स्वयं का निर्णय करना है कि मुझे क्या करना है...?

जो बच्चे अभी भी बाप की श्रीमत को 100% follow करने का पुरुषार्थ कर रहे है, उन्हें बाप की full मदद है ... और यह मदद ही उन्हें मंज़िल तक पहुँचा देगी...।

देखो, माया के भिन्न-भिन्न रुपों को अच्छी तरह से पहचानों ... और स्वयं को इससे safe रखो..., नहीं तो बाद में बहुत पछताना पड़ेगा...!

अब आप बच्चों का पुरुषार्थ बहुत ऊँचा होना चाहिए, अर्थात् इस दुनिया से 100% न्यारा रह बाप का प्यारा बनने का पुरुषार्थ होना चाहिए...।

अभी तो फिर भी हर बच्चे को यथा-शक्ति बाप का सहयोग मिल रहा है, परन्तु कुछ ही समय के बाद बाप-समान बनने का पुरुषार्थ करने वाले बच्चों को ही बाप का सहयोग मिलेगा...।

इसलिए, जल्दी-जल्दी check और change करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
08.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

जो आत्मा जितनी positive संकल्पों से भरपूर होती है ... उतनी शान्त, शीतल, हर्षित और सन्तुष्ट होती है अर्थात् बाप-समान होती है...।

इसलिए, कोई बड़ी से बड़ी बात हो उसे संकल्पों द्वारा छोटा करो अर्थात् हल्का करो ... क्योंकि, परिस्थिति का ज्यादा मंथन करने से कोई भी समाधान नहीं निकलता बल्कि आत्मा भारी हो जाती है।

बच्चे, हर बात बाप को समर्पण कर स्वयं को positive संकल्पों से भरपूर कर दो, फिर आप बच्चों के हर संकल्प सिद्ध होने लग जायेगे...।

इसके लिए बुद्धि द्वारा मैं और मेरे का त्याग कर, तेरा-तेरा करना पड़ेगा...।

देखो, अगर आपका संस्कार समय से पहले काम करने का है और कुछ आत्माओं का slow-slow करने का संस्कार है, तो आप moulding power use करो...।

बच्चे, समय से पहले कार्य करना यह आपका सात्विक संस्कार है, परन्तु साथ में धैर्यता और शान्ति को add करो ... और साथ ही शुभ भावना और शुभ कामना अर्थात् positive संकल्प रखो...।
कोई भी व्यर्थ संकल्प नहीं होने चाहिए।

देखो, आपके संपर्क में आने वाली आत्माओं का परिवर्तन आपके परिवर्तन पर depend करता है...।

हमेशा आपको इन सभी आत्माओं का धन्यवाद करना चाहिए अर्थात् दुआयें देनी चाहिए, क्योंकि यही आत्माएं आपको सम्पन्न बनाने के निमित्त बनी हुई है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
09.12.2018

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

आप सबको अन्तिम से अन्तिम समय को सामने रख और ऊँचे से ऊँचे लक्ष्य को भी सामने रख, पुरूषार्थ करना है।

बाप आप सब बच्चों के साथ है और बाप की एक यही इच्छा है कि बच्चे जल्दी से जल्दी सम्पन्न बन, विश्व-परिवर्तन का कार्य सम्पन्न करें...।
इसलिए, आप सब बच्चों की भी केवल यही एक इच्छा होनी चाहिए...।

हल्के रहकर पुरूषार्थ करना है। जब बाप बच्चों का मददगार है, तो हुआ ही पड़ा है ना...।

"हिम्मते बच्चे, मददे बाप" ... पर हिम्मत भी कौन-सी...?
मन्सा-वाचा-कर्मणा, हर छोटी-बड़ी श्रीमत को 100% follow करने की...।

जितने percent श्रीमत की पालना, उतनी percent मदद...।

देखो, बाप का आकर यूँ विशेष रीति पढ़ाना और मदद करना, इसके महत्व को अच्छी तरह से समझकर चलो, इसे general मत लो।

बाप (परमात्मा शिव), जिसे सारी दुनिया ढूँढ रही है, वो स्वयं आया है ... इसकी importance को समझ अपनी दिनचर्या व्यतीत करो, अन्यथा खून के आँसू बहाने पड़ेंगे और वो समय भी दूर नहीं है...!

इस समय की थोड़ी-सी लापरवाही वा अलबेलापन आपको पुरानी दुनिया की तरफ ले जायेगा, जहाँ केवल दु:ख-ही-दु:ख है।

इसलिए हर समय अपने संकल्पों की वा स्व-स्थिति की checking रखो, और बाप की श्रीमत प्रमाण आगे से आगे बढ़ते चलो...।

यह मत सोचो कि हम तो इतना ही कर सकते हैं अर्थात् हम बाप की श्रीमत प्रमाण इतना percent ही चल सकते हैं...!

यह अलबेलापन आगे चल आपके रास्ते की रुकावट बन जायेगा जोकि आपको मंज़िल तक पहुँचने नहीं देगा और वो समय केवल पश्चाताप का होगा।

इसलिए, अच्छी रीति हर श्रीमत को follow करो।
बाप के संग रहने का पुरुषार्थ करोगे, तो सब सहज हो जायेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
10.12.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

सभी बच्चे विजय माला में आना चाहते हैं और ऊँचे से ऊँचा पुरुषार्थ भी करना चाहते हैं।
परन्तु फिर भी नम्बरवार बन जाते हैं, क्यों...?

क्योंकि बच्चे अपने संस्कार परिवर्तन करने में नम्बरवार है...!

संस्कार परिवर्तन करना अर्थात् ... अपना सब कुछ तेरा-तेरा-तेरा कर देना...।

वैसे तो बच्चे मन से करते भी हैं अर्थात् सोचते भी हैं, सब कुछ आपका है ... परन्तु जैसे ही कोई भी प्रकार की हलचल को देखते हैं, तो स्वयं ही हलचल में आ जाते हैं।
कैसे होगा..., कुछ हो तो रहा नहीं...?

जब बाप को सौंप दिया, ज़िम्मेवारी बाप की हो गई ... तो क्या बाप पर निश्चय नहीं है...?

निश्चय अर्थात् निश्चिन्त...।
अगर निश्चिन्त अवस्था नहीं है, तो यही कहा जायेगा ना कि या तो मेरा-मेरा है या फिर बाप पर 100% निश्चय नहीं है...!

100% निश्चय हो, तो रमता योगी बन जायें...। उमंग-उत्साह, खुशी में उड़ता रहें...।

देखो, बाप है जानी-जाननहार, साथ में हैं सर्वशक्तिवान् ... अर्थात् वो कुछ भी कर सकता है, परन्तु बच्चों के कल्याण को देख उसी according अपना part play करता है।

इसलिए बच्चे, अपने निश्चय को बढ़ाओ, समर्पण भाव को बढ़ाओ...।

यह मत सोचो;
मेरा बच्चा, मेरा तन, मेरा कारोबार, मेरा घर..., नहीं...।
• यह मेरा-मेरा आप बच्चों को आगे बढ़ने नहीं देगा।
• यह मेरा-मेरा आपको मंज़िल से दूर कर देता है।

बस यही सोचो कि मेरी ज़िम्मेवारी बस स्वयं को सम्पन्न बना विश्व को परिवर्तन करने की है।

हलचल को देख हलचल में मत आओ, बाप के समान त्रिकालदर्शी बनो...।

जब बाप guarantee ले रहा है, तो हर बात में अपना कल्याण समझ आगे बढ़ो...।

यदि कुछ ऊपर-नीचे हो भी रहा है, तो भी 100% इसमें आपका कल्याण समाया हुआ है।

देह, और देह की दुनिया से साक्षी होना अर्थात् विजय माला में आना है...।

बस बच्चे, पूरी रीति बाप के प्यार में समा जाओ..., खो जाओ..., फिर देखना बाप की कमाल...।

कमाल अर्थात् जादूगरी...।

बाप भी आप बच्चों के प्यार में सब कुछ करने को तैयार रहता है, बस थोड़ा-सा धैर्य रखो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
11.12.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, drama की हर scene को देखते, उसके हर second में स्वयं का कल्याण अनुभव करते हो..., या थोड़ा बहुत हलचल होती है...?

हलचल होना अर्थात निश्चय की percentage में कमी...।

देखो, विजय का आधार प्रेम और विश्वास है और जब बच्चे सच्चे दिल से एक बाप से ही प्यार करते हो और 100% निश्चय भी रखते हों ... तो एक second से भी बहुत कम समय में, आप बच्चों की 100% विजय हो जाती है।

जैसे कोई छोटा बच्चा बाप के साथ कहीं जाता है और रास्ता उसके चलने लायक नहीं होता, तो वो और ज़ोर से बाप का हाथ पकड़ लेता है, तो बाप भी जल्दी ही उसको अपनी गोदी में उठा लेता है ... और कई बार बाप बच्चों को ऐसे रास्ते पर चलने भी देता है, ताकि बच्चे में power आये ... परन्तु बाप का ध्यान बच्चे पर 100% रहता है कि बच्चे को कहीं minor सी भी चोट ना लग जाये..., बच्चा गिर ना जाये..., क्यों...?

क्योंकि बाप को पता है कि बच्चे को सम्भालने की ज़िम्मेवारी केवल मेरी ही है और यदि बच्चा यह सोचने लगे कि मैं रास्ता कैसे cross करूँगा...?
तो automatically बाप का हाथ और साथ छूट जाता है और वो अपना responsible स्वयं बन जाता है।

इस दुनिया में भी बाप का प्यार बच्चों से, बच्चों के comparison में ज्यादा होता है। बच्चे तो केवल जब तक बाप की ज़रूरत होती है, तब तक बाप से 100% प्यार करते हैं, फिर उनका प्यार भी बट जाता

है। परन्तु माँ-बाप तो अन्त तक बच्चों पर अपनी जान तक न्यौछावर करने को तैयार रहते हैं ... और यहाँ तो भगवान, केवल बाप ही नहीं ... बल्कि सारे सम्बन्धों के साथ आपका बना है और आपकी 100% ज़िम्मेवारी भी लेता है।

बस बाबा इतना ही कहते हैं;
बच्चे, मुझ पर समर्पण हो जाओ अर्थात् अपनी देह सहित, देह की सारी दुनिया बाप के हवाले कर मौज से नाचो-गाओ ... क्योंकि हर बात में आप बच्चों का ही कल्याण समाया हुआ है, ज्यादा सोचो मत, बस धैर्यता रखो...।

बाप जैसे कहें, बस "हाँ-जी, हाँ-जी" कह चलते चलो, फिर देखो बाबा की कमाल पर कमाल...।

बेहद का बाप है तो बेहद की कमाल होगी ना...। जिसका साथी है भगवान, उसका क्या बिगाड़ेगा आँधी और तुफान...!

ज्यादा कुछ भी नहीं करना, बस खुश रहो, सन्तुष्ट रहो, निश्चिन्त रहो, हल्के रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
12.12.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बिल्कुल हल्के रहना है, कोई भी program बनाओ, कुछ भी करो..., double light रहकर करना है...।

Light रहना अर्थात् मैं point of light ... और संकल्पों से भी बहुत light, और light चीज़ ही ऊपर की तरफ उड़ सकती है।

इसी तरह जब आप आत्मायें हल्की रहती हो, तो ऊपर ही ऊपर उड़ती रहती हो और जैसे ही संकल्पों से minor सा भी भारी होते हो, तो नीचे की ओर आना शुरु हो जाते हो, और फिर (ऊपर जाने के लिए) पुरुषार्थ करते हो...!

इसमें देखो कमाई करने का बहुमूल्य समय कितना खराब होता है, जो बाप को अच्छा नहीं लगता...! इसलिए सदा बाप के संग रह हल्के रहो।

देखो, अब तो स्वयं भगवान direct आ गया है, आप बच्चों को पढ़ाने के लिए...।
जबकि इससे पहले भी किसी भी

परिस्थिति ने आपका कुछ नहीं बिगाड़ा, तो अब तो हर तूफान तोहफा बनेगा, इतना निश्चय रखो...।

यह बच्चों के लिए हीरे-तुल्य समय चल रहा है जोकि केवल प्राप्तियों का है।

बस थोड़ा बहुत पुराना हिसाब-किताब है जोकि बाबा साथ बैठ सहज से सहज रीति चुक्तु करवा रहा है, क्योंकि बाबा नहीं चाहता कि बच्चे अपना एक second भी बरबाद करें।

बस, सबकुछ बाप (परमात्मा शिव) हवाले कर, हल्के रह उड़ते रहो...।

पूरे कल्प सब कुछ मिलेगा, परन्तु शिव साजन नहीं..., जिसे पाने के लिए सभी मनुष्य आत्मायें कितना भटक रही है...!

परमात्मा बाप से मिलने के, संगम के समय के, स्वयं के भाग्य के ... गुणगान करते रहो और उमंग उत्साह के साथ उड़ते रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
13.12.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब आपके अन्दर केवल एक ही संकल्प होना चाहिए ... कि मुझे बाप-समान बन विश्व-परिवर्तन का कार्य करना है और बाप (निराकार शिव) को पूरे विश्व के आगे प्रत्यक्ष करना है।

देखो, यह जो समय जा रहा है यह केवल कमाई का है, इसलिए अपने हर संकल्प पर attention दो और संकल्पों की speed को कम करते जाओ ... क्योंकि समय बिल्कुल थोड़े का भी थोड़ा रह गया है...!

यह मत सोचो कि अभी कुछ ऐसा तो दिख नहीं रहा है...!
परिवर्तन एक झटके से होगा। परिवर्तन में सालों साल नहीं लगेंगे...।

देखो, बाबा प्यार और रहम का सागर है और सभी आत्माओं का बाप भी..., इसलिए लम्बा समय बच्चों को दुःख में नहीं देख सकता।

इसलिए यह कार्य अचानक और आश्चर्यजनक ढंग से होगा। परन्तु आत्माओं को यह समय बहुत लम्बा अनुभव होगा ... क्योंकि दुःख का थोड़ा समय भी बहुत लम्बा अनुभव होता है...।

समय रुका ही हुआ है केवल 108 रत्नों की माला के लिए...। जैसे ही विजयी रत्न अपनी seat पर set होंगे, वैसे ही कार्य शुरु हो जायेगा...।

और जो बच्चे समय को देख पुरुषार्थ कर रहे है, उनका number उतना ही पीछे होता जा रहा है...!

यह बाप की warning समझो या समझानी समझो, पर अभी-अभी कर लो ... अर्थात् अपनी मन-बुद्धि को इस दुनिया से बाहर निकालो, अन्यथा तो आप बच्चे समझदार हो..., अन्तिम घड़ी कैसी होगी...!

जैसे कहते है ना, छोड़ो तो छूटें ... अर्थात् अपनी मन-बुद्धि को पुरानी दुनिया से निकालो तो आगे का कार्य अर्थात् आपको और आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को सम्पन्न बना, घर (परमधाम) ले जाने का कार्य बाप स्वयं कर देंगे।
परन्तु इतना तो आपको ही करना पड़ेगा...। यह बाप नहीं करेगा...!

इसके लिए बाबा ने आपको कई युक्तियां बताई है।
बस, अमल में लाओ...।

कहने से या सोचने से नहीं होगा, करने से होगा...।

इसलिए बाप की हर direction पर attention दो और उसे practical में अनुभव करो और check करो कि मैं कितना percent विजयी बना हूँ...?

Check के साथ change ज़रूरी है...।

सोचो तो सही ... बाप, आप बच्चों के साथ practical में हैं, तो आप नहीं करोगे तो कौन करेगा...?

बाप की पालना का return दो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
14.12.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा हम सभी बच्चों के पुरुषार्थ की result check कर रहा था...।
तो बाबा ने देखा कि ... बाबा के कुछ एक बच्चे तो बाप की श्रीमत को 100% follow कर रहे हैं और पुरुषार्थ भी पूरा है कि हम स्वयं के हर संकल्प को बाप को समर्पण कर बाप समान बन जायें...।

बाबा भी उन बच्चों को देख खुश होता है और कहता है - वाह बच्चे वाह ... इसी तरह उड़ते रहो...। और बाप भी इन बच्चों की 100% guarantee लेता है।

फिर बाबा ने कुछ एक बच्चे ऐसे देखें ... जिन्हें लगन है बाप की श्रीमत को follow करने की, और करते भी हैं, परन्तु बीच-बीच में क्या, क्यों, कैसे आ जाता है...!

बाबा उन बच्चों को कहता है ... बच्चे, हिम्मत रख करते चलो तभी आप बाप की मदद के पात्र बन सकते हो...।

ज्यादा सोचो मत, बाप की हर श्रीमत को महीनता से पालन कर, अपना 100% समय सफल करो...।

देखो, लौकिक में भी किसी चीज़ की प्राप्ति की दृढ़ इच्छा हो तो आत्मा दिन-रात एक कर, उस इच्छा को पूरी कर लेती है ... और ये तो कल्प कल्प के भाग्य बनाने की इच्छा है...।
इसलिए दुनिया से न्यारे बन अपनी इस इच्छा को पूरी करो...।

बाबा ने जो अपने तीसरी तरह के बच्चे देखें ... वो पुरुषार्थ करते हैं और पाना भी ऊँच पद चाहते हैं परन्तु आज बाबा उन बच्चों को officially समझानी दे रहा है कि बाप की श्रीमत को महीनता से समझो ... complaint स्वरूप मत बनो - बाबा हमारी सुनता नहीं, बाबा हमारी मदद नहीं करता...!

सोचो, लौकिक में भी माँ-बाप, अपने बच्चों के साथ ऐसा कर सकते हैं क्या...?
लौकिक में भी माँ-बाप का ध्यान सदा अपने कमज़ोर बच्चों पर होता है और यहाँ तो मैं बेहद का बाप हूँ, साथ ही भगवान भी, अर्थात् प्यार के सागर के साथ-साथ त्रिकालदर्शी भी हूँ और knowledgeful भी ... और मुझे अपने कर्तव्य का पता है ... किस तरह, किस problem को solve करना है...!

इसलिए complaint स्वरूप मत बनो...।
अभी तो बाप से और अपने भाग्य से और अन्य आत्माओं से complaint है ... परन्तु अन्त में केवल स्वयं से ही complaint होगी, जोकि पश्चाताप का बहुत भारी रूप होगा...।

क्योंकि दूसरों की गलती तो फिर भी क्षमा की जा सकती है, परन्तु अपनी इतनी बड़ी गलती, जिससे कि हम अपने कल्प-कल्प के भाग्य को कम कर देते हैं...!
तो स्वयं को कैसे माफ कर पायेंगे...?

इसलिए समझदार बनो, बहादुर बनो ... complaint स्वरूप ना बन, complete स्वरूप बनो...।

Complete वही बन सकता है जिसे बाप पर 100% निश्चय है और जिसने शुरू से ही बाप की श्रीमत की पालना की है।

बाप (परमात्मा शिव) की श्रीमत है - इस पुरानी दुनिया से मर जाओ, मेरा-मेरा की बजाए तेरा-तेरा हो जाये, न्यारे हो जाओ...।

तो check करो - हम बाबा की इस श्रीमत का practical स्वरूप बने हैं क्या...?

योग-योग करते हो, योग की result क्या है - "स्व-परिवर्तन अर्थात् स्वभाव-संस्कार का परिवर्तन...।"

योग एक अग्नि का कार्य करती है ... जोकि कठोर से कठोर चीज़ को परिवर्तन कर देती है। तो फिर स्वयं पर attention दो ... बाप की मदद के पात्र बनो...।

हिम्मत रखोगे तभी बाप की मदद मिलेगी। दिलशिकस्त मत बनो, वायुमण्डल के प्रभाव में मत आओ...। शक्तिशाली बन, बाप की मदद के पात्र बन, रास्ते की अपनी हर रुकावट को पार कर अपनी मंज़िल तक पहुँचो...।

ये सारे हिसाब-किताब आप बच्चों के स्वयं के ही बनाये हुए हैं।
इसलिए चुक्तु भी स्वयं ही करने पड़ेंगे...!

बाप आप बच्चों की मदद के लिए ही आया है, परन्तु हिम्मत का एक कदम तो आपको ही बढ़ाना पड़ेगा...!

इसलिए ज्यादा सोचो मत, निश्चय रख पुरुषार्थ करो...।

बाबा तो शुरु से ही कह रहा है कि हल्के रहो ... हल्के रहोगे तो परिस्थिति भी हल्की हो जायेगी।

तो check करो - हम कितने percent बाप की श्रीमत की पालना कर रहे हैं...?

देखो, बाबा तो समय की warning दे रहा है ... "अभी-अभी कर लो...।"

यह ना हो कि विश्व की सबसे बड़ी lottery लगती-लगती रह जाये और आप खाली ही रह जाओ...!

इसलिए, check करो ... यदि अभी अन्तिम घड़ी आ जाये तो हमारी क्या गति होगी...?

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
15.12.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... जो बच्चे, सर्व समर्पण हैं अर्थात् मन और बुद्धि की डोर बाप को समर्पण करने के साथ-साथ, अपनी हर problem, अपनी हर कमी-कमज़ोरी के संकल्प भी बाप को समर्पण कर ... बाप जैसे

कहें, वैसे ही करने का 100% पुरुषार्थ कर रहे हैं, तो बाप भी उन बच्चों को बहुत ही सहज रीति, सारे तूफानों से पार करवा ... सम्पन्न बना, अपने पास बिठा लेगा...।

बाप ऐसे बच्चों को कहते हैं ... बस बच्चे, इस तन सहित, तन की सारी दुनिया बाप हवाले कर दो, और कुछ मत सोचो...।
अर्थात् अपनी कमी-कमज़ोरी के बारे में ना सोचो, अर्थात् ... ये मत सोचो कि मैं बाप की श्रीमत प्रमाण चल रहा हूँ या नहीं...?
बल्कि जागृत अवस्था में रह ... मन-बुद्धि पर 100% attention दे, बाप जैसे कहें, वैसे करते जाओ...।

फिर बाप भी आपको समय आने पर वहाँ से उठा, अपने पास बिठा लेगा।
इतना निश्चय स्वयं पर और बाप पर रखो...।

वैसे भी आज्ञाकारी बच्चों के साथ बाप है और उनका रास्ता भी बिल्कुल clear है। जिससे वो सहज रीति अपनी मंज़िल पर पहुँच जायेंगे ... ये बाप (परमात्मा शिव) की guarantee है...।
इस समय भी जो बच्चे संकल्पों की तरफ attention नहीं रख पा रहे हैं, वो अपना attention बढ़ायें ... अन्यथा वो अपने रास्ते से भटक जायेंगे और भटके हुए मुसाफिर के लिए मंज़िल पर पहुँचना मुश्किल हो जाता है, और कई बार नामुमकिन ... अर्थात् कई बार तो अपने ही संस्कारों और परिस्थितियों में समय लगा, समय waste करते, अपना number पीछे कर लेते हैं और कई बार तो इतना फँस जाते हैं कि बाप और ब्राह्मण आत्माओं की मदद के भी पात्र नहीं बन पाते...!
इस कारण, उनका मंज़िल पर पहुँचना नामुमकिन हो जाता है...!

इसलिए बच्चे, अभी तो फिर भी थोड़ा-सा समय है और बाप का सहयोग भी...। तो स्वयं पर attention दे, अपनी मन-बुद्धि को बाप की श्रीमत प्रमाण चलाओ।

देखो, जैसे-जैसे समय आगे बढ़ रहा है तो परिस्थितियां और कमज़ोरियां भी बढ़ रही है क्योंकि वायुमण्डल तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है।
इसलिए, समय से पहले हल्के रह बाप को सर्व समर्पण हो अर्थात् अपने सारे हिसाब-किताब बाप को सौंप अपनी मन-बुद्धि को बाप की आज्ञा प्रमाण चलाओ, तब ही आप आने वाली हिमालय जैसी बड़ी और भयानक परिस्थितियों से बच पाओगे।

देखो, बाप अपने आज्ञाकारी और सपूत बच्चों को अपने नैनों में बिठा अपने साथ ले जायेगा। इसलिए वो निश्चिन्त और खुश रहें।

बस, अपना 100% attention दे पुरुषार्थ करो। आपको बाप-समान बनाने का कार्य तो बाप का ही है ना...।

इसलिए, जैसे-जैसे बाबा आपको कहते हैं, उसी प्रमाण अपनी मन-बुद्धि को चलाने का पुरुषार्थ 100% करो।

किसी भी आत्मा, परिस्थिति, संस्कारों के प्रभाव में मत आओ और अपनी मन-बुद्धि की डोर बाप के संग जोड़े रखो, उसी डोर से बाबा आपको खींचकर ऊपर बिठा लेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
16.12.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्वयं के part से, अन्य आत्माओं के part से और पाँच तत्वों के बने इस संसार से साक्षी हो इस खेल को देखो, फिर आपकी स्थिति अचल-अडोल हो जायेगी...।

बार-बार स्वयं को इस देह से न्यारा समझ बाप के संग बैठ जाओ।
किसी भी बात में मूँझों मत, क्योंकि यह जो बिल्कुल अन्तिम समय जा रहा है, वो हलचल से भरपूर है, क्योंकि हर चीज़ अति में जा रही है, विदाई लेने के लिए...।

इसलिए, अपने कमज़ोर संस्कारों से भी 100% साक्षी हो जाओ और अपनी यात्रा में तत्पर रहो।

मन को बार-बार पकड़कर बाप के पास ले जाओ..., यही अभ्यास आपको बाप-समान बना देगा।

देखो, इस यात्रा में ना तो अलबेला बनना है, ना ही थकना है और ना ही bore होना है - यह तीनों ही कमज़ोरी आपको बाप से detach कर देती है, इससे माया को भी chance मिल जाता है।

इसलिए बहुत careful होकर पुरूषार्थ करना है। हमेशा उमंग-उत्साह में रहो। अपने लक्ष्य और अपनी प्राप्तियों के स्मृति स्वरूप रहो।

देखो, इस दुनिया में सभी आत्मायें भगवान को पाने की, मिलने की इच्छा में लगे हुए है ... परन्तु भगवान, बाप बन आप प्यारे-प्यारे, मीठे-मीठे बच्चों के पास आ गया।
इतने बड़े अपने भाग्य को भूलो मत...।
लक्ष्य को भी याद रखो क्योंकि अब तो संगमयुग का हीरे तुल्य समय भी आया कि आया ... इसलिए पूरे उमंग-उत्साह में रहना...।

बाप आप बच्चों के संग है, और है भी क्या, अपने original स्वरूप को, बाप (निराकार शिव) को और अपने कर्तव्य को स्मृति में रखने का पुरूषार्थ ही तो करना है...!

बस यही पुरूषार्थ आप बच्चों को बाप-समान बना देगा और यही आपकी कल्प-कल्प की बाज़ी बन जायेगी।

खुशी में रहते हो तो हल्के रहते हो और ज्यादा सोचने से, क्या-क्यों के question करने से आप भारी हो जाते हो ... जिससे मंज़िल दूर दिखने लग जाती है...! इसलिए स्वयं को खुश रखो,
उमंग-उत्साह में रहो, हल्के रहो फिर मंज़िल पर भी पहुँचे कि पहुँचे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
17.12.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

आप अपनी शान्ति की स्थिति में स्थित हो...? अर्थात् मैं एक शान्त स्वरूप आत्मा हूँ..., शान्ति मेरा स्वधर्म है..., शान्तिधाम की रहने वाली हूँ..., शान्ति के सागर की संतान हूँ..., इसके स्मृति स्वरूप बने हो क्या...?

हर second इस स्वरूप की स्मृति में रहो, फिर आपकी हर कर्मेन्द्रिय भी शान्त और शीतल हो जायेगी।

इसके लिए मुख के मौन के साथ-साथ, मन का मौन भी अति आवश्यक है ... और मन का मौन करने के लिए देह, देह का संसार और इससे सम्बन्धित बातों से detach होना पड़ेगा।

जितना-जितना आप अपने इस स्वरूप की स्मृति में रहोगे, उतना आप शक्तिशाली होते जाओगे। यह शान्ति ही आपकी शक्ति बन जायेगी। जिससे आपको अपने हर कार्य में सहज ही सफलता मिलनी शुरू हो जायेगी।

क्योंकि शान्त स्वरूप की स्थिति में स्थित होकर किये गये हर संकल्प सफलता को प्राप्त होते हैं और साथ ही साथ शान्ति के गुण में सभी गुण भी समाये हुए है, इसलिए आपको हर पल अपने आपको check करना है कि मैं शान्ति की स्थिति में स्थित हूँ या हलचल में हूँ...?

यदि minor सा भी मन में हलचल है तो स्वयं को अपने शान्त स्वरूप में स्थित कर अपने बाप के संग जाकर बैठ जाओ।

यह शान्ति की light-might की किरणें स्वयं भी feel करो और चारों तरफ भी फैलाओ...।

यही किरणें स्वयं की सेवा और विश्व-सेवा का कार्य करेगी...।

बस, अपने ऊपर attention रखो।
मन का मौन अर्थात् केवल समर्थ संकल्प ... कुछ भी बात आये, कोई भी परिस्थिति आये..., आप उसी समय अपने शुद्ध स्वरूप में स्थित हो जाओ।
फिर परिस्थिति भी शान्त हो जाएगी और आपके आस-पास का वातावरण भी...।

बस 100% attention दे दृढ़ता-पूर्वक अभ्यास को बढ़ाते चलो। यही अभ्यास आगे चलकर आपको और आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को हर हलचल से बचा अपनी मंज़िल तक पहुँचा देगा।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
18.12.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, कभी आपने सागर को देखा है...?
उसमें इतना कुछ समाया होता है फिर भी वह बिल्कुल शान्त होता है।

इसी तरह आप बच्चों को भी इस दुनिया के बीच रहते हुए भी बिल्कुल शान्त रहना है अर्थात् कोई संकल्प नहीं ... और उस स्थिति में आप स्वयं को 100% अनुभव कर पाते हो...।

इसलिए स्वयं (भृकुटि के मध्य चमकती आत्मा...) को देखने का अभ्यास बढ़ाओ...। जितना-जितना स्वयं को अनुभव करोगे, उतना ही दुनिया से detach हो जाओगे, और इस दुनिया में रहते हुए भी आपको ऐसा लगेगा कि आप अपने घर (परमधाम) में हो और आपके चारों तरफ light ही light है।

यही स्थिति सबसे ऊँच स्थिति, बाप-समान स्थिति है...।
जब संकल्प से सृष्टि रची जा सकती है, तो फिर संकल्पों से क्या नहीं हो सकता...!
परन्तु तब, जब आप केवल स्वयं के अनुभवी स्वरूप होते हो। उस स्थिति में उत्पन्न संकल्प रचनात्मक और सिद्धि स्वरूप होते हैं।

इसलिए, स्वयं को बार-बार एकान्त में ले जाओ।
देखो, इस दुनिया में मन-बुद्धि लगा, अभी तक आपने क्या प्राप्त किया है और आगे भी मान लो इस दुनिया के हिसाब से हद के सब सुविधा-साधन अर्थात् सुख के साधन मिल भी जाते हैं तो उससे क्या प्राप्ति है..., और कितने समय के लिए...?

जबकि यह अन्त का भी अन्त जा रहा है तो ऐसी श्रेष्ठ वेला पर आप बाप की श्रीमत प्रमाण, अपना ऊँचा भाग्य बना लो।

सभी तरफ से मन-बुद्धि निकाल स्वयं में लगा लो। स्वयं के अनुभव से ही बाप का अनुभव होगा और उस समय की प्राप्ति पूरे कल्प की सबसे ऊँच प्राप्ति होगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
19.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा देख रहा था कि सभी बच्चों के एक ही बोल हैं कि मुझे तो बस बाबा चाहिए और कुछ नहीं...।

फिर तो बच्चे, इस पुरानी दुनिया से मन-बुद्धि को 100% बाहर निकालना पड़ेगा ... अर्थात् निमित्त बन कर्म-व्यवहार में आना पड़ेगा, ना की किसी भी प्रकार की खिंचावट की वजह से...।

यदि खिंचावट हैं तो इच्छा है ... इच्छा हैं, तो और कुछ भी चाहिए अर्थात् मेरा-मेरा है...।
इसलिए महीनता से checking करो।

देखो, बाबा यह नहीं कहता कि सबकुछ छोड़ दो..., परन्तु सबकुछ करते हुए उनसे न्यारे रहो।
और अगर न्यारे रहना मुश्किल लगता है..., तो एक बार जो कार्य आपको अपनी तरफ खींचता है, उसे छोड़ दो।
पहले अपनी स्व-स्थिति की तरफ ध्यान दो, अपने आपको शक्तिशाली बना फिर निमित्त बन कार्य करो...।

अभी powerful स्व-स्थिति की बहुत-बहुत ज़रूरत है, क्योंकि दुनिया में दिन-प्रतिदिन हर तरह का आकर्षण अर्थात् खिंचावट और समस्यायें बढ़नी ही है और यदि आपकी स्व-स्थिति powerful ना हुई, तो आप समझदार हो...!

और जो समय आप बच्चों ने किसी भी कारणवश व्यर्थ गँवा दिया, वो तो फिर नहीं आयेगा..., और वो आपके लिए कल्प-कल्प की नूँध हो गई...!

परन्तु अभी फिर भी minor सा समय रहा है, अपना ऊँचा भाग्य बनाने का..., फिर यह भी दोबारा नहीं मिलेगा...!

फिर बताओ भगवान बाप की इतनी ऊँच पालना से भी आपने क्या प्राप्त किया...?

यदि आप कोई काम नहीं करोगे तो काम रुकेगा नहीं ... और जिस काम की ज़िम्मेवारी बाप (परमात्मा शिव) की है, वो तो पहले से भी सुसज्जित ढंग से होगा...।
क्योंकि त्रिकालदर्शी बाप आप बच्चों के ही कल्याण के निमित्त बना है।

बाप आपके सारे हिसाब-किताब बहुत अच्छे ढंग से clear करवा, आपकी स्थूल और सूक्ष्म ज़िम्मेवारी सम्भाल लेगा।

बस, एक तो मन-बुद्धि पर controlling power चाहिए, दूसरा बाप पर सम्पूर्ण निश्चय - यही आपकी विजय का आधार है।

देखो ... बाबा ने कभी भी, किसी भी आत्मा से गृहस्थी या कर्म छुड़वाया नहीं है।
बस बाबा ने यही कहा कि “पवित्र बनो - योगी बनो” क्योंकि कल्प के अन्तिम समय में पवित्रता और बाप की याद के बिना इस पुरानी दुनिया में केवल दुःख-ही-दुःख है।

इसलिए पवित्र और योगी बनने में यदि किसी भी तरह की कोई बाधा है, कोई भी आत्मा या कोई भी कार्य आपके रास्ते में रुकावट स्वरूप बन जाता है, तो उसे छोड़ने में आपके कल्याण के साथ-साथ उसका भी कल्याण समाया हुआ है।

क्योंकि, किसी भी तरह का कोई बन्धन वा चिन्ता आत्मा को आगे बढ़ने नहीं देती।

एक निश्चिन्त और निर्बंधन आत्मा ही उड़कर अपनी मंज़िल को प्राप्त कर सकती है ... इसलिए check करो, फिर change करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
20.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, सच्चे दिल से हर पल आपके अन्दर यही आवाज़ हो - मेरा बाबा..., मेरा बाबा...।

और जब दिल से आप 'मेरा बाबा...' कहते हो तो आपके सामने स्वयं के स्वरुप के साथ-साथ बाप का light-might स्वरुप भी बुद्धि रुपी नेत्र में आ जाता है ... और वो powerful vibrations तन के साथ-साथ चारों तरफ भी फैलने लग जाते हैं, और यही vibrations आपको दुनिया से न्यारा कर powerful बना देते हैं।

बस बच्चे, आपको अब ना तो कुछ सोचना है और ना ही कुछ बोलना है ... अन्दर ही अन्दर प्यार भरा अजपाजाप चलता रहे - मेरा बाबा..., मेरा बाबा...।
यही शब्द आपको दुनिया से न्यारा कर देगा...।

देखो, जो कुछ भी आप अपना मानते हो - यह तन, मन, धन, जन, कमी, कमज़ोरी - वो तो सब आपने बाप को समर्पण कर दी अर्थात् आप बेफ़िक्र बादशाह बन हल्के हो गये...।
क्योंकि मेरा-पन दुःख देता है और तेरा-तेरा करने से बाबा सबकुछ सफल कर देता है, और तमोप्रधानता को सतोप्रधानता में परिवर्तन कर देता है।

देखो, आप जो कुछ इन आँखों से देखते हो वो तो परिवर्तन होने वाला है...।

बच्चे, तेरा-तेरा करते ऐसा ना हो कि परिवर्तन के बिल्कुल अन्तिम समय में आपके अन्दर किसी भी चीज़ का minor सा भी मेरा-पन आ जाए...।

एक तो वो मेरापन दुःख का कारण बन जायेगा और दूसरा ... वो आपको मंज़िल तक भी नहीं पहुँचने देगा..., इसलिए खबरदार रहना...।

देखो, अभी तक आप गीत गाते रहें - "सब सौंप दो प्यारे प्रभु को सब सफल हो जायेगा..." - तो अब अमानत में खयानत ना कर लेना ... इसमें आपका ही नुकसान होगा...!

बाबा बच्चों को रोज़ कहता है ... बच्चे, बाप पर निश्चय रखो और हल्के रहो...।
तो क्या आप अपने लौकिक बच्चों को कहते हो कि मुझ पर निश्चय रखो...?
नहीं ना...!

परन्तु मैं बाप, आपको बार-बार एक ही बात कह रहा हूँ, क्योंकि बाप को पता है कि कहीं बच्चे थक ना जायें...!

यह जो अन्तिम समय जा रहा है हिसाब-किताब clear करने का, यह इतना सहज भी नहीं है...।
इसलिए बच्चे थोड़ा हलचल में आ जाते हैं।

परन्तु देखो, सबकुछ कि आदि आप ब्राह्मण बच्चों से ही होती है - चाहे सतयुग की, चाहे द्वापर की, चाहे संगमयुग की ... फिर हिसाब-किताब clear करने की आदि भी आप बच्चों से ही हुई है...।

हिसाब-किताब clear करना अर्थात् सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना अर्थात् विनाश का नगाड़ा बजना।
इसलिए धैर्यतापूर्वक "मेरा बाबा... मेरा बाबा..." करते रहो।

बाबा आप बच्चों के हर पल साथ है, फिर तो विजय हुई पड़ी है ना, निश्चयबुद्धि विजयन्ती का गायन भी आप बच्चों का ही है ।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
21.12.2018

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, क्या आपने बाप से सर्व सम्बन्धों के सुख का अनुभव किया है क्या...?

देखो, लौकिक में भी हर सम्बन्ध में ... चाहे कलियुग के अन्त में, स्वार्थवश ... सभी सम्बन्ध, बन्धन बन गये हैं...!
फिर भी उनमें अल्पकाल का सुख समाया हुआ है।

परन्तु यहाँ तो बेहद के बाप से अर्थात् भगवान, परमपिता परमात्मा से सर्व सम्बन्धों का अनुभव करना है अर्थात् अतिन्द्रिय सुख का अनुभव करना है। यह अनुभव इस दुनिया से न्यारा और सबसे प्यारा है।

इसलिए इस दुनिया से अर्थात् इस देह की कर्मेन्द्रियों से न्यारा होकर ही हम बेहद के बाप से बेहद का सम्बन्ध निभा, बेहद का प्यार और सुख अनुभव कर सकते हैं।

देखो, आपने पूरे कल्प इस देह में रहने के कारण देह के सम्बन्धों में ही अपनी मन-बुद्धि लगाई है।

अब जबकि बाबा ने आकर आपको सारा ज्ञान दिया है, तो अपनी मन-बुद्धि इस देह से अर्थात् देह की कर्मेन्द्रियों और देह के संसार से निकालनी पड़ेगी, क्योंकि यह अल्प से भी अल्पकाल का सुख, बेहद का सुख प्राप्त करने नहीं देगा...!

जब तक मन-बुद्धि देह में फँसी हुई है तब तक हम सदा के लिए इस परमात्म सुख का अनुभव नहीं कर सकते।

इसलिए बाबा बार-बार कहता है बच्चे न्यारे बनो ... क्योंकि यह कुछ ही समय का न्यारापन आपको बाप का प्यारा बना देगा और साथ ही साथ आप अपने पूरे कल्प का ऊँचा भाग्य भी बना लेते हो।
फिर तो यह पुरानी दुनिया का त्याग नहीं बल्कि अपना ऊँचा भाग्य बनाने की युक्ति है...।

यदि अभी भी आपकी मन-बुद्धि इस पुरानी देह वा देह की दुनिया में थोड़ी-सी भी फँसी रही, तो आप परमात्म प्यार का सम्पूर्ण अनुभव नहीं कर पाओगे...!

फिर बताओ..., बाप (परमात्मा शिव) को पहचाना, ज्ञान को अच्छी तरह समझा और यथा शक्ति धारणा भी की और खूब सेवा भी..., परन्तु सम्पूर्ण परमात्म प्यार को अनुभव नहीं किया..., तो क्या किया...?

इसलिए, परमात्मा की याद के साथ-साथ बाबा से मीठी-मीठी रूह-रिहान करो।
इस देह की दुनिया से अलग हो अपने original स्वरूप अर्थात् अपने गुणों और शक्तियों से भरपूर स्वरूप को अनुभव कर बाप से मिलन मनाओ अर्थात् बाप से सर्व सम्बन्ध निभाओ।

जब सम्बन्धों का थोड़ा भी अनुभव होना शुरू होगा तो जल्दी ही आप बाप-समान बन जाओगे...।

इसलिए हर पल बाप को संग रखो, उनसे प्रेम भरी मीठी-मीठी रूह-रिहान करो अर्थात् परमात्मा के साथ का अनुभव करो...।
परमात्मा के साथ का अनुभव बहुत मीठा और बहुत प्यारा है। बस इसके लिए इस देह में रहते हुए भी इससे अपनी मन-बुद्धि निकालते जाओ क्योंकि इस दुनिया में किसी भी तरह की कोई प्राप्ति नहीं रही...!

इस दुनिया से सम्बन्धित हर प्राप्ति के पीछे दुःख समाया हुआ है। यह दुःख बढ़े, इससे पहले इससे निकल परमात्म प्यार में समा जाओ।

यह समय कल्प में केवल एक ही बार मिलता है, जिसमें प्राप्तियां अपरमअपार है।

बस बच्चे, अब अपने समय और संकल्पों को सफल करो।

देखो, रात से दिन होने में केवल एक second ही लगता है, उस second की value को समझो...।

यह ना हो आप समय का इंतज़ार करो और वो second, रात का अन्तिम second हो...!

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
22.12.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... आप बच्चे अब तेरा-तेरा के अभ्यास को बढ़ाते जा रहे हो...।
और तेरा-तेरा करने में आप क्या प्राप्ति अनुभव कर रहे हो...?

एक तो मन-बुद्धि हल्की हो जाती है ... और दूसरा शान्त हो, आप शान्ति के सागर में खो जाते हो...।

बच्चे, यह हल्कापन और शान्ति ही आपको शक्तिशाली बना देगी, और यह शक्तिशाली स्थिति ही आपको उड़ाकर बाप के पास बिठा देगी, जिससे आप इस दुःखमय संसार से न्यारे हो जाओगे...।

बच्चे, light house-might house का भी अभ्यास करो, इससे आपका तन और मन, दोनों ही अलौकिक और शक्तिशाली हो जाते हैं, जोकि powerful वातावरण बनाने में सहयोग देता है।

और यह powerful वातावरण ही आपको भी safe रखेगा और आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को भी..., और साथ ही साथ विश्व-परिवर्तन का कार्य भी करेगा...।

इसलिए, अब समय अनुसार एक तो हर पल light house - might house का अभ्यास करो ... दूसरा, कोई भी कमी-कमज़ोरी, परिस्थिति अर्थात् कुछ भी आये ... तेरा-तेरा कर दो...।
यह दो अभ्यास बहुत ज़रूरी हैं। यही आप बच्चों का पुरुषार्थ है।

इस पुरुषार्थ को बढ़ाने का attention दो, तो धीरे-धीरे अलबेलापन, थकावट, बोरियत ... सब खत्म हो जायेगी।

और वैसे भी आप बच्चों ने ही कल्प-कल्प यह पुरुषार्थ किया है, आपने ही विजय प्राप्त की है। बस, अब तो repeat ही करना है...।

स्वयं को रोज़ विजय का तिलक दो, और आगे बढ़ते जाओ।
बस ज्यादा सोचो मत...। ज्यादा सोच भी आत्माओं को भारी कर देती है।

बस, बाबा जो कहें, वैसे करने का पुरुषार्थ करते जाओ ... फिर सहज ही मंज़िल पर पहुँच जाओगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
23.12.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, जल्दी ही वो समय आने वाला है कि सभी आत्माओं के अब तक के बजाये गए role rewind होंगे।

तो आप क्या सोचते हो, कि जब आपकी CD rewind होगी, तो आप उसमें बजाये गये हर scene को देखकर खुश होंगे...?

बच्चे, अपना हर संकल्प, हर second ... इतनी अच्छी तरह से play करो कि आप देख खुशी में झूम उठो...।

ऐसा ना हो कि आप कहो - इस कारण..., नहीं..!

हर कारण का निवारण कर बाप की श्रीमत प्रमाण अर्थात ज्ञानयुक्त और योगयुक्त हो, अपना part play करो।

इस समय आप बच्चों को हर बात ज्ञानी और योगी बन उठानी है। क्योंकि ज्ञानयुक्त और योगयुक्त स्थिति में किया गया हर संकल्प, बोल और कार्य में केवल आपका ही कल्याण समाया हुआ है।

बाबा भी इसलिए बार-बार कहता है - अपना हर second, attention रखो...।

Attention रखने वाली आत्मा ही बाप समान बन पायेगी...।

देखो बच्चे, आपको 100% खुश और हल्के रहना है।
हल्के रहना अर्थात न्यारा होना।
न्यारा होना अर्थात् इस अन्तिम से अन्तिम समय में संसार में केवल दुःख ही दुःख होने वाला है, उससे साक्षी होना ... क्योंकि इस समय किसी भी चीज़ में मेरापन होना अर्थात् अन्तिम समय में अपनी नसों को खिंचा हुआ महसूस करना...!
वैसे भी हिसाब-किताब clear होने के कारण, जिस चीज़ में minor सा लगाव होगा, वो धोखा दे देगी और आत्मा परेशान और स्वयं को खिंचा-खिंचा महसूस करेगी...।

यह कार्य बहुत speed से होने वाला है ... इसलिए, इस देह से न्यारा होने का अभ्यास बढ़ाते जाओ...।

कोई भी कार्य चाहे वो श्रीमत प्रमाण हो, उसे हठपूर्वक नहीं करना ... क्योंकि हठपूर्वक करने से या तो आप भारी हो जाते हो या वो संस्कार एक बार तो दब जाता है..., परन्तु फिर उभर कर आता है...!

इसलिए हर श्रीमत को knowledgeful होकर अर्थात् स्वयं के ही कल्याण के निमित्त समझ बड़े प्यार के साथ उसे follow करो ... जल्दी मत करो...।

धैर्यतापूर्वक अपने संस्कार को परिवर्तन करो। साथ ही साथ परिवर्तन की एक लगन होनी चाहिए।

जब आप attention रखोगे, तो बाप के सहयोग से वो संस्कार 100% विदाई ले लेगा...।

देखो, कोई भी बीमारी आती है, तो उसे सहज रीति चुक्तु करो। अर्थात् एक तो उस बीमारी के बारे में ना बोलो और ना विचार करो ... गोली ले लो, गोली भी शुभ संकल्पों के साथ लेनी है, फिर वो गोली भी ताकत देगी।
इसके बीच अपनी मनमत mix मत करो ... बाप को सौंप दो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
24.12.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्व-परिवर्तन ही विश्व-परिवर्तन का आधार है।

स्व-परिवर्तन अर्थात् अपने स्वभाव-संस्कार को परिवर्तन कर बाप-समान बना लेना।

और जैसे-जैसे आपका स्वभाव-संस्कार परिवर्तन होगा, वैसे-वैसे आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्मायें, आपकी सहयोगी बन जायेंगी और सहयोगी बनते-बनते योगी...।

इसलिए अपने संकल्पों पर और बोल पर attention रखो...।

जो बच्चे स्व को परिवर्तन करने का तीव्र पुरुषार्थ अर्थात् full attention रख रहे हैं और जब भी उनका कोई पुराना स्वभाव-संस्कार बाहर निकल कर आता है, तो बच्चे भारी हो जाते हैं ... और सोचते हैं कि इतना समय हो गया अभी तक पूरा परिवर्तन हुआ नहीं है...!

परन्तु बच्चे, आप भारी ना हो किन्तु अपनी checking करो कि पहले से कितने percent change हुआ है...?

जब तक सम्पूर्ण रीति सफाई नहीं होती है, तब तक यह paper के रूप में आयेंगे ही...।
परन्तु आप बच्चों को उस समय अपनी मन-बुद्धि को युक्ति-युक्त ढंग से चलाना है...।
इसके लिए एक तो स्वयं के मालिक बनो और दूसरा बाप (परमात्मा शिव) को अपने संग रखो।

देखो, जब भी कोई बीमारी आती है तो उसका proper इलाज किया जाता है, ना कि सोच-सोच कर समय waste किया जाता है...!

पुराना हिसाब-किताब किसी भी रूप में आना अर्थात् हिसाब-किताब clear होना ... या अपनी मंज़िल के समीप पहुँचना...।

इसलिए खुशी-खुशी अपनी मन-बुद्धि को समझानी दे अपने पुरुषार्थ को तीव्र करो...।

दिलशिकस्त वा भारी हो अपना समय व्यर्थ मत करो, बल्कि अपना attention बढ़ा, high jump दो।

यह बिल्कुल अन्तिम paper चल रहे हैं ... इसलिए हर paper में pass होना है।
Pass होने वाले आगे बढ़ जाते है और फेल होने वाले, पीछे...!
इसलिए 100% attention रख, knowledgeful और powerful बन, कम से कम समय में अर्थात् second में full-stop लगा, paper cross कर लो।

जितना बिन्दु बनने का अभ्यास होगा, उतनी जल्दी बिन्दु लग जायेगा...।

बस, पुरुषार्थ करते रहो ... विजय तो होनी ही है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
25.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आपको मास्टर सर्वशक्तिमान् बन विश्व गगन में light house और might house बन चमकना है...।

इसके लिए आपको अब अपने हर गुण को शक्ति बना लेना है।

यह आपका गुण, आपकी शक्ति तब बनेगा जब गहराई तक वो गुण आपके अन्दर समा जायेगा ... और कोई भी गुण तब अन्दर समाता है, जब उसे बार-बार use किया जाए...।

इसलिए, अब आपको गुणों को तो use करना ही है और अवगुणों को avoid करना है।

वैसे ही, यदि किसी एक गुण को आप अपनी दिनचर्या में full use करते हो, तो आपके अन्दर सभी गुण आ जायेंगे ... और अवगुण खत्म हो जायेंगे..., और यही गुण आपकी शक्ति बन जायेंगे, जिससे ही विश्व-परिवर्तन का कार्य होगा...।

जैसे;
किसी भी एक गुण ... चाहे वो शान्ति हो, प्रेम हो, सन्तुष्टता हो, उसके स्वरूप बन जाओ अर्थात् हर पल उस गुण को स्मृति में रखो कि; मैं एक शान्त स्वरूप आत्मा हूँ...।

जितना आप उस गुण को धारण करते जाओगे, उतना ही अवगुणों का विनाश हो जायेगा और आप मास्टर गुणों के सागर बन जाओगे।

जैसे;
सागर ऊपर से तो बिल्कुल शान्त होता है और अन्दर से खज़ानों से भरपूर...।

बच्चे, बस आपको पुरुषार्थ करना है - कभी किसी गुण का स्वरूप बन जाओ और कभी किसी गुण का..., और बाप का तो आप बच्चों को full सहयोग है ही, परन्तु करना आप बच्चों को ही है।

जितना attention रखोगे, उतनी ही सफलता मिलेगी। फिर ही आप सफलता स्वरूप बन जाओगे...।

देखो, किसी पुराने संस्कारवश कोई अवगुण आ भी जाये तो दिलशिकस्त नहीं होना है ... फिर मन-बुद्धि को बाप के पास ले जाकर अपने original गुण स्वरूप में स्थित हो जाओ।

बस बच्चे, थकना मत ... पुरुषार्थ करते रहो...।
क्योंकि पुरुषार्थ के बिना कोई प्राप्ति नहीं अर्थात् परिवर्तन के बिना प्रालब्ध नहीं...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
26.12.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप गृहस्थ व्यवहार में रहते हो, इसलिए आपको आवश्यक कार्य तो करने ही पड़ेंगे...।

परन्तु उस समय स्वयं की स्मृति के साथ-साथ बाप की स्मृति साथ रखो।
बार-बार मन-बुद्धि को पकड़कर बाप (निराकार शिव) के पास ले चलने का attention रखो।

ऐसा मत सोचो कि योग तो लगा नहीं...!
ऐसा सोचने से भारी हो जाते हो और बाप से connection टूट जाता है...!

देखो, आप बच्चों के लिए ही यह सहजयोग, कर्मयोग, निरन्तर योग और राजयोग मशहुर है।
यह सहज से सहज योग है...।

जहाँ मर्ज़ी, जिस मर्ज़ी स्थिति में आप बाप को याद कर सकते हो।

कर्म करते वक्त भी बाप को याद करो ... और यही निरन्तर योग होने से राजयोग सहज हो जाता है..., और अब इस अभ्यास को बढ़ाते चलो, फिर naturally ही आप स्वयं के और बाप के स्मृति स्वरूप हो जाओगे...।

इसलिए, बाबा बार-बार कहता है कि ज्यादा सोचो मत, बस हर पल मुझे याद करते रहो...।

यह आपका ऊँचा स्वमान और बाप की स्मृति का attention ही आपका परिवर्तन सो विश्व-परिवर्तन का कार्य कर देगा...।

बस, इसमें ना ही अलबेला बनना है और ना ही दिलशिकस्त...।

जब आप हर पल बाप की छत्रछाया में रहते हो, तो बाप भी हर कठिन से कठिन परिस्थितियों से आपको निकाल अपने पास बिठा लेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
27.12.2018

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चों का मन
अभी भी इधर-उधर भागता रहता है...!

इसलिए बच्चे, आप उसे बार-बार पकड़कर अपनी seat पर set करो।
बस अभी इसी अभ्यास का attention रखो ... और अगर attention रखते-रखते भी भाग जाता है..., तो alert होकर attention रखो, अलबेले होकर नहीं...।

बार-बार अपने ऊँच स्वमान के स्मृति स्वरूप बनो...।

देखो, कल्प-कल्प आप ही बने हो और आपको ही बनना है, बस attention रखो ... और सारा काम तो बाप ही कर देगा...।

बच्चे, अब अपने व्यवहार में गुणों और शक्तियों को प्रत्यक्ष करो क्योंकि आपके व्यवहार से ही बाप प्रत्यक्ष होगा...।

जैसे-जैसे आप अपने ऊँच स्वमान में स्थित होंगे, तो आपके व्यवहार से आपके गुण प्रत्यक्ष होंगे...।

यदि आप बाप की याद में रह और साथ ही अपने ऊँचे स्वमान में स्थित हो किसी भी आत्मा को प्यार भरी समझानी दोंगे, तो चाहे वो उसी समय माने, ना मानें ... पर अन्दर तक उसे वो बात touch होगी।
फिर धीरे-धीरे वो स्वयं ही बदल जायेगा...।
इसके लिए balance की अति आवश्यकता है।

ना ही किनारा करना है और ना ही उसमें फँसना है ... बल्कि स्वमान में स्थित हो स्नेह और सहयोग देना है।

देखो, आपके सम्बन्ध में आने वाली सभी आत्मायें विशेष है। बस, उनके ऊपर थोड़ा-सा वायुमण्डल का प्रभाव है ... और आपके सहयोग से यह सब आत्मायें भी परिवर्तन हो जायेंगी।

आपकी मन्सा केवल शुभ संकल्पों से ही भरपुर होनी चाहिए...।

बच्चे, बिल्कुल सहज रीति पढ़ाई करो ... बाबा की पढ़ाई केवल दो शब्दों की है - 'अल्फ और बे...' अर्थात् मैं कौन-सी वाली आत्मा हूँ और किसकी हूँ...?

इस अभ्यास के लिए भिन्न-भिन्न युक्ति use करो ताकि सहज ही आपका nature natural हो जाये...।

यदि आपके पुरुषार्थ के मार्ग में कोई भी स्वभाव-संस्कार, व्यर्थ संकल्प आये तो उसे भी हिसाब-किताब समझ, उसे जल्दी से जल्दी बाबा को सौंप अपनी seat पर set हो जाओ।

इसपर ज्यादा विचार ना चला इन कमज़ोरियों से साक्षी हो जाओ। बिन्दु बन बिन्दु बाप के साथ जाकर बैठ जाओ...।

बच्चे, आपको बस अलबेला नहीं होना है और ना ही दिलशिकस्त ... क्योंकि यह दोनों ही आपके मार्ग की सबसे बड़ी बाधा है।

देखो, बाबा रोज़-रोज़ आकर आपको उमंग-उत्साह दिला ऊँचे से ऊँचे स्वमान में स्थित करता है। बस आप 100%, मतलब 100% attention रखो...।
फिर जल्दी ही पुरुषार्थ का समय खत्म हो प्रालब्ध का समय शुरु हो जायेगा।

बस बच्चे, इस मार्ग में बहुत-बहुत-बहुत-बहुत हल्के रहना है। स्वयं की checking करो, फिर अपनी seat पर set हो जाओ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
28.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, क्या आप अपनी silence power को जानते हो...?

यह इस पाँच तत्वों की बनी दुनिया कि सबसे बड़ी शक्ति है...। इस शक्ति के द्वारा ही सारे विश्व पर विजय प्राप्त की जा सकती है...।

तो अब आप स्वयं को check करो कि मेरे अन्दर शान्ति का गुण कितने percent आया है...?

जो आत्मा शान्त स्वरूप स्थिति में स्थित होगी उसे किसी भी प्रकार की हलचल ... चाहे तन, चाहे मन, धन, जन की हो ... वो अपने शान्त स्वरूप के आसन से नहीं उतरते...!

बाहरी हलचल उन्हें हिला नहीं सकती ... वो हमेशा एकरस, अचल-अडोल होगी...।

अब समय प्रमाण अपने इस गुण को अपनी दिनचर्या में use कर, इसे बढ़ाते चलो...।

बार-बार अपनी checking करो और अपने original गुण को धारण कर अपनी seat पर set हो जाओ।

यदि किसी कारणवश अर्थात् अपने ही स्वभाव-संस्कार के वश भी कुछ गलत कर देते हो ... तो ना तो दिलशिकस्त हो और ना ही अपना समय गँवा, जल्दी ही अपने original गुण को धारण कर अपनी seat पर set हो जाओ।

इसके लिए स्वयं से ही बातचीत करते रहो अर्थात् स्वयं को समझानी देते रहो ... और अब आपको यह ज्ञान भी हो चुका है कि अब समय प्रमाण स्वयं को स्व-स्थिति में स्थित करना अति आवश्यक है अर्थात् यही समय की मांग है ... तो मैं अपनी बुद्धि को कहीं और क्यों लगाऊँ...?

और अब तो बाप का वैसे भी full सहयोग है, बस 100% निश्चय रख आगे बढ़ो।

यदि क्या, क्यों में आये तो समय व्यर्थ चला जायेगा और दोबारा अपनी seat पर set होने में भी time waste होता है...।

इसलिए पहले से ही 100% knowledgeful हो अपनी बुद्धि को order प्रमाण चलाओ...।

अब वो समय आ चुका है कि सभी आत्माओं को घर (परमधाम) भेजना है।

इसलिए सभी को शान्ति की शक्ति दे, सभी को शान्त करना पड़ेगा ... और यह कार्य वो ही आत्मा कर सकती है जो अभी से 100% शान्त स्थिति में स्थित रहने का पुरुषार्थ करेगी।

फिर जल्दी ही आपके शान्ति के vibrations, full speed से चारों ओर फैलेंगे, जोकि दूर-दूर तक आत्माओं को अनुभव होंगे...।
इसलिए अब अन्तर्मुखता की अति आवश्यकता है...।

शान्ति ही सब शक्तियों की जननी है ... इसी शक्ति से हम सिद्धि स्वरुप बन पायेंगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
29.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, इस रंग-मंच पर कर्मों का बहुत सूक्ष्म खेल चलता है, जिसे हर आत्मा पूरी तरह समझ नहीं पाती ... जिस कारण वो अपना हिसाब-किताब बना लेती है ... फिर उसे ही चुक्तु करना पड़ता है...!

देखो, जब आप किसी भी कर्मेन्द्रिय को use करते हो अर्थात् आँख द्वारा कुदृष्टि होती है, तो वो भी पाप कर्म बन जाता है।

जबकि यह संकल्पों द्वारा किया गया पाप कर्म है जोकि योग द्वारा चुक्तु किया जा सकता है।

दूसरा है वाचा द्वारा...,
जब आप किसी भी विकारों में फँसी हुई कमज़ोर, परवश आत्मा को कुछ ऐसी बात बोलते हो जो उसे चुभ जाए ... अर्थात् वो दु:खी हो जाए, तो वो आपका ऐसा हिसाब-किताब बनता है, जिसको आपको शरीर द्वारा चुक्तु करना पड़ता है...!

इसलिए बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब मुख द्वारा बोलना बन्द करो...। अब ज़रूरत का ही बोलो।

देखो बच्चे, कमज़ोर आत्मा तो पहले से ही अपने संस्कारों से परेशान हैं और वो उसे खत्म करना चाहती है ... और यदि आप भी, सभी के बीच हल्की-सी भी कोई चुभती बात बोल देते हो तो वो एक बार दुःखी हो जाती है, जोकि आपका हिसाब-किताब बन जाता है...।

इसलिए किसी आत्मा के शुभचिन्तक बन समझानी देनी भी हैं, तो अकेले में बस एक ही बार दो..., फिर उसे बाप हवाले कर दो अन्यथा आप छोटा-छोटा सा हिसाब-किताब बना लेते हो, जो फिर चुक्तु भी तो करना पड़ेगा...!

अब जो समय जा रहा है वो केवल कमाई का है, इसलिए अब नया हिसाब-किताब बनाना बन्द करो और हर आत्मा के प्रति रहम, प्रेम और कल्याण की भावना रख मन्सा सेवा करो।

इससे आपका दुआओं का खाता जमा होगा और आप जल्दी ही अपनी मंज़िल पर पहुँच जाओगे।

देखो, जब कोई भी पाप कर्म संकल्पों द्वारा होता है, तो वो योग द्वारा चुक्तु हो जाता है ... और यदि कर्मणा में आ जाता है, तो शरीर द्वारा और सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा चुक्तु करना पड़ता है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
30.12.2018

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं कि ... बाबा बच्चों की लगन को देख रहा था, तो बाबा ने देखा कि बच्चों के अन्दर बहुत अच्छी लगन है और यही संकल्प है कि हम अपना 100% दे, अपने लक्ष्य को प्राप्त करें...।

तो बाप भी बच्चों को देख वाह बच्चे वाह..., के गीत गा रहा था...।

बस बच्चे, इसी तरह उमंग-उत्साह और खुशी में रह अपने पुरुषार्थ को बढ़ाते चलो और स्वयं की checking भी करते चलो कि मैं आत्मिक दृष्टि का, स्वमान का, बाप (परमात्मा शिव) के साथ का और गुणों और शक्तियों का, कितना percent अनुभव कर रहा हूँ...?

बच्चे, जब लगन अच्छी हो तो गुणों और शक्तियों को use कर उसे अपनी property बना लो ... तो फिर धीरे-धीरे यह naturally ही, अपना कार्य शुरु कर देगी...।
इसके लिए फिर पुरुषार्थ की ज़रूरत नहीं पड़ेगी...!

बस अभी attention रखो...।
अपनी मन-बुद्धि को प्राप्तियों से इतना भरपूर कर लो कि बस यह उमंग-उत्साह में रह आगे से आगे बढ़ता चलें...।

अभी तो बाप का full सहयोग है, तो सहज ही आप अपनी मंज़िल तक पहुँच जाओगे।
बस आपको तो स्वयं पर attention ही रखना है।

यदि कोई कमी-कमज़ोरी आये तो वो बाप को समर्पण कर देना, वो भी एक second में..., अन्यथा या तो आप भारी हो जाओगे या दिलशिकस्त...!
इसलिए, इस बात का भी attention रखना...।

देखो, बाबा बार-बार कह रहा है कि आपको बस पुरुषार्थ करना है, सम्पन्न तो बाप ही बनायेगा...।

जितने-जितने समर्पण होते जाओगे ... उतनी जल्दी बाप, आप बच्चों को सम्पन्न और सम्पूर्ण बना देगा।

बस, अब आपके पास जो कुछ भी है वो बुद्धि से बाप को समर्पण कर बाप की श्रीमत प्रमाण अपनी मंज़िल पर पहुँचो...।

देखो, कलियुग भी अब अपनी अन्तिम श्वांस ले रहा है और इसका कोई भरोसा नहीं कब खत्म हो जायें...!

इसलिए समय से पहले ही बाप-समान बन अर्थात् वरदानीमूर्त बन विश्व-कल्याणकारी बनो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
31.12.2018

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, यह drama का अन्त का भी अन्त अर्थात् climax period अर्थात् हिसाब-किताब चुक्तु करने का समय चल रहा है।
इसलिए, सबसे पहले drama के hero पार्टधारी अर्थात् त्यागी, तपस्वी आत्माओं के हिसाब-किताब किसी भी रूप में चाहे तन, मन, धन, जन, सम्बन्ध, सम्पर्क के द्वारा चुक्तु होने हैं...।

परन्तु, जितना आपका योग powerful होता जायेगा और जितना आप इस दुनिया से न्यारे हो तेरा-तेरा करते जाओगे, उतना ही आपका हिसाब-किताब हल्का होता जायेगा।
बस, आप बच्चों को योग के साथ-साथ संकल्पों द्वारा बाप (परमात्मा शिव) पर समर्पण होना है।

यदि आप परिस्थितियों को देख परेशान होते हो ... अर्थात् आपके अन्दर मैं और मेरा है...!

जब सबकुछ बाप हवाले हो गया तो परेशान होने की ज़रूरत नहीं...!

देखो बच्चे, आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं का अपना-अपना हिसाब-किताब है, जो उन्हें ही चुक्तु करना पड़ेगा ... चाहे योग के द्वारा, चाहे भोगना के द्वारा...।
इसलिए, आपको उनसे (बुद्धि से) detach रहना है।

जब आप detach होकर उन्हें सकाश दोगे, तो उनका भी कल्याण होगा...।
नहीं तो मैं-मेरे में फँसी आत्मा किसी को सकाश नहीं दे सकती और ना ही वह स्वयं का कल्याण कर सकती है और ना ही दूसरों का...!

देखो, न्यारे होकर decision लेना वा समझानी देना अलग बात है ... परन्तु उनके साथ परेशान हो जाना अर्थात् बाप पर निश्चय में कमी की निशानी है।

देखो, आप बच्चों को बाबा ने पहले भी बताया है कि आप बच्चों का तपस्या के द्वारा पुण्य का खाता भरपूर हो रहा है ... और minor सा बचा पाप का खाता खत्म हो रहा है...।

इसलिए अपना हिसाब-किताब हल्के रह तेरा-तेरा करके खत्म करो ... अन्यथा और-और हिसाब-किताब बनते जायेंगे...!

इसलिए, हर संकल्प बाप को समर्पण करो।
बार-बार मन-बुद्धि पर attention रख, मन-बुद्धि को पकड़ बाप के पास ले जाओ। यही सहज से सहज तरीका है हिसाब-किताब चुक्तु करने का...।

जब आप हल्के रहोगे तभी तो आप अन्य आत्माओं का कल्याण कर पाओगे...।

देखो, अभी तो दुनिया की आत्मायें अपना पुण्य का खाता खत्म करने में और पाप का खाता भरपूर करने में लगी हुई है ... तो बताओ, फिर अन्त का scene कैसा होगा...?
उन आत्माओं के कल्याण के निमित्त आप ही हो...।

पहले सभी खज़ानों से स्वयं को भरपूर करो, तभी आप बाप के कार्य में सहयोगी बन पाओगे।

जितना इस समय आप बाप के सहयोगी बनोगे, उतना ही बाप के साथ का अर्थात् अन्तिम समय में बाप से मिलन के आनन्द का अनुभव कर पाओगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
01.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बाबा बच्चों के पुरुषार्थ को check कर रहे थे।
तो बाबा ने देखा कि, बच्चों को बाबा से बहुत प्यार है, बच्चे ज्ञानी भी हैं और योगी भी हैं ... परन्तु संस्कार परिवर्तन करने में नम्बरवार है...।

स्वयं को परिवर्तन कर नहीं पाते, इसलिए परमात्मा से और अन्य आत्माओं से किसी ना किसी तरह की complaint रहती है। जिस कारण ऐसी आत्मायें अन्दर से ना तो संतुष्ट रहती हैं और ना ही हल्की..., फिर बताओ यह कैसा पुरुषार्थ है...?

देखो बच्चे, बाबा बार-बार कह रहा है...,
- संस्कार परिवर्तन करो।
- स्वयं की checking करो, बाप की श्रीमत प्रमाण...।
- मैं-मेरे में मत फँसो।
- सब कुछ समर्पण कर दो...।

परन्तु जब आप मैं-मेरे में फँस जाते हो, तो जैसेकि आप अज्ञानी आत्मा हो...।

देखो, यह समय फिर नहीं मिलेगा...। अभी आप चाहे कितने भी complaint स्वरूप बनो परन्तु अंत में अपना part देखकर स्वयं ही पश्चाताप करना पड़ेगा...!
यह ही फिर कल्प-कल्प की बाज़ी बन जायेगी...!

देखो, इस मार्ग में किसी भी तरह की कोई भी complaint ना स्वयं से अर्थात् स्वयं के भाग्य से, ना परमात्मा से और ना ही अन्य आत्माओं से होनी चाहिए।

इसके लिए बाप की हर श्रीमत को महीनता से समझ, अपने जीवन में apply करो।

आप बच्चों की सारी पढ़ाई बाप ने सार में भी और विस्तार में भी अच्छी तरह से पढ़ा दी है, अब त्रिकालदर्शी बन स्वयं को check कर, change करो...।

अभी फिर भी थोड़ा-सा समय बचा है, उसे सफल करो ... अन्यथा पश्चाताप की घड़ियां बहुत कड़ी है।

रास्ते में किसी भी तरह की कोई भी परिस्थिति, कोई भी स्वभाव-संस्कार आये, उसे जल्दी से जल्दी अपने स्वमान की seat पर set हो बाप को दे दो।

यदि, उसे थोड़ी देर भी अपने पास रख लोगे तो उसे निकालना मुश्किल हो जायेगा...!

इसलिए, ATTENTION PLEASE...

सहज रीति पुरुषार्थ कर आगे बढ़ो, जब तक हिसाब-किताब clear नहीं होंगे, तब तक सम्पन्न नहीं हो पाओगे...!

इसलिए, हल्के हो हिसाब-किताब clear करो, ना कि भारी होकर...।

बाबा की हर पल नज़र आप बच्चों पर ही है। समय आते ही बाप स्वयं आपको ऊपर उड़ाकर ले जायेगा।

देखो, जब भी कोई पुराना हिसाब-किताब आता है और आप शांति-पूर्वक बाप पर निश्चय रख, सच्चे दिल से पुरुषार्थ करते रहते हो ... तो बाप भी जल्दी ही किसी-न-किसी युक्ति के द्वारा आप बच्चों को मुक्ति दिला देता है ... और जब आप भारी हो जाते हो, तो वो ही हिसाब किताब लम्बा हो जाता है...!

अच्छा, आप बच्चों को तो पता है कि बाप अभोक्ता है, फिर भी आप भोग स्वीकार करवाते हो...!

परन्तु अब समय अनुसार जबकि बिल्कुल अंतिम घड़ियां चल रही है, ऐसे समय में आपको भोजन के समय full attention रखना है ... क्योंकि इस समय सब कुछ तमोप्रधान है और बाप की याद में रह स्वीकार की गई एक-एक bite सतोप्रधान बन, आपके मन और तन को तंदुरुस्त कर देती है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
02.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... जो बच्चे स्वयं पर 100% attention रख श्रीमत प्रमाण चल रहे हैं अर्थात् उनका attention, केवल स्वयं को परिवर्तन करने का ही है ... उन बच्चों की ज़िम्मेवारी बाप की है, अन्यथा नहीं...!

देखो बच्चे, यदि आप किसी भी आत्मा को शुभ भावना - शुभ कामना से समझानी देते हो और वो उसे positively accept कर लेती है और आपकी स्थिति भी एकरस रहती है, तो भल उसे समझानी दो अन्यथा उसे बाप हवाले कर दो ... और स्वयं की सम्भाल रखो कि उसका प्रभाव आप पर ना पड़े...!

यदि उसके vibrations आप पर effect डाल रहे हैं, तो आप अपनी seat पर set हो बाप से शक्ति ले, शक्तिशाली बनो...।

देखो, जो यह कल्प का अंतिम से भी अंतिम समय जा रहा है, जिसमें बाप (परमात्मा शिव) ने आपको केवल स्व-स्थिति के आसन पर बैठ स्वयं को परिवर्तन करने की श्रीमत दी है, तो उसी प्रमाण चलो...।

व्यर्थ में अपना एक second, waste मत करो, क्योंकि कई बार एक second आपको भारी कर, कई minutes में परिवर्तन हो जाता है...!

इसलिए अब समय की बचत कर, समय को सफल करो...।

आप बच्चों की ज़िम्मेवारी स्वयं को बाप-समान बनाने की है, साथ ही साथ अन्य आत्माओं की पालना अच्छी तरह करने की है।
आपकी पालना और आपके शुभ-भावना के vibrations से वो स्वयं परिवर्तन होंगे...।

देखो, बनेंगे तो नम्बरवार ना..., सब first नहीं बन सकते...!

इसलिए सबसे पहले अपनी स्थिति की तरफ attention रखो।

गायन भी है;
"स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन..."

देखो बच्चे, बाप स्वयं आकर आप बच्चों को सहज से सहज रीति पुरुषार्थ की विधि बता रहा है, तो उसी according पुरुषार्थ करो, फिर बाप भी आपको अपने समान बना लेगा...।

बाप के 100% आज्ञाकारी बनो, मोटे रूप से checking मत करो...।

देखो, आप बच्चे कल्प-कल्प के विजयी हो, तो आप बच्चे भी स्वयं के पुरुषार्थ प्रमाण अर्थात् स्व-परिवर्तन प्रमाण, स्वयं को अच्छी तरह जान और मान स्वयं पर attention रखो...।

स्व-परिवर्तन के लिए हर बात से, हर किसी के part से, न्यारा होना अति आवश्यक है।

जितना न्यारा, उतना प्यारा ... अर्थात् जो बच्चा बाप का प्यारा है, वो तो स्वतः ही सबका प्यारा हो जायेगा...।

जो वरदानीमूर्त बच्चे होते हैं, वो इस पाँच तत्वों से बनी दुनिया की हर चीज़ से न्यारा बन सबको वरदान दे, सभी के कल्याण के निमित्त बनते हैं...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
03.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा बच्चों को देख रहा था...।
तो बाबा ने देखा कि बच्चों का स्वयं प्रति attention भी बढ़ा है और स्व-परिवर्तन की percentage भी बढ़ी है...।

परन्तु अभी भी बच्चे बीच-बीच में मूँझ जाते हैं और सोचते हैं, सारा दिन योग थोड़े ना ही लग सकता है...!

देखो बच्चे, कौन कहता है सारा दिन योग लगाओ...?
बाप तो केवल यही कहता है ... बच्चे, परमात्मा से सर्व सम्बन्धों के सुख का अनुभव करो...।

समीप सम्बन्ध को निभाने में सोचना नहीं पड़ता कि कैसे निभाएं...?

लौकिक में तो सभी सम्बन्ध स्वार्थ वश हैं, चाहे तो एक percent, चाहे तो सौ percent ... परन्तु परमात्मा बाप तो आप बच्चों के साथ सभी सम्बन्ध निःस्वार्थ निभाता है।

बस, मन में बाबा कहा और बाबा हाज़िर...।

बाप तो बच्चों के सच्चे दिल पर न्यौछावर हो जाता है।
जब बच्चे सच्चे दिल से बाबा को याद करते हैं, तो बाप भी मदद के लिए हर पल हाज़िर रहता है।
बस दिल सच्चा होना चाहिए...!

यह नहीं कि प्राप्तियों के समय तो सच्चा दिल हो और थोड़ी-सी भी हलचल हो, तो स्थिति हलचल में आ जाए और बाप को छोड़ आत्माओं में फँस जाए...!
इसे सच्चा दिल नहीं कहा जाता...।

सच्चा दिल ... अर्थात् हर समय अर्थात् हर अच्छे और परिस्थिति वाले समय में भी बाप पर 100% निश्चय ... "एक बाप, दूसरा ना कोई" - इसे कहा जाता है, सच्चा दिल...।
तुम्हीं संग बैठूँ, तुम्हीं संग खाऊँ, तुम्हीं संग मिलन मनाऊँ ... हर हाल में...।

आप बच्चों को बाप पर 100% निश्चय होना चाहिए कि कुछ भी हो रहा है उसमें हमारा, केवल हमारा 100% कल्याण समाया हुआ है।

बाप हर पल हमारा सहयोगी बन हमारा साथ निभा रहा है - इतना निश्चय, इसे कहते हैं ... "एक बल एक भरोसा"...।

देखो, बाबा बार-बार कह रहा है कि बाबा सहज से सहज रीति पुरुषार्थ भी करा रहा है और सहज से सहज रीति हिसाब-किताब भी चुक्तु करवा रहा है। इसलिए बाप पर 100% निश्चय रख, बाप जैसे कहें वैसे करते चलो।
फिर बाप आपका 100% ज़िम्मेवार है ... और समय आते ही बाप आपको सम्पन्न और सम्पूर्ण बना, इन तूफानों से बचा, अपने संग ऊपर बिठा लेगा।
बस, थोड़ा-सा धैर्यता पूर्वक पुरुषार्थ करते रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
04.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप निश्चिन्त रहो।
आप हर बात में हाँ-जी, हाँ-जी करते रहो। स्वयं भी हल्के रहो और दूसरों को भी हल्का रखो...।

देखो बच्चे, किसी भी बात को instant मना मत करो, उस समय मुस्कुराकर उस बात को हल्का कर दो। फिर अपने ऊँच स्वमान में स्थित हो, बाप को संग रख, अपने दिल की बात कह दो...।

यदि फिर भी कोई अपनी बात ऊपर रखें तो उनके अनुसार चलो परन्तु वातावरण को भारी मत करना, ना ही स्वयं की सोच से, ना ही उस आत्मा की सोच से..., बस स्वयं के संकल्प को भी तेरा-तेरा कर दो और उस आत्मा को भी। फिर जल्दी ही वो आत्मा भी परिवर्तन हो जायेगी...।

अब तो उन आत्माओं पर भी आपकी vibrations का प्रभाव पड़ रहा है।
बस वो आपको परिवर्तन करने के निमित्त है, इसलिए स्वयं के स्वभाव-संस्कार को बिल्कुल flexible बना लो।

जितना-जितना आपके अन्दर moulding power आती जायेगी, उतनी ही आपकी शुभ भावना, शुभ कामना उन आत्माओं को परिवर्तन कर देगी।

बस, आप स्वयं पर attention रखना। खुद को किसी भी बात में भारी मत करना।

जब present में रहोगे अर्थात् ना ही past का सोचोगे और ना ही future का..., बल्कि present में रह हर संकल्प को बाप को समर्पण कर हल्के और निश्चिन्त रहोगे, तो जल्दी ही आप सभी में एक बड़ा परिवर्तन अनुभव करोगे...।

बस, उन आत्माओं के प्रति रहम और कल्याण की भावना रखना...।

देखो बच्चे, आपके परिवर्तन से ही वो आत्मायें परिवर्तन होगी। फिर आपके स्थान का वातावरण भी परिवर्तन होगा।
फिर ही तो आपका स्थान light house - might house बनेगा...।

बस, हर बात में positive रहना है...।

जब आप बच्चों पर बाप की नज़र है और आप बच्चे भी हर कदम बाप की श्रीमत प्रमाण उठाते हो, तब तो हर बात में कल्याण ही कल्याण है...।

देखो, बाप आप बच्चों को आप समान बनाने आया है ... तो आप भी अपना full सहयोग दो।

बस, हर संकल्प को तेरा-तेरा करते चलो, निश्चय रखो और निश्चिन्त रहो।
बस फिर तो देखते ही देखते मंज़िल पर पहुँच जाओगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
05.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब समय अनुसार मन की एकाग्रता को बढ़ाओ अर्थात् जब चाहो, जितना समय चाहो, मन-बुद्धि को अपनी स्व-स्थिति के आसन पर स्थित कर सको...।

बच्चों का एकान्त में, अर्थात् जब मन-बुद्धि में कोई हलचल ना हो तो उन्हें योग में अच्छी अनुभूति होती है।
अब बच्चों के अन्दर एक ही लगन है कि हम बाप की श्रीमत को 100% follow करें और दुनिया से वैराग्य भी आया है।

परन्तु अब आप बच्चों का स्मृति का switch, ON रहना चाहिए अर्थात् जब भी किसी संगठन में या किसी भी प्रकार की हलचल में हो, तो भी आपको अपनी आत्मिक स्थिति की स्मृति रहें ... या फिर आपको बार-बार अर्थात् दिन में कई बार, बाप के साथ का अनुभव हो..., उसी स्थिति में आप पर संगठन का वा हलचल का प्रभाव नहीं पड़ेगा अन्यथा आपका समय बहुत व्यर्थ जाता है।

बच्चों के अन्दर पुरुषार्थ की लगन अच्छी है और सफलता भी मिल रही है। बस अपनी तरफ थोड़ा-सा attention और बढ़ाओ, फिर सहज ही अपनी मंज़िल पर पहुँच जाओगे।

देखो, यह मार्ग बिल्कुल सहज है, बस आप बच्चों को attention ही तो रखना है..., परन्तु सोच-सोच कर परिस्थितियों से न्यारा होने की बजाए, उसमें फँस complaint स्वरूप मत बनना ... क्योंकि इसमें आपका ही 100% अकल्याण समाया है और इससे आपकी परिस्थितियां बढ़ेगी, घटेगी नहीं..., क्योंकि किसी से भी complaint होना अर्थात् अपना हिसाब-किताब लम्बा करना...।

देखो, drama में वो ही repeat हो रहा है जो कल्प पहले हुआ था, परन्तु आपको स्वयं को विजयी रत्न समझ इन परिस्थितियों को सहज रीति पार करना है, तभी आप समय से पहले अपनी मंज़िल पर पहुँच पाओगे ... अन्यथा आप भी समय के बहाव में बह जाओगे।
फिर बाप भी कुछ नहीं कर पायेगा...।

इसलिए, ATTENTION PLEASE...

जो कुछ drama में हो रहा है, उस हर scene में अपना कल्याण समझ अपने पुरुषार्थ को complete करो, अन्यथा पश्चाताप की घड़ियां बहुत कड़ी है...!

दुनिया में हाहाकार होने से पहले आपको अपना पुरूषार्थ पूरा करना है अर्थात् अपनी स्व-स्थिति और परमात्मा के सहयोग द्वारा अपना हिसाब-किताब पूरा करना है।

Complaint स्वरूप आत्मा बाप का सहयोग भी नहीं प्राप्त कर सकती...! इसलिए, स्वयं ही स्वयं की महीनता से checking कर अपने पुरुषार्थ की गति तीव्र करो, तभी आप तीव्र पुरुषार्थी की list में आओगेे...। अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
06.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, जो यह आपका ईश्वरीय परिवार है, यह विशेष आत्माओं का परिवार है...। तो विशेषताओं से सम्पन्न आत्मा को ही विशेष आत्मा कहेंगे...।
इसलिए, अब आप सबको हर आत्मा के गुणों को ही देखना है...।

देखो बच्चे, बाप आप सबके आपसी स्नेह से प्रत्यक्ष होगा, तो अब परिवार की हर आत्मा को समीप लाओ और उनके ऊपर जो पुराने स्वभाव-संस्कार थोड़े बहुत बचे हैं उसे ignore कर, उनको केवल विशेष आत्मा समझ उनके सम्बन्ध में आना है ... और वैसे भी आप जो आधार हो, तो आपकी शुभ-भावना, शुभ-कामना अर्थात् संकल्पों की शक्ति से वो परिवर्तन हो अपनी विशेषताओं के स्मृति स्वरूप बनेंगे...।

इसके लिए आप बच्चों को फ्राकदिल बनना पड़ेगा, तेरा-मेरा की भावनाओं से न्यारा होना पड़ेगा। आपकी ज़िम्मेवारी पूरे परिवार की है, ना कि केवल कुछ एक आत्माओं की...!

इसलिए, अब अपने शुभ संकल्पों के द्वारा इनको परिवर्तन करो ... इन सबके परिवर्तन में ही आप बच्चों का परिवर्तन समाया हुआ है...।

जितना-जितना आत्मिक दृष्टि का अभ्यास बढ़ता जाएगा, उतना ही आप सबके कल्याणकारी बनते जाओगे।

जो आपके संबंध-संपर्क में आने वाली आत्मायें हैं और बाबा की शिक्षाओं को समझ practical life में use कर रही है, वो सब आत्मायें आपके ही परिवार की है।
इसलिए, अब आप उन आत्माओं के प्रति भी ऊँची दृष्टि रखो...।

देखो, बाबा स्वयं आकर अपना कार्य कर रहा है अर्थात् बाबा की planning के according ही आप सब बच्चे नज़दीक संबंध-संपर्क में हो...। तो अब तेरा-मेरा की भावना को छोड़, हर आत्मा को आप-समान समझ उनके प्रति कल्याण की भावना रखो।

बस, बाबा पर 100% निश्चय रख जैसे बाबा कहें, वैसे करते जाओ ... तो फिर बहुत जल्दी ही बाबा की कमाल शुरू हो जायेगी...।

बस, इसके लिए आपको हर कदम बाप की श्रीमत प्रमाण उठाना है।
हर कदम अर्थात् हर संकल्प बेहद में हो...।

जो भी परिस्थितियां आ रही है, वो केवल आपके हिसाब-किताब clear करने के लिए आ रही है ... और जैसे ही आपका हिसाब-किताब जोकि थोड़े का भी थोड़ा सा बचा है, खत्म होते ही आप सब भरपूर हो जाओगे...।

देखो, बाबा इस ईश्वरीय परिवार को पूरे विश्व के आगे sample के रूप में प्रत्यक्ष करेगा, तो वो परिवार पहले तो 100% भरपूर होगा, तभी तो विश्व के आगे प्रत्यक्ष होगा...!

बस बाबा की इन शिक्षाओं को हल्का ना समझ, इनकी importance को समझ, इसे अपनी practical life में apply करो ... फिर जल्दी ही बाबा की कमाल शुरू हो जायेगी...।

यह आपका ईश्वरीय परिवार है तो विशेष आत्माओं का परिवार, फिर भी, है तो नम्बरवार...!
सो जो जितना पुरुषार्थ करेगा उतना number आगे ले लेगा...।

इसलिए,
अब माला में number का आधार आपका पुरूषार्थ ही है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
07.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा जबसे आप बच्चों को direct पालना दे direct पढ़ाई पढ़ा रहा हैं, तबसे जिन बच्चों ने बाप की श्रीमत प्रमाण पुरुषार्थ किया है, उन बच्चों में purity की power अर्थात् अनादि संस्कार emerge होते जा रहे हैं...।

जिस कारण उनका पुरुषार्थ सहज होता जा रहा है ... और बहुत जल्दी ही उन बच्चों का प्राप्तियों का period शुरू हो जायेगा ... फिर वो बाप समान बन, बाप के साथी बन, बाप (परमात्मा शिव) के कार्य में सहयोगी बनेंगे ... और वो बच्चे direct बाप के सहयोगी, साथी अर्थात् उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव होगा कि मैं बाप के साथ विश्व-कल्याण का कार्य कर रहा हूँ...।
बाप से सर्व संबंधों के प्यार का, वो बच्चे clear अनुभव करेंगे...।

और जो बच्चे अभी भी पुरुषार्थ में अलबेले हैं या पुरुषार्थ में अपनी मनमत चलाते हैं, तो बताओ उनकी क्या गति होगी...?

इसलिए, फिर भी अभी थोड़ा समय है, तो अपना भाग्य बना लो ... अन्यथा बिल्कुल थोड़े के थोड़े समय के बाद यह पुरुषार्थ और मुश्किल होता जाएगा ... क्योंकि एक तो आपके अलबेलेपन का संस्कार पक्का होता जाएगा और दूसरा वातावरण का प्रभाव दिखाई देगा ... और कुछ ही समय के बाद तो मंज़िल पर पहुँचना नामुमकिन हो जायेगा...! क्योंकि तब तो बाप भी साक्षी हो जायेगा...!

इसलिए बच्चे, स्वयं पर attention बढ़ा, और बाप के सहयोग का फायदा उठा दृढ़ता की शक्ति के द्वारा ऊँचा पुरुषार्थ करो।

अभी तो थोड़े का पदमगुणा मिल रहा है, तो फिर अपना भाग्य बना लो।

ऐसा ना हो अंत में केवल पछताना पड़े..., क्योंकि पछताने की घड़ियां बहुत कड़ी है...!

यूँ मत समझना कि बाबा ऐसे ही कह रहा है...!
जो बाबा इस समय special आकर पढ़ा भी रहा है, तो समझानी भी दे रहा है और जो समय की चेतावनी दे रहा है ... वो भी accurate अर्थात् 100% सत्य बता रहा है...।

इसलिए गफलत में रह अपने भाग्य को लात मत मार देना...!

बाबा के एक-एक शब्द को attention से सुन फिर पुरुषार्थ करो...।

अभी तो बाबा प्यार भी कर रहा है और प्यार भरी समझानी भी दे रहा है ... परन्तु बहुत जल्दी बाप साक्षी हो जाएगा और आपके ही अलबेलेपन के संस्कार ... छोटी-छोटी बात में दिलशिकस्त होने के, थकने के, हारने के संस्कार अर्थात् आपकी ही कमी-कमज़ोरी पश्चाताप में परिवर्तन हो जायेगी।

इस बात को हल्का मत समझना और इस समय आपको दुनिया को ना देख पुरुषार्थ करना है।

बाप special पढ़ाने आया है और special समझानी दे रहा है, तो आप भी special बनो, दुनिया वालों की तरह नहीं...!

बाप की श्रीमत प्रमाण पुरुषार्थ करने वाले बच्चे, बाप के मस्तक मणि, नूरे रत्न, दिलतख्तनशीन बच्चे हैं...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
08.01.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... जो बच्चे, श्रीमत् प्रमाण पुरूषार्थ भी कर रहे हैं और अपने गृहस्थ व्यवहार में भी उसी प्रमाण चल रहे हैं, उनका बाप 100% ज़िम्मेवार है...।
अब उन बच्चों का प्राप्तियों का समय बहुत जल्दी ही शुरु होगा, तो उन्हें किसी भी प्रकार की कोई कमी महसूस नहीं होगी।

और कुछ ही समय में, अर्थात् बहुत थोड़े से भी थोड़े, उसमें से भी थोड़े समय में उनके जीवन में आये हर तूफान, तोहफे में परिवर्तन हो जायेंगे...।
तो वो बिल्कुल निश्चिन्त रहें।

अब तो उनका तन, मन, धन, जन अर्थात् चारों तरफ का स्नेह-सहयोग, उन्हें प्रत्यक्ष करेगा।

क्योंकि बाप स्वयं वरदानीमूर्त बन 100% उनका साथ निभायेगा..., तभी तो ऐसे बच्चों की जयजयकार होगी...।

दूसरी तरफ;
जो बच्चे अभी भी समय को देख, दुनिया को देख पुरूषार्थ कर रहे हैं, वो स्वयं के जवाबदार स्वयं है...!

इस समय भी बाप का, अपने ऊँच भाग्य का, फायदा नहीं उठा रहे हैं, उनकी क्या गति होगी...?
उन्हें देख बाबा को बहुत रहम आता है, फिर बाबा भी कहता है - ड्रामा...।

इस समय तो बाप एक का पदमगुणा दे रहा है, परन्तु बच्चे हिम्मत का, दृढ़ता का एक कदम भी ना उठाए, तो बताओ बाप भी क्या करें...?

अब जल्दी ही पुरुषार्थ का समय खत्म हो जायेगा, और हर आत्मा अपने किए गए पुरुषार्थ के according अपनी seat पर set हो जायेगी।

इसलिए बच्चे, बचे हुए थोड़े से समय में अपना कुछ तो भाग्य बना लो...!

जो करेगा-सो बनेगा...।
यह drama का नियम है, इसमें बाप भी बँधा हुआ है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
09.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★
बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्वयं के ऊँचे स्वमान के स्मृति स्वरूप बनो।

आपको हर पल यह याद रहना चाहिए कि मैं कौन हूँ और किसका हूँ...?
यही स्मृति आप बच्चों को विश्व के आगे प्रत्यक्ष करेगी।

जब आप अपने परिवार के सम्बन्ध में आते हो तो आपका हंसना, बोलना, मज़ाक करना, गुणों से भरपूर बहुत natural और सहज होता है ... परन्तु, संगठन के बीच आपको स्वयं पर full attention रखना है।

जिस तरह देवता बहुत royal, हर्षितमुख, मधुर, soft, रहमदिल, क्षमाशील, कल्याण आदि गुणों से भरपूर रहते हैं, इसी तरह यह सभी गुण आप बच्चों में प्रत्यक्ष दिखने चाहिए।
सभी को लगें, कि यह हमसे अलग हैं...!
और यह सभी गुण आप बच्चों से तब प्रत्यक्ष अनुभव होंगे, जब आप बच्चे स्वयं को ऊँच स्वमान में स्थित रखोगे।

ऊँच स्वमान में स्थित होना अर्थात् आपको अन्दर से अनुभव होना चाहिए कि मैं ही इतनी ऊँच authority हूँ, जिसे पूरे विश्व का कल्याण करना है...।

इसलिए अब अपने ऊँचे स्वमान को अनुभव करो...।

स्वयं की शक्तियों को, गुणों को अनुभव करो...।

बस थोड़ा-सा attention रखोगे अर्थात् अपने गुणों और शक्तियों को अपनी दिनचर्या में use करोगे, तो सहज ही यह आपके गुण और शक्तियां आपके संस्कार बन जायेगे...।

देखो बच्चे, बाप तो आया ही है सबको सम्पन्न बनाने ... परन्तु जो स्वयं पर attention रख स्वयं बनेंगे, वो तो थोड़े ही समय में प्रत्यक्ष होना शुरू हो जायेंगे और जिन्हें बाप बनायेगा वो अन्त में होंगे...!

फिर देखो, दोनों के आनन्द के समय में कितना अन्तर आ जायेगा और पद में भी...!

इसलिए, बाप का स्नेह और सहयोग लो ... अर्थात् बाप से बुद्धियोग लगा, स्वयं पर attention रख स्वयं ही स्वयं को सम्पन्न बनाओ ... तो प्राप्तियां अपरमअपार है अन्यथा, आप स्वयं ही समझदार हो...!

जो बच्चे जितने निश्चय के साथ बाप की हर श्रीमत का पालन कर पुरुषार्थ कर रहे हैं, उन आत्माओं से अन्य को प्रत्यक्ष परिवर्तन अनुभव होगा...।

देखो, यह ना हो कि सम्पन्न बनने की list में आने की बजाए, देखने वाले बन जाओ...!
अभी भी थोड़ा-सा समय है ... तो अपना कुछ भाग्य तो बना लो...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
10.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप सबको अब समय अनुसार अचल, अडोल और एकरस रहना है, चाहे परिस्थिति कितनी भी हलचल वाली हो...!

एक knowledgeful और powerful अर्थात् सर्व शक्तियां, और उसमें भी विशेष शान्ति और पवित्रता की शक्ति होगी, वो आत्मा हर प्रकार की परिस्थिति में अचल-अडोल रहेगी...।

देखो, समय आगे बढ़ता जा रहा है, तो तमोप्रधान वातावरण का effect भी बढ़ रहा है।

जिस कारण तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क और साथ ही साथ दिनचर्या में छोटी-छोटी परेशान करने वाली परिस्थितियां भी बढ़नी है...।

परन्तु आप मास्टर सर्वशक्तिमान् बच्चों को हर हाल में अचल-अडोल रहना है।

इसलिए, स्वयं ही स्वयं की checking करो कि;
मैं हमेशा शान्त, केवल मुख का ही नहीं, मन की भी शान्ति रहती है...?
मैं हर्षितमुख रहता हूँ या परेशानियों को देख परेशान हो जाता हूँ...?

बच्चे, आपकी यह शान्तचित्त अवस्था ही आपको सम्पन्न बनायेगी।
आप स्वयं के साथ-साथ यह भी checking करो कि आपके घर में रहने वाली आत्माओं पर आपकी स्थिति का कितना प्रभाव है...?

यदि आप हमेशा हर्षितमुख, शान्त, अचल, अडोल रहते हो ... तो आपके घर के वातावरण पर भी आपके powerful vibrations का effect आयेगा, और अन्य आत्माओं में भी धीरे-धीरे परिवर्तन आ जायेगा...।

इसलिए, महीनता से checking करो...।

देखो बच्चे, आप बच्चों के परिवर्तन से ही विश्व-परिवर्तन होगा।
परन्तु ... विश्व-परिवर्तन अर्थात् विश्व में शान्ति होने से पहले आपके घर में तो शान्ति होनी चाहिए ना...!
चाहे आपके परिवार में रहने वाली आत्मायें ज्ञान में ना भी चलें, वो खुश और शान्त तो रहें...।

जो बच्चे बाप की श्रीमत प्रमाण अपना पुरुषार्थ कर रहे हैं, वो अपनी मंज़िल के समीप है।
बस, अब उनको थोड़ा और attention रख अपनी मंज़िल पर पहुँचना है ... इसलिए वो 'एक बल-एक भरोसा' रख पुरुषार्थ करते रहें...।
उन्हें बहुत जल्द अपने पुरुषार्थ के powerful results दिखने शुरु हो जायेंगे..।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
11.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब आप सब आत्माओं को परमपिता परमात्मा के साथ अटूट सम्बन्ध निभा वरदानीमूर्त बनना है।

वरदानी मूर्त बच्चे ही बाप को प्रत्यक्ष करेंगे...।
और जो बच्चे बेफिक्र बादशाह और हल्के होंगे, उनका ही बाप के साथ सम्बन्ध अटूट होगा।

अब आप बच्चों को सदा स्वयं पर attention रख, स्वयं को check करना है कि मैं शान्त स्वरूप और हल्का हूँ...?
क्योंकि हल्की आत्मा ही बाप के समीप पहुँच, बाप-समान बन पायेगी ... और किसी भी तरह के बोझ वाली आत्मा का खिंचाव धरती की तरफ होगा...!
फिर बताओ, वो बाप-समान कैसे बनेगी...?

इसलिए, अब बाप की श्रीमत प्रमाण पुरुषार्थ कर बाप-समान बनो।

अब यह ही थोड़े का भी थोड़ा समय है - "अभी नहीं तो कभी नहीं...।"

यह बाप का प्यार कहो ... पढ़ाई कहो ... तपस्या कहो ... यह सब बाप-समान बनाने के लिए ही है।

यदि आपके अन्दर ज्ञान-गुण-शक्तियां बाप-समान नहीं आ रही हैं ... चाहे कोई भी कारण है, इसका मतलब आपके अन्दर अलबेलापन है...!

इसलिए बहुत समझदारी के साथ स्वयं की checking कर, स्वयं को बाप-समान बनाओ।

यदि आप हर पल हल्के, बेफिक्र, सन्तुष्ट और खुश रहते हो ... तो इसका मतलब आपका connection बाप के साथ है ही है।

इस प्रकार की आपकी checking हर पल की होनी चाहिए अर्थात् सदा की...।
• सदा मतलब - हर स्थिति और परिस्थिति के समय...।

• हल्का अर्थात् किसी भी प्रकार की कोई भी आसक्ति नहीं ... बेफिक्र, चिन्तामुक्त, समर्पणभाव, सन्तुष्ट, स्वयं से ... बाप से ... अन्य आत्माओं से ... no complaints...।
• खुश अर्थात् मान-अपमान, निन्दा-स्तुति अर्थात् हर परिस्थिति में भी खुश...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
12.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... आप बच्चे तो बाप के मीठे-मीठे, मस्तकमणि बच्चे हो।
बाप, आप बच्चों के सच्चे दिल के प्यार को देखता है, इसलिए स्वयं आ गया पढ़ाने के लिए...।

अब बिल्कुल बेफिक्र रह महीनता से अपनी checking कर, स्वयं पर attention रख, स्वयं को change कर, बाप की पालना का ... पढ़ाई का ... सबूत दो।

अब किसी भी बात में ... कोई भी बात में ... कोई भी बच्चा अलबेला मत बने...।

बाप तो समय की समीपता को देख, आप बच्चों को रोज़ समझानी दे रहा है...!

बस, आप बच्चे बाप की छोटी से छोटी समझानी पर भी 100% निश्चय रख पुरुषार्थ करो...।
बाप नहीं चाहता कि बाप के किसी भी बच्चे को पश्चाताप करना पड़े..!
परन्तु पुरुषार्थ आप बच्चों को ही करना है।

इसलिए हर पल अपने पर attention रखो।

देखो, बाप कहता है कि स्वयं को बेफिक्र बादशाह, हल्का, खुश और सन्तुष्ट रखना है। इसकी checking महीनता से करनी है।

कई बार कर्म करते भी आपका powerful connection बाप के साथ होता है, परन्तु आप अनुभव नहीं कर पाते...!

और यही सोचते हो कि बैठकर तो योग किया नहीं...!
बैठकर योग लगाना बहुत-बहुत-बहुत अच्छा है, परन्तु कर्मयोगी की stage भी कम नहीं...।
बस इसमें कर्म consicous होने के बजाए कर्मयोगी अर्थात् स्वयं को आत्मा समझ, बाप के साथ combined रहने का बहुत अभ्यास चाहिए।

इसके लिए आप स्वयं की checking भी कर सकते हो...।

यदि आप महसूस करते हो कि आपके अन्दर ज्ञान-गुण-शक्तियां अर्थात् स्वयं की तरफ attention भी बढ़ रहा है और परिवर्तन भी हो रहा है, तो आप अपने पुरुषार्थ से सन्तुष्ट रहो..., और यदि आप बच्चे बार-बार disturb हो जाते हो, तो आपको बाप की याद के साथ-साथ स्वयं के व्यवहार की तरफ attention भी बढ़ाना पड़ेगा।
इसकी speed तीव्र रखनी पड़ेगी क्योंकि समय बहुत थोड़ा है, और जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता जा रहा है, तो पुरुषार्थ भी मुश्किल होता जायेगा...!

इसलिए, जो थोड़ा-सा समय बचा है उसमें बाप के सहयोग और समय का फायदा उठा पुरुषार्थ कर लो।

योग के साथ-साथ स्वयं के परिवर्तन पर full attention रखना है।

यह पढ़ाई ही है मनुष्य से देवता अर्थात् तमोगुणी आत्मा को परिवर्तन कर सतोगुणी आत्मा बना देने की..., इसलिए check and change...

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
13.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... धर्मराज कोई भी आत्मा वा परमात्मा नहीं है।

जिस तरह, रावण ... पाँच विकारों के रूप को कहा जाता है, इसी तरह हर आत्मा के किये गये पापकर्म, धर्मराज का रूप ले लेते हैं।
जिस कारण पापकर्म करने वाली आत्मा भयानक सज़ाओं का अनुभव करती है...!

बाप तो सभी बच्चों के लिए हमेशा कल्याणकारी रहता है - चाहे वो लौकिक हो ... चाहे अलौकिक...।

देखो, सबसे पहले स्वयं के द्वारा किये गए पापकर्म स्वयं के आगे प्रत्यक्ष होंगे..., फिर अन्य आत्माओं के सामने...! जिस कारण वो बाप के सहयोग का फायदा नहीं उठा पायेंगी...!
अर्थात् उनके पापकर्म ही उनको बाप से साक्षी कर देते हैं।
जिस कारण उनकी भोगना और बढ़ जाती है और यह वो आत्मायें होती है;
• जो बाप के प्यार के आधार को छोड़ दूसरे-दूसरे आधार पर चलती हैं।
• स्व-परिवर्तन की बजाए अन्य आत्माओं का परिवर्तन करना चाहती हैं।
• सुखकर्ता की बजाए दु:खकर्ता बन जाती है अर्थात् dis-service के निमित्त बन जाती है...।
यही कर्म उनकी सज़ाओं के निमित्त बनते हैं, और यह कार्य शुरु हो चुका है ... अर्थात् जो कहते हो ना कि सद्गुरु का role शुरु हो जायेगा ... वो हो चुका है...।

कोई भी कार्य पहले slow होता है, फिर जल्दी वो प्रत्यक्ष रूप में दिखने लगता है...!

अष्ट रत्न ... सौ रत्न ... अर्थात् सभी माला के दाने स्वयं के पुरुषार्थ अनुसार स्वयं ही प्रत्यक्ष होते हैं, जोकि सभी आत्माओं को मान्य होते है।

बाप का कार्य सभी आत्माओं को केवल प्यार, रहम, कल्याण की भावना से मुक्ति और जीवनमुक्ति देने का है।
परन्तु, सभी अपने मन्सा-वाचा-कर्मणा द्वारा नम्बरवन और नम्बरवार बनते हैं...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
14.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप सब अपने पुरुषार्थ में तत्पर रहो...।

अभी minor सा भी अलबेलापन वा लापरवाही ना हो, क्योंकि अब समय नहीं बचा है कि अभी भी पुरुषार्थ ऊपर-नीचे होता रहें...!

वैसे भी बहुत जल्दी ही वातावरण में तमोप्रधानता का प्रभाव अत्यधिक बढ़ जायेगा अर्थात् आश्चर्यजनक परिवर्तन हो जायेगा...!
और जिस आत्मा ने अपने ऊँच स्वमान और बाप को combined रखने का ऊँचा पुरुषार्थ नहीं किया है, वो समय के बहाव में बह जायेगा और उस आत्मा के लिए मंज़िल पर पहुँचना नामुमकिन है...!

इसलिए, बिना कुछ सोचें स्वयं पर attention रख, ऊँचा पुरुषार्थ करो...।

जब आप बच्चों का स्वयं पर परिवर्तन का full attention है अर्थात् परिवर्तन नज़र आ रहा है, और ऊँच स्वमान में स्थित हो बाप को याद करने का attention है, तो आप बेफिक्र रहो ... आपका ज़िम्मेवार बाप है...।
बस अलबेले मत बनना।

बाप का आकर यूँ पढ़ाना, और इस समय किये गए पुरुषार्थ की value बहुत जल्दी आपको महसूस होगी।

जिन्होंने अपना समय सफल किया होगा, उनकी तो बाप के साथ-साथ, वाह-वाह होगी..., और अन्य आत्मायें जो बाप की विशेष पालना लेकर भी खाली ही रह गई, उनपर क्या बीतेगी..., वो तो आप सोच ही सकते हो...!

बस, बाप की एक-एक बात पर निश्चय रख पुरुषार्थ करो।

"अभी नहीं ... तो कभी नहीं ..."

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
15.01.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाप-समान कहाँ तक असोचता बने हो...?

असोचता अर्थात ... कर्म और कर्म करने के बाद उससे प्राप्त result के संकल्पों से मुक्त ... अर्थात् बिल्कुल हल्का...।

बच्चे, कोई भी कर्म करने से पहले उस कर्म को बाप को समर्पण कर दो।

देखो, जबकि आप बच्चों ने स्वयं को ही बाप को सौंप दिया है ... तो आप द्वारा किया गया हर कार्य भी बाप का हो गया ना...!

बस, इसके लिए बिल्कुल सच्चा दिल चाहिए...।
सच्चे दिल से जब आप बाप को समर्पण हो जाते हो अर्थात् क्या, क्यों, कैसे से मुक्त हो जाते हो ... तो बाप भी आपकी अंगुली पकड़ आपको मंज़िल तक पहुँचा देता है।

देखो, लौकिक में भी जब कोई छोटा बच्चा कोई काम बाप की आज्ञा प्रमाण करता है, चाहे उसे करना ना भी आये ... फिर भी, लौकिक बाप उसे बार-बार समझानी देकर करवाता है।
फिर बच्चे के स्वयं प्रति प्यार और विश्वास को देख खुद ही वो काम कर देता है।

यहाँ मैं, पारलौकिक बाप आपके दिल के हर संकल्प को जानता हूँ, फिर कैसे ना मैं अपने बच्चों की हर इच्छा को पूरी ना करुँ...!

बस, आप निश्चय रख निश्चिन्त रहो...।

Drama के हर scene में कल्याण समझो...।

आप सच्चे दिल से अपने हर संकल्प को बाप को समर्पण करने का अभ्यास करते रहो अर्थात् बाप की श्रीमत् प्रमाण चलने का पुरूषार्थ करते रहो।

कोई भी गलती हो या विस्मृति हो, उसे भी बाप को सौंप हल्के हो जाओ।

ना ही स्वयं की गलती पर ... ना ही दूसरों की गलती पर समय बरबाद करो ... अर्थात् हर बात में अपना कल्याण समझ पुरुषार्थ करने में तत्पर रहो...।

बस अलबेले मत होना ... ना ही मैं और मेरेपन में फँसना ...।

आप बच्चों को सच्चे दिल से बाप की श्रीमत प्रमाण पुरुषार्थ करना है, सम्पन्न तो आपको बाप ही बनायेगा...।
तब ही तो अचानक और आश्चर्यजनक परिवर्तन होगा...।

बस, बाप पर और स्वयं के विजयी रत्न बनने पर 100% निश्चय रख, निश्चिन्त रहो ... अर्थात् क्या, क्यों, कैसे में मत फँसो..., फिर देखना बाप की कमाल अर्थात् wait and watch...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
16.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... आप सब बच्चों को प्रेम स्वरूप होकर रहना है..., क्योंकि आप हो प्रेम के सागर की संतान।

आपकी मन्सा, वाचा, कर्मणा और सम्बन्ध-सम्पर्क में प्रेम झलकना चाहिए।
जितना-जितना आप बच्चे प्रेम स्वरूप बनते जाओगे, तब आपके अन्दर हर आत्मा के प्रति चाहे वो आसुरी हो वा अपकारी हो अर्थात् हर प्रकार की आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना बढ़ती जायेगी...।

अब आप बच्चों के अन्दर प्रेम emerge रूप में रहना चाहिए।
• प्रेम स्वरूप आत्मा को किसी भी आत्मा के प्रति कोई complaint नहीं होगी।

• उनका मन, रहम और कल्याण की भावना से भरपूर होगा और आप बच्चों के शब्दों में भी मधुरता आती जायेगी...।
• प्रेम स्वरूप आत्मा के अन्दर मैं और मेरापन नहीं होता।
• प्रेम स्वरूप आत्मा वो ही बन सकती है, जिसकी दृष्टि भाई-भाई की हो ... क्योंकि प्रेम हमेशा सम्बन्ध में ही होता है।

इसलिए, अब आप बच्चों को स्वयं को आत्मा देखना है और अन्य को भी...।

जितना आप स्वयं को आत्मा realize करते जाओगे, उतना ही आपकी दृष्टि आत्मिक होती जायेगी ... और फिर अशरीरी बनना भी बहुत सहज हो जायेगा...।

बस, अब इस पुरुषार्थ को बढ़ाओ ... जैसे बाबा कहें, वैसे ही पुरुषार्थ करो।
फिर बाबा भी आप बच्चों को extra मदद दे आप-समान बना लेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
17.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, महसूस करो कि ... मैं एक प्रेम स्वरूप आत्मा हूँ ... प्रेम के सागर की संतान हूँ...।
अब मुझे सभी के साथ प्रेम पूर्वक रहना है ... और सभी को प्रेम की किरणें देनी है...।

जैसे, इस गुण की तरफ attention दिया, इसी तरह हर एक गुण की तरफ attention दे, उसे use करना है।
जब आप विशेष किसी गुण की तरफ attention देते हो और उसी के according आपकी मन्सा-वाचा-कर्मणा होती है, तब आपमें विशेष खुशी की प्राप्ति होती है।

अब धीरे-धीरे हर गुण से प्राप्त खुशी को बढ़ाओ।

जितना आप अपने व्यवहार में गुणों को use करने की attention देते हो, उतना ही आपको खुशी होती है और फिर आप naturally ही हर गुण के स्वरूप बन जाओगे।

बस, अभ्यास की तरफ attention रखना...।
यदि संस्कारवश किसी समय ... किसी गुण को ना अपना सको, या उसके विपरीत आपकी मन्सा-वाचा-कर्मणा हो जाती है ... तो भी घबराना मत ... बस attention को बढ़ा देना...।

बार-बार बाप (निराकार शिव) के पास बैठ ... बाप से शक्ति ले ... उमंग-उत्साह को बढ़ा, फिर से अपने कार्य में लग जाना...।
बस, इसमें अलबेले मत बनना...!

चाहे कोई भी तरह की आत्मा ... कोई भी तरह की परिस्थिति आये..., बस आपका attention स्वयं पर होना चाहिए।

आपके अन्दर एक ही संकल्प होना चाहिए कि मुझे सर्वगुण सम्पन्न बनना है ... और मैं यह तभी बन सकता हूँ जब मैं सदा attention दे इन गुणों को use करूँगा, अन्यथा मैं सर्वगुण सम्पन्न नहीं बन सकता ... और ना ही माला का दाना...!

फिर मैं देखने वालों की list में आ जाऊँगा ... बनने वालों की नहीं...!

आपको सदा ध्यान में रखना है कि इस समय मैं अपना भाग्य लिख रहा हूँ और किसी भी आत्मा का स्वभाव-संस्कार और परिस्थिति मेरे भाग्य को कम नहीं कर सकती...!

इसलिए मुझे स्वयं पर full attention रख, अपने साथ परमात्मा बाप को संग रख अपना भाग्य लिखना है और जबकी मेरे साथ स्वयं भाग्य-विधाता बाप है तो मेरा तो भाग्य सबसे ऊँचा है...।
बस मुझे थोड़ा अपने ऊपर attention ही तो रखना है..., फिर मुझसे अधिक भाग्यवान इस दुनिया में कोई है ही नहीं...!

बस यही अभ्यास आपको बाप-समान बना देगा...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
18.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं कि ... बच्चे, बाप के लिए गीत गाते हैं ... “किन शब्दों में आपका धन्यवाद करूँ...”

देखो बच्चे, धन्यवाद करना अर्थात बाप पर 100% निश्चय रख, बाप की हर श्रीमत का समय अनुसार पालन कर अर्थात् ज्ञान-युक्त और योग-युक्त बन ... बाप-समान बन ... विश्व-कल्याण के कार्य को सम्पन्न करना।
बाप की उम्मीदों को अब पूरा करो। स्वयं में परिवर्तन करो...।

सारे विश्व की आत्मायें प्यासी नज़र से आप बच्चों को देख रही है कि कब हमारे इष्ट देव आयेंगे और हमारा कल्याण कर हमें घर (परमधाम) का रास्ता बतायेंगे। अब इसी स्मृति में रहो। यही बाप के प्यार का return है।

बाप के प्यार का return अर्थात् असोचता ... हल्का ... बेफिक्र ... खुश।
चाहे कुछ भी हो इतना अटूट निश्चय - मेरे साथ परमात्मा बाप है ... मेरा कोई बाल बाँका भी नहीं कर सकता...।

साथ ही साथ अपनी विजय पर भी 100% निश्चय रख अपनी मंज़िल पर पहुँचो।
यही है बाप का धन्यवाद करना...।

जब आपकी दिनचर्या बाप की श्रीमत के according होती है, तो परमात्मा बाप भी सूक्ष्म रूप से आपको अपनी बाहों में समा लेते हैं।

देखो, बाप को अपने आज्ञाकारी बच्चे बहुत प्यारे है। बाप भी अपनी नज़र ऐसे बच्चों से हटाता नहीं। हर पल बच्चों के संग रह बच्चों को सहयोग देता है...।

इतनी ऊँची दृष्टि से आप स्वयं को देखो। दुनिया का रचयिता स्वयं आ गया ... मेरी पुकार सुन, मेरा साथी बन गया..., और क्या चाहिए...!

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
19.01.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब आपकी हर बात में कल्याण समाया हुआ है, क्योंकि परमात्मा बाप कि अब आप पर direct नज़र पड़ी है।
बस आप अपना 100% दे पुरूषार्थ करते रहो ... और पुरूषार्थ भी क्या हैं ...?
मैं जो हूँ ... जैसा हूँ ... अर्थात् स्वयं को जान और मान, बाप को भी ठीक रीति पहचान उनके संग जाकर बैठ जाना हैं..., क्योंकि संग का ही रंग लगता है।

जितना-जितना आप स्वयं को बाप के संग अनुभव करोगे, उतना ही बाप-समान बनना आसान हो जायेगा।

बस, अब थोड़े का भी थोड़ा समय बचा है पुरूषार्थ का, इसलिए अब अपना समय व्यर्थ मत करो। बाप की श्रीमत प्रमाण चलो, तभी बाप आपका ज़िम्मेवार बनेगा...।

बच्चे, यह पुरूषार्थ हल्के रह बड़े उमंग-उत्साह के साथ करना है। जितना आप खुशी-खुशी पुरूषार्थ करोगे अर्थात् अपनी मंज़िल की हर रुकावट को खुशी-खुशी पार करके बाप के संग रहकर आगे बढ़ोगे, उतनी ही जल्दी मंज़िल पर पहुँचोगे।

बस,
- ना ही थकना है...
- ना ही अलबेले होना है...
- और ना ही दिलशिकस्त...,

हल्के रह आगे बढ़ना है...।

बस महसूस करो कि Supreme point of light की powerful light आप पर पड़ रही है...।

बच्चे, इसी छत्रछाया के नीचे रहो ... महसूस करो चारों तरफ light ही light ... light ही light है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
20.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, महसूस करो कि मैं आत्मा powerful light के नीचे हूँ ... और मुझसे चारों तरफ light ही light फैल रही है ... यह light विश्व के कोने-कोने में फैल रही है, जोकि आत्माओं को और प्रकृति के पाँचों तत्वों को भी अनुभव हो रही है।

बच्चे, यह आपकी light-might की किरणें ही विश्व-परिवर्तन का कार्य करेगी।

देखो बच्चे, इस समय इस light-might की किरणों की अर्थात् सकाश की विश्व को बहुत अधिक ज़रूरत है।
Drama का अगला scene बहुत भयानक और दर्दनाक है।
यह आपकी powerful सकाश प्रकृति के पाँचों तत्व शान्त भी करेगी और विश्व की सभी आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता भी दिखायेगी।

जब आप powerful मन्सा सेवा करते हो तो प्रकृति के साथ-साथ आत्माओं की भी सफाई होती है, जिस कारण एक बार दुनिया में हलचल बहुत बढ़ जाती है, परन्तु आपके powerful vibrations शीघ्र ही इस हलचल को समाप्त कर परिवर्तन का कार्य कर देती है।

इसलिए, हे दुःखहर्ता-सुखकर्ता ... विश्व में सुख-शान्ति के राज्य की स्थापना के निमित्त बनो..., और यह वो ही बच्चा बन सकता है जो अपने ऊपर attention रख बाप की हर श्रीमत का पालन कर रहा है।

जब आप स्वयं को इस सेवा में busy कर लेते हो तो आप अपनी परिस्थितियों से सहज ही मुक्त हो जाते हो क्योंकि आपको बाप के साथ-साथ सभी आत्माओं की भी दुआयें मिलती है, और यह दुआयें आपको बाप-समान बना देंगी।

इसके लिए आपको स्वयं के ... बाप (परमात्मा शिव) के ... और अपने कर्तव्य के स्मृति स्वरूप बनना है।

जब भी किसी भी आत्मा से मिलो या देखो तो आपके अन्दर हर आत्मा के प्रति बस कल्याण की ही भावना हो और कोई संकल्प नहीं...।

स्वयं को light समझ, light के नीचे रहना है और सभी आत्माओं को भी light ही light देनी है। चाहे तो मन्सा द्वारा ... चाहे तो दृष्टि द्वारा ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
21.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं कि स्वयं परमात्मा बाप इस धरा पर गुप्त रीति आकर परिवर्तन का कार्य शुरू करते हैं ... अर्थात् पहली पढ़ाई यही करवाते हैं कि तुम शरीर नहीं, आत्मा हो ... और यही पहला पाठ सारी पढ़ाई का सार है।

आप जितना-जितना अपने original स्वरुप का अनुभव करते जाते हो, उतना ही आप बाप (परमात्मा पिता) के समीप सम्बन्ध का अनुभव करते हो ... या जितना आप बाप के समीप रहने का पुरुषार्थ करते हो, उतना ही स्वयं के original स्वरूप का अनुभव बढ़ता जाता है..., क्योंकि परमात्मा बाप का सत्य संग बच्चों को बाप-समान बना देता है...।

बच्चे, बाप की पढ़ाई ही परिवर्तन की है। जितना आप पढ़ाई पर attention रखते हो, उतना ही स्वयं को परिवर्तन कर विश्व का परिवर्तन कर देते हो।

और इस समय सभी बाप के नूरे रत्न ... दिलतख्तनशीन बच्चे अर्थात् माला के दाने बच्चे स्वयं के पुरुषार्थ में लगे हुए हैं ... और उनके अन्दर एक ही लगन है कि हम भी जल्दी से जल्दी अपना number fix करें ... अर्थात् ऊँच पद के अधिकारी बनें, क्योंकि ऊँचे पद के अधिकारी बच्चे ही बाप-समान बन, बाप से सर्व सम्बन्धों का सुख अनुभव कर सकते हैं...।

देखो बच्चे, समय समीपता की तरफ बढ़ रहा है ... इसलिए ऊँचा पुरुषार्थ कर ऊँच पद के अधिकारी बनो ... नहीं तो कुछ ही समय के बाद यह पुरुषार्थ खत्म हो जायेगा ... और फिर कुछ नहीं कर पाओगे...!
इसलिए, अपने समय को 100% सफल करो।

आगे-आगे तो परिस्थितियां बढ़नी ही है, इसलिए इससे ना घबरा बाप को सर्व समर्पण कर बाप के संग जाकर बैठ जाओ ... और यही अभ्यास आपको परिस्थितियों से मुक्त कर बाप-समान बनायेगा ... और यदि इस पुरुषार्थ में अलबेले बनें तो कुछ नहीं कर पाओगे...!

जो बच्चे बाप की श्रीमत प्रमाण अर्थात् बाप पर निश्चय रख अपना सब कुछ बाप को समर्पण कर, निश्चिन्त रह, अपना पुरुषार्थ कर रहे हैं, कुछ ही समय के बाद उनके सारे तूफान, तोहफे में परिवर्तन हो जायेंगे ... अर्थात् उनके द्वारा किये गये पुरुषार्थ की प्राप्ति ... स्थूल और सूक्ष्म प्रालब्ध ... प्रत्यक्ष अनुभव होगी, जोकि अन्य आत्माओं को भी स्पष्ट अनुभव होगा ... और यही powerful परिवर्तन उनका number fix कर देगा।

इसलिए बच्चे, अभी भी जो थोड़ा बहुत समय बचा है वो सफल कर लो ... क्योंकि समय अचानक परिवर्तन होना है, और अचानक की घड़ी, अगली घड़ी भी हो सकती है...!

बस बच्चे, check and change की ज़रूरत है जोकि स्वयं पर attention रख, बाप के संग बैठ अर्थात् knowledgeful और powerful बनने से ही हो सकता है।
अच्छा।
ओम् शान्ति।

Om Shanti
22.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आपने जो भी कार्य करना हो, बेफिक्र होकर करो।
बस आप परमात्मा बाप को हर पल अपने साथ रखो। बाप अपने सपूत बच्चों को किसी भी काम की मना नहीं करता है, और बाप अपने सपूत बच्चों पर 100% निश्चय रख, उन्हें विशेष पालना दे, उन्हें पढ़ाई पढ़ाता है।
क्योंकि बाप को पता है - यही मेरे विश्व-परिवर्तक बच्चे हैं...।
और जिस तरह बाप आप बच्चों पर निश्चय रख निश्चिन्त रहता है, ऐसी ही अवस्था आप बच्चों की भी होनी चाहिए...!

देखो बच्चे, बाबा बार-बार कहता है कि इस समय drama की हर scene में आपका ही कल्याण समाया हुआ है और जब हर बात में है ही कल्याण तो आपको असोचता और हल्का रहना चाहिए ना...!

सोचो तो सही इतनी ऊँची बात कौन कह रहा है...?
स्वयं परमपिता परमात्मा ... जिसे दुनिया ढूंढ रही है और वो आपके पास आ आपकी पालना कर आपको अपने लक्ष्य तक पहुँचाने में आपकी मदद कर रहा है...!
तो फिर आप भी तो निश्चय रखो ना...!

निश्चय रखने पर ही निश्चिन्त स्थिति होगी, नहीं तो मन सोच-सोच कर भारी हो जायेगा...।

लौकिक में भी जब हर कार्य ठीक रीति या कल्याणकारी रीति से चल रहा हो तो वो जीव आत्मा खुश रहती है और कार्य को आगे बढ़ाती है ... और उसे अपने हर कार्य में सफलता भी मिलती है।

और यहाँ तो भगवान स्वयं आकर आप बच्चों को कह रहा है कि बच्चे निश्चिन्त रहो..., आपके हर कार्य को बाप कल्याण से भर देगा, चाहे इस समय वो आपको अकल्याणकारी लग रहा हो ... परन्तु आप इसमें अपना 100% कल्याण समझो क्योंकि इस समय बाप आपका ज़िम्मेवार बना है ... और बस आप अपना 100% attention स्वयं पर दे मंज़िल पर पहुँचो ... अन्यथा समय बीत जाने पर आप अपने ज़िम्मेवार स्वयं होंगे...!

हल्के रह drama के हर scene को साक्षी होकर देखो, और उसे बाप को समर्पण करने का पुरुषार्थ करते रहो। बस इतना-सा attention रखने पर भी बाप आपको full सहयोग देगा ... और बहुत ही थोड़े से थोड़े समय में बाप की कमाल पर कमाल शुरु हो जायेगी...।

बस, बाप की कमाल देखने के लिए निश्चिन्त अवस्था अत्यधिक ज़रूरी है।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
23.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, बाप ने बहुत महीनता से आप बच्चों को सारी पढ़ाई पढ़ा दी है, ताकि आप सहज रीति अपने लक्ष्य तक पहुँच सको ... परन्तु पढ़ना तो आप बच्चों को ही है।

बाबा ने तो विस्तार में आप बच्चों को बता ही दिया है कि जब तक सम्पन्न नहीं बनोगे तब तक परिस्थितियाँ आती रहेंगी।
परन्तु आप बच्चों को ऊँच स्वमान में रह, बाप को संग रख हर paper को हल्का कर देना है..., और जिन बच्चों ने इसका अभ्यास किया है वो powerful बन इन परिस्थितियों को सहज ही पार कर रहे हैं और बहुत थोड़े से थोड़े समय में उनकी प्राप्तियाँ और बढ़ जायेगी...।

बाप तो पढ़ा सभी बच्चों को रहा है, सो इस पढ़ाई की importance को समझ इसे अपनी दिनचर्या में apply करो।

सबकुछ अर्थात् परिस्थितियों के साथ-साथ अपना स्वभाव भी बाप को समर्पित करो ... स्वयं पर attention रख बार-बार करो ... रुहानी drill करो ... बाप को संग रखने की भिन्न-भिन्न युक्तियां use करो।

देखो, जब आप निमित्त बन बाप की याद में बैठ जाते हो तो आपका सूक्ष्म स्वरूप तैयार होना शुरु हो जाता है।
बस दृढ़तापूर्वक जितना समय fix करते हो, उतना समय बैठो।

यदि इस यात्रा में थक जाओगे या घबराओगे तो आपकी यात्रा stop हो जायेगी।
फिर आप मंजिल पर कैसे पहुँचोगे...?

बस बच्चे, अपने मन-बुद्धि पर attention ही तो रखना है ... और दृढ़तापूर्वक बाप की याद में बैठना है...।

देखो, प्राप्तियां अपरमअपार है और जो बच्चे हार कर बैठ जायेंगे उनका पश्चाताप भी अपरमअपार है ... क्योंकि इस मार्ग पर करना कुछ भी नहीं है ... एक तो attention रखना है ... और दूसरा दृढ़तापूर्वक चलना है ... स्वयं पर निश्चय रखकर चलो...।

बहुत थोड़े से थोड़े समय में इस मार्ग में परिस्थितियों का force बढ़ जायेगा। इस कारण आत्मायें स्वयं में उलझ जायेंगी और चाहकर भी बाप को साथ नहीं रख पायेंगी...!
फिर देखो, जबकी अभी समय है तब भी बाप का सहयोग नहीं ले पा रहे हैं, तो आगे कैसे लेंगे...?

इसलिए दृढ़तापूर्वक स्वयं पर attention रखो, क्योंकि आप स्वयं के साथ कई आत्माओं के ज़िम्मेवार हो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
24.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ।
क्योंकि समय अनुसार एकाग्रता की शक्ति की अत्यधिक आवश्यकता है।

एकाग्रता की शक्ति वाला ही अचानक के paper में पास हो पायेगा।
यदि अभी-अभी पुरुषार्थ खत्म हो जाएं तो आपकी result क्या होगी...?

देखो बच्चे, पुरूषार्थ इसी तरह अचानक ही खत्म होगा और जिस बच्चे ने स्व-स्थिति के आसन पर अर्थात् ऊँच स्वमान में स्थित रहने का और परमात्मा बाप को अपने संग रखने का अभ्यास किया होगा वो ही अचानक के paper में pass होगा।
कई बच्चे सोचते हैं कि हम अचानक के paper में तो pass हो जायेंगे ... परन्तु अचानक का paper बहुत भयानक होगा ... जिस बात में आप कमज़ोर हो अचानक का paper उसी बात का आयेगा ... और वो समय स्वयं के साथ-साथ बाप की याद भुलाने वाला होगा ... वो समय ऐसा होगा जिसमें आप विस्मृत हो जाओगे अर्थात् आप स्वयं ही परिस्थिति में वा समय के बहाव में इतना ज्यादा उलझ जाओगे कि स्वयं की याद वा बाप की याद भूल जायेगी...!

परन्तु जो बच्चा अभी से ही अपने ऊँच स्वमान में स्थित होने की drill कर रहा है और साथ ही साथ अशरीरी बन अपने बाप के पास घर (परमधाम) जाने का भी पुरूषार्थ कर रहा है अर्थात् जो स्वयं को आत्मा realize कर बाप के साथ सर्व सम्बन्ध जोड़ने का पुरूषार्थ कर रहा है अर्थात् बाप की श्रीमत् पर चलने का 100% attention दे रहा है ... वो ही बच्चा अचानक के paper में बाप की मदद से PASS WITH HONOUR बन पायेगा...।

इसलिए बच्चे, स्मृति स्वरुप बनो। मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास बढ़ाओ।

बाबा बार-बार कह रहा है कि अचानक ... अचानक ... अचानक ...।

तो इस बात की importance अर्थात् समय के महत्व को समझ ... बाप (परमात्मा शिव) की समझानी के महत्व को समझ ... पुरूषार्थ करो, अन्यथा बाप भी कुछ भी नहीं कर पायेगा...।

अन्तकाल आप अकेले हो जाओगे और वो घड़ी केवल पश्चाताप की होगी...!

इसलिए, सोच-समझकर अपने एक-एक second को सफल करो।
अभी का पुरूषार्थ ही अन्तिम विजय का आधार है...।

अच्छा । ओम् शान्ति ।

Om Shanti
25.01.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, समय अनुसार अब आप बच्चों की स्थिति एकरस होनी चाहिए।

यह स्थिति आपकी तब होगी, जब आपमें वैराग्य वृत्ति होगी अर्थात् एक ही लगन होगी कि अब घर (परमधाम) जाना है।

साथ ही साथ इस दुनिया में रहते आप बच्चों के अन्दर हर आत्मा के लिए चाहे वो कितनी भी अपकारी हो, उनके प्रति प्रेम, रहम और कल्याण की भावना होनी चाहिए ... क्योंकि वो आत्मा कल्प पहले मुआफिक अपना accurate role play कर रही है।

जैसे-जैसे आप आत्माओं के अन्दर शान्ति और पवित्रता की शक्ति बढ़ती जायेगी तो देव कुल की आत्मायें जो भविष्य में आपके समीप आने वाली आत्मायें हैं, वो automatically आपके समीप आती जायेगी ... और देर से आने वाली आत्माओं का automatically आपसे connection कम होता जायेगा ... अर्थात् वो स्वयं ही अपने संस्कार के वशीभूत, आपसे न्यारी होती जायेंगी।
और न्यारी होते हुए भी सदा आपकी शुभ-भावना और शुभ-कामना के कारण महसूस करेंगी कि यह तो श्रेष्ठ आत्मायें हैं ... हमसे अलग हैं...!
यह परिवर्तन अपने आप होगा, इसके लिए आप बच्चों को कुछ नहीं सोचना...।

बस, आपको तो हर आत्मा के संस्कारों को परख उसके according उनके सम्पर्क में आना है ... अर्थात् पहले से ही उनके part को जान present में रह शुभ-भावना, शुभ-कामना के साथ तुरन्त बिन्दी लगा, बिन्दी बन, बिन्दी बाप (निराकार शिव) के संग बैठ जाना है ... अर्थात् एक भी संकल्प ऐसी आत्माओं के प्रति व्यर्थ ना चले...।

आप हो विश्व-कल्याणकारी बच्चे, तो आपको पहले सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं का कल्याण करना है, तो ही विश्व का कल्याण होगा...।

बच्चे, बस आपको knowledgeful बन स्वयं पर attention रखना है अर्थात् आपको स्वयं को देखते रहना है कि मेरी मन-बुद्धि कहाँ-कहाँ जा रही है...?
और फिर powerful बन अर्थात् बाप को अपने संग रख, मन-बुद्धि को ठीक direction पर लाने का पुरुषार्थ करते रहना है ... फिर विजय आप बच्चों की ही है...।

Present में रहने का मतलब ... पहले का बीता हुआ एक second, past है और आने वाला अगला second, future है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
26.01.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अपने संकल्पों के महत्व को जान अपने संकल्पों की रचना करो।

• आप कुछ एक श्रेष्ठ ब्राह्मणों के संकल्पों से ही पुरानी दुनिया का अन्त और नई दुनिया की आदि होती है।
• आपके संकल्पों के द्वारा ही मुक्ति-जीवनमुक्तिधाम के gate खुलते हैं अर्थात् सभी आत्मायें पहले घर जाती हैं, फिर नम्बरवार अपना part play करने आती है।
• आपके संकल्पों के आधार से ही इस पाँच तत्वों की दुनिया में हर जड़ और चेतन चीज़ कार्य करती है...।

सो अब अपने संकल्पों के महत्व को समझो और व्यर्थ पर विशेष attention दो, क्योंकि व्यर्थ संकल्प आत्मा को भारी कर देते हैं और कई बार तो यह व्यर्थ का किचड़ा आत्मा को मैला भी कर देता है अर्थात् flawless बनने में बहुत बड़ा बाधक बन जाता है।

यदि बाप-समान बनना है, तो केवल positive संकल्पों की रचना करो जोकि बहुत थोड़े और शक्तिशाली होंगे...,अर्थात् स्वयं पर attention रखो।
बस इसके लिए बार-बार स्वयं को अपनी seat पर अर्थात् अपने स्वरूप पर ... अपने गुणों और शक्तियों की स्मृति रखनी है और हर हाल में बाप को संग रखना है ... पर इसके लिए भारी नहीं होना ... बस attention रखना है ... attention रखते-रखते बाप हमें अपने समान बना लेगा और फिर हमारे संकल्पों के द्वारा सतोप्रधान दुनिया की स्थापना हो जायेगी।

बस स्वयं पर और बाप पर 100% निश्चय...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
27.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने देखा कि बच्चों के अन्दर काफी परिवर्तन आया है और बाबा बच्चों को देख-देख खुश हो बच्चों की महिमा के गीत गाते हैं - वाह बच्चे वाह..., वाह मेरे दिलतख्तनशीन बच्चे वाह..., वाह मेरे नूरे रत्न बच्चे वाह...।

इसी तरह स्वयं पर attention रख, स्वयं में परिवर्तन की speed तेज़ करते जाओ, फिर natural ही आपका स्वरूप श्रेष्ठ हो जायेगा...।

अब समय अनुसार जिस भी negative वा व्यर्थ संस्कार का त्याग किया है, वो आपके जीवन से सदा के लिए, खत्म हो जाना चाहिए।

इसके लिए सदा बाप की श्रीमत कहो ... समझानी कहो, को अपने साथ रखना है। सदा सर्व समर्पण हो बाप पर 100% निश्चय रख, निश्चिन्त स्थिति में रहना है, परन्तु अलबेला नहीं होना...।

बाप पर 100% निश्चय रख निश्चिन्त रहने के लिए आप बच्चों को;
1) पहला - knowledgeful अर्थात् ज्ञान स्वरूप होकर रहना है।
2) दूसरा - powerful अर्थात् परमात्मा बाप को सदा अपने संग रखना है अर्थात् योग स्वरूप होकर रहना है।
3) तीसरा - गुण स्वरूप और शक्ति स्वरूप होकर रहना है अर्थात् बाप-समान स्थिति में स्थित रहना है।

ज्ञान, योग, धारणा - इन तीनों को अपने जीवन में practically apply करने का attention रखना है।

जब आप स्वयं का अर्थात् आत्मा को स्वच्छ बनाने का attention रख पुरुषार्थ करोगे, तो बहुत जल्दी ही बाप की मदद से flawless diamond बन पाओगे।

बस बच्चे, परमात्मा बाप के सहयोग का सम्पूर्ण फायदा उठा, अपने सम्पूर्ण स्वरुप को धारण कर, विश्व-परिवर्तन का कार्य करो...।

बाप के साथ-साथ यह सारा विश्व अर्थात् यह स्थूल दुनिया आपके इंतज़ार में ही है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
28.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं कि बाप की पढ़ाई ही परिवर्तन की है अर्थात् स्वयं को शरीर की बजाए आत्मा समझना...।

आप बच्चों को हमेशा समझना है कि मैं आत्मा हूँ ... विशेष आत्मा हूँ ... साधारण नहीं हूँ ..., मेरे सारे कर्म विशेष होने चाहिए...।

बच्चे, ऐसा परिवर्तन तब ही सम्भव है जब आप स्मृति स्वरूप रहते हो अर्थात् आपको सदा याद रहे कि मैं Godly student हूँ ... मैं देव लोक में जाने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ ... मैं विश्व-परिवर्तक हूँ...।

और जब आप स्मृति स्वरूप स्थिति में रहते हो तब आपके पुराने संस्कार आते तो हैं, परन्तु आप पर भारी नहीं होते ... अर्थात् आप अपने पुराने संस्कारों को संकल्पों में ही खत्म कर देते हो, वाचा और कर्मणा तक नहीं आने देते...।

जब आप विस्मृत होते हो, तब आपके पुराने संस्कार अपना काम कर जाते हैं, जिससे कि आपका हिसाब-किताब बन जाता है...!

बच्चे, अपना नया हिसाब-किताब बनाना बन्द करो, तब ही तो आप अपने पुराने हिसाब-किताब finish कर प्राप्तियों का अनुभव कर सकते हो...।
बस इसके लिए स्वयं पर attention की ज़रूरत है।

जब आप बच्चों के अन्दर परमात्मा बाप की knowledge समा जायेगी, तब आप अपना नया हिसाब-किताब नहीं बनाओगे...।
और जब आपके अन्दर बाप की याद समा जायेगी तब आप powerful बन जाओगे ... और आपके पुराने संस्कार जलकर भस्म हो जायेंगे।
तब ही आप बाप-समान, गुण स्वरूप और शक्ति स्वरूप बन पाओगे।

बच्चे, बाप की पढ़ाई की एक-एक point को महीनता से समझ, उसे अपने जीवन में apply करो।
ऐसे ही पढ़कर नासमझी में छोड़ मत दो...।

जितना आप बाप (परमात्मा पिता) की समझानी को ... बाप की याद को, अपने जीवन में सदा प्रयोग करते जाओगे, उतना ही आपको सफलता मिलेगी ... इससे आपका उमंग-उत्साह और खुशी बढ़ेगी।
फिर तो आप हल्के हो अपनी मंज़िल पर समय से पहले पहुँच जाओगे...।

परमात्मा बाप का यूँ आकर पढ़ाना - इसे आप हल्के रूप में मत लेना...।
जो इसकी importance को समझेगा, वो ही बाप-समान बन पायेगा अन्यथा वो अन्य आत्माओं से भी ज्यादा पश्चाताप की अग्नि में जलेगा और यही उसकी कल्प-कल्प की बाज़ी बन जायेगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
29.01.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्वयं को आत्मा समझ मुझ परमपिता परमात्मा के संग को बढ़ाओ।

जितना आप स्वयं के और बाप के अनुभवी स्वरूप बनते हो, उतना ही आप बाप (परमात्मा पिता) के समीप आते जाते हो ... और यही अभ्यास ज्वालामुखी योग में परिवर्तन हो जाता है।

ज्वालामुखी योग अर्थात् भीषण पवित्र आग, जिसमें आप तो सम्पूर्ण पावन बन ही जाते हो और साथ ही साथ पूरे विश्व से भी पाप और विकारों का नाश हो जाता है और फिर सभी आत्मायें पवित्र बन घर (मुक्तिधाम) को जाती हैं...।

बच्चे, अब इस अभ्यास को बढ़ाओ क्योंकि विश्व में विकार, भ्रष्टाचार, पाप अत्यधिक बढ़ चुका है।
सभी आत्माओं के दुःख और परेशानियां बढ़ती जा रही है...।

बस कुछ समय में ही आत्माओं का तड़पना स्पष्ट नज़र आने लग जायेगा।
परन्तु उससे पहले आप स्वयं को सम्पूर्ण रीति बाप को समर्पण कर बाप-समान बन जाओ...।

क्योंकि कुछ एक बच्चों के ज्वालामुखी याद से ही विश्व-परिवर्तन का काम होना है ... और इस कार्य में बहुत कम, माइनर-सा समय बचा है, क्योंकि चिंगारी लगने में टाइम लगता है परन्तु जब आग फैलने लग जाती है ... तो झट से सब भस्म कर देती है...।

इसी तरह दुनिया में दुःखों की ... परेशानियों की ... आग बढ़ रही है और दूसरी तरफ आप बच्चों की योग पॉवर भी बढ़ रही है।
बस आपकी पवित्र योग-अग्नि ही इस दुनिया की पाप-अग्नि को भस्म करेगी और उसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा...।

इसलिए बच्चे, अपने महत्व को समझ ... अपने श्रेष्ठतम् स्वमान में स्थित हो कर्म व्यवहार में आओ, तब ही तो बाप की कमाल पे कमाल शुरु होगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
30.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप सब बच्चों के अन्दर अब एक ही लग्न होनी चाहिए कि अब घर (परमधाम) जाना है ... "मुझ आत्मा को बाप के (पिता परमात्मा) संग घर जाना है।"

यही लग्न आपको सभी दुःखों से मुक्त कर बाप-समान बना देगी...।

देखो बच्चे, यह अन्त में जो भी परिस्थितियाँ आ रही है, वो आपको powerful बनाने और इस पाँच तत्वों की दुनिया से न्यारा करने आ रही हैं।

बस आप स्वयं को श्रेष्ठ आत्मा समझ परमात्मा बाप की याद में रहो, तब सभी तूफान तोहफा बन जायेंगे।

इसलिए powerful बन इनसे घबराओ मत बल्कि अपनी seat पर set हो सबकुछ बाप को समर्पित कर हल्के हो जाओ..., और जब भी इस तन का हिसाब-किताब आये तो इस तन को भी बाप को समर्पण कर बाप की याद में बैठ जाओ, फिर जल्दी ही बाप सब परिवर्तित कर देगा...।

देखो बच्चे, पुराना हिसाब-किताब जब चुक्तु होता है तो थोड़ी बहुत भोगना तो होती ही है, परन्तु तब बच्चों को सब कुछ भूल जाता है और केवल बाबा ही याद रहता है।

बस बच्चे, अमानत में खयानत मत करना...!
बाप की श्रीमत को 100% follow करने का attention रखना ... क्योंकि यह पुरुषार्थ सदा का है ... सदा का पुरुषार्थ ही आपको दुनिया से न्यारा कर बाप का प्यारा बनायेगा।

बस वो समय भी बाप की आँखों के सामने ही है और बहुत जल्दी आप भी अनुभव करोगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
31.01.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, परमात्मा बाप है त्रिकालदर्शी ... फिर भी वो स्वयं धरती पर आ आप बच्चों को मनुष्य से देवता ... और देवता से आप समान बनाने का कार्य करता है।

बाप की नज़रों में तो सदा बच्चे ही समाये रहते हैं और बाप बच्चों के प्यार में समा जाता है। वतन में बैठ बच्चों का श्रृंगार करता रहता है ताकि बच्चे जल्दी से जल्दी बाप-समान बन बाप से मिलन मनाये ... क्योंकि बाप को भी बाप-समान बच्चों से मिलन मनाना अच्छा लगता है...।

अब तो बाप का भी घर जाने का समय समीप आ गया है अर्थात् शान्तिधाम का gate खुलने वाला ही है, परन्तु उससे पहले बाप स्थापना का कार्य पूरा करवा बच्चों के प्यार में बच्चों को full response दे ... अर्थात् बच्चों को तृप्त कर, फिर घर का दरवाज़ा खोलता है...।

बच्चे, सूक्ष्मवतन में बाप और बच्चों का मिलन बहुत अनोखा और आनन्दमय मिलन है। इसलिए अभी से ही उस मिलन के आनन्द का अनुभव करो।
जितना आप बाप (परमात्मा पिता) के प्यार में खोये रहोगे, उतनी जल्दी ही मिलन के आनन्द का अनुभव कर पाओगे।

परन्तु balance का अर्थात् बाप से मिलन और स्थूल सेवा ... जिसके निमित्त बाप ने आपको बनाया है, उसका विशेष ध्यान रखना ... क्योंकि बाप से सम्पूर्ण मिलन मनाने के लिए बाप-समान बनना पड़ेगा और जो आत्मा ज्ञान स्वरूप ... गुण स्वरूप ... और शक्ति स्वरूप होगी, वो ही बच्चा बाप-समान बन, बाप से मिलन का प्रत्यक्ष अनुभव कर, बाप के कर्तव्य को सम्पन्न करेगा।

इसलिए बच्चे, इस मार्ग में balance की अत्यधिक आवश्यकता है ... drama में आत्मा के द्वारा किये गये हर संकल्प ... बोल ... और कर्म में balance चाहिए...।

बस बच्चे, आप स्वयं पर full attention रख इस मार्ग पर चलते चलो, फिर जल्द ही मंज़िल पर पहुँच जाओगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti

01.02.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब समय अनुसार समर्पण भाव को बढ़ाते जाओ...।

जितना-जितना समर्पण भाव को बढ़ाते चले जाओगे ... उतना ही मैं और मेरे-पन से दूर अर्थात् वैराग्य वृत्ति अर्थात् एकरस स्थिति अर्थात् निन्दा ... स्तुति ... सुख ... दुःख ... मान ... अपमान ... सबमें एक-समान स्थिति हो जायेगी...।

बच्चे, जितना-जितना समर्पण भाव बढ़ता जायेगा, उतना ही अशरीरी स्थिति में स्थित होना easy हो जाएगा ... इच्छाओं का अन्त हो जायेगा ... सन्तुष्टता ... खुशी ... और उमंग-उत्साह बना रहेगा, जिससे आप हल्के रह उड़ते रहोगे और कर्म करते भी कर्म से न्यारे रह कर्मातीत अवस्था हो जायेगी।

बच्चे, इस स्थिति को ही बाप-समान स्थिति कहा जाता है।

इस स्थिति में स्थित रहने से आप बच्चों को बहुत सहज कामयाबी मिलेगी और आपके संकल्प भी सिद्ध होने शुरु हो जायेंगे...।

बस बच्चे, attention दे जो कुछ भी मेरा है उसे तेरा-तेरा करने का पुरुषार्थ करो ... यहीं पुरुषार्थ आप बच्चों को PASS WITH HONOUR बना देगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
02.02.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते है ... बच्चे, आप निश्चिन्त रहो ... बाबा की श्रीमत पर चलने की कोशिश करते रहो ... जब तक आपका पुराना हिसाब-किताब clear नहीं होता, तब तक स्थिति ऐसे ही ऊपर-नीचे होगी...!

परन्तु ... आप बच्चों को स्वयं पर attention रखने का पुरुषार्थ करना ही है ... इसमें ना ही थकना है ... और ना ही हार खानी है ... बस, आपकी श्रीमत पर चलने की कोशिश ही आपको विजयी रत्न बनायेगी।

देखो, जब रास्ता थोड़ा difficult अर्थात् ऊँचाई के साथ-साथ smooth भी नहीं होता तो speed, automatically कम हो जाती है।
यदि, यात्री फिर भी आगे बढ़ने का पुरुषार्थ करता रहे, तो कुछ मुश्किल रास्ता तय कर आगे रास्ता भी तय हो जाता है और उसका experience भी बढ़ जाता है।

और यहाँ तो परमात्मा बाप की आप बच्चों पर direct नज़र है, तो बाप तो आप बच्चों का पुरुषार्थ देख आपको जल्द ही आपकी मंज़िल तक पहुँचा ही देगा ... बस, धैर्यतापूर्वक पुरुषार्थ करते रहो...।

साथ ही साथ स्वयं को ज्ञान स्वरूप ... गुण स्वरूप ... शक्ति स्वरूप बनाने पर भी attention रखना।

बस, स्वयं को बाबा की श्रीमत प्रमाण चलाने का attention ही आपको बाप-समान बना देगा..., इसलिए आप दिलशिकस्त मत होना ... बस धैर्यतापूर्वक पुरुषार्थ करते रहना...।

बच्चे, किसी हाल में भी अपनी खुशी मत छोड़ना, आपकी खुशी ही आपको उमंग-उत्साह दिला आपकी मंज़िल तक पहुँचायेगी...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
03.02.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, महसूस करो कि चारों तरफ *light ही light* है ... बस *light ही light* है..., मैं आत्मा अपने घर में हूँ ... परमधाम, अपना घर केवल *light ही light* है ... हज़ारों सूर्य से भी तेजोमय *light ही light* है...।

यह *light* सुख ... शान्ति ... शक्ति ... पवित्रता अर्थात् सभी गुणों से भरपूर है ... यह *light* मन को शीतल और आनन्दमय करने वाली है ... इस *light* के आगमन से ही दुनिया का परिवर्तन होगा...।

बस स्वयं को भी *light* समझना है और अनुभव करना है कि मेरे चारों तरफ भी बस *light ही light* है ... यह *light* इन स्थूल नेत्रों से नहीं देखी जा सकती ... बस अनुभव की जा सकती है।

जिस तरह इस स्थूल दुनिया की सारी कारोबार चाहे direct ... चाहे indirect, *light* के आधार से ही चलती है ... *light* नहीं तो कुछ भी नहीं...।

इसी तरह इस अलौकिक जीवन में *परमात्म light* नहीं, तो कुछ भी नहीं...।

इसलिए अपने इस अनुभव को बढ़ाते जाना है। स्वयं को भी *light ही light* समझना है ... जो *light* ... ज्ञान, गुणों और शक्तियों से भरपूर है...।

जितना हम स्वयं को *light* अनुभव करते जायेंगे ... साथ ही साथ परमात्मा बाप जोकि एक *powerful light* हैं, उनके नीचे रह, चारों तरफ *light ही light* फैलाने का अनुभव और अभ्यास बढ़ाते जायेंगे, उतनी जल्दी ही इस विश्व का परिवर्तन होगा।

बस बच्चे, अब इसी अनुभव को बढ़ाओ जोकि बहुत सहज है और प्राप्तियाँ भी अपरमअपार है...।

यह *light* ही हमें सम्पन्न बनायेंगी ... साथ ही विश्व का कल्याण करेगी ... ।

बच्चे, जब आप हलचल वाली परिस्थिति में शान्त हो ... खुश हो ... अर्थात् परिस्थिति के समय भी शक्ति और गुणों को साथ रखते हो तो आप *light-might* स्वरुप में हो।

बस, इसी तरह किसी ना किसी विधि द्वारा *light* को अपने साथ रखो - इस *light* के द्वारा ही silence की science पर विजय होगी।
बस बच्चे, *light* भव ... *might* भव ...।

अच्छा। ओम् शान्ति

Om Shanti
04.02.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्वयं को आत्मा अर्थात् point of light ... मास्टर सर्वशक्तिमान् समझ, मुझ परमात्मा अर्थात् point of light सर्वशक्तिमान् को याद करो - यह याद ही आत्मा को शक्तिशाली बनाती है...।
और शक्तिशाली आत्मा ही सर्व परिस्थितियों को सहज ही पार कर अपनी मंज़िल पर पहुँच सकती है।

बस बच्चे, स्वयं को इस पुरुषार्थ में busy रखो।
जितना आप स्वयं को ऊँच स्वमान में अनुभव करोगे अर्थात् स्वयं को विशेष आत्मा समझ कर्म-व्यवहार में आओगे, उतना ही इस जड़जड़ीभूत दुनिया से न्यारा होना सहज हो जायेगा और न्यारी आत्मा ही बाप की प्यारी बन, बाप (परमात्मा पिता) के कार्य में मददगार बन सकती है...।

बच्चे, स्वयं के मन-बुद्धि पर attention रखो और बार-बार मन-बुद्धि द्वारा स्वयं को ऊँच स्वमान में स्थित कर सर्वशक्तिमान् बाप के संग जाकर बैठ जाओ।

देखो बच्चे, यह जो समय जा रहा है, वह इस कल्प का अन्तिम अर्थात् last घड़ियाँ जा रही है ... तो सभी आत्माओं का हिसाब-किताब clear होना है और सभी को शान्त और पवित्र बन घर जाना है।
परन्तु उनसे पहले आपको अपना हिसाब-किताब clear कर, अपने अनादि स्वरुप में स्थित हो बाप के संग बैठ, विश्व-कल्याण का कार्य करना है।

इसलिए, आपको अपनी कमी-कमज़ोरी ... हिसाब-किताब सबको बिन्दी लगा अर्थात् मन-बुद्धि द्वारा हर चीज़ से साक्षी हो स्वयं को ऊँच स्वमान में स्थित करना है ... यही अभ्यास आपको बाप की मदद का पात्र बनायेगा अर्थात् बाप की याद से शक्तिशाली बनने वाली आत्मा ही स्वयं का और विश्व का कल्याण कर सकती है।
अच्छा। ओम् शान्ति।

ओम शांति।

Om Shanti
05.02.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, परिस्थितियों के बारे में ज्यादा सोचो मत अर्थात् उधर ध्यान मत दो ... बल्कि उस समय सब कुछ बाप को समर्पण कर बाप की याद में बैठ जाओ, तो आपका सम्पन्न (फरिश्ता) स्वरुप आपके रास्ते की सभी रुकावट साफ कर, आपको मंज़िल पर शीघ्र ही पहुँचा देगा...।
पर इसके लिए बाप की हर श्रीमत को अपने साथ रखो...।

Drama का जो scene चल रहा है ... जैसे भी चल रहा है ... उससे साक्षी हो जाओ, हलचल में अचल रहो...।

यह साक्षी और अचल स्थिति समय से पहले ही आपकी हर problem को solve कर, आपको हल्का कर ... आपको अपनी मंज़िल पर समय से पहले पहुँचा, विश्व-परिवर्तन के कार्य की आपकी percentage को बढ़ायेगी ... जो कार्य, आपको और भी बाप के समीप अर्थात् माला में number आगे लेने में मददगार बनेगा।

बस बच्चे, स्वयं पर full attention रखो...।

यदि आप योग स्वरुप ... अर्थात् बाप की याद भूल भी जाती है या कोई गलती भी हो जाती है, तब भी घबराना नहीं है ... बल्कि फिर बाबा-बाबा कर अपने रास्ते पर आ जाना है।

आप जितना knowledgeful रहोगे और साथ ही साथ स्वयं पर भी attention रखोगे तो जल्दी ही आपकी सभी कमी-कमज़ोरी भी खत्म हो जायेगी, जोकि बस खत्म होने वाली ही है...।

देखो, बाप तो सबकुछ जानता है ... इसलिए आप बच्चों का बाप के प्रति सच्चा प्यार और लगन देख आपको समझानी देता रहता है, ताकि बच्चे शीघ्र ही अपने लक्ष्य स्वरुप बन जाये...।

बस, आप भी बाप पर 100% निश्चय रख बाप की श्रीमत प्रमाण चलते चलो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
06.02.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, परमात्मा बाप धरा पर आया ही है इस दुःख भरी दुनिया को सुख भरी दुनिया बनाने अर्थात् कलियुग को सतयुग बनाने ... और अति दुःख का समय आने से पहले ही बाप अपने बच्चों को पढ़ा अर्थात् ज्ञान और शक्ति दे इस दुःख की दुनिया से न्यारा कर देता है।

परन्तु उन बच्चों को जो बच्चे बाप पर 100% निश्चय रख, निर्भय हो बाप की अँगुली पकड़ चलते रहते है...।

और देखो, आप बच्चों के पास तो मैं direct आ गया हूँ ... और आपकी हर समस्या का समाधान करने अर्थात् दुःख को सुख में परिवर्तन करने के लिए मैं बंधा हुआ हूँ।

यह जो भी समस्या आप बच्चों के पास आ रही है वो आपके कल्याण के निमित्त ही आ रही हैं।
यह परिस्थितियां ही आपको powerful बना, सच्चा हीरा बना देती है।

बस, आप बाप पर निश्चय रख बाप की अँगुली अर्थात् श्रीमत पकड़ चलते चलो...।
सोच-सोच कर भारी मत होना, सर्वशक्तिमान् बाप आप बच्चों के साथ है।

आप बच्चों का भविष्य बहुत उज्जवल है, इसलिए बाप पर निश्चय के साथ-साथ अपने ऊँच स्वमान पर भी 100% निश्चय रखो। यह निश्चय ही विजय का आधार है...।
एक संकल्प भी व्यर्थ नहीं होना चाहिए...।

आप बच्चों के साथ जो कुछ भी हो रहा है उसमें बस कल्याण ही समाया हुआ है। सर्वशक्तिमान् बाप की direct नज़र आप बच्चों के ऊपर है, तो आप भी मैं और मेरा करने की बजाए तेरा-तेरा कर, हल्के रह खुशी-खुशी से आगे बढ़ो...।
फिर आपके रास्ते की हर रुकावट खत्म होती जाएगी...।

यदि घबरा जाओगे फिर बाप का हाथ और साथ छूट जायेगा।

हिम्मत से चलते चलो ... बस थकना मत...।
थकावट आना अर्थात् हार जाना और संकल्पों से हार खाने वाले व्यक्ति की विजय असम्भव है।

विजय आपका जन्म-सिद्ध अधिकार है, इस निश्चय और नशे में रहो।

यह मत सोचो कि किसी भी समस्या का समाधान कब होगा, कैसे होगा ... बल्कि यह सोचो; बाप (परमात्मा शिव) ज़िम्मेवार है जब भी होगा, जैसे भी होगा उसमें केवल मेरा ही कल्याण है - यह निश्चय और निश्चिन्त अवस्था ही आपको मंज़िल तक पहुँचाएगी।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
07.02.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब अपनी देह से ममत्व मत रखो, यह बिल्कुल जड़जड़ीभूत तन है। बस आप निमित्त बन इसकी संभाल करो, परन्तु इसमें फँसो मत। स्वयं को 100% बन्धनमुक्त बनाओ...।
• किसी भी स्थूल धरणाओं के लिए भी ज्यादा rigid मत बनो।
• सूक्ष्म धारणाओं की तरफ ध्यान दो ... अर्थात् स्वयं के स्वभाव-संस्कार को परिवर्तन करो।

आप बच्चों को 100% बाप की याद में अर्थात् किसी-न-किसी विधि द्वारा बाप के संग का अनुभव करने का पुरुषार्थ करना है...।

आप बच्चों को हठयोगी नहीं, सहजयोगी बनना है।
• सहजयोगी आत्मा ही हल्की और खुश रह सकती है।
• सहजयोगी अर्थात् बाप की याद में, बाप से रूह-रिहान में, या बाप को संग रखने में खुशी का अनुभव करना...।

बस आपका यही attention रहे कि मैं बाप की श्रीमत् प्रमाण अर्थात् मेरी मन्सा-वाचा-कर्मणा बाप की श्रीमत् प्रमाण है...?

जितना आप बाप की श्रीमत् प्रमाण चलोगे उतना ही आपको double light और हल्केपन का अनुभव होगा।

बस इसके लिए knowledgeful बनना है।
Knowledgeful आत्मा ही powerful बन सकती है और धारणा स्वरूप भी...।

बस आपका 100% attention केवल स्वयं पर होना चाहिए ... कोई आत्मा कुछ भी बोल रही है या कर रही है, उसे आप बाप हवाले कर दो या फिर बाप की श्रीमत् प्रमाण उसके साथ loveful और lawful होकर चलो ... परन्तु आप बच्चों की भावना अर्थात् intention उनके प्रति बहुत शुभ और कल्याण की होनी चाहिए...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
08.02.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, सर्व समर्पण हो जाओ ... अर्थात् आप बच्चों के पास जो कुछ भी है, सब (बुद्धि से) बाप को सौंप दो...।

मैं और मेरेपन में रहने वाली आत्मा ना ही ज्ञानी है ... ना ही योगी ... और ना ही धारणा स्वरूप बन सकती है।
यदि किसी भी आत्मा के अन्दर minor सा भी मैं और मेरापन है, तो बाप-समान बनना असम्भव है।
इसलिए बच्चे, मैं और मेरा ... इसका त्याग करो...।

सूक्ष्म रीति स्वयं की checking करो और change करते जाओ ... निमित्त बन कर्म-व्यवहार में आओ, तब ही आप कर्म के प्रभाव से बचे रह सकते हो...।

जब भी किसी तरह की ज़िम्मेवारी स्वयं की समझते हो तो आप उसमें फँस जाते हो ... यदि उस कार्य की ज़िम्मेवारी कोई और सम्भाल लें, तो आप हल्के रह अन्य कार्य कर सकते हो।

और यहाँ तो स्वयं भगवान बाप बन, आप बच्चों की ज़िम्मेवारी उठाने आ गया ... फिर आपका कर्तव्य केवल बाप के कार्य में सहयोगी बनना ही है और इतने बड़े कार्य में सहयोगी केवल ज्ञान स्वरूप ... योग स्वरूप ... और धारणा स्वरूप आत्मा ही बन सकती है।
बाप के कार्य में सहयोगी आत्मा ही बाप-समान आत्मा है...।
जिस बच्चे को बाप पर 100% निश्चय है, वो ही सर्व समर्पण हो सकता है और बाप-समान बन सकता है...।

देखो बच्चे, इस समय बाप (परमात्मा शिव) केवल आप विशेष बच्चों के कल्याण के लिए ही आपको पढ़ाने आया है ... बस आप बाप पर निश्चय रखो।

देखो, भक्ति में भी गायन है कि “भगवान के घर देर है, अन्धेर नहीं ... जिस पर भगवान की नज़र है उसका कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता...” और यहाँ तो स्वयं भगवान आपका अपना बन गया ... भला कभी बाप अपने सपूत बच्चों का अकल्याण देख सकता है क्या...? नहीं ना...!
फिर बाप पर निश्चय रखो और बाप की knowledge को महीनता से समझ स्वयं की checking कर change होते जाओ।
अभी आप बच्चों को बाप का full सहयोग है।
फिर तो हल्के रहो, खुश रहो और उमंग-उत्साह के साथ बाप के संग रह अपनी मंज़िल तक पहुँचो...।

जो बच्चा इस समय बाप पर 100% निश्चय रख सर्व समर्पण हो चल रहा है, उसका हर कार्य समय से पहले होगा और अत्यधिक कल्याणकारी भी ... और जिस बच्चे के निश्चय में कमी है अर्थात् ‘एक बल - एक भरोसा’ नहीं है, उसका समय से पहले मंज़िल पर पहुँचना असम्भव है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
09.02.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप साधारण नहीं हो ... आप एक विशेषतम् आत्मा हो।
अपने ऊँच स्वमान को भूलो मत...।

देखो, बाप ने आप बच्चों को कितने ऊँच स्वमान दिये हैं;

• आप हो मास्टर भगवान्,
• मास्टर बाप
• मास्टर माँ
• मास्टर रचयिता ... आदि-आदि...।

हर पल अपने ऊँच से ऊँच स्वमान में स्थित रहो। जैसे ही आप बच्चे ऊँच स्वमान में स्थित होते हो तो आपकी powerful vibrations से आस-पास का वातावरण change होने लगता है ।
• आप विश्व कल्याणकारी, विश्व परिवर्तक आत्मायें हो ... फिर बताओ, आप बच्चों का अकल्याण कैसे हो सकता है...?
• आप हो विघ्न-विनाशक, फिर आप बच्चों के आगे विघ्न कैसे ठहर सकता है...?

समय अनुसार भिन्न-भिन्न स्वमान के स्मृति स्वरूप बनो, knowledgeful बनो, powerful बनो, समय की चेतावनी को समझो...।

ऐसा ना हो आप समय के इन्तज़ार में रहो और समय अन्दर ही अन्दर अपना कार्य finish कर, परिवर्तन का कार्य कर दे...।

देखो बच्चे, समय तो परिवर्तन होना ही है ... वो किसी के लिए भी रूकेगा नहीं..., इसलिए आप समय को परिवर्तन करने के निमित्त बनो, अन्यथा समय आपको परिवर्तन कर देगा और उसमें प्राप्ति कुछ नहीं - बस पश्चाताप ही है...!

इसलिए, बाप की ऊँच पालना का return दो ... समय से पहले स्वयं को परिवर्तन करो अर्थात् आपका ऊँचा स्वमान natural हो जाये...।
फिर समय परिवर्तन हो जायेगा और पुरुषार्थ finish...।
बस बच्चे, जो ओटे सो अर्जुन अर्थात् check and change...
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
10.02.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, महसूस करो ... कि मैं एक बहुत चमकदार हीरा, ज्ञान-सूर्य की रोशनी के नीचे हूँ ... सूर्य की रोशनी पड़ने से मेरे में से भिन्न-भिन्न रंगों की powerful किरणें निकल, फैल रही है ... यह गुणों और शक्तियों की किरणें निकल चारों तरफ फैल रही हैं ... जैसे चकाचौंध हो जाती है ना, वैसा-सा ही scene है...।

बच्चे, स्वयं को हमेशा सभी खज़ानों से सम्पन्न आत्मा महसूस करो।

आप बच्चों के अन्दर सभी गुण और सभी शक्तियाँ विद्यमान है। आप परमात्मा बाप के समीप रत्न बच्चे हो ... तो आप हो गये मास्टर भगवान् ... तो आप सबको स्वयं को इतनी ऊँच authority समझकर चलना है।

अब आप बच्चों को बाप ने स्वयं आकर सारी स्मृति दिलाई है कि आप कौन हो और आपका कर्तव्य कितना powerful है ... और आप सर्वगुण और सर्वशक्ति सम्पन्न आत्मा हो...।

बस, आपको अपने गुणों और शक्तियों को use करना है। जितना आप use करोगे, उतनी ही आपकी स्मृति बढ़ती जायेगी...।
फिर जल्दी ही आपका original स्वरूप स्पष्ट नज़र आयेगा।

बस बच्चे, स्वयं पर और बाप पर निश्चय रख चलते जाना ... थकना मत ... आगे प्राप्तियाँ अपरमअपार है ... और बाप को संग रख उमंग-उत्साह के साथ आगे बढ़ो...।

बस बच्चे, drama का scene परिवर्तन होने वाला ही है।
बस, धैर्यतापूर्वक चलो अर्थात् wait and watch...

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
11.02.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब तो हर आत्मा बाप (परमात्मा शिव) के ज्ञान को सुनना और समझना पसन्द करती है ... और वैसे भी ज्ञान को या स्वयं को प्रत्यक्ष करने के लिए ज्यादा वाचा शक्ति की ज़रुरत होती है।

परन्तु परमात्मा बाप को प्रत्यक्ष केवल बाप-समान बच्चे ही कर सकते हैं...।

यही अन्तिम कार्य स्वयं बाप अपने बच्चों के द्वारा करवाने direct आ गया है ... और बाप को आप बच्चों पर बहुत उम्मीदें है।

बस, अब आप बच्चे स्वयं को बाप-समान समझ हर संकल्प करो ... अपने संकल्पों में बाप के साथ की शक्ति भर दो, जिससे आपके एक-एक संकल्प समर्थ और powerful हो...।

आपके powerful संकल्पों से ही सृष्टि परिवर्तन होनी है...।
इसलिए अपने संकल्पों पर full attention रखो।

जितना-जितना बाप की याद आप बच्चों के अन्दर समाई हुई होगी, उतना ही आपका हर कार्य युक्ति-युक्त होगा।

बस बच्चे, अब आपके पास केवल शुभ संकल्पों का अर्थात् ज्ञान-गुण-शक्तियों से भरपूर संकल्प होने चाहिए।

बीज powerful हो और उसकी पालना स्वयं भगवान कर रहा हो तो फूल, फल और पत्ते कैसे होंगे...?
अर्थात् आप बच्चों के एक-एक कर्म और बोल बहुत सुखदाई होंगे...।

बस, स्वयं को बाप की श्रीमत प्रमाण चलाने का पुरुषार्थ करते रहो ... alert होकर पुरुषार्थ करना।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
12.02.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, यह पढ़ाई ही स्व-परिवर्तन की है।

यह जो मन है ना, यही बस आपका है और सब तो पराया है ... और मन का प्रभाव ही इन (तन, धन, जन) सब चीज़ों पर पड़ेगा...।

और बाबा ने देखा है कि पहले से सबकुछ परिवर्तन हुआ है, और आप स्व की checking, स्व कर सकते हो।

लौकिक में भी कोई भी बड़ी seat अर्थात् कोई भी बड़े पद के लिए बड़ा इम्तहान pass करना पड़ता है और last paper सबसे difficult होता है, परन्तु एक intelligent बच्चे के लिए अर्थात् जिसने अपना समय अपनी पढ़ाई में लगाया है, वो easily final paper में भी pass हो जाता है।

इसी तरह, जो बच्चा अभी बाप की श्रीमत प्रमाण चल रहा है ... वो अवश्य ही बहुत जल्द से जल्द अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगा, वो भी बहुत सहज रीति।
बस बच्चे, आप अपनी checking करते रहो कि आपका मन कितना हल्का और खुश रहता है...?

जितनी जल्दी आप किसी भी बड़ी से बड़ी बात को बिन्दी लगा देते हो और जब आप सदा हल्के और खुश रहते हो, तो आप समझना कि बस अब एक कदम ही तो रह गया है...!

और देखो paper तो अन्त तक आयेंगे...।
प्रकृति के पाँचों तत्व और पाँचों विकार भिन्न-भिन्न रूप से अर्थात् नये-नये रूप से आपका paper ले अर्थात् आपको सम्पन्न बनाने आयेंगे। जब आप विजयी बन जाओगे, तो आप बच्चों के आगे यह समर्पण हो जायेंगे ... और यह ही तत्व और विकार positive रूप से आपके सहयोगी बनेंगे।
बस, अभी आप स्व पर attention रखो...।

देखो बच्चे, आप कर्म क्षेत्र पर हो, तो आप बच्चों को कर्म तो करना ही है अर्थात् कर्म में मन-बुद्धि को लगाना ही पड़ता है ... परन्तु आप checking रखो कि;
• कहीं भी आपको कोई खिंचावट तो नहीं है...?
• सबकुछ करते हल्के रहते हो क्या...?

अभी तक आप पुरूषार्थ कर बाप (परमात्मा शिव) को अपने संग रख रहे थे ... परन्तु अब आपकी natural nature बनती जा रही है, बाप को संग रखने की...।
और यदि आप हल्के और खुश रहते हो, तो आप परमात्मा बाप के संग भी हो और बाप-समान भी...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
13.02.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, science हैं आत्माओं की बुद्धि द्वारा की गई खोज। यह powerful है और इस कलियुग के अन्त में मनुष्य आत्माओं के जीवन का आधार है।

परन्तु silence (शान्ति) - यह है परमात्म शक्ति ... जो इस समय आप बच्चों को बाप के द्वारा प्राप्त होती है ... और जिस आत्मा के पास यह शक्ति है, वो सदा विजयी है ... उसको जीतना असम्भव है।

जहाँ शान्ति है, वहाँ सन्तुष्टता है ... सहनशीलता है ... मधुरता है ... अचल स्थिति है ... अर्थात् सभी गुण और सभी शक्तियाँ है।

यदि शान्ति की percentage में फर्क है, तो आपके अन्दर अन्य गुण और शक्तियों में भी कमी होगी।

इसलिए हमेशा check करो कि;
• मैं कुछ भी बोलते हुए, करते हुए या सुनते हुए बिल्कुल शान्त अर्थात् अचल रहता हूँ...?
• कोई भी बात वा परिस्थिति मुझे हलचल में तो नहीं लाती...?

यदि हिलते हो तो फिर से अपनी शान्त स्थिति में स्थित हो बाप के संग जाकर बैठ जाओ, परन्तु हमेशा स्वयं पर attention रखना कि यह परमात्म शक्ति मुझे परमात्म gift के रूप में मिली है, जोकि मेरी विजय का आधार है ... तो इसे मुझे स्मृति में रख use करना है।
जितना आप use करोगे, उतनी यह शक्ति बढ़ती जायेगी...।

जिसके पास silence की शक्ति है, तो उसकी science पर विजय है ही है...।

हर पल स्वयं की checking करनी चाहिए कि हम शान्त हैं...?

हमें शान्ति की स्थिति को किसी भी हाल में नहीं छोड़ना है। यह शान्ति की स्थिति ही हमारी सभी प्राप्तियों का आधार है।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
14.02.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, संगठन में रहते समझानी तो देनी पड़ती है।

देखो, बाप भी आ अपने बच्चों को समझानी दे, दे ... क्या से क्या बना देता है...!

जब बाप अपने बच्चों को समझानी देता है, तो उसमें केवल प्रेम, रहम, कल्याण की ही भावना होती है। इसी तरह, आपकी समझानी में भी प्रेम, रहम और कल्याण ही समाया हुआ होना चाहिए, तो उस समझानी का positive result आयेगा, जिससे आपका भाग्य भी ऊँचा बन जायेगा।

बच्चे, बस वैसे ही करते जाओ जैसे बाप कहता है ... ज्यादा सोचो नहीं...।
हर बात में केवल अपना कल्याण समझो क्योंकि बाप आया ही है, आप बच्चों के कल्याण के लिए...।
बस बाप पर 100% निश्चय रखो।

बाबा की कमाल हर बच्चे के लिए होगी। हर बच्चा सन्तुष्ट और खुश होगा।

बस, इसके लिए स्वयं पर attention दे ... बाप की श्रीमत प्रमाण चलने का पुरूषार्थ करते रहो ... और कुछ मत सोचो...।

दूसरा, ध्यान में रखना - हर आत्मा इस समय अपना accurate part play कर रही है और साथ में आप बच्चे भी...।
इसलिए स्वयं के साथ-साथ हर आत्मा के part को साक्षी होकर देखो ... अर्थात् सर्व समर्पण हो जाओ...।

आपके सम्पूर्ण समर्पण होते ही परमात्म कार्य की speed तेज़ हो जायेगी ... जोकि पहले आप महसूस करोगे, फिर विश्व की सभी आत्मायें...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
15.02.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, यह drama बहुत lawful बना हुआ है। इसमें first number से last number की आत्मा के लिए same law है।

बस, सभी आत्मायें अपनी-अपनी शक्ति अनुसार अपना part play करती हैं ... और उसी according परमधाम में भी अपनी-अपनी seat ग्रहण करती है।

इसी कारण सभी आत्मायें अन्त के समय खुश और सन्तुष्ट हो घर (परमधाम) जाती है।

बस बाप (परमात्मा शिव) का काम तो सभी आत्माओं का कल्याण करना है अर्थात् उनके दुःख हर उन्हें शान्ति और सुख देना है।

सभी आत्माओं की light अपनी-अपनी है।
किसी की अत्यधिक ज्यादा light है, किसी की कम ... अर्थात् नम्बरवार है और वो उसी according ही विश्व में light फैला रहे हैं।

जैसे स्थूल में भी bulb होते हैं, उनकी अपनी-अपनी voltage होती है, उनका connection एक ही powerhouse से होने के बावजूद, light वो अपनी power के according फैलाते है...।

इसी तरह जितनी powerful आत्मा अर्थात् जितनी ज्यादा light है, उतनी ज्यादा power वो बाप से खींचती है।

बच्चे, जितना आपके संकल्पों में विश्व-कल्याण का कार्य समाया रहेगा, उतना ही आप बाप के समीप बैठ विश्व-कल्याण का कार्य कर पाओगे।

बस, इसके लिए स्वयं को ज़िम्मेवार आत्मा समझो...।

देखो, स्थूल में भी जिस कार्य की ज़िम्मेवारी समझते हो उसके लिए दिन-रात एक कर देते हो।

बच्चे, जिस चीज़ को भी आप दिल से accept कर लेते हो, उसे धारण करना सहज होता है और छोड़ना मुश्किल...।

इसी तरह, जब आप अपनी वा दूसरों की कमज़ोरी accept करते हो अर्थात् सोचते हो कि मेरा सोचना ठीक ही है ... इसके ऐसे करने पर ऐसा बोलना ठीक ही है ... तो फिर उस अवगुण का निकलना मुश्किल हो जाता है।

इसलिए स्वमान की seat पर set हो यह सोचो की मुझे क्या सोचना है, क्या बोलना है और क्या करना है ... क्योंकि दिल से किये गये कार्य में सफलता ना मिले, यह असम्भव है...।
हो सकता है result में थोड़ा समय लगे, परन्तु result powerful ही मिलेगा...।

बस, आप बाप की श्रीमत को दिल से accept कर चलते चलो। इसके बीच कोई question mark नहीं..., बस बिन्दु...।

फिर तो सहज ही आप बाप-समान बन जाओगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
16.02.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... आप बच्चों को हर आत्मा के साथ बहुत-बहुत प्यार के साथ रहना है, परन्तु अब आप बच्चे अपने सम्बन्ध-संपर्क में आने वाली आत्माओं को ज्यादा ज्ञान सुनाना बन्द करो।

Check करो ... इतने सालों तक आपने अभी तक उन्हें ज्ञान दिया, उसका result क्या...?
अब उन्हें बाप हवाले करो...।

देखो बच्चे, किसी भी आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखना अच्छा है, परन्तु check रखना कि शुभ भावना, शुभ कामना मोह वश ना हो...!
क्योंकि मोह वश रखी शुभ भावना, शुभ कामना अपना कार्य नहीं करती...!

मोह में फँसी आत्मा किसी का कल्याण नहीं कर सकती...!

इसलिए महीनता से अपनी checking रखना कि मेरी यही भावना हर आत्मा के प्रति है या कुछ एक आत्मा के प्रति...?

देखो, बाबा ने आप बच्चों को बता ही दिया है कि इस ईश्वरीय परिवार की सभी आत्मायें विशेष हैं, परन्तु नम्बरवार हैं...। इसलिए अब आप बच्चों को अपने आपको समझानी दे, स्वयं पर attention रख, स्वयं को बाप-समान बनाना है...।

वैसे भी देखो, जब आप किसी को ज्यादा ज्ञान सुनाते हो तो उसके अन्दर नहीं जाता ... परन्तु जब आप छोड़ देते हो, तो वो अपनी मन-बुद्धि चलाता है...।

जैसे;
किसी बच्चे को जब swimming सिखाई जाये और वो ना सीखें, तो उसे पानी में छोड़ दो, तो वो स्वयं को बचाने के लिए अपने हाथ-पांव मार बाहर आ जाता है, क्योंकि उसने सीखा तो सही ... परन्तु अनुभव ना करने के कारण ध्यान नहीं दिया...।

इसी तरह कुछ एक आत्माओं को छोड़ने में ही उनका कल्याण और आपका कल्याण समाया हुआ है।

आप अपने अन्दर कोई कमज़ोर संकल्प मत लाओ।
• कमज़ोर संकल्प आगे बढ़ने नहीं देता...।
• उमंग-उत्साह में रहो।
• अपनी विशेषताओं को देखो, तो आपकी गति तीव्र हो जायेगी...।

बाबा किसी भी बच्चे की कमज़ोरी तब बताता है ... जब बाबा यह देखता है कि बच्चा, सच्चे दिल से पुरुषार्थ कर रहा है, परन्तु ज्ञान को ठीक रीति ना समझने के कारण आगे नहीं बढ़ रहा है...!
इसलिए उसके कल्याणवश बाबा उसे समझानी देता है।

बच्चे, अपना attention बढ़ाते चलो ... आपकी सम्पन्नता ही अन्य आत्माओं को खींचेगी।

यदि आप इतना समय लगाओगे, तो वो आत्माएं सम्पन्न कब बनेंगी...?

समय की रफ़्तार को देख, पुरुषार्थ करो।
अब अलबेलापन 100% छोड़, दृढ़तापूर्वक पुरुषार्थ करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
17.02.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, ऐसे अनुभव करो कि जैसे एक बहुत powerful light विश्व globe की तरफ बहुत तेज़ी से आ रही है।

बच्चे, यह पवित्रता की light है ... जिसके धरती पर आने पर सभी विकारों का नाश हो जायेगा और पवित्र दुनिया की स्थापना हो जायेगी...।

देखो बच्चे, धरती की सफाई हो रही है ... इसलिए, तमोप्रधानता अति में दिखाई दे रही है, परन्तु यह अन्त की निशानी है।

अब वो समय है जब अन्त भी अति में है ... अर्थात् अब कल्प की बिल्कुल अन्तिम घड़ियाँ चल रही है, जिसमें सभी आत्माओं की सफाई हो रही है...।

और इस समय जो-जो आत्मायें इन विकारों से सुख और खुशी की minor सी भी अनुभूति कर रहे हैं, तो उन आत्माओं को भी दुःख की भासना आयेगी ... अर्थात् जितना इन विकारों से सुख का अनुभव कर रहे हैं, उससे पदमगुणा ज्यादा दुःख का अनुभव करेंगे...!

और दूसरी तरफ आप आत्मायें, जोकि बाप-समान बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो, वो बहुत ही जल्द नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बाप-समान बन जायेंगे...।

देखो, यह बाप पारलौकिक बाप है ... जो अति सूक्ष्म से सूक्ष्म परन्तु साथ ही साथ सर्वशक्तिमान् है...।

तो बाप आप बच्चों में ऐसी शक्ति भर देगा जिससे आप सहज ही इस कलियुगी दुनिया से न्यारे हो बाप-समान स्थिति का अनुभव करोगे...।

बस बच्चे, सबकुछ भूल एक परमात्म प्यार में खो जाओ ... समा जाओ..., बस और कुछ नहीं करना। बार-बार परमात्मा की गोद में जाकर बैठ जाओ।

आप सम्पन्ता के बिल्कुल नज़दीक हो, इसलिए ज्यादा सोचो मत...। बस बाबा के प्यार में खोये रहो...।

यह परमात्म प्यार ही न्यारापन लायेगा...।

कुछ भी हो जाये ... चाहे किसी से, चाहे स्वयं से, वो सब कुछ बाप (परमात्मा पिता) को सुना बाप की गोद में समा जाओ...।

प्रेम करो परमात्मा से, प्रेम ही सुख का सार है...। अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
18.02.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, जबकी यह कल्प का, अन्तिम से भी अन्तिम समय जा रहा है और परमात्मा बाप भी अपने प्यारे-प्यारे बच्चों की direct पालना के लिए आ गया है, तो बाप की 100% नज़र अपने बच्चों पर ही रहती है कि बच्चे, किस स्थिति में स्थित रहते हैं...!

तो बाबा ने देखा कि बच्चे स्वयं पर attention भी रख रहे हैं और बड़े प्यार से स्व-परिवर्तन का पुरूषार्थ भी कर रहे हैं...। परन्तु बीच-बीच में अलबेले हो जाते हैं...!

बच्चे, अब समय व्यर्थ करने का समय नहीं है...।

जितनी आप पर बाप की नज़र है, उतना ही आप स्वयं पर attention रखो।

दूसरा, ज्यादा मेहनत मत करो...। जो भी कमी-कमज़ोरी आती है उसे झट से छोड़ दो। जब आप उसे अपनी समझ लेते हो तो उसे छोड़ने का पुरूषार्थ करते भी वो छूटती नहीं..., फिर थक जाते हो...!

इसके लिए ... एक तो स्वयं को ऊँच स्वमान में स्थित रख बाप के संग रहो। दूसरा, कोई गलती हो तो उसे झट से छोड़ अपने अनादि संस्कारों का सिमरण करो। जिससे आपमें शक्ति भर जायेगी।

और इस समय तो आप बच्चों को बाप (परमात्मा पिता) का भी full सहयोग है।

बस बच्चे, बाप के प्यार में समा जाओ, खो जाओ, जिससे आप सहज ही बाप-समान बन जाओगे...।

यह यात्रा ऊँची-नीची अर्थात् smooth नहीं है ... इसलिए बच्चे थक जाते हैं, परन्तु धैर्यतापूर्वक चलते चलो...।

बाप पर निश्चय रख, बाप की अंगुली पकड़े रखो। फिर आप भी जल्दी अपनी मंज़िल को अनुभव कर पाओगे...।
मंज़िल को अनुभव करना ... अर्थात् सुख और आनन्द का अनुभव करना…। अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
19.02.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अपनी checking करते रहो कि...,
• मेरे संकल्पों में किसी भी आत्मा से कोई complaint तो नहीं है...?
• और साथ ही साथ क्या, क्यों, कैसे, ऐसे, वैसे अर्थात् कोई भी question mark या excuse तो नहीं है...?
• अर्थात् आप एक सम्पूर्ण प्रेम स्वरूप आत्मा हो...?
• आपके अन्दर हर एक आत्मा, चाहे वो कैसी भी हो ... उन सबके प्रति दिल से शुभ भावना, शुभ कामना है...?
तब ही आप खुश और हल्के रह सकते हो...।

देखो, यह जो कल्प का अन्तिम scene चल रहा है ... तो समय प्रमाण सभी आत्मायें तमोप्रधान बन चुकी है और वो अति गिरावट की तरफ जा रही हैं।

परन्तु दूसरी तरफ, आप परमात्मा बाप के संग रह, उनकी श्रीमत प्रमाण ऊपर से ऊपर उड़ते जा रहे हो ... और आपकी प्रेम और कल्याण की भावना ही उनका परिवर्तन करेगी।

इसलिए, अपने संकल्पों को शुद्ध और पवित्र (अन्दर-बाहर एक), शुभ भावना, शुभ कामना से सम्पन्न रखो, तब ही आप बाप-समान बन, बाप के कार्य में सहयोगी बन सकते हो।

बच्चे, अपनी speed तीव्र करो ताकि आप समय से पहले सम्पन्न बन अर्थात् अव्वल number में आ, अपनी final seat पर set हो जाओ।

बस बाप को भी उसी समय का इंतज़ार है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
20.02.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, जो उच्चतम् स्वमान बाप आप बच्चों को दे रहा है, उसके स्मृति स्वरूप बन जाओ।

पहले स्वयं पर निश्चय रख यह 100% accept करो कि मैं ही हूँ...।

जब आप संकल्पों के द्वारा अपने उच्चतम् स्वमान को स्वीकार कर लोगे तो स्वमान में स्थित होना सहज हो जायेगा ... और जितना आप अपने स्वमान में स्थित रहोगे, उतना ही आप इस दुनिया से न्यारे अर्थात् इस कलियुगी दुनिया की तमोप्रधानता से न्यारे होते जाओगे..।

और न्यारी आत्मा ही सभी की प्यारी बन सकती है, अर्थात् सभी के सामने प्रत्यक्ष हो सकती है।

देखो बच्चे, माला नम्बरवार ही पिरोई जाती है ... इसलिए जब पहला और दूसरा मणका अपनी-अपनी post पर पहुँचता जायेगा तो automatically एक मणके के नज़दीक दूसरा, तीसरा आता जायेगा अर्थात् सब नम्बरवार तैयार होते जायेंगे।

इसलिए, आप स्वयं को आधारमूर्त समझ व्यवहार में आओ...।

माला के सभी मणके प्रत्यक्ष होंगे। इसलिए, हर बच्चे को स्वयं पर इतना attention रखना है कि हम साधारण नहीं है, विशेष है।

तो हमारा उठना, बैठना, बोलना, चलना, फिरना सब विशेष हो, तब ही तो हर मणका अपनी-अपनी चमक दिखा, अपनी-अपनी seat पर set होगा...।

बस बच्चे, इस समय सब बच्चे अपनी ऊँच authority के स्मृति स्वरूप बनो। इसके लिए बाप को संग रखना अति आवश्यक है।

परमात्मा बाप का साथ ही जल्द से जल्द आपको मंज़िल पर पहुँचा देगा...। अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
21.02.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप मास्टर दाता बन जाओ अर्थात् सम्पन्न...।

स्थूल और सूक्ष्म सभी तरफ से भरपूर, कोई इच्छा नहीं...।
ना ही कोई प्रकार की स्थूल इच्छा, ना ही सूक्ष्म ... अर्थात् बाबा जो खिलाये, जहाँ बिठाये, जिस हाल में भी रखे ... सदा सन्तुष्ट...।
तब ही आप हर आत्मा की इच्छा को पूर्ण कर सकते हो।

यदि स्वयं में 1% की कमी हुई अर्थात् कभी भी कोई भी इच्छा जागृत होती है, तो आप भरपूर वा सम्पन्न नहीं हो ... तो आपसे आत्माओं को उस इच्छा की प्राप्ति नहीं होगी, जिस इच्छा को पूरी करने की आपकी इच्छा होगी...!

इसलिए अब आपको स्वयं पर attention देना है कि आप सदा सन्तुष्ट हो...?

बस, अब आपके अन्दर एक ही इच्छा होनी चाहिए कि बाप-समान बन बाप से मिलन मनाऊँ ... और जब आपकी सभी इच्छायें जड़ से खत्म हो जायेंगी, तो बस बाप से मिलन का अद्भुत अनुभव होना शुरु हो जायेगा।

इसके लिए आपको attention देना है, भारी नहीं होना ... attention देते-देते बाप की मदद के पात्र बन जाओगे अर्थात् सभी इच्छायें 100% समाप्त हो जायेंगी।

तब आपकी झट से जन्मों-जन्मों की इच्छा अर्थात् प्रभु मिलन की इच्छा पूरी हो जायेगी...।

• जो आत्मा सम्पूर्ण हल्की होगी, वो ही दूसरों को हल्का कर सकती है।
• जो सम्पूर्ण सन्तुष्ट होगी, वो ही दूसरों को सन्तुष्ट कर सकती है।
• इच्छा मात्रम् अविद्या वाली आत्मा ही विश्व की आत्माओं की इच्छा को पूर्ण कर सकती है।

इसलिए बच्चे, सब कुछ करते ... सब कुछ के बीच में रहते, सबसे न्यारे - इसे कहते बाप-समान आत्मा...।

100% attention दिया, तो हुआ ही पड़ा है ना...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
22.02.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, गुण स्वरुप और शक्ति स्वरुप बनो अर्थात् अपने गुणों और शक्तियों के स्मृति स्वरुप रहो।

इस समय आप बच्चों के पास यही एक अनमोल खज़ाना है, जिसके द्वारा आप प्रत्यक्षता का झण्डा लहराओगे।

जैसे;
किसी भी आत्मा को अपनी सारी जायदाद कहो, खज़ाने कहो की स्मृति रहती है कि मेरे पास यह-यह है..., इसी तरह आपको भी स्मृति में रहना चाहिए कि मेरे पास सभी गुण और सर्व शक्तियाँ हैं, तब ही तो आप बच्चों के गायन में सर्वगुण सम्पन्न कहा जाता है...।

तो बच्चे, अपने पूज्यपन की स्मृति में रह कर्म व्यवहार में आओ ... आपकी प्रत्यक्षता ही बाप को प्रत्यक्ष करेगी...।

बच्चे, जब आप अपनी दिनचर्या बाप की श्रीमत् प्रमाण बिताते हो, तो आपके हर कदम में पदम है।

देखो बच्चे, बाप आप बच्चों को विश्व के आगे sample बना प्रत्यक्ष करेगा ... तो आपको भी all-round part बजाना पड़ेगा।

यह नहीं कि सबकुछ छोड़कर तपस्या करनी है..., नहीं...।

बच्चे, सब कुछ करते हुए double light अर्थात् मैं light, powerful light के नीचे हूँ और मन से बिल्कुल हल्के हो रहना है।

बच्चे, इसी तरह बाप (परमात्मा शिव) को संग रख चलते चलो। बस, अपनी मनमत mix मत करना...।

बच्चे, आप कही भी हो, यदि बाप की याद में हो ... तो बाप आप बच्चों के संग है और आपके हर कदम में कल्याण ही कल्याण है...।

इसलिए drama के पट्टे पर बाप को संग रख सीधे चलते चलो...। कोई question mark नहीं ... बस बिन्दु...।
फिर आप अपनी मंज़िल पर पहुँचे की पहुँचे...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
23.02.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब समय अनुसार स्वयं परिवर्तन के साथ-साथ विश्व-परिवर्तन के कार्य की गति तीव्र करो।

देखो बच्चे, समय बिल्कुल अति में जा रहा है, तो अन्त भी बिल्कुल समीप ही है।

बस, आप विश्व globe पर बैठ परिवर्तन के संकल्प के powerful vibrations फैलाओ ... जिससे सभी आत्मायें शान्त हो घर (परमधाम) जायें, फिर नम्बरवार इस साकार दुनिया में आ अपना part बजायें...।

देखो, दुनिया में दुःख अति में बढ़ता जा रहा है ... हर आत्मा अन्दर से दुःखी, परेशान और हताश हो चुकी है।

बस, जैसे ही आप powerful दुःखहर्ता-सुखकर्ता की seat पर set होंगे, तो दुनिया के परिवर्तन का कार्य शुरू हो जायेगा।

जैसे;
ताश के पत्तों से ऊँची इमारत बनाई जाये, चाहे कितनी भी carefully बनाई जाये, परन्तु जितनी ऊँची बनाते जायेंगे तो एक ऐसा समय आयेगा जो थोड़ा-सा imbalance से, वा minor सी हवा से ही यह पूरी की पूरी इमारत एक second में गिर जायेगी...!

इसी तरह, अल्पकालीन सुखों से बनी इस दुनिया का भी अन्त का समय आ गया है। इसे गिरने में एक second भी नहीं लगेगा।

बस, हमें अपनी powerful seat पर set हो यह संकल्प करना है।
जैसे ही विजयी रत्न अपनी seat पर set होंगे, तो नम्बरवार सभी आत्मायें भी अपनी seat पर आ जायेंगी ... और फिर उनके संकल्पों से यह पुराना खेल खत्म हो और नया सतोप्रधान खेल शुरू हो जायेगा...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
24.02.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, इस ब्राह्मण जीवन में balance की अत्यधिक आवश्यकता है, क्योंकि लौकिक में रहते अलौकिक जीवन जीना, यह एक knowledgeful आत्मा अर्थात् बुद्धिमान आत्मा ही knowledgeful हो सकती है ... और पूर्ण रीति balance बना, अलौकिक जीवन जीते लौकिक सम्बन्धों को ठीक रीति निभा सकती है ... और इसी के लिए गुणों और शक्तियों की ज़रूरत है...।

देखो बच्चे, आप हो प्रवृति मार्ग वाले, पवित्र गृहस्थ आश्रम वाले ... और आपको अपने कर्म व्यवहार और अपने बोल से ही प्रत्यक्ष होना है।

इसलिए स्वयं पर full attention रखनी है।

दिनचर्या के हर कर्म में, बोल में balance बनाकर चलो, जिससे ना तो आप disturb होंगे और ना ही अन्य...।

देखो बच्चे, इस drama में हर आत्मा का part अर्थात् स्व-स्थिति, परिस्थिति, ज्ञान, योग, प्राप्तियाँ अपनी-अपनी है ... एक की ना मिलें दूसरे से...।

इसलिए अपना सब कुछ बाप को समर्पण कर, knowledgeful बन, आगे से आगे बढ़ो...।

यदि कहीं भी मूँझते हो तो आपस में रूह-रिहान कर स्वयं को ठीक करो ... अन्यथा भारी हो जाओगे, फिर उड़ना मुश्किल हो जायेगा...!

बस बच्चे, बाप (परमात्मा शिव) पर निश्चय और स्वयं के part पर निश्चय रख आगे से आगे बढ़ो।

आपके हर कदम में बाप की श्रीमत समाई हुई होनी चाहिए ... क्योंकि खेल एक second में ही परिवर्तन हो जायेगा ... फिर आप कुछ नहीं कर पाओगे ... जो करना है अभी-अभी कर लो, फिर ना ही बाप मिलेगा और ना ही यह ऊँच भाग्य बनाने की विधि...।

अभी-अभी कर लो, अन्यथा कभी भी नहीं...! अर्थात् कल्प-कल्प की यहीं नूँध हो जायेगी...।

बस, बाप की अंगुली पकड़ चलते चलो, समय आते ही बाप अपनी गोदी में बिठा, ऊपर बिठा लेगा...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
25.02.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बार-बार यह अभ्यास करो कि मैं *light* ... *light* के शरीर में हूँ...।
बस मैं *light* हूँ ... और इसी *light* में सभी गुण और शक्तियां है।

बच्चे, बार-बार इस *light* का अभ्यास कर इसमें सभी गुण और सभी शक्तियों का अनुभव करो।
बार-बार attention दे ऐसा करो...।

हिम्मत रख करते चलो, हिम्मत रखने पर बाप की मदद है ही है ... और जहाँ परमात्मा बाप की मदद है वहाँ यह अनुभव ना हो, यह असम्भव है...।

बस, हिम्मत रख बार-बार स्वयं पर attention दो ... चलता-फिरता *light house* बन जाओ...।

जब आप बाप पर 100% निश्चय रख यह अभ्यास करते हो, तो आपकी एकाग्रता बढ़ जाती है, जिससे सफलता बहुत जल्द ही प्राप्त हो जाएगी...।

और जब आप बच्चों ने स्वयं को एक *light house-might house* अनुभव कर लिया, तो अन्य आत्माओं को भी आपसे साक्षात्कार होना शुरू हो जायेगा ... क्योंकि जब तक आप स्वयं को *light* अनुभव नहीं करते तब तक आपका सम्पन्न स्वरूप भी आपको धारण नहीं कर सकता...!

इसलिए, इस अभ्यास को बढ़ाते चले जाओ ... और जब इस अभ्यास में आपको सुख-शांति की अनुभूति होनी शुरू हो जाएगी अर्थात् न्यारापन अनुभव होना शुरू हो जायेगा ... तब ही आपका परिवर्तन सो इस विश्व का परिवर्तन हो पायेगा...।

देखो बच्चे, आप भी *light* ... आपका बाप भी *light* और आपका घर (परमधाम) भी *light*...।

बस *light ही light* है...।

भृकुटी के मध्य एक *powerful light* का अनुभव करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
26.02.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप आत्माएं point of light हो..., और बाबा भी point of light हैं...।

• गुण और शक्तियाँ...?
वो भी light हैं...।
• परमधाम...?
वहाँ भी light है...।
और
• सूक्ष्मवतन में...?
वहाँ भी light ही light है...।

बच्चे, जब सबकुछ light है फिर आप स्वयं को भी light अनुभव करो ना...।

जितना आप स्वयं को point of light समझोंगे, तो आपका तीसरा नेत्र खुल जायेगा। इससे आप त्रिकालदर्शी बन जाओगे।

बच्चे, स्वयं को light समझ light को अर्थात् हर गुण और शक्ति को order प्रमाण चलाओ ... उन्हें स्व-कल्याण सो विश्व-कल्याण के निमित्त use करो।

जितना-जितना आप light का अनुभव बढ़ाते जाओगे, उतना ही सहज रीति आप इस स्थूल दुनिया से न्यारे होते जाओगे।

यह न्यारापन आपको सहज ही बाप-समान बना, बाप (परमात्मा शिव) के संग बिठा विश्व-परिवर्तन का कार्य कर देगा।

बाबा बार-बार कह रहे हैं कि बच्चे, स्वयं को light अनुभव करो ... सोचों मैं light हूँ ... बस light ही light है ... इस light से इस अंधकारमय दुनिया में रोशनी आ जायेगी।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
27.02.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप अपनी यात्रा पर तत्पर रहो अर्थात् आपकी मन-बुद्धि केवल अपनी यात्रा पर और अपनी मंज़िल पर पहुँचने की attention में रहें।

बच्चे, आपको सदा अपने ऊँच स्वमान में स्थित हो परमात्मा बाप को संग रख, अपनी यात्रा सम्पन्न कर, सम्पूर्ण बन, इस विश्व का कल्याण करना है।

इस समय सभी आत्माओं की नज़र direct-indirect आप बच्चों पर ही है।

सभी आत्मायें आप बच्चों का आह्वान कर रही है कि हे दु:खहर्ता-सुखकर्ता आओ..., आकर हमारा कल्याण करो...! और बाप की नज़र भी आप बच्चों पर ही है कि जल्दी से जल्दी बच्चे अपनी यात्रा पूरी कर सारे विश्व का परिवर्तन करें।

देखो बच्चे, आप निमित्त बनते हो सर्व के कल्याण के लिए, इसमें अकेला बाप भी कुछ नहीं कर सकता। वो भी drama के नियम में बँधा हुआ है।

देखो, बाप तो आ सभी आत्माओं को एक-समान पालना देता है और पढ़ाई भी एक-समान पढ़ाता हूँ ... परन्तु बच्चे अपने निश्चय और प्यार के according अर्थात् सच्चा दिल जोकि आदि से अन्त तक रहा ... उसी के according नम्बरवन और नम्बरवार बन जाते हैं।

इसलिए आप स्वयं पर और बाप पर निश्चय रख, आगे से आगे बढ़ते रहो...।

बस, बहुत-बहुत जल्दी ही drama का scene परिवर्तन होने वाला है।
इस समय सभी आत्मायें अपने अभी तक बजाए गए part के according ही परिस्थितियों का सामना कर रही है और करती रहेंगी अर्थात् जिस आत्मा ने accurate part play किया होगा, वो तो सहज ही न्यारा हो ऊँच भाग्य बना लेगी और दूसरी आत्मायें अति दु:ख में फँस जायेगी...!

परन्तु आपकी powerful शुभ-भावना, उन आत्माओं का कल्याण कर उनको घर (परमधाम) का रास्ता दिखायेगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
28.02.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब आपकी अचल, अडोल और एकरस स्थिति होनी चाहिए।

ऐसी स्थिति वाली आत्मा ही second में तन से न्यारी हो सकती है।
यदि हलचल में होंगे, तो detach होना मुश्किल हो जायेगा...।

अचल, अडोल, एकरस स्थिति बनाने के लिए मालिक सो बालक बन जाओ ... अर्थात् सभी कर्मेन्द्रियों के मालिक बन उन्हें अपनी आज्ञा अनुसार चलाओ ... फिर बाप के बच्चे, अर्थात् बालक बन, सर्व समर्पण हो जाओ...।

जब सब कुछ है ही ईश्वर का, फिर तो आप बेफिक्र अर्थात् अचल स्थिति में स्थित हो गए ना...!
बच्चे, अचल स्थिति के लिए present में रहना अति आवश्यक है।

देखो, past तो वैसी भी व्यर्थ है ... जो आत्मा को भारी कर देता है और आपका future बाप के हाथ में सुरक्षित है।

बस, बाप पर निश्चय रख निश्चिन्त रहो ... और present में तो बाप है ही आपके साथ, इसलिए सदा बाप की अँगुली पकड़ चलते चलो...।
फिर तो मंज़िल पर पहुंचे की पहुंचे..।

बस बच्चे, attention दे पुरुषार्थ करते रहो, ज्यादा सोचो मत। ज्यादा सोचने पर थक भी जाते हो और अलबेले भी हो जाते हो ... फिर बताओ मंज़िल पर कैसे पहुंचोगे...?

इसलिए बाप पर 100% निश्चय रख, मंज़िल को बिल्कुल समीप मान, बहुत उमंग-उत्साह के साथ आगे से आगे बढ़ते जाओ...।

हर कमी-कमज़ोरी को full-stop लगा, बिंदु बन, बिंदु बाप के संग जाकर बैठ जाओ...। अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
01.03.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्वयं को भिन्न-भिन्न अभ्यास में busy रखो...।

• कभी स्व-स्थिति के, अर्थात् ऊँच से ऊँच स्वमान में स्थित हो सबको आत्मिक दृष्टि से देखो अर्थात् सभी आत्माओं के कल्याण के निमित्त बन जाओ...
• तो कभी बाप के संग जा, बीज रुप स्थिति में स्थित हो जाओ ... अर्थात् बाप के प्यार में समा जाओ या powerful योग का अनुभव करो...
• तो कभी विश्व globe पर बैठ मन्सा सेवा करो...
• और कभी बाप (परमात्मा शिव) से विभिन्न सम्बन्धों का अनुभव करो...
• और कभी light-might का powerful अनुभव करो...
• और कभी फरिश्ता बन विश्व का चक्र लगाओ...।

इस तरह विभिन्न अभ्यास में अपने समय को सफल करो।

बेफिक्र अर्थात् निश्चिन्त और हल्की आत्मा ही इस तरह के विभिन्न अभ्यास में स्वयं को busy रख सकती है।

बच्चे, जब आप बाप की श्रीमत प्रमाण चलते हो ... तो बाप भी आपके कल्याण अर्थ आपकी सभी ज़िम्मेवारी सम्भाल लेता है।

बस, धीरज रख चलते चलो...।
जितना बाबा पर निश्चय होगा, उतना ही धीरज अर्थात् शांति बढ़ती जाएगी...।

और जिस आत्मा के पास शांति का गुण हो वो हर paper में pass हो PASS WITH HONOUR बन ही जाता है...।

बच्चे, सम्बन्ध सम्पर्क में भी बड़ी धैर्यतापूर्वक चलना है।

देखो, आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्मायें आपको आगे बढ़ाने के निमित्त बनी है, इसलिए इस समय इनके व्यवहार को ना देख, इन्हें अपना शुभ चिन्तक समझ इनके प्रति शुभ भावना - शुभ कामना रखो अर्थात् इन्हें दुआयें दो ताकि इनका भी कल्याण हो ... जिसमें आपका भी कल्याण समाया हुआ है...।

Paper में pass होना अर्थात् मंज़िल पर पहुंचना...।

हर पल बाबा को साथ रखो अर्थात् बाप और बाप की श्रीमत को देख चलते चलो ... जिससे सहज ही मंज़िल पर पहुँच जाओगे...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
02.03.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे आप शरीर नहीं हो, आप एक आत्मा हो ... बिन्दु स्वरूप light-might आत्मा हो।

देखो, आपका बाप भी निराकार है और बाप को निराकार आत्मा अर्थात् जो इस शरीर से उपराम है, वो ही आत्मा पसन्द आती है।

बस, आपका पुरुषार्थ ही यह है, इस पाँच तत्वों की दुनिया से ... पाँच तत्वों से बने शरीर से उपराम होना...।

यदि आप बच्चों का मन इस शरीर में अर्थात् यह खाना है, यह नहीं खाना, यह अच्छा है, यह बुरा है ... नहीं बच्चे, सबकुछ करते इससे 100% न्यारे ... कोई लगाव नहीं, कोई झुकाव नहीं, natural nature

ही बन जाये कि मैं एक आत्मा हूँ..., इस शरीर से न्यारी ... अब मुझे अपने बाप (निराकार शिव) के पास जाना है...।

जब आपकी ऐसी अवस्था हो जायेगी, तब आप पर इस दुनिया का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा...।

जब आपको बाप-समान बनना है, तो ऐसी अवस्था धारण करनी पड़ेगी...।

सच्चे दिल से बाप की श्रीमत की पालना करते चले जाओ...।

वैसे भी जब किसी से अटूट प्यार होता है तो और कुछ अच्छा ही नहीं लगता ... जैसे वो कहें, वैसे करने को दिल करता है...।

परन्तु यहाँ साथ ही साथ बहुत हल्के होकर करना है, कहीं भी फंसना नहीं है।

यदि आपकी मन-बुद्धि किसी भी चीज़ के प्रभाव से detach है अर्थात् आप किसी भी चीज़ को enjoy नहीं करते ... बस, बाप के साथ का या बाप की बातों में ही enjoy करते हो, तो आप अपनी मंज़िल के समीप हो...।

बस, बाप भी सच्चे दिल वाले बच्चों को समय आते ही गोद में उठा, अपने पास बिठा लेगा।

बस बच्चे, आपको इस दुनिया में रहते इस दुनिया से 100% न्यारे होने का सच्चे दिल से पुरुषार्थ करना है।

बच्चे, आप बच्चों को साक्षात्कार मूर्त बनना है। इसलिए आपका रहना, खाना, पहनना, बोलना अर्थात् सबकुछ बहुत royal होना चाहिए ... सन्यासी मिसल नहीं..., बल्कि देवताओं मिसल, ऊँच भी और न्यारापन भी, अर्थात् 100% सन्तुष्ट...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
03.03.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आपका पुरुषार्थ ही है हल्के रहने का...।

बस, आपको हर हाल में स्वयं को हल्के रखने का पुरुषार्थ करना है।

देखो बच्चे, यह समय अन्त के भी अन्त का जा रहा है, इसलिए आपके रहे हुए पुराने स्वभाव-संस्कार, हिसाब-किताब बड़ी तीव्र गति से पूरे हो रहे हैं।

हिसाब-किताब चाहे तो तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क ... जिसके भी हैं, आपको बहुत धैर्यता से चुक्तु करने है।

बस, आपने स्वयं पर attention रखना है ... attention की भी tension नहीं करनी अर्थात् कोई भी हिसाब-किताब, चाहे मन का, वा अन्य कोई भी आये ... परन्तु बार-बार स्वयं पर attention दे, सबकुछ बाप हवाले करने का पुरुषार्थ करते रहो।

साथ ही साथ बीते हुए एक second पर बिन्दु लगा, present में बिन्दु बन ... बिन्दु बाप के संग बैठ जाओ...।

फिर future तो आपका है ही bright अर्थात् numberone...

देखो, भगवान स्वयं आ गया आप बच्चों को पढ़ाने के लिए, फिर और कुछ चाहिए क्या...?
नहीं ना...।

बस, धैर्यतापूर्वक बाप की अंगुली पकड़ चलते चलो...।

जितना-जितना आप अपनी position के स्मृति स्वरुप बनते जाओगे ... उतना ही आपको अपने कर्तव्यों और authority की याद आती जायेगी...।
फिर यह छोटी-छोटी सी परिस्थितियाँ ऐसे solve होंगी जैसे मक्खन से बाल निकालते है...।

बाप तो केवल इस कल्प की अर्थात् आपको कुछ समय पहले की ही याद दिला रहा है, ताकि आप अपनी position में स्थित हो अपना बेहद का कर्तव्य करो...।

बस बच्चे, बार-बार अपनी स्मृति का switch ON कर अपनी स्व-स्थिति के आसन पर स्थित हो अपने कर्म-व्यवहार में आओ ... तो जल्दी ही आप बच्चे बाप (परमात्मा पिता) के साथ विश्व-परिवर्तन का कार्य कर पाओगे...।
अच्छा। ओम् शान्ति।
Om Shanti
04.03.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, प्रेम करो, प्रेम करो ... सबसे प्रेम करो - परमात्मा से, आत्माओं से, 5 तत्वों और 5 तत्वों से बनी हर चीज़ से प्रेम करो।

बस, अब आप बच्चों के अन्दर केवल प्यार ही प्यार होना चाहिए...।
आपके शरीर के अन्दर प्रेम का प्रकाश फैल जाना चाहिए...।

देखो, भक्ति में गायन है ना कि "तू प्यार का सागर है..."
वह आप बच्चों का ही गायन है।

बस, अब आपके अन्दर केवल प्यार हो और कुछ नहीं...।

बच्चे, यह बात ऐसे ही पढ़कर छोड़ नहीं देना है, सब कोई समझें कि बाबा ने अर्थात् भगवान ने personal मुझे कहा है कि मुझे सबसे प्रेम करना है ... चाहे कोई कुछ भी कहे, कुछ भी बोले...।
कोई बेवकुफी या नुकसान वाला काम भी करें, परन्तु मुझे सबसे प्यार करना है और प्यार से ही बोलना है...।

बस, हर पल अपने पर attention रखना है और बार-बार check करना है कि मेरे अन्दर सर्व प्रति केवल प्यार ही है ना...?

कुछ भी सोचो ... किसी के बारे में, बस प्यार से सोचो। सब जगह प्रेम का प्रकाश फैला दो।
बस यही पुरुषार्थ करते रहो...।

यदि किसी समय मुश्किल लगे या गलती से प्यार कम हो जायें, तो attention दे अपनी प्रेम की seat पर set हो जाओ और बीता हुआ पल बाप (परमात्मा शिव) को दे दो।

स्वयं से भी प्यार करो और अन्य से भी...।
यह प्रेम का प्रकाश ही दुनिया का परिवर्तन कर देगा...। अच्छा। ओम् शान्ति।
Om Shanti
05.03.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब समय अनुसार जबकि समय बिल्कुल अन्त का, अर्थात् अन्तिम घण्टा बजने वाला ही है, तो आपके एक-एक कदम निश्चय से और निश्चिन्त अवस्था से भरपूर होने चाहिए...।

अब आपको यह हर पल याद रहना चाहिए कि स्वयं परमपिता परमात्मा हमें पढ़ाने आ गया है, साथ ही साथ अपने साथ लेकर जाने के लिए भी....।

तो हमें भी अपना सब कुछ 100% बाप को समर्पण कर बिल्कुल निश्चिन्त हो, अर्थात् शान्तिपूर्वक अर्थात् अचल-अडोल स्थिति में स्थित हो, अपने हर कदम आगे से आगे बढ़ाने चाहिए ... अन्यथा अगर हम भारी हो जायेंगे तो बाप भी हमें मंज़िल तक नहीं पहुँचा पायेगा...!

इसलिए हर हाल में हमें बिल्कुल हल्के रहना है, अर्थात् बिल्कुल उपराम ... अर्थात् कोई खिंचावट नहीं...।

बच्चे, आप बच्चों का समय अभी जैसा भी चल रहा है, बहुत-बहुत कल्याणकारी है। हर कदम में कल्याण समाया हुआ है।
बस इस बात पर निश्चय रख, बाप की श्रीमत प्रमाण आगे से आगे बढ़ते जाओ, तब ही समय से पहले मंज़िल पर पहुँच पाओगे...।

जितना-जितना आपकी मिलन की चाह बढ़ती जाएगी अर्थात् परमात्म प्यार पाने की इच्छा बढ़ती जाएगी ... उतना ही आपको अतिन्द्रिय सुख की भासना शुरु हो जायेगी...।

फिर आप automatically बाप-समान बन जाओगे...।

बस बच्चे, इसके लिए आपको स्वयं पर attention देना है, इस 5 तत्वों से बनी दुनिया से न्यारा होने का...!

जितना न्यारे होंगे, उतना प्रभु प्यार बढ़ता जायेगा ... और जितना प्रभु प्यार अनुभव होने लगेगा, उतना ही न्यारापन आता जायेगा...।
देखो बच्चे, इस समय इस कलियुगी दुनिया में बहुत खिंचावट है, चाहे तो pomp and show की ... चाहे तो परिस्थितियों की..., परन्तु आपको सबकुछ बाप (परमात्मा शिव) को समर्पण कर, हल्के रह, प्रभु प्यार में खोये रहना है...।

जितना-जितना प्रभु प्यार में खोये रहोगे, उतनी जल्दी प्राप्तियों का अनुभव शुरू हो जायेगा...।
बस, महसूस करो ... मैं आत्मा light, एक light में समाती जा रही हूँ ... एक powerful light, जिसमें एक विचित्र सुख का अनुभव हो रहा है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
06.03.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाप ने तो आप बच्चों को आपके original स्वरूप की स्मृति दिलाई है कि आप विजयी रत्न अर्थात् इस drama के main hero actor हो, तो आप भी स्वयं को इतना ही ऊँच समझ अर्थात् उसी स्मृति में टिक स्वयं के प्रति और अन्य आत्माओं के प्रति उतना ही regard रखो।

देखो बच्चे, यह अन्त का समय जा रहा है ... जबकि बाप, स्वयं एक sample बना पूरे विश्व के सामने प्रत्यक्ष करेगा ... तो इस ईश्वरीय परिवार की एक-एक आत्मायें विशेष होगी ना...!

तो आप बच्चों की वृत्ति और दृष्टि सम्बन्ध में आने वाली सभी आत्माओं के लिए इतनी ही ऊँची होनी चाहिए...।

जैसे, आदि में मम्मा-बाबा सारे पुराने सम्बन्ध-सम्पर्क भूल हर आत्मा को ऊँची दृष्टि से देखते थे कि यह शक्तियाँ हैं या पाण्डव है, जो विश्व के आगे प्रत्यक्ष होंगे ... और बच्चों के अन्दर भी मम्मा-बाबा के प्रति

विशेष regard था अर्थात वो अपना पुराना जन्म भूल नये सम्बन्ध-सम्पर्क के according व्यवहार में आते थे।
इसी तरह आप भी उसी according चलो...।

देखो बच्चे, जब तक पुराना सम्बन्ध-सम्पर्क ही स्मृति में रहा, तो व्यवहार में परिवर्तन मुश्किल हो जायेगा।

इसलिए अब बाप की श्रीमत प्रमाण पहले अपनी वृत्ति change करो, फिर दृष्टि और कृत्ति...।

जितना आप बच्चों की दृष्टि, वृत्ति, कृत्ति ... स्वयं के प्रति और अन्य आत्माओं के प्रति महान् होगी, उतनी जल्दी आप अपनी-अपनी position पर पहुँच विश्व के आगे प्रत्यक्ष हो जाओगे।

बस, इसके लिए अपने पुराने सम्बन्ध-सम्पर्क में निमित्त मात्र रह, नये सम्बन्धों का अनुभव बढ़ाओ, फिर प्रत्यक्षता हुई की हुई...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
07.03.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाबा देख रहा था कि बच्चे स्वयं पर attention दें, स्वयं के पुरुषार्थ को बढ़ाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं ... परन्तु साथ ही साथ हलचल में भी हैं।

देखो बच्चे, स्वयं पर और बाप पर 100% निश्चय रख निश्चिन्त रहो, चाहे माला नम्बरवार है परन्तु हर मणका श्रेष्ठ है और उनका part भी बहुत श्रेष्ठ है।

इसलिए, अपने पर निश्चय रख अपने part के बारे में सोच-सोच कर खुश रहो।

यदि हलचल में रहें, तो बिन्दु स्वरुप अर्थात् double light रहना मुश्किल हो जायेगा और बाप-समान बनना भी...।

इसलिए बड़े उमंग-उत्साह के साथ बिल्कुल निश्चिन्त हो आगे से आगे बढ़ो।

यह विशेष उच्चतम् पालना और उच्चतम् पढ़ाई, विशेष ब्राह्मण बच्चों को ही मिलती है।

बाप (परमात्मा शिव) का यूँ आकर पढ़ाना, कोई साधारण बात नहीं है...!
इसलिए अपने भाग्य के नशे में रहो।

भगवान को तो जोकि सभी आत्माओं का बाप है ... इसलिए, सभी बच्चों को उनकी तपस्या का 100% फल देना पड़ता है, चाहे वो भक्त हो और चाहे वो भगवान के द्वारा प्राप्त वरदान को दुर-उपयोग करें ... तब भी, भगवान सब कुछ जानते हुए भी, उसे उसकी तपस्या का फल देता ही है ... और यहाँ तो स्वयं भगवान, बाप बन आप मीठे-मीठे, प्यारे बच्चों को जन्म-जन्म की तपस्या का फल direct देने आ गया है।

यह माला में number fix होना, एक जन्म की प्रालब्ध नहीं है, बल्कि द्वापर से लेकर बजाए गये part की प्रालब्ध है ... और इस समय जोकि कल्प का अन्तिम का भी अन्तिम समय जा रहा है, तो हर आत्मा को बाप पर और स्वयं पर 100% निश्चय रख, अचल रह, अपना एक-एक second बाप की श्रीमत प्रमाण व्यतीत करना चाहिए ... ताकि जल्द से जल्द आप बच्चे भी प्रत्यक्ष हो और बाप भी...।

बस, आप तो अपने श्रेष्ठ भाग्य की स्मृति में रहकर अपना श्रेष्ठ कार्य (विश्व सेवा, मन्सा सेवा) करो।
• ज्ञान, प्रेम, रहम और कल्याण की भावना आपको बाप-समान अत्यधिक बढ़ानी है।
• सभी आत्माओं को एक-समान देखना है।
• कोई भी गलती हो जायें, जाने-अनजाने, तो एक second में बिन्दी लगा दो।
• पुराना कोई हिसाब आया, खत्म हुआ...।

इसलिए जल्दी करो, अपने लक्ष्य तक जल्दी से पहुँचो...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
08.03.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाप हैं शिव और आप सब हो पार्वतियां अर्थात् बाप हैं शिव पिता और आप सब हो पार्वती माता अर्थात् जगतमाता।

यह सदा आप बच्चों को याद रहना चाहिए कि ... मैं आत्मा जगतमाता, विश्व के कल्याण के निमित्त हूँ।

देखो बच्चे, माँ का दिल तो वैसे भी ममतामई होता है अर्थात् प्रेम, रहम और कल्याण की भावना से भरपूर होता है ... वो हर हाल में अपने बच्चों का कल्याण ही करती है।
उसकी एक-एक श्वांस में बच्चों के प्रति प्यार समाया रहता है - तो आपको यह सदा स्मृति रहनी चाहिए...।

अब आप बच्चों को इस देह के सम्बन्ध और साथ में ... मैं पुरुष हूँ, मैं नारी हूँ, मैं उम्र में छोटा बच्चा हूँ - यह सब भूल जाना चाहिए ... सभी स्वयं को आत्मा समझ, विश्व की आधारमूर्त आत्मायें समझें...।

जब आप सब हो ही विजयी रत्न, तो फिर क्या हुए...?
पूर्वज हुए ना...!

तो स्वयं को जगतमाता समझ पूरे विश्व का कल्याण करो ... अर्थात् एक-एक आत्मा के प्रति आपके अन्दर कल्याण की भावना हो।
जितना प्रेम होगा, उतना रहम और कल्याण की भावना होगी।

अब आप सब क्या हो गए...? भारत माता सो विश्व माता...।

इसलिए गायन है - "वन्दे मातरम्..." अर्थात् भारत के कल्याण में ही विश्व का कल्याण समाया हुआ है...।

बस बच्चे, अब सभी आत्माओं को रावण की जेल से स्वतंत्र करो। आपके संकल्प ही यह कार्य करेंगे, संकल्पों को अन्दर समाते चले जाओ।

फिर एक ही संकल्प उठेगा - "परिवर्तन" ... आप सभी का यही संकल्प विश्व का परिवर्तन कर देगा।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
09.03.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अपने बोल पर double attention दो अर्थात् केवल ज़रूरत का अर्थात् केवल स्व-परिवर्तन प्रति अर्थात् आपके अपने routine में, सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को हल्का रखने के लिए ही वाचा में आओ।

बस, अब आपके बोलने से जो शक्ति व्यर्थ जाती है, वो save करो...। फिर जल्दी ही आपकी ऊँची स्थिति हो जाएगी, जो स्वयं ही आपको प्रत्यक्ष करेगी।

आपको अपने ऊपर double attention रखना है ... ना ही स्वयं भारी होना है और ना ही दूसरों को भारी रखना है...।
हर बात को knowledgeful हो, हल्का कर दो।
स्व-परिवर्तन की तरफ full attention रखना...।

पहले स्वयं की कमज़ोरी को accept करो, फिर उसपर attention दो, तो वो जल्द ही finish हो जायेगी।

योग के साथ-साथ स्वयं पर attention रख अर्थात् आपके बोल और कर्म पर full attention होना चाहिए।

कोई भी छोटी से छोटी, बड़ी से बड़ी बात ... चाहे स्वयं प्रति, अन्य आत्माओं प्रति या किसी बाहरी परिस्थिति प्रति, सब बाप को समर्पण कर, हल्का रह, पुरूषार्थ करना ... क्योंकि यही एक ऐसा समय जा रहा है जबकि स्वयं भगवान की नज़र हर पल आप बच्चों पर है।
फिर तो हर second में आपका कल्याण समाया हुआ है।

बस, धैर्यतापूर्वक drama के हर scene को देख, बाप को साथी बना, साक्षी हो जाओ।

स्वयं परमपिता परमात्मा, भगवान ... आपका हर पल के लिए साथी बना है, तो फिर बाप का full सहयोग लो। ये ही बाप का सहयोग आपको उड़ाकर, बाप के पास बिठा देगा।

बस, अलबेले मत बनना...!
यह अलबेलापन बाप से किनारा करा देता है ... और अब के वातावरण प्रमाण बाप के हर पल के सहयोग के बिना, आगे बढ़ना मुश्किल है।

बस, आप स्वयं को अपनी seat पर set करने की ही चिन्ता करना और सब चिन्तायें बाप (परमात्मा शिव) की हैं ... और जिन बच्चों का रखवाला स्वयं भगवान हो, उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता...!

इतना बाप पर निश्चय रख, high jump दो ... high jump दे अपनी मंज़िल पर पहुँचो...।

बस, वाचा पर double attention रखना।
धैर्यतापूर्वक अपने बोल पर control रखना ... और balance भी बहुत ज़रूरी है अर्थात् आपको यह पता होना चाहिए कि आपको किस समय बोलना है और किस समय चुप रहना है।

यह पुरुषार्थ भी सहज है, क्योंकि आपका अनादि स्वरूप वाणी से परे का है।

बस, थोड़े-से attention से ही सहज सफलता मिलेगी।
Attention की भी tension मत रखना। यदि भूल जाओ तो फिर बाप से रूह-रिहान कर हल्के हो, अपनी seat पर set हो जाओ।

बस, अपने पुरुषार्थ में लगे रहना। पुरुषार्थ ही अपनी मंज़िल पर पहुँचायेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
10.03.2019

★ 【 आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा ने तीन तरह के बच्चे देखें:-

- पहले हैं विशेष आत्मायें,
- दूसरे हैं साधारण,
- तीसरी आत्मायें है व्यर्थ और negative से भरपूर...।

देखो बच्चे, भगवान जैसे ही बाप बन इस धरा पर अवतरित हुआ, तो बाप की नज़र अपने विशेष बच्चों पर पड़ी ... और बाप ने विशेष समझ बच्चों को उसी रीति पालना दी और पढ़ाई, पढ़ाई...। और अभी भी उन्हीं आत्माओं को, चाहे आप विस्मृत हो गये हो, परन्तु बाप आपको विशेष जान और मान, विशेष पालना दे रहा है ... और बाप को पता भी है कि यही बच्चे पुरानी, कलियुगी दुनिया को सतयुगी बनाने में सहयोगी-साथी हैं।

परन्तु बच्चे, बीच-बीच में अभी भी कई बार विस्मृत हो जाते हैं...!

तो बच्चे, अब समय अनुसार तीसरी तरह की आत्मायें बनना बन्द करो। हमेशा स्वयं पर attention रखो, और स्वयं को विशेष आत्मा समझ चलो...।

चाहे कितनी भी बड़ी परिस्थिति, हलचल या अन्य आत्माओं से हिसाब-किताब आ जायें, परन्तु आपका एक भी संकल्प व्यर्थ वा negative ना हो।

उस समय सभी संकल्प बाप को समर्पण कर अपने को विशेष अर्थात् विश्व-कल्याणकारी समझ, बाप (निराकार शिव) के साथ जाकर बैठ जाओ।
फिर बाप भी आपके संकल्पों को शक्ति दे, शुभ-भावना, शुभ-कामना से भरपूर कर देगा।

बस बच्चे, अब चलते-फिरते अपने विशेष स्वमान, विशेष पालना और हर पल के परमात्मा बाप के साथ का अनुभव बढ़ाते चलो।

बाप पर 100% निश्चय रखो अर्थात् हर हिसाब-किताब और परिस्थिति में स्वयं का ही कल्याण समझ आगे बढ़ो। बाप सहज रीति हिसाब-किताब चुक्तु करवा रहा है, तो इस बात पर निश्चय रखो।

समय और बाप के सहयोग से आप आगे बढ़ रहे हो।
तो अब सभी complaints समाप्त कर अर्थात् महीनता से checking करो कि किसी भी अपकारी आत्मा से, सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं से, अपने भाग्य से और बाप से minor सी भी complaint ना हो...।

हर परिस्थिति को आगे बढ़ने का साधन समझ, आगे बढ़ो...। फिर ही आप बहुत से भी बहुत जल्दी complete अर्थात् बाप-समान बन जायेंगे।

कोई भी व्यर्थ या negative मन्सा तक रहती है, तो आप साधारण हो...! यदि वाचा या कर्मणा तक आ जाये, तो आप तीसरी अर्थात् कलियुगी मनुष्य बन जाते हो...!

तो अब समय अनुसार कम से कम समय में संकल्पों से भी व्यर्थ को finish कर विशेष आत्मा बनो।
विशेषता ही बाप के समीप लायेगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
11.03.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बच्चों का मन बार-बार इधर-उधर जाता है ... तो बाबा कहते हैं ... बच्चे, ऐसा तो होगा ही, क्योंकि ये आपके जन्म-जन्म के संस्कार हैं।

बस, आप अपना attention बढ़ाते जाओ।

भिन्न-भिन्न युक्तियों के द्वारा मन को बाप में लगाओ, तो फिर ये संस्कार भी खत्म हो जायेंगे...।

भिन्न-भिन्न युक्तियां, जैसे;
• बाप से बीच-बीच में रूह-रिहान करो ... अर्थात् बाप को अपना कार्य समर्पण करो।
• मन को समझानी दो।
• स्वयं के मालिक बन, आत्मिक दृष्टि का अभ्यास करो।
• बार-बार शरीर से detach हो घर (परमधाम) जाने की यात्रा करो।
फिर इन युक्तियों से मुक्ति मिल जायेगी...।

बस, इस यात्रा में ना ही थकना है, ना ही हारना है और ना ही दिलशिकस्त होना है ... अलबेला तो बिल्कुल नहीं होना...।

यदि आप अलबेले हो स्वयं को छूट दे देते हो, तो मन-बुद्धि उस कार्य में busy हो जायेगी।
फिर उससे निकलना मुश्किल हो जायेगा...!

यदि आप किसी भी कारणवश अपना attention कम कर देते हो, तो फिर बाप से सहयोग नहीं प्राप्त कर सकते...!
धीरे-धीरे थककर हार जाते हो...!
फिर बताओ आप मंज़िल पर कैसे पहुँचोगे...?

बाप की पालना और अपने ऊँचे भाग्य को स्मृति में रख, स्वयं पर attention बढ़ाते चलो।

बस, आपको attention रखने का ही तो पुरुषार्थ करना है, फिर बाप आपका हर तरफ से बुद्धियोग हटा, आप समान बना, अपने संग ऊपर बिठा लेगा...।

यदि आप ये महसूस करते हो - कि मेरी attention में कमी है, तो फिर बाप (परमात्मा शिव) को भी अपने उस लौकिक कार्य का साथी बना लो। अपने उस कार्य में भी बाप के साथ का अनुभव कर बाप से रूह-रिहान करते रहो।

जैसे साकार (इस दुनिया में) में किसी भी कार्य के लिए अपने बड़ों की सलाह और मदद ली जाती है, इस तरह का बाप से अनुभव करो।
फिर उस कार्य में सफलता भी मिलेगी और आप जल्द ही उन संकल्पों से detach भी हो जाओगे।

देखो बच्चे, बाप के सहयोग के बिना, अपनी मंज़िल पर पहुँचना नामुमकिन है। इसलिए भिन्न-भिन्न युक्ति लगा, सच्चाई और सफाई के साथ बाप को हर पल का अपना साथी बना लो ... और जिसका साथी स्वयं भगवान हो, तब तो आप सहज ही हर तूफान को पास कर अपनी मंज़िल पर समय से पहले पहुँच जाओगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
12.03.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★
बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्वयं की checking करो ... कि हम बेफिक्र बादशाह हैं...?
अर्थात् हमारी किसी भी तरह की कोई भी सोच तो नहीं चलती..., जो हमें minor सा भी भारी कर देती हो...?

देखो, आप बच्चों के साथ स्वयं परमपिता परमात्मा, दुनिया को रचने वाला रचयिता है, तो फिर आप बेफिक्र नहीं होंगे, तो कौन होगा...?

पर हर कार्य समर्पण भाव से करो...। क्योंकि इस समय कोई भी काम इच्छा वश ना हो...।

जितना-जितना आपका समर्पण भाव बढ़ता जायेगा ... उतना ही आपकी दिनचर्या के हर कार्य में सेवा समाई होगी।

बस, आप तो निमित्त बन हर काम बाप को सौंप हल्के होकर करो। फिर आपको हर कार्य में सफलता मिलेगी।
क्योंकि आपके हर कार्य का ज़िम्मेवार बाप बन जायेगा।

बस, अपने ऊपर attention बढ़ाते जाओ...।

हर काम बाप की श्रीमत प्रमाण करते जाओ। फिर कल्याणकारी बाप (परमात्मा शिव) आपके साथ-साथ आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं का भी कल्याण कर देगा...।

बस, अपने ऊँचे स्वमान में रहना है, बाप को अपने संग रखना है। फिर तो कल्याण ही कल्याण है...। अच्छा। ओम् शान्ति।
Om Shanti
13.03.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अपने पुरुषार्थ की speed तीव्र रखो ... अर्थात् अपनी मन-बुद्धि की तरफ full attention रख पुरुषार्थ करो।

देखो, समय की सूई आप सच्चे ब्राह्मण हो अर्थात् आप ही समय को समीप लाने वाले हो।

जितना-जितना आप सम्पूर्णता की तरफ जा रहे हो ... उतना ही परिवर्तन का समय समीप आता जा रहा है। जयजयकार के बाद हाहाकार होगी।
यहीं गायन है ना ... अर्थात् एक तरफ आपका साक्षात्कार शुरु होगा और दूसरी तरफ परिवर्तन का कार्य start होगा...।

फिर अन्त में एक तरफ बाप समेत 108 रत्न प्रत्यक्ष हो जायेंगे और दूसरी तरफ महापरिवर्तन के अन्तिम नगाड़े बज जायेंगे, फिर होगी सतयुग की आदि...।

इस scene से पहले आप बच्चों को स्वयं को सम्पूर्ण रीति तैयार करना पड़ेगा ... और जो बच्चे तैयार होंगे, वो प्रत्यक्ष हो जायेंगे...।

इसलिए हर बच्चा स्वयं को साक्षात्कार मूर्त समझ ऊँचा पुरुषार्थ करें...।

देखो, बाप (परमात्मा शिव) तो हर बच्चे से equal प्यार करता है, परन्तु बच्चे पुरुषार्थ करने में नम्बरवार हैं, तो प्रालब्ध भी नम्बरवार मिलती है...!

बच्चे, जब तक आप सम्पन्न नहीं बनते, तब तक आपके पुराने स्वभाव-संस्कार बाहर निकलकर आयेंगे, परन्तु आपको उन्हें देख घबराना नहीं है ... बस, उन स्वभाव-संस्कार के प्रभाव में ना आ, उन्हें पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़ना है।

बच्चे, अब समय अनुसार आपको हर कार्य जोकि बाप की श्रीमत प्रमाण है, वो करना है ... परन्तु उसके प्रभाव से न्यारा रहना है...। अर्थात् उसके अच्छे या बुरे result को बाप को सौंप कर्म-व्यवहार में आना है...।

कोई भी कर्म इच्छा वश नहीं करना ... क्योंकि जब आप मन के वशीभूत हो कार्य करते हो, तो बाप से detach हो जाते हो।

इसलिए, हर कार्य करते बार-बार अशरीरीपन की drill करो। उस काम को परमात्मा बाप का काम समझ, निमित्त भाव से करो...।

बार-बार अपनी checking करते रहना, क्योंकि यदि आप उस काम को enjoy करोगे तो उस काम के संकल्पों से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है।

पर स्वयं पर attention रख, बाप की श्रीमत अनुसार वो काम करो, फिर उस काम में आपको सफलता भी मिलेगी और साथ ही साथ आपका पुरुषार्थ भी बढ़ जायेगा।

बस, आप तेरा-तेरा करते रहना...।

बच्चे, इस विधि से आपको हर कार्य करना है। यह ही अभ्यास आपको सम्पन्न और सम्पूर्ण बनायेगा।

अभी तो आपको बहुत बड़े-बड़े कार्य करने हैं, इसलिए स्वयं का कर्म करते, कर्म से न्यारे होने का अभ्यास बढ़ाते चलो ... परन्तु ध्यान रखना - यदि किसी भी कार्य के संकल्प ज्यादा अपनी तरफ खींचे तो एक बार उस काम को छोड़ अपनी स्थिति बना, फिर काम को करना ... क्योंकि इस समय आपकी स्व-स्थिति की बहुत ज्यादा आवश्यकता है...।

देखो, बाप बच्चों के लिए ही आया है, यदि आप भी सच्चे दिल से 100% बाप की श्रीमत प्रमाण चलने का पुरुषार्थ करते हो तो आपको भी बाप का full स्नेह, सहयोग मिलता है, जोकि आपको जल्द ही सम्पन्न बना विश्व के आगे प्रत्यक्ष करेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
14.03.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब समय अनुसार गृहस्थ में रहते, सबकुछ करते ... संकल्पों द्वारा इससे न्यारे बन जाओ ... अर्थात् करनहार बन सबकुछ करावनहार को सौंप दो।

बच्चे, इस विधि से ही आप बाप-समान बन सकते हो।

देखो बच्चे, विश्व में प्रत्यक्ष होने से पहले आपको स्वयं में प्रत्यक्ष होना है ... फिर परिवार में ... फिर विश्व में...।

स्वयं में प्रत्यक्ष होना अर्थात् आपको अनुभव होगा कि सबकुछ करते हुए भी आप उपराम हो, हल्के हो, अपनी seat पर set हो, powerful मन्सा सेवा कर रहे हो ... अर्थात् आप जिस भी आत्मा को देखते हो तो आपके अन्दर केवल रहम और कल्याण की भावना ही जागृत होती है।

बस बच्चे, अब स्वयं को बाप (परमात्मा शिव) के समीप समझ बाप-समान कार्य में तत्पर रहो...।

आपकी इसी न्यारी और powerful वृत्ति से सब परिवर्तन हो जायेगा...।

बस 100% निश्चय रख, निश्चिन्त अवस्था अत्यन्त आवश्यक है...।

जितनी आपकी जागृत अवस्था अर्थात् देही-अभिमानी स्थिति होती जायेगी, उतना ही आपके हर कार्य में accuracy आती रहेगी ... साथ ही साथ सफलता भी मिलती रहेगी...।

अब जबकी खुद भगवान आपका अपना बाप बनकर आ गया, तो फिर आपकी स्थिति कितनी powerful होनी चाहिए...!

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
15.03.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्वयं को light समझ, Supreme light के नीचे आकर बैठ जाओ ... अनुभव करो कि मैं एक बहुत powerful light की किरणों के नीचे हूँ ... जिसमें केवल प्यार ही प्यार है...।

इस प्यार की किरणों से मुझे अत्यन्त शान्ति मिल रही है, मेरी निर्संकल्प स्थिति होती जा रही है। इस स्थिति में अत्यन्त आनन्द है...।

बस बच्चे, बार-बार यही अभ्यास करो...। यह शिव बाप का अद्भुत प्यार ही आप बच्चों को इस दुनिया से न्यारा कर देगा।

आपके प्यार में मग्न होने से आपकी double light स्थिति हो जायेगी, जिस स्थिति में आप सबकुछ करते भी सब बातों से न्यारे हो जाओगे...।

बस, सर्व समर्पण हो अर्थात् अपने सारे बोझ बाप को दें, बाप (परमात्मा शिव) की गोद में समा जाओ...।

बस, धैर्यता पूर्वक चलो।
अचानक ही सबकुछ परिवर्तन हो जायेगा...।

बस, सब पर रहम, प्रेम और कल्याण की भावना रखनी है। ऐसे समझो कि जैसे, यह सारी दुनिया आपके बच्चे हैं...।

देखो, यह पूत, कपूत बन सकते हैं, परन्तु जब आप अपने को माँ समझोगे, तो आपमें बेहद का प्यार, बेहद की रहम-कल्याण की भावना जागृत हो जायेगी...।

बच्चे, याद तो उसे किया जाता है जो दूर है, परन्तु संग रहने वाले की याद तो अन्दर समाई रहती है...।

जिस तरह एक माँ के अन्दर एक बच्चे की याद समाई रहती है। कोई भी काम करते उसका 100% ध्यान अपने बच्चे की तरफ ही रहता है। इसी तरह आपको हर कार्य करने है।

बस हर पल, हर कार्य बाप के संग रहकर करना है। परमात्मा बाप का साथ आपको हर कार्य में सफलता दिलायेगा।
आप खुश और हल्के रहोगे...।

बस, हर बच्चा अब समय प्रमाण बाप की याद में समाया रहे। इसके लिए स्वयं पर 100% attention रखो।

Check कर change करते जाओ ... स्व-परिवर्तन से ही विश्व-परिवर्तन होगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
16.03.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप अपनी बुद्धि बाप (निराकार शिव) में एकाग्र कर दो अर्थात् सबकुछ करते मन और बुद्धि के द्वारा बाप को समर्पण हो जाओ...।

अपने सारे हिसाब-किताब, कमी-कमज़ोरी, सबकुछ शिव बाप को सौंप दो और बाप की अंगुली पकड़ अर्थात् बाप की श्रीमत अनुसार, बाप की याद में चलते चलो, ज्यादा सोचो मत...।

जब आप हल्के रह बाप के संग रहते हो, तो बाप आपको गोदी में उठा आपको आपकी मंज़िल तक पहुँचा देता है ।

बस इसमें 'एक बल-एक भरोसा' चाहिए...।

देखो बच्चे, हिसाब-किताब तो चुक्तु होने ही है, परन्तु जब आप बाप को समर्पण हो जाते हो, तो बाप किसी भी तरह की आँच बच्चों पर आने नहीं देता ... हर तरफ से अर्थात् स्थूल और सूक्ष्म हर रीति से safe

रखता है ... और जितनी-जितनी आपकी समर्पण बुद्धि अर्थात् बाप को सदा साथ रखने का अभ्यास बढ़ता जायेगा, उतनी जल्दी आप बाप-समान बन बाप से सम्पूर्ण सुख का अनुभव कर घर (परमधाम) जाओगे...।

देखो, बाप आया ही है आप बच्चों के लिए, तो आप भी अपनी सम्पूर्ण ज़िम्मेवारी बाप को सौंप, हर तरह के question mark को बिन्दु में परिवर्तन कर, बाप-समान बिन्दु बन जाओ...।

बस, थोड़े से पुरुषार्थ के बाद आगे प्रालब्ध ही प्रालब्ध है...।

यह परिस्थितियाँ क्या हैं...? कुछ भी नहीं...।
बाप तो एक second से भी कम समय में सब कुछ परिवर्तन कर सकता है।
परन्तु बाप की ज़िम्मेवारी बनती है, बच्चों को बाप-समान बनाने की..., इस कारण बाप बच्चों को हर तरह के paper से cross करा, काबिल बना, अपने साथ लेकर जाता है।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
17.03.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, इस समय सब आत्मायें जैसे एक घड़े में हैं, जिसके चारों तरफ से काँटे निकल रहे हैं और काँटों के आगे मन को कशिश करने वाले छोटे-छोटे से फूल लगे हुए हैं ... आत्मायें फूलों को देख आकर्षित होती है, फिर उन काँटों में अर्थात् दु:खों में जकड़ जाती है ... परन्तु जो बच्चे बाप की छत्रछाया में हैं अर्थात् बाप की श्रीमत प्रमाण चल रहे हैं, वो बच्चे एक कवच के बीच में हैं और वो 100% safe हैं और वो सभी कांटें cross कर ऊपर की तरफ जा रहे है।

बच्चे, दु:खों से बचने का एक ही साधन है - परमात्मा बाप की श्रीमत वा बाप की याद...।

जो बच्चे दिल से, बहुत प्यार से बाबा की श्रीमत की पालना कर रहे हैं और पुराने हिसाब-किताब के कारण कहीं फँस जाते हैं, तो बाप भी झट से अर्थात् उनका किया हुआ पुरुषार्थ ही उन्हें झट से निकाल उन्हें आगे की तरफ अर्थात् मंज़िल की तरफ बढ़ा देता है...।

जिस बच्चे के अन्दर अर्थात् सच्चे मन से एक ही इच्छा है कि बाप-समान बन मुझे घर (परमधाम) जाना है और कोई भी इच्छा नहीं, उस बच्चे की ज़िम्मेवारी परमात्मा बाप की बन जाती है ... और बाप भी बड़े प्यार से अपने सिकीलधे बच्चे को इस पुरानी दुनिया के काँटों से safe रख, मंज़िल तक पहुँचा, उसके लक्ष्य को पूरा करता है...।

बस बच्चे, इस प्यार भरी प्रभु पालना के लिए स्वयं पर 100% attention रख, श्रीमत पर चलने का पूरा पुरुषार्थ करो।

अब तो पुरुषार्थ भी minor सा ही रह गया है, फिर तो आगे प्राप्तियाँ ही प्राप्तियाँ है ... इसलिए उमंग-उत्साह से आगे बढ़ो...।

इस दुनिया के काँटों को ना देख, स्वयं के ऊँच स्वमान में स्थित रह विश्व-परिवर्तन के कार्य में busy हो जाओ...।

आप बच्चों का powerful संकल्प ही आपका परिवर्तन सो विश्व-परिवर्तन का कार्य कर देगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
18.03.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब समय अनुसार स्वयं की checking करो कि हम कितने percent निश्चिन्त आत्मा बने हैं...?
अर्थात् संतुष्टमणि अर्थात् कोई complaint नहीं, कोई question नहीं, कोई इच्छा नहीं अर्थात् minor सा भी ... यह तो होना चाहिए या यह सब ठीक हो जायें ... अर्थात् जिस हाल में भी हैं बिल्कुल संतुष्ट हैं, खुश हैं, उमंग-उत्साह में हैं...।

बाप (परमात्मा शिव) पर इतना निश्चय है कि मेरे हर कदम में कल्याण समाया हुआ है ... इसलिए निश्चिन्त, संतुष्ट, हर्षितमुख और उमंग-उत्साह में हैं ... और एक ही इच्छा है कि परमात्मा बाप के कर्तव्य

को अर्थात् पतित दुनिया को पावन बना, सब आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा दे घर (परमधाम) जायें ... अपने बाप से ही अतिन्द्रिय सुख का अनुभव करें...।

जो आत्मा निश्चिन्त होगी, वो एक second से भी कम समय में बिंदु बन, बिंदु बाप के संग बैठ विश्व-कल्याण का कार्य कर सकेगी।

उसे किसी भी प्रकार की कोई खिंचावट नहीं होगी। हिसाब-किताब चुक्तु करते भी उस आत्मा से ऐसे अनुभव होगा कि यह एक रमता योगी है अर्थात् संतुष्टता की झलक दिखेगी...।

बस बच्चे, अब आप अपनी स्थिति प्रमाण अपनी checking कर सकते हो कि हमारी परिवर्तन की speed कितनी है और हम कितने समय में बाप-समान बन सकेंगे...?

अर्थात् आपकी अब निश्चिन्त स्थिति बढ़ती जाएगी ... हर हाल में आप बाप के साथ का अनुभव कर खुश और संतुष्ट रहोगे ... और यह संतुष्ट रहने का पुरुषार्थ अर्थात् अपनी ज़िम्मेवारी, सारे हिसाब-किताब बाप को समर्पण करने का पुरुषार्थ ही आपको बाप-समान बना देगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
19.03.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, भगवान कभी नाराज़ नहीं होता, वो बच्चों से सिर्फ प्यार करता है।

देखो बच्चे, शिव बाप इस पतित दुनिया से आप बच्चों को सबसे safe रास्ते से पावन दुनिया में लेकर जा रहा है।

जबकि यह दुनिया है ही परेशानी और दुखों की, तो इनसे मुक्त करवा बाबा आपको सुखों की दुनिया में लेकर जा रहा है।

बस, आप बच्चे अपने संकल्पों पर ध्यान रखो, आपके संकल्प केवल positive होने चाहिए...।

इस समय जबकि सभी आत्माएं positive बात को भी negative उठा रही हैं अर्थात् हमेशा क्या, क्यों, अर्थात् question mark से भरपूर हैं ... और मेरे बच्चे हर negative बात को या circumstance को भी positive समझ आगे से आगे बढ़ रहे हैं ... और इस दुनिया से न्यारे होने की विधि भी यही है...।

परमात्मा बाप का साथ आप बच्चों को आगे से आगे बढ़ा रहा है।

बस, बाप पर निश्चय रख 100% श्रीमत पर चल, धैर्यतापूर्वक आगे से आगे बढ़ते रहो ... मंज़िल बिल्कुल समीप है।

सभी बच्चे अपने घर की सभी आत्माओं को खुश और हल्का रखो ... क्योंकि यह ब्राह्मण जीवन आप बच्चों का केवल आपके लिए नहीं, बल्कि आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को भी खुश और हल्का रखने के लिए है।

इसलिए हर कार्य सबकी सहमती से, युक्ति-युक्त ढंग से जिससे सभी संतुष्ट रहें, उसी प्रकार से होना चाहिए...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
20.03.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्वयं के महत्व को समझो।
आप विश्व की आधारमूर्त आत्माएं हो ... अर्थात् आपकी स्व-स्थिति ही विश्व में परिवर्तन करेगी...।

आपके संकल्पों का बहुत महत्व है...।

जब आप हलचल में होते हो, तो विश्व की आत्माएं हलचल में आ जाती हैं ... और आपकी शांत स्थिति से वो शांत हो जाती हैं ... और उनकी विश्व को परिवर्तन करने की क्षमता बढ़ जाती है, अर्थात् वो शांत

हो वा एकाग्र हो, अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर, आगे से आगे नए-नए आविष्कार कर, दुनिया को अति की तरफ ले जाने में सफलता प्राप्त कर लेंगे, फिर अति के बाद ही अंत होगी...।

बाबा ने देखा कि बड़े से बड़े लौकिक में जो V.I.P. गिने जाते हैं, वो सभी परिवर्तन के कार्य को सम्पन्न करने के लिए तीव्र गति से लगे हुए हैं।
परन्तु उनके कार्य की सफलता के निमित्त आप बच्चों की संकल्पों की एकाग्रता ही बनती है।

संकल्पों को एकाग्र करना अर्थात् अपने ऊँच स्वमान में स्थित हो विश्व-परिवर्तन का कार्य सम्पन्न करना...।

बाप वा बाप की श्रीमत को महीनता से समझो...।

जैसे बाबा कहता है कि बालक सो मालिक बन जाओ ... अर्थात् पहले बाप के छोटे से बालक बन जाओ, जिस बालक की सारी ज़िम्मेवारी बाप की होती है अर्थात् उसे क्या खिलाना है, क्या पहनाना है अर्थात् वो बच्चा 100% बाप पर depend होता है ... और मालिक बन जाओ अर्थात् अपनी कर्मेन्द्रियों के मालिक बन, विश्व-परिवर्तन के कार्य करने की ज़िम्मेवारी समझ, अपने एक-एक संकल्पों को सफल करो।

अपने को साधारण मत समझो...। आप हो परमात्मा बाप के V.V.I.P. बच्चे, इसलिए अपने एक-एक कदम के महत्व को समझ आगे से आगे बढ़ो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
21.03.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, सतयुग में सभी knowledgeful हैं ... जिस कारण वहाँ कोई नियम नहीं है और ना ही छोटा-बड़ा, ऊँचा-नीचा, अच्छा-बुरा, काला-गोरा और ना ही कोई number हैं .. ये सब यहाँ है।

परंतु अब हमें वहाँ जाना है, इसलिए अब हमें इन सब चीज़ों से बाहर निकलना है...।

वहाँ केवल प्रेम है ... प्रेम ही system है ... प्रेम ही regard है, जिस कारण सब कुछ विधिपूर्वक चलता है...।

बस, अब आपके अन्दर केवल प्रेम ही प्रेम हो, प्रेम ही प्रेम हो...
• प्रेम ही सुख है,
• प्रेम ही शक्ति है,
• प्रेम ही शान्ति है,
• प्रेम ही आनन्द है,
• प्रेम ही सतयुग की जननी है...।

जब आप बच्चों के अन्दर निःस्वार्थ प्यार है, तो आप सभी गुणों और शक्तियों से भरपूर हो...।

प्यार एक ऐसी शक्ति है जो आपके जीवन की obstacles को खत्म कर देती है।
• आप शुभ भावना, शुभ कामना से भरपूर हो जाते हो।
• आपके अन्दर कोई question नहीं रहता, कोई complaint नहीं रहती।

LOVE सभी को नज़दीक लाता है। निःस्वार्थ प्यार एक ऐसी शक्ति है, जिससे आप negative को positive में परिवर्तन कर सकते हो...।

आप बच्चों के अन्दर जो सच्चा प्यार है, वो किसी भी आत्मा या चीज़ की quality के कारण नहीं है, अर्थात् आपका प्यार किसी भी चीज़ पर depend नहीं है, बल्कि आपकी nature है प्यार करना...।

यह प्यार की किरणें ही सभी को मिलाकर एक कर देंगी।

यह आपका प्यार ही परमात्मा को प्रत्यक्ष करेगा...।

इसलिए आप प्यार के महत्व को समझो और इसे अपने जीवन में हर पल use करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
22.03.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाप ने आपको पुरुषार्थ की विभिन्न विधियां बताई हैं, जो आपको ही करनी पड़ेगी।

यह समय जो कल्प का अन्तिम समय जा रहा है, तो हिसाब-किताब, कमी-कमज़ोरी सब बाहर निकलकर आ रही हैं। इसलिए इस पर ज्यादा विचार ना कर, विधि से सिद्धि को प्राप्त करो।

आप हो विघ्न-विनाशक बच्चे, सारी विश्व की आत्माओं के विघ्न हरने वाले ... सारी विश्व की आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देने वाले ... मास्टर भगवान...।

इस तरह अपने विभिन्न ऊँच से ऊँच स्वमान में स्थित हो powerful vibrations फैलाओ ... जिससे आपका, आपके सम्पर्क में आने वाली आत्माओं का और फिर विश्व की सभी आत्माओं का कल्याण हो।

यह पुरुषार्थ आपको धैर्यतापूर्वक करना ही पड़ेगा।
ज्यादा सोचने से या क्या, क्यों, कैसे में जाने से कुछ नहीं होगा...। बस, आत्मा भारी हो जाएगी और अपनी seat से उतर मांगने वालों की line में लगना पड़ेगा।
देवता की जगह लेवता बनना पड़ेगा...!

इसलिए पुरुषार्थ की विभिन्न विधियों में स्वयं को busy रखो ... परमात्मा बाप के साथ का use करो।

हल्के और खुश रह उमंग-उत्साह के साथ पुरुषार्थ करो...।

दुनिया में तो दुःखों की अति अर्थात् दुःखों के पहाड़ गिरने वाले हैं, उससे पहले दुःखहर्ता-सुखकर्ता बन अर्थात् शिव बाप की अँगुली पकड़, ऊँची स्थिति में स्थित हो विश्व-कल्याण का कार्य करो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
23.03.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब सदा जागृत अवस्था में रहो अर्थात् अपने उच्चतम् स्वमान के स्मृति स्वरूप बन जाओ...।

देखो बच्चे, साधारण मनुष्य आत्मा का बोलना, सोचना, करना सब साधारण होता है ... और ऊँच post वाली आत्मा की मन्सा, वाचा, कर्मणा सब ऊँच होगी, वो छोटी-छोटी बातों में अपना समय व्यर्थ नहीं करेगा...।
• आप सोचो तो सही कि आप कौन हो...?
• आपका कर्तव्य क्या है...?
• आपको रोज़ कौन पढ़ाने आ रहा है...?

फिर आप ऊँचे से ऊँचे बाप, ऊँचे से ऊँची पढ़ाई और अपने उच्चतम् भाग्य को कैसे भूल जाते हो...?

बच्चे, अब तो आपको हर पल यह स्मृति रहनी चाहिए कि हम हैं विजयी रत्न..., विश्व का परिवर्तन करने वाले, पतित दुनिया को पावन बनाने वाले...।

हमारी वृत्ति से ही विश्व की सभी आत्माओं की वृत्ति परिवर्तन हो जायेगी...।

बच्चे, अपनी लौकिक सभी ज़िम्मेवारियाँ बाप (परमात्मा शिव) हवाले कर, अपने उच्चतम् स्वमान में अर्थात् जो आप हों, उसमें स्थित हो कर्म-व्यवहार में आओ...।

जब आप अपने original स्वरूप के स्मृति स्वरूप बन जाओगे, तो आपकी वृत्ति परिवर्तन हो जायेगी ... जिससे automatically दृष्टि और कृत्ति भी परिवर्तन हो जायेगी...।

बच्चे, high jump लगाकर मंज़िल पर पहुँचना ... अर्थात् सदा स्मृति स्वरूप रहना...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
24.03.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, निश्चयबुद्धि विजयन्ती अर्थात् 'एक बल-एक भरोसा' वाली आत्मा की विजय निश्चित ही है ... उन बच्चों की विजय कोई टाल नहीं सकता...।

बच्चे, निश्चयबुद्धि वाले बच्चों के अन्दर सम्पूर्ण समर्पण भाव होगा ... अर्थात् तन, मन, धन, जन एवं संबंध, संपर्क सबकुछ ... बाप (परमात्मा शिव) को समर्पण कर हल्की रहेंगी...।

देखो बच्चे, जब तक आप सम्पूर्ण नहीं बनते, तब तक आपके बचे हुए थोड़े बहुत हिसाब-किताब आते रहेंगे ... चाहे तो अपने ही स्वभाव-संस्कार से ... चाहे अन्य किसी भी तरह से...।

परन्तु जब आप असोचता बन जाओगे अर्थात् सब बाप हवाले कर दोगे, तब जल्दी ही आपके सारे हिसाब-किताब finish हो जायेंगे ... अर्थात् आश्चर्यजनक और अचानक परिवर्तन हो जायेगा...।

बस, उससे पहले आपको निश्चयबुद्धि बन, निश्चिन्त अवस्था में स्थित रहना है।

हर कदम में स्वयं का कल्याण समझ आगे से आगे बढ़ते जाना है।

बच्चे, स्वयं को सदा light house - might house समझ, बाप की अँगुली पकड़, धैर्यतापूर्वक चलते चलो। जल्दबाज़ी मत करना ... ना ही पीछे मुड़कर देखना।

बस, शान्तिपूर्वक सभी आत्माओं के लिए शुभ-भावना, शुभ-कामनाओं से भरपूर संकल्प लिए अर्थात् सभी आत्माओं के प्रति रहम, कल्याण एवं प्यार की भावना रख चलते चलो...।

Drama का scene आश्चर्यजनक और अचानक परिवर्तन होगा।
इसलिए, बाप पर निश्चय रख, निश्चिन्त अवस्था में रहना है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
25.03.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, शान्ति आप बच्चों का स्वधर्म है, यह हमेशा आप बच्चों को याद रहता है क्या...?

क्योंकि, अब समय अनुसार शान्तचित्त अवस्था बनाना अति आवश्यक है।

जबकि जाना ही आवाज़ की दुनिया से दूर है ... अर्थात् सूक्ष्म वतन और मूल वतन, दोनों में ही आवाज़ नहीं है ... और जो आत्मा शान्तचित्त होगी वो ही अपने फरिश्ता और बिंदु स्वरूप में अधिक समय तक स्थित हो सकेगी ... अन्यथा यह दुनिया और इस दुनिया की विभिन्न बातें आपको अपनी तरफ खिंचेगी...।

धीरे-धीरे सेवा का स्वरूप भी परिवर्तन हो जायेगा...।

दृष्टि से सृष्टि परिवर्तन होगी। इसी का गायन है ना...!

जितना आप आवश्यकता अनुसार आवाज़ में आओगे अर्थात् साधारण बोल और व्यर्थ बोल से बचोगे, उतनी आपकी दृष्टि powerful होगी ... फिर दृष्टि द्वारा सेवा शुरु हो जाएगी।

अभी आप बच्चों को अपने बोल पर attention रखना है और यह पुरुषार्थ बहुत सहज रीति करना है अर्थात् हल्के रहकर करना है।

बस attention रखना है कि मैं क्या बोल रहा हूँ...?

धैर्यतापूर्वक हर पुरुषार्थ करो ... जल्दबाज़ी मत करना।

बाप (परमात्मा शिव) को संग रख, स्वयं के ऊँच स्वमान में स्थित हो आगे से आगे बढ़ो।

सफलता तो आप बच्चों का ही जन्म-सिद्ध अधिकार है...। अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
26.03.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप हो बिन्दी स्वरुप आत्मा, मास्टर सर्वशक्तिवान्...।
जितने सूक्ष्म हो, उतने शक्तिशाली हो।

बस, अब अपनी शक्तियों को पहचानों...।

देवताओं के जो विभिन्न गायन हैं, वो भक्त ऐसे ही नहीं गाते ... उन्होंने एक-एक कर्तव्य ऐसे किये हैं, जिसका गायन आज तक अर्थात् बिल्कुल अंतिम समय तक भक्तों की स्मृति में है।

वो अब भी आप बच्चों की ही यादगार के आगे जाकर शक्ति माँगते हैं ... और उनके आगे जाकर ही कहते हैं - हमारे विघ्न हरो, हमें सुख दो, सम्पत्ति दो...। फिर आप क्यों भूल जाते हो...?

आप अपने एक-एक स्वमान के महत्व को समझ, उसके स्मृति स्वरुप बन जाओ।

बच्चे, आपके संकल्पों में इतनी शक्ति है कि आप क्षण भर में ही दुनिया का परिवर्तन कर सकते हो।

बस, अपने असली स्वरुप में स्थित रहो...।

जब भी, किसी भी आत्मा को, कोई भी किसी भी प्रकार का बंधन हो, तो वो कमज़ोर बन जाती है।

अब स्वयं को बंधनमुक्त अर्थात् इस पाँच तत्वों की दुनिया के बंधन से मुक्त करो।

अपने को original स्वरुप में स्थित करो। फिर आपकी शक्तियाँ powerful रुप से अपना कार्य शुरु करेंगी।

गृहस्थ व्यवहार में सबको हल्के रखना है, साथ ही स्वयं को भी हल्का रखना अति आवश्यक है।

जो भी कार्य सामने आता है, उसे सहज रीति करते जाओ।

उस कार्य को पहले परमात्मा बाप को समर्पण कर, असोचता बन, फिर उस कार्य को करो और फिर हल्के हो जाओ ... अर्थात् सबकुछ बाप को समर्पण कर, अपने स्मृति स्वरूप बन, अपने विश्व-परिवर्तन के कार्य में तत्पर हो जाओ।

यही अभ्यास आप बच्चों को सम्पन्न बनाएगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
27.03.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब अति सो अंत का समय तो आने वाला ही है ... इसलिए बाप चाहता है कि मैं अपने प्रिय बच्चों के सारे हिसाब-किताब चाहे तो तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क ... सारे ही पूरे करवा, अपनी post तक पहुँचा दूँ...।

इसलिए आप भी खुले दिल से हर तरह के हिसाब-किताब को accept करो अर्थात् क्या, क्यों या सोच-विचार करने की बजाए, उन्हें बाप को समर्पण कर, बाप की श्रीमत प्रमाण चलने का पुरुषार्थ करो।

आप बच्चों को इतना निश्चय और नशा होना चाहिए कि परमात्मा बाप की direct नज़र हम बच्चों पर पड़ी है ... और यदि हम 100% उनकी श्रीमत प्रमाण चल रहे हैं, तो हमारे हर कदम में कल्याण ही समाया हुआ है...।

देखो बच्चे, हिसाब-किताब तो मन के भी बहुत भारी हैं ... उसे भी बाप को समर्पण कर हल्के रहो...।

हल्के रहने का पुरुषार्थ करो...।

बाप (परमात्मा शिव) की नज़र आप बच्चों के हर संकल्प और हर activity पर है।
बस, आप भी स्वयं पर attention दे चलते चलो।

Double light रहना ही सबसे बड़ा पुरुषार्थ है ... और यही बाप की सबसे बड़ी श्रीमत है, जिससे ही आप अपनी मंज़िल पर पहुँच पाओगे...।

यदि बच्चे, हिसाब-किताब आने पर आप विभिन्न तरह के प्रश्नों में चले जाते हो, तो आपका बहुत समय व्यर्थ चला जाता है, जो बाप नहीं चाहता...।

क्योंकि शिव बाप, दुनिया में दुःखों की अति से पहले ही इस दुनिया से न्यारा कर, आप बच्चों को ऊपर बिठा लेना चाहता है ... और अभी कोई minor सा भी हिसाब-किताब रह गया, तो वो नीचे खिंचेगा...!
और उस अति के समय हिसाब-किताब clear करना और इस दुनिया से न्यारा होना, नामुमकिन हो जायेगा...!
तब तो बाप भी साक्षी हो जायेगा...!

इसलिए, बाप पर 100% निश्चय रख स्वयं में समर्पण, प्रेम, कल्याण और धैर्यता के गुण को बढ़ा, अपनी मंज़िल पर पहुँचों...। तब ही तो विश्व परिवर्तन होगा।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
28.03.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, यदि आप अपने घर के सदस्यों को या अन्य किसी को ज्ञान के बारे में बताते हैं या समझाते हैं, तो ये पुण्य कर्म हैं ... जो आप बच्चों को करने ही हैं।

आप बच्चों के अन्दर सभी आत्माओं के लिए प्यार और कल्याण की भावना है, इसी कारण आप अपना कार्य करते रहते हो।

बस बच्चे, ध्यान रखना यह पुण्य कर्म कर निश्चिन्त हो जाना ... अर्थात् हर हाल में, हर स्थिति में उस आत्मा के प्रति अपनी शुभ भावना बनाये रखना, चाहे वो आपके परिवार की हो ... चाहे वो परिवार से बाहर की...।

आप बाप की श्रीमत प्रमाण किसी को भी थोड़ा बहुत ज्ञान समझा, फिर अपने पुरुषार्थ में तत्पर हो जाना।

जब आप किसी भी आत्मा को ज्ञान देते हो तो जैसेकि यह किसी खिलौने में चाबी भरने के समान है और समय आते ही जो आप चाबी भरते रहते हो, उससे वो आत्मा एक second में उड़ जाती है अर्थात् इस दुनिया से न्यारी हो, अपने कार्य में तत्पर हो जाती है।
बस, आप बच्चे भी उस समय का धैर्यतापूर्वक इंतज़ार करना।

धैर्यता में ही निश्चय, निश्चिन्त स्थिति, शुभ भावना, शुभ कामना समाई हुई है ... और यह ही गुण समय को समीप लाता है।

बस बच्चे, आप अपने स्वमान में स्थित हो अपना कार्य करते रहो।

बाप (परमात्मा शिव) का कार्य तो बहुत ही speed से चल रहा है।
आप भी बाप-समान स्थिति में स्थित हो, विश्व कल्याणकारी बन जाओ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
29.03.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, शिव बाप है Supreme light ... सभी गुणों और शक्तियों से भरपूर ... और आप बच्चे भी light ही हो ... और जब आप भी बाप-समान बन जाओगे, तो बाप से मिलन मना पाओगे।

इसलिए स्वयं को light समझ सभी गुणों और शक्तियों से स्वयं को भरपूर रखो ... अर्थात् आपकी दृष्टि से, बोल से, कर्म से सभी गुण और शक्तियाँ emerge रूप से नज़र आनी चाहिए, जिससे आपके सभी कार्य automatically होते रहेंगे।

फिर बाप (परमात्मा शिव) के साथ-साथ आप भी प्रत्यक्ष हो जाओगे...।

बस बच्चे, स्वयं को light समझ मुझ Supreme light को याद करो - बस यही है अंतिम पढ़ाई और सारी पढ़ाई का सार भी...।
जितना आप स्वयं को light अनुभव करते जाओगे, उतना ही आपको अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध अर्थात् प्राप्तियाँ मिलनी शुरु हो जायेंगी।

स्थूल और सूक्ष्म - हर रुप से सिद्धि स्वरुप बन जाओगे...।

बस love and light का अभ्यास करते चले जाओ।
Love and light का अभ्यास अर्थात् स्वयं को light समझना है और सबसे प्यार करने का पुरुषार्थ करना है ... अर्थात अब आँखों को जब भी use करो तो सबकुछ light ही देखो वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

यह अभ्यास भी वही आत्मा सही रीति कर पायेगी जिसने अभी तक बाप की श्रीमत को 100% follow किया होगा ... और उसके लिए यह पुरुषार्थ बहुत सहज भी है और मंज़िल भी बिल्कुल समीप।

देखो बच्चे, जब अब परमात्मा बाप स्वयं पढ़ाने के लिये आ गया है ... तो समय से पहले बनना तो सभी को पड़ेगा ही, चाहे तो स्वयं के पुरुषार्थ से बनो, जोकि सबसे सहज रास्ता है अन्यथा बाप स्वयं बनायेगा जिससे आपका पद भी पीछे हो जायेगा और सज़ाओं का भी अनुभव होगा...!

इसलिए समय के महत्व को समझ, स्वयं ही स्वयं को तैयार करो...।
बहुत जल्द से जल्द प्राप्ति स्वरुप बच्चों को देख आप बच्चों का पश्चाताप शुरु हो जायेगा, अर्थात् आप अनुभव करोगे कि कर तो मैं भी सकता था क्योंकि बहुत ही सहज था ... परन्तु अलबेलेपन के संस्कार ने मुझे कल्प-कल्प के लिए पीछे कर दिया और अब पूरा कल्प मेरा part मुख्य actor वा actress में नहीं होगा...।

इसलिए बच्चे अभी भी समय है, पुरुषार्थ कर कुछ तो अपना number आगे कर लो।
बस, सच्चाई और सफाई के साथ स्वयं के संस्कारों को परिवर्तन कर बाप की श्रीमत प्रमाण चलते जाओ...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
30.03.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाप पर 100% निश्चय रख, निश्चिन्त स्थिति में स्थित रहो...।
जैसे बाबा कहें, वैसे करते जाओ...।

आप सब बच्चों का ज़िम्मेवार बाप (परमात्मा शिव) है ... इसलिए किसी भी तरह के, कोई भी प्रकार के question में मत जाओ ... बिंदु बन, संकल्पों को बिंदु लगा, बाप की श्रीमत प्रमाण बिंदु बाप के संग जाकर बैठ जाओ।

इसी में आप सब बच्चों का 100% कल्याण समाया हुआ है...।

आप सब परमात्मा बाप के दिलतख्तनशीन, नूरे रत्न बच्चे हो ... आपका कोई बाल बांका भी नहीं कर सकता...।

बाप पर निश्चय रख, खुशी-खुशी में उड़ते रहो...।

बच्चे, love and light का अभ्यास करते चले जाओ...।

Love and light का अभ्यास अर्थात् प्रेम का प्रकाश फैलाने का अभ्यास ... अर्थात् अब आपको feel होना चाहिए कि आप light के शरीर में point of light हो और आपसे प्रेम का प्रकाश फैलता चला जा रहा है ... जोकि सभी आत्माओं के साथ-साथ प्रकृति के पाँचों तत्वों को भी पहुँच रहा है...।
अब आँखों को जब भी use करो, तो सबकुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

Light का अभ्यास और अन्दर से नि:स्वार्थ प्यार ही आपको मंज़िल तक पहुँचायेगा।

बच्चे, सबके साथ-साथ स्वयं से भी भरपूर प्यार हो ... जैसे दूसरों को जल्दी से माफ कर देते हो, वैसे स्वयं को भी झट से माफ कर आगे बढ़ो..., अर्थात् किसी भी प्रकार के संकल्पों के बहाव में बहना नहीं है।
सबकुछ छोड़ अपने पुरुषार्थ में लगे रहना है ... आपका यही पुरुषार्थ आपको मंज़िल तक पहुँचायेगा...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
31.03.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, love and light का पुरुषार्थ करते चले जाओ...।
यही पुरुषार्थ आपको मंज़िल तक पहुँचाएगा।

बस alert होकर यह पुरुषार्थ करना है, अलबेले होकर नहीं...!

LOVE & LIGHT का पुरुषार्थ अर्थात् मैं एक point of light, Supreme point of light के नीचे, प्रेम स्वरूप बैठा हूँ...।
अब आँखों को जब भी use करो तो सबकुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

बच्चे, आपका पुरुषार्थ किसी आधार पर नहीं होना चाहिए, समय को भी अपना आधार नहीं बनाना क्योंकि जब आधार हिलता है, तो स्थिति भी हलचल में आती है ... जिससे आत्मा भारी हो जाती है...!

देखो बच्चे, यह समय अंत का भी अंत और उसका भी अंतिम समय जा रहा है। इस समय दुनियावी रीति चलने का मार्ग सहज और ऊँचाई का लगता है और परमात्म मार्ग त्याग का, कठिनाई का और दुनियावी रीति गिरावट का लगता है...।
इसलिए इस मार्ग में धैर्यता के साथ-साथ सहनशक्ति और सामना करने की शक्ति भी चाहिए...।

जो आत्मायें इस समय दुनिया की चकाचौंध में अर्थात् pomp and show में फँसती जा रही हैं, उन आत्माओं का पुण्य का खाता खत्म हो, पाप का खाता भरपूर हो रहा है ... और दूसरी ओर आप मुट्ठी भर आत्माओं का पाप खत्म हो, पुण्य का खाता भरपूर हो रहा है ... और बहुत जल्द से जल्द, उससे भी जल्द ... आप अपनी कमाई से भरपूर अर्थात् लक्ष्य सम्पन्न आत्मा बन जाओगे...।

फिर आप तो परमात्मा बाप के मस्तक के मणि, नूरे रत्न, दिलतख्तनशीन सो साक्षात्कार मूर्त बन जाओगे...।

और दूसरी तरफ दुनिया की सभी आत्मायें आपके सामने लेवता बन अर्थात भिखारी बन, इस प्यास में होंगी कि इन परमात्म तुल्य आत्माओं की एक नज़र हम पर भी पड़ जाये, तो हम भी मुक्त हो घर (शान्तिधाम) को जायें...।

बस, यह scene अब तो बाबा के सामने ही है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
01.04.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, love and light का अभ्यास चलते-फिरते अर्थात् पूरी दिनचर्या में बहुत carefully करने का attention रखना है ... और किसी भी बात की कोई tension नहीं रखनी...।

Love and light का अभ्यास अर्थात् स्वयं को point of light समझ, Supreme point of light के पास जाकर बैठ, सारे विश्व में light ही light, प्रकाश ही प्रकाश फैला दो ... अर्थात् प्यार के सागर के पास जाकर master प्यार का सागर बन बैठ जाओ और पूरे विश्व पर यह प्रेम की light-might की किरणें फैला दो ... स्वयं को point of light समझ, आँखों को जब भी use करो तो सबकुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

देखो बच्चे, बाबा बार-बार कह रहा है हल्के रहो, ज्यादा सोचो मत - क्या करना है, कैसे करना है ... कुछ नहीं..., बस स्वयं को light समझना है और सबसे प्यार करने का पुरूषार्थ करना है।

बस, आप अपना पुरूषार्थ करो सम्पन्न आपको बाप बनाएगा...।

100% present में रहना है और drama का जो scene सामने आये, उसे सहज रीति accept कर आगे बढ़ जाना है...।

जब आप बिल्कुल हल्के रह अपना part play करते हो, तो बाप भी आपकी अँगुली पकड़ drama के हर scene में आपकी कमाई जमा कर, आपको सहज ही मंज़िल तक पहुँचा देगा...।

इसलिए हर बात में बिंदु लगा, बिंदु बाप के संग रहो...। अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
02.04.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे सच्चे दिल से उमंग-उत्साह के साथ पुरुषार्थ में लगे हुए हैं और उनके अन्दर इच्छा भी एक ही है कि जैसे बाबा कहें, वैसे करना ही है ... परन्तु बीच-बीच में बाप की श्रीमत ठीक रीति ना समझने के कारण पुरुषार्थ को ही लेकर भारी हो जाते हैं...!

पर बच्चे पुरुषार्थ तो है ही double light रहने का...! अर्थात् कोई भी, किसी भी प्रकार का minor सा भी संकल्पों में बोझ नहीं...।

जब है ही सब परमात्मा बाप का, फिर बोझ कैसा...?

गृहस्थ व्यवहार में रहकर स्वयं हल्का रहना और अपने परिवार को भी हल्का रखना - यही सबसे बड़ा पुरुषार्थ है...।

और जब आप सम्पूर्ण रीति हल्के रहते हो, तो आपको मंज़िल तक पहुँचाना बाप की ज़िम्मेवारी है...।

इसलिए निश्चिन्त रह स्वयं पर attention रखो।

आपने अपने परिवार को हल्के रखने का attention रखना है ... अर्थात् आपके कारण कोई भी आत्मा भारी ना हो ... और वैसे तो हर आत्मा का part अपना-अपना है।

बस, आप बाप पर 100% निश्चय रख निश्चिन्त रहो अर्थात् "एक बल - एक भरोसा..."

बच्चे, love and light का अभ्यास करते रहो...।

LOVE & LIGHT का अभ्यास अर्थात् स्वयं को light समझना है और सबसे प्यार करने का पुरुषार्थ करना है ... स्वयं को point of light समझ, अब आँखों को जब भी use करो, तो सबकुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।
बिल्कुल हल्के रहना है।

अपना सब कुछ बाप (परमात्मा शिव) के हवाले कर, आगे बढ़ना है ... बाप हर पल आप बच्चों के साथ है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
03.04.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, love and light (प्रेम का प्रकाश) का अभ्यास करते चले जाओ ... love and light (प्रेम का प्रकाश) का अभ्यास अर्थात् मैं एक point of light, Supreme point of light के नीचे, प्रेम स्वरूप बैठा हूँ।

अब आपको feel होना चाहिए कि आप light के शरीर में point of light हो और आपसे प्रेम का प्रकाश फैलता चला जा रहा है, जोकि सभी आत्माओं के साथ-साथ प्रकृति के पाँचो तत्वों को भी पहुँच रहा है...।

अब आँखों को जब भी use करो, तो सबकुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

जैसे-जैसे आपकी प्यार की किरणें powerful रूप से सभी की सेवा करेंगी, तो इस पाँच तत्वों की दुनिया का प्रभाव आप पर नहीं होगा।

आपका प्रेम का प्रकाश सभी को शान्त और शीतल कर देगा और आप भी निर्बन्धन बन अर्थात् बाप-समान बन, विश्व परिवर्तन का कार्य कर दोगे...।

बच्चे, सदा बेहद में रहना है अर्थात् आपका हर संकल्प आपके स्वमान के according हो।

देखो, आप हो पूर्वज, आधारमूर्त और उधारमूर्त आत्माएं ... इसलिए आपके हर संकल्प का प्रभाव सभी आत्माओं पर पड़ता है, तो फिर आपके एक-एक संकल्प कल्याणकारी होने चाहिए..।

बस बच्चे, सर्व समर्पण हो attention देते चले जाओ, फिर तो मंज़िल पर पहुँचे की पहुँचे...।

अच्छा। ओम शांति।

Om Shanti
04.04.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बहुत alert होकर, carefully, love and light (प्रेम का प्रकाश) का अभ्यास करते रहना है ... इसमें अलबेले नहीं बनना।

यदि अलबेले बनोगे तो भारी हो जाओगे और भारी आत्मा उड़ नहीं सकेगी अर्थात् ना ही वो ठीक रीति पुरुषार्थ कर पायेगी और ना ही वो आगे बढ़ पायेगी...।

LOVE & LIGHT (प्रेम का प्रकाश) का अभ्यास अर्थात् अब आँखों को जब भी use करो तो सबकुछ light ही देखो वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

अब तो बच्चों के अन्दर एक ही लगन होनी चाहिए कि अब घर (परमधाम) जाना है via सूक्ष्मवतन अर्थात् पहले सूक्ष्मवतन जाना है...।

तो जहाँ जाना होता है ना, तो वैसी dress पहननी होती है ... इसलिए अभी से फरिश्तों की dress पहनकर रखोगे, तब ही तो जल्दी से जल्दी इस लौकिक part को finish कर अलौकिक part बजा पाओगे...।

इसलिए हमेशा light की dress पहनकर गुणों और शक्तियों की seat पर set रहो।

बच्चे, बहुत महीनता से स्वयं के मन-बुद्धि की checking करनी है कि यह love and light (प्रेम का प्रकाश) का पुरुषार्थ अच्छी तरह से कर रहा है...?

जहाँ भी संकल्पों में अलबेलापन है, check कर change कर देना है।

अब आपके अन्दर केवल प्यार ही प्यार होना चाहिए...।

देखो, आपकी माला है ना वो जिस धागे में पिरोई है वो प्यार का धागा है ... अर्थात् आप सब मणके एक-दूसरे के प्यार में समीप आते चले जाते हो। इसलिए किसी भी आत्मा के लिए अब आपके अन्दर साधारण वा व्यर्थ भी नहीं होना चाहिए...।

यदि किसी की गलती भी देखते हो ना, तो उसे शान्तिपूर्वक, शुभ भावना और शुभ कामना का सहयोग दो...।

यही आपकी शुद्ध vibrations सबका परिवर्तन कर देंगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
05.04.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, जबकि समय बिल्कुल थोड़ा-सा ही रहा है, तो आप सब बच्चों को केवल स्व-परिवर्तन ही करना है ... दूसरों के बारे में नहीं सोचना...।

हद से निकल बेहद में आ जाओ...।
बस love ही love हो ... light ही light हो...।

बच्चे, बाबा बार-बार कह रहा है कि समय कम है, तो इस बात पर 100% निश्चय रख, दुनिया को ना देख, अपने पुरुषार्थ में लगे रहो...।

Love and light का पुरूषार्थ - सबसे सहज और सबसे ऊँचा पुरूषार्थ है...।
इस पुरूषार्थ के द्वारा ही आप इस पाँच तत्वों की दुनिया में रहते इससे न्यारे हो सकते हो...।

इसलिए इसके महत्व को समझों और चलते, उठते, बैठते, खाते, पीते, सोते हुए ... अर्थात् हर कर्मणा में attention दे, इस पुरूषार्थ में तत्पर रहो...।

LOVE & LIGHT का पुरूषार्थ अर्थात् स्वयं को point of light समझ, Supreme point of light के पास जाकर बैठ, सारे विश्व में light ही light, प्रकाश ही प्रकाश फैला दो ... अर्थात् प्यार के सागर के पास जाकर, मास्टर प्यार का सागर बन बैठ जाओ और पूरे विश्व पर यह प्रेम की light-might की किरणें फैला दो...।

जो कुछ भी इन आँखों से देखो, सबकुछ light ही देखो, और वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

इस पुरूषार्थ से ही आपका परिवर्तन होगा अर्थात् आप बाप-समान बन जाओगे...।

आपकी स्थिति के परिवर्तन होते ही विश्व परिवर्तन का कार्य शुरू हो जायेगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
06.04.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, बाप आपसे यह love और light का पुरूषार्थ करवा रहा है ... ताकि आप पाँच तत्वों से न्यारे हो जाओ और जो यह पुरूषार्थ अच्छी रीति कर रहे हैं, उन्हें इसके result भी positive मिल रहे हैं...।

देखो, यह जो आपकी पाँच कर्मेन्द्रियां है ना, इनका प्रभाव भी आप पर नहीं पड़ना चाहिए अर्थात् कुछ भी देखकर, सुनकर, बोलकर कर्म का प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।

अब आँखों को जब भी use करो तो सबकुछ light ही देखो वो भी बहुत प्रेम के साथ ... तो जल्दी ही इसके प्रभाव से न्यारे हो जाओगे...।

अच्छा वा बुरा देखते भी आपके अन्दर कोई question नहीं अर्थात् कोई भी प्रकार का कोई sign नहीं, बस full-stop.

इसी तरह, अब हर कर्मेन्द्रिय को केवल कल्याण के प्रति use करो और बाकी हर बात को full-stop लगा दो ... और दूसरा अशरीरी बन, बार-बार बाप (परमात्मा शिव) के संग बैठ powerful मन्सा सेवा करो..., तब ही आप इन तत्वों के बीच रहते, इनसे सम्पूर्ण रीति न्यारे हो सकोगे और यहीं आपकी मंज़िल है...।

Attention दे पुरुषार्थ करना है ... भारी नहीं होना है, बस हर बात में बिन्दु...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
07.04.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे आप कितना स्वयं को परम पवित्र आत्मा समझ चलते हो...?

जब बाप समान बनना है और बाप तो पवित्रता का सागर है, तो आपको भी तो परम पवित्र बनना ही है ना...।

इसलिए बच्चे, स्वयं को बार-बार इस संकल्प मे स्थित करो कि मैं एक परम पवित्र आत्मा हूँ - कभी भृकुटी के मध्य में बैठ यह अनुभव करो ... और फिर कभी घर में शिव बाप के समीप जाकर बैठ जाओ...।
फिर पवित्रता के सागर में डूब जाओ ... अर्थात् अनुभव करो कि आपकी मन और बुद्धि सम्पूर्ण रीति पवित्र हो गई है और आपकी पवित्रता की light बढ़ती जा रही है...।

इस पवित्रता की light में बहुत ज्यादा शक्ति है...।

जैसे-जैसे आपके अन्दर पवित्रता की light बढ़ती जाएगी, उतना ही आपके संकल्प powerful होते जायेंगे।

एक तो पवित्र संकल्प बहुत कम होते हैं, जितने संकल्प कम होंगे उतने ही powerful होते जायेंगे...। फिर कहीं भी बैठ अपने संकल्पों द्वारा दूर-दूर तक सेवा कर सकते हो।

बच्चे, आपकी पवित्रता की light के आगे यह स्थूल सूर्य, चांद, सितारों की light कुछ नहीं है...।

इसलिए आप अपनी पवित्रता की light को पहचानों ... इसके लिए कुछ भी नहीं करना, बस बार-बार स्वयं को परम पवित्र आत्मा समझना है और बाप (निराकर शिव) के पास जाकर बैठ जाना है।

इस पवित्रता की शक्ति से ही आपके अन्दर हर गुण और शक्ति आ जायेगी...।

इसलिए बच्चे, इसका अभ्यास बढ़ाओ क्योंकि इससे प्राप्ति बहुत ऊँची है...।

अब आप दुनिया की छोटी-छोटी प्राप्तियों में समय मत गँवाओ...।

देखो बच्चे, यदि आप अपना यह संगमयुग का थोड़ा-सा भी बहुमूल्य समय लगाकर बहुत पैसे कमा लेते हो वा बड़ी गाड़ी ले आते हो या बड़ा मकान या फिर इस दुनिया के हिसाब से बड़ी से बड़ी प्राप्ति कर लेते हो ... तो क्या उसकी खुशी सदा रहेगी...?
नहीं ना...!
क्योंकि एक प्राप्ति मिलने के बाद दूसरी तरफ मन जाएगा...!

आपने अब तक तो यह सब कुछ करके ही देखा है, फिर बार-बार
क्यों इन छोटी-छोटी सी प्राप्तियों के लिए अपना समय व्यर्थ करते हो...?

देखो बच्चे, अब तो समय है स्वयं को इन सबसे मुक्त कर, मन-बुद्धि को दुनियावी प्राप्तियों से हल्का कर, परमात्म प्राप्तियों में लगाने का...।
जो प्राप्ति अविनाशी है ... और बहुत थोड़े से समय में ही आप अपने को बहुत खुशनसीब कहो, भाग्यवान कहो, समझोगे ... यदि आपने अपना यह बहुमूल्य समय बाप की श्रीमत प्रमाण use किया तो...।

जितना-जितना बाप की श्रीमत प्रमाण चलोगे, उतना ही अपने को ऊँच समझोंगे, अन्यथा आप खुद समझदार हो...!

बच्चे, अब अपना बहुमूल्य समय इन छोटी-छोटी प्राप्तियों में वा छोटी-छोटी बातों में व्यर्थ मत करो।

देह, देह से सम्बन्धित वस्तु, देह के सम्बन्धी, दोस्त, कर्म व्यवहार से बुद्धि निकालो।
यह सब आपको देह से न्यारा, देही अभिमानी स्थिति में स्थित नहीं होने देंगे...!

इन प्राप्तियों के लिए लगाया गया थोड़ा-सा समय, थोड़ा नहीं, बहुत ज्यादा है...!
• महीनता से हर बात समझो।
• अपने समय को सफल करो।
• अभी-अभी नहीं, तो कभी नहीं...।
बच्चे, अविनाशी कमाई करो ... जिसका समय फिर कभी नहीं आयेगा, क्योंकि यह कल्प-कल्प की बाज़ी है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
08.04.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप अपनी मन और बुद्धि में हर समय अपने गुणों और शक्तियों को emerge रुप में रखो।

जब आपकी बुद्धि गुणों और शक्तियों से भरपूर रहेगी, तो मन भी शक्तिशाली हो जायेगा ... फिर माया या आपके पुराने संस्कार आप पर वार नहीं कर पायेंगे...।

देखो, जैसे आप सोचते हो - 'मैं एक शान्त स्वरुप आत्मा हूँ...'
तो आपका मन अंतर्मुखी हो जायेगा, बोल शांत और मधुर हो जायेंगे और कर्म भी बिल्कुल accurate होंगे ... अर्थात् आपकी मन्सा-वाचा-कर्मणा एक समान हो जाएगी।

इस तरह आपको हर गुण वा शक्ति का स्वरूप बन उन्हें अपनी दिनचर्या में use करना है ... जितना use करोगे, उतना बढ़ते जायेंगे...।

बच्चे, आप कहते हो हम बाबा से सच्चे दिल से प्यार करते हैं और जिससे प्यार किया जाता हैं, उसे जो पसंद नहीं हो वो बोल और वो कार्य तो नहीं किया जाता है ना...!

लौकिक में भी आप सब इन बातों का ध्यान रखते हो ... और फिर जब यहाँ बाबा को व्यर्थ या साधारण पसंद नहीं है और वो कहते है कि हमेशा गुण स्वरूप वा शक्ति स्वरूप बन जाओ, फिर आपको मुश्किल क्यों लगता है...?
क्योंकि आप अपने original स्वरूप को बार-बार merge कर देते हो।

दूसरा, आप कहते हो कि हमने अपना तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क, कर्म, हिसाब, किताब, कमी, कमज़ोरी सब बाप (परमात्मा शिव) को दे दी है, फिर बाप जाने बाप का काम..., फिर आप बच्चे क्यों सोचते हो...?

यदि आप बाबा को दी हुई किसी भी बात के बारे में सोचते हो तो बाबा साक्षी हो जाता है और वो कार्य आपके लिए और भारी हो जाता है..., इसलिए आपका पुरुषार्थ बढ़ जाता है...!

यदि दी हुई चीज़ आपके पास आती है, तो आप फिर से बाबा को दे दो और बाबा से शक्तियाँ ले अपने original स्वरूप में स्थित हो जाओ।
ऐसा अभ्यास बार-बार करो...।

इसमें समय व्यर्थ मत गँवाओ, क्योंकि यह वो समय है जबकि परमात्मा बाप आपका साथी बन आपको 100% मदद दे रहा है ... इसका फायदा उठा, स्वयं को अपनी seat पर set रख, जल्दी से जल्दी अपने लक्ष्य को प्राप्त करो...।

जितना attention रखोगे उतना ही बाबा का सहयोग वा शक्तियाँ मिलेगी।

बस बच्चे, जल्दी-जल्दी सम्पन्न बन अर्थात् बाप-समान बन बाप से मिलन मनाओ।
• अब ना ही दिलशिकस्त होना है और ना ही अलबेलापन लाना है।
• यह मन और बुद्धि की यात्रा है जो आप अपने स्वरूप में स्थित हो हर पल कर सकते हो।
बस attention की ज़रूरत है।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
09.04.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप इस देह की दुनिया में रहते इससे न्यारा होने का अभ्यास कर रहे हो ... और बाप भी इससे न्यारा होने के लिए love and light का अभ्यास करवा रहा है।

Love and light का अभ्यास अर्थात् स्वयं को point of light समझ, Supreme point of light के पास जाकर बैठ, सारे विश्व में light ही light फैला दो ... अर्थात् प्यार के सागर के पास जाकर master प्यार का सागर बन बैठ जाओ और पूरे विश्व पर यह प्रेम की light-might की किरणें फैला दो...।
अब आँखों को जब भी use करो तो सबकुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

इस अभ्यास के साथ-साथ आपको अपने past के अर्थात् बीते हुए पहले second से न्यारा हो, present में अर्थात अपने original स्वरूप में स्थित हो शिव बाप के संग बैठ जाना है।
तब ही आप ठीक रीति यह अभ्यास कर पाओगे।

बस बच्चे, अब आपके अन्दर केवल एक ही संकल्प होना चाहिए कि अब घर (शान्तिधाम) जाना है।

इस असार संसार में और इसकी बातों में कुछ भी तंत (सार) नहीं है ... इसलिए अब इन सब बातों से न्यारे होने का attention रखना है।

जितना आप attention रखोगे, उतनी जल्दी बाप आपको अपने संग बिठा लेगा।

बस alert होकर attention रखना, भारी नहीं होना...।
हर बात बाप को समर्पण कर हल्के रहना है।

हल्की आत्मा ही यह अभ्यास का ठीक रीति attention रख बाप के संग घर जायेगी।

बच्चे, यह अभ्यास बहुत उमंग-उत्साह के साथ करना है।
बार-बार स्वयं को light-might समझ, बाप को संग रख, विश्व globe पर बैठ, light की powerful vibrations फैला देनी है।

यह किया गया powerful अभ्यास ही समय की समीपता की घंटी है।

बस attention दे करते चलो। बाप की नज़र आप सब बच्चों पर है।
आप 100% बाप पर निश्चय रख, निश्चिन्त रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
10.04.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, समर्पण अर्थात् निश्चय, निश्चिन्त, हल्का...।

जितना आप समर्पण अर्थात् plain बुद्धि रहते हो, उतनी जल्दी आप मंज़िल पर पहुँचते हो ... क्योंकि आपके plain बुद्धि होते ही बाप की planning का कार्य शुरू हो जाता है, अन्यथा time लग जाता है...।

जितना आप समर्पण हो बाप की श्रीमत् पर चलना चाहते हो, तो बाप स्वयं ही आपसे आपका पुरुषार्थ करवा, आपको अपने संग बिठा लेगा।
बस इसके लिए हर परिस्थिति, कमी-कमज़ोरी सब बाप को सुना plain बुद्धि बन, बाप के संग बैठ जाओ..., फिर देखो बाप की कमाल...।

कुछ भी हो double light, हल्के रहो...।
आपका सच्चा दिल और आज्ञाकारी मन-बुद्धि बाप को आपका आज्ञाकारी बना देती है अर्थात् आप जैसा चाहते हो, वैसा ही होना शुरू हो जाता है...।

बच्चे, हल्के होकर अर्थात् double light रह, loveful रहने का अभ्यास करना है। इसमें ना तो bore होना है, ना ही भारी...।

थोड़े समय के अभ्यास से ही प्राप्तियां शुरु हो जायेंगी।

देखो बच्चे, जब बनना ही बाप-समान है तो आपका पुरुषार्थ भी निराधार होना चाहिए...।
बस एक बाप, आप और विश्व का कल्याण अर्थात् सेवा...।

अब आप बच्चों को अपने सभी गुणों और शक्तियों को स्व के प्रति और सेवा के प्रति ही use कर सफलतामूर्त बनना है अर्थात् आप बच्चों को सफलता से प्राप्त खुशी के ही अनुभव में रहना है।

बस, बाप पर निश्चय रख जैसे बाप कहे वैसे करते जाओ फिर बाप-समान बने की बनें...।

बस, love and light का अभ्यास करते रहो। एक बल - एक भरोसा रह, चलते रहो।
ऐसा ना हो धैर्यता का गुण छूट जाये और result out हो जायें...!

Love and light का अभ्यास अर्थात् स्वयं को light समझना है और सबसे प्यार करने का पुरुषार्थ करना है अर्थात अब आँखों को जब भी use करो तो सबकुछ light ही देखो वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
11.04.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बाबा अपने दिलतख्तनशीन, नूरे रत्न बच्चों को देख उनके गीत गा रहा है...।
वाह बच्चे वाह, वाह मेरे विजयी रत्न बच्चे वाह...!

जैसे बाबा बच्चों के स्वागत के लिए हर पल तैयार रहता है, इसी तरह बच्चे भी बाप के स्वागत के लिए गुणों रूपी शक्तियों से सुसज्जित रहें...।

तब ही बाप-समान स्थिति से बाप से मिलन मना सकेंगे...।

सब प्रश्नों से पार रह, बाप पर 100% निश्चय रख बहुत उमंग-उत्साह के साथ अपनी सम्पन्नता को प्राप्त करना है ... ताकि आप परिवर्तन का कार्य झटके से कर सको...।

देखो, हर तरफ हलचल ही हलचल है ... परन्तु कुछ एक अचल-अडोल बच्चे ही इस हलचल से न्यारे रह, इस हलचल को समाप्त करने के निमित्त बनते हैं।

बाप पर निश्चय रखो - जो भी छोटी-छोटी परिस्थिति आ रही है, वो केवल आपके कल्याण अर्थ, अर्थात् आप बच्चों को पुरानी दुनिया से बचाने के लिए आ रही है।

बाबा बार-बार कह रहा है कि अपनी बुद्धि मत चलाओ...। बाप पर निश्चय रख, अपने original स्वरूप के स्मृति स्वरूप बन जाओ।
समय व्यर्थ मत गँवाओ...।

यदि आपको अपनी बुद्धि चलानी ही है तो यह सोचो कि मेरे ऊँच स्वमान के according मेरी मन्सा-वाचा-कर्मणा कैसे होनी चाहिए...?
बाप हर पल आप बच्चों के साथ हैं और अन्त तक आपके साथ ही रहेगा।

बस बच्चे, स्वयं पर attention रखना, धैर्यतापूर्वक आगे बढ़ना, balance बनाकर चलना हैं...।

हमेशा यही स्मृति रहे कि अब हमें ईश्वरीय परिवार के साथ प्रत्यक्ष होना है ... इसलिए हमारे व्यवहार से कोई भी आत्मा minor सा भी disturb ना हो।

यदि कोई अपनी सोच से या अन्य परिस्थिति से disturb होती है, तो उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रख, उसे बाप (परमात्मा शिव) के हवाले कर दो, बाप स्वयं उसे उसके number तक पहुँचा देगा...।

यह नया ज्ञान, यह धारणायें ... इस दुनिया के बीच रहते अपनाना बिल्कुल असम्भव था। सन्यासी तो आप बच्चों के समान चलने का सोच भी नहीं सकते थे...!
इसलिए किसी भी नई चीज़ की acceptance को लाने में समय लगता है और परमात्मा बाप का संदेश भी सभी आत्माओं तक पहुँचाना था...।
अब जबकी यह सभी कार्य हो चुके है और परिवर्तन ही बाकी है, तो वो आप बच्चों की powerful स्थिति से होगा।

इसलिए समय पर भी निश्चय रख, स्वयं पर full attention रख, आगे बढ़ो...।

बाप के और अपने भाग्य के गीत गाते रहो, तब ही तो विश्व की सभी आत्मायें आपके गीत गायेंगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
12.04.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब समय अनुसार संतुष्टता के गुण को धारण करो।
• संतुष्टता अर्थात् हर हाल में संतुष्ट...।
• संतुष्टमणी बच्चे ही परमात्मा बाप के मस्तकमणी बन सकते हैं...।

100% निश्चयबुद्धि बन अपना 100% दे, धैर्यतापूर्वक love and light का अभ्यास करते रहो।
1% भी विचलित मत होना...।

Love and light का अभ्यास अर्थात अब आँखों को जब भी use करो, तो सबकुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

क्या ... क्यों ... ऐसे ... वैसे .... कैसे ... कब तक...?
इन प्रश्नों में 1% भी नहीं जाना है।

इसलिए निश्चिन्त रहो...।

बस present में जो कुछ भी हो रहा है, उसे बाप हवाले कर अपनी स्व-स्थिति के आसन पर स्थित रहो।

आपकी powerful स्व-स्थिति ही परिस्थितियों को finish कर आपको मंज़िल तक पहुँचायेगी।

कोई भी बात हो, बार-बार बाप को समर्पण कर हल्के रहो...।

बस, आपका 100% attention स्वयं पर होना चाहिए। आपके हल्केपन की vibrations ही आपके सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को हल्का करेंगी।

जितना बाप पर निश्चय, उतना ही स्वयं पर ... drama पर ... और परिवार पर निश्चय ... अर्थात् सर्व कल्याणकारी बाप है, तो हर बात में कल्याण ही कल्याण है...।

हर पुराने second को छोड़ते जाओ, आगे बढ़ते जाओ..., बस आगे बढ़ते जाओ...।

Light ही light है ... light ही light है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
13.04.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, drama 100% fix है, फिर भी परमात्मा बाप स्वयं आकर अपना part play करता भी है और आप बच्चों से करवाता भी है...।

Fix होते हुए भी सबकुछ करना पड़ता है, वो भी समय के according ... अर्थात् जिस समय, जिस ज्ञान, योग, धारणा, सेवा की ज़रूरत है, उसी according drama में part play होता है, अर्थात् समय के साथ-साथ सबकुछ परिवर्तन हो जाता है।

परिवर्तन शक्ति, moulding power अर्थात् real gold ... अर्थात् किसी भी अच्छे से अच्छे संकल्प में भी ना बंधना अर्थात् समय के according मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध, सम्पर्क का परिवर्तन कर लेना, तब ही आप बाप-समान बन सकते हो...।

जिस तरह;
जब घर बनाना शुरु किया जाता है, तो केवल हर चीज़ की quality और durability देखी जाती है।
परन्तु जब बनके तैयार हो जाता है, तो उसे सजाने लगते है...।
और केवल वो ही सजावट की चीज़ रखते हैं, जो देखने में अति सुन्दर हो...।

इसी तरह ... जबकि आप बच्चे तैयार हो चुके हो, तो अब केवल आपकी सजावट अर्थात् आपको दुनिया के आगे प्रत्यक्ष करना है, तो आपको केवल अपने ज्ञान, गुण, शक्तियों को समय के according use कर, अपनी मन्सा, वाचा, कर्मणा और सम्बन्ध-सम्पर्क रखने हैं।

यह वो समय जा रहा है जब हर समय परिवर्तन शक्ति चाहिए...।

इसलिए, बाबा बार-बार कहता है अपने आपको किसी भी बात में बांधो मत।

बिल्कुल हल्के, शान्त, खुश और बैफिक्र रह स्वयं को प्रत्यक्ष करो।

निश्चय रखो कि जो भी आपके साथ हो रहा है, कल्याणकारी हो रहा है ... और इस समय बाप की हर श्रीमत, हर बच्चे के लिए अलग-अलग है, इसलिए बाप की श्रीमत को परख अपने according उस श्रीमत की पालना करो...।

बस एक ही बात का ध्यान रखना है कि स्वयं पर attention रख कर्म-व्यवहार में आना है।
अलबेले नहीं बनना...।

आपका बाप-समान व्यवहार ही आपको और बाप (परमात्मा शिव) को प्रत्यक्ष करेगा...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
14.04.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ, क्योंकि समय अनुसार एकाग्रता की शक्ति की अत्यधिक आवश्यकता है।
एकाग्रता की शक्ति वाला ही अचानक के paper में pass हो पायेगा।
यदि अभी-अभी पुरूषार्थ खत्म हो जायें, तो आपकी result क्या होगी...?

देखो बच्चे, पुरूषार्थ इसी तरह अचानक ही खत्म होगा...!
और जिस बच्चे ने स्व-स्थिति के आसन पर अर्थात् ऊँच स्वमान में स्थित होने का और बाप को अपने संग रखने का अभ्यास किया होगा, वो ही अचानक के paper में pass होगा।
बच्चे सोचते हैं कि हम अचानक के paper में तो pass हो जायेंगे...!
परन्तु अचानक का paper बहुत भयानक होगा...।

जिस बात में आप कमज़ोर हो, अचानक का paper उसी बात का आयेगा ... और वो समय स्वयं के साथ-साथ बाप की याद भुलाने वाला होगा ... वो समय ऐसा होगा जिसमें आप विस्मृत हो जाओगे अर्थात् आप स्वयं ही परिस्थिति में या उस समय के बहाव में इतना ज्यादा उलझ जाओगे कि स्वयं की याद और बाप की याद भूल जायेगी...!

परन्तु जो बच्चा अभी से ही...,
- अपने ऊँच स्वमान में स्थित होने की drill बार-बार कर रहा है...
- और साथ ही साथ अशरीरी बन अपने बाप (परमात्मा पिता) के पास घर जाने का भी पुरूषार्थ कर रहा है...
- अर्थात् जो स्वयं को आत्मा realize कर, बाप के साथ सर्व सम्बन्ध जोड़ने का पुरूषार्थ कर रहा है...
- अर्थात् बाप की श्रीमत पर चलने का 100% attention दे रहा है..., वो ही बच्चा अचानक के paper में बाप की मदद से ‘PASS WITH HONOUR‘ बन पायेगा...।

इसलिए बच्चे,
- स्मृति स्वरूप बनो...।
- मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास बढ़ाओ...।

बाबा बार-बार कह रहा है कि अचानक ... अचानक ... अचानक ...।

तो इस बात की importance अर्थात् समय के महत्व को समझ ... बाप की समझानी के महत्व को समझ, पुरुषार्थ करो ... अन्यथा बाप भी कुछ नहीं कर पायेगा...।
अन्तकाल आप अकेले हो जाओगे और वो घड़ी केवल पश्चाताप की होगी...।
इसलिए सोच-समझकर अपने एक-एक second को सफल करो।
अभी का पुरुषार्थ ही अन्तिम विजय का आधार है...। अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
15.04.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप हो मास्टर भगवान अर्थात् विश्व-कल्याणकारी अर्थात् दाता ... अर्थात् तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क ... हर चीज़ में सुख देने वाले अर्थात् परिवर्तन कर्ता...।

यह कार्य कौन कर सकता है...?
जो बच्चे स्वयं इन सब चीज़ों से न्यारे हो अर्थात् जिन बच्चों में सम्पूर्ण समर्पण भाव हो अर्थात् मन-बुद्धि बिल्कुल खाली हो ... कहीं भी उलझी या फँसी हुई ना हो - वो आत्मा ही सर्व कल्याणकारी बन सकती है...।

देखो, आपके भक्त, आपके ही यादगार चित्र - देवी-देवताओं से ही तन्दुरुस्त तन, सद्बुद्धि, धन और सुखमय सम्बन्ध-सम्पर्क चाहते हैं अर्थात् जो भी कमी होती है, वो आपसे ही माँगते है ... और जब आप इन सब चीज़ों के बीच में रहते, इन सबसे न्यारे अर्थात् कीचड़ में रहते diamond बन जाते हो ... अर्थात् diamond, आप तभी बन सकते हो, जब आप बाप पर 100% निश्चय रख, सदा समर्पण भाव के साथ रहते हो...।

परिस्थितियाँ आपको परिपक्व बनाने के लिए और ऊँच पद दिलाने के निमित्त आती हैं ... इसलिए हर तरफ से full pass होते, आगे बढ़ते जाओ...।
चाहे कोई भी paper हो, चाहे अपनी ही कमी-कमज़ोरी का paper क्यों ना हो...!
बस बिन्दु बन, बिन्दु बाप के संग बैठ जाओ, तब ही आप बाप-समान बन सकते हो...।

यह परिवर्तन बिल्कुल अचानक और papers के बीच ही होना है।

बस आप निश्चय रखो और धैर्यता के गुण को अपने साथ बांधे रखना, विजय आप बच्चों की ही है।

बाप हर पल अर्थात बाप की 100% नज़र आप बच्चों के ऊपर ही है।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
16.04.2019
【आज की अव्यक्त मुरली】

"सेवा करते डबल लाइट स्थिति द्वारा फरिश्तेपन की अवस्था में रहो, अशरीरी बनने का अभ्यास करो..."
(05.02.2009)

ब्राह्मण सो फरिश्ता ... फरिश्ता सो देवता...।

वर्तमान समय अभी विशेष क्या लक्ष्य सामने रहता है...?
क्योंकि फरिश्ता बनने के बिना देवता नहीं बन सकते...! तो वर्तमान समय और स्वयं के पुरुषार्थ प्रमाण अभी लक्ष्य यही है - फरिश्ता...।
संगमयुग के सम्पन्न स्वरूप, फरिश्ता सो देवता बनना है।

फरिश्ते की परिभाषा जानते भी हो ... फरिश्ता अर्थात् पुरानी दुनिया के सम्बन्ध, संस्कार, संकल्प से हल्का हो। पुराने संस्कार सबमें हल्के हों। सिर्फ अपने संस्कार, स्वभाव, संसार में हल्कापन नहीं, लेकिन फरिश्ता अर्थात् सर्व के सम्बन्ध में आते सर्व के स्वभाव, संस्कार में हल्कापन।
इस हल्केपन की निशानी क्या है...?
वह फरिश्ता आत्मा सर्व के प्यारे होंगे। कोई कोई के प्यारे नहीं, सर्व के प्यारे।

जैसे बाप, ब्रह्मा बाप को हर एक समझता है मेरा है। मेरा बाबा कहते हैं।
ऐसे फरिश्ता अर्थात् सर्व के प्रिय। तो एक्जैम्पुल रहा...।
तो हर ब्राह्मण का अभी लक्ष्य और लक्षण विशेष यही रहना चाहिए, है भी ... लेकिन नम्बरवार है...!
यही लगन हो अब फरिश्ता बनना ही है।
• फरिश्ता अर्थात् इस देह, साकार देह से न्यारा, सदा लाइट के देहधारी।

• फरिश्ता अर्थात् इस कर्मेन्द्रियों के राजा।
अभी तीव्र पुरुषार्थ का यही लक्ष्य रखो - मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ,
• चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति को बढ़ाओ,
• अशरीरीपन के अनुभव को बढ़ाओ...।
सेकण्ड में कोई भी संकल्पों को समाप्त करने में, संस्कार-स्वभाव में - डबल लाइट...।

कई बच्चे कहते हैं;
हम तो हल्के रहते हैं लेकिन हमको दूसरे जानते नहीं हैं...! लेकिन ऐसे डबल लाइट फरिश्ता, डबल लाइट ... उसकी लाइट छिप सकती है...?
छोटी-सी स्थूल लाइट टार्च हो या माचिस की तीली हो, लाइट कहाँ भी जलेगी, छिपेगी नहीं...!
और यह तो रुहानी लाइट है, तो अपने वायुमण्डल से उन्हों को अनुभव कराओ कि यह कौन हैं...!

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
17.04.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ...बच्चे, सारे ज्ञान का सार है - मैं आत्मा light ... परमात्म light के नीचे हूँ...।
बस सब तरफ light ही light है।

यह light ही परिवर्तन का कार्य करेगी।
बस, अब सब तरफ से मन-बुद्धि निकाल इसी का अभ्यास करना है ... मैं भी light , बाप भी light और सब तरफ परमधाम की light ही light है।

बच्चे, जब आप किसी भी आत्मा को ज्ञान देते हैं, तो जैसेकि doctor किसी भी छोटी-सी बीमारी के लिए रोगी को दवाई देता है ... और जब आप किसी आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभकामना रखते हो, तो जैसेकि उसे injection देना है ... और जब आप किसी भी आत्मा को उसके original स्वरुप के साथ परमात्म light के नीचे देखते हो, तो यह जैसेकि anesthesia देना है ... अर्थात् उसे पुराना जन्म भूलाकर, नया जन्म देना है...।

इसलिए, अब आप स्वयं पर full attention रखो ... जिससे आपकी powerful परमात्म vibrations, अन्य आत्माओं का परिवर्तन कर दें...,
• यही है न्यारे और प्यारेपन का अभ्यास...
• यही है स्वयं पर attention रखने का अभ्यास...
और
• यही है परिवर्तन का आधार...।

इसलिए बच्चे, बाप की हर बात पर निश्चय रखना है, डगमग नहीं होना, धैर्यतापूर्वक light का अभ्यास करते रहो।
बिल्कुल अचानक और आश्चर्यजनक परिवर्तन होना है...।

अभी भी सूक्ष्म रूप से शिव बाप, आप बच्चों के साथ ही है...।
बाप के दिल में केवल आप बच्चे ही समाये हुए हो।
बस जो परिवर्तन की विधि है, उसे सही रीति समझो और धैर्यतापूर्वक आगे बढ़ो, जल्दबाज़ी करने पर समय और ही व्यर्थ जायेगा...!
इसलिए बाप की श्रीमत प्रमाण चलते चलो, इसी में आप बच्चों का सम्पूर्ण कल्याण समाया हुआ है। अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
18.04.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अपने कार्य के स्मृति स्वरूप बन जाओ...।
आपका उच्चतम् स्वमान ही आपको अपने कार्य की स्मृति दिलाता है।

बस बच्चे, हर पल अपने ऊँच स्वमान में स्थित हो अपने कार्य में तत्पर रहो...।

Love and light का अभ्यास attention दे करते रहो ... जिससे आपके सारे कार्य सहज हो जायेंगे।

Love and light का अभ्यास अर्थात् स्वयं को point of light समझ, Supreme point of light के पास जाकर बैठ, सारे विश्व में light ही light फैला दो ... अर्थात् प्यार के सागर के पास जाकर, master प्यार का सागर बन बैठ जाओ और पूरे विश्व पर यह प्रेम की light-might की किरणें फैला दो...।
अब आँखों को जब भी use करो तो सबकुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

बच्चे सोचते हैं कि स्थूल रूप में कोई विशेष परिवर्तन तो हो नहीं रहा है...!
परन्तु बच्चे, आपका love and light का अभ्यास सबकुछ परिवर्तन कर देगा...।

बस, धैर्यतापूर्वक स्वयं पर attention रख यह अभ्यास करते रहो...।

"ना सोचो ... ना बोलो" ... जो हो गया या जो भी हो रहा है हर बात को, हर कारण को, बिंदु लगा ... बिंदु बन ... बिंदु बाप (परमात्मा शिव) के संग बैठ जाओ अर्थात् light बन, light के साथ बैठ हर जगह light ही light फैला दो...।

इस समय हर चीज़ तमोप्रधान है, इसलिए जो भी चीज़ मुख के अन्दर जाये उसे light बना, बाप की याद में खाओ..., तो बाप की याद में खाई गई हर चीज़ 100% positive result देगी।

बस, धैर्यतापूर्वक attention देकर खाओ ... वो मन-बुद्धि को भी शुद्ध रखेगी और तन को भी...।

बस, हर चीज़ शुद्ध होनी चाहिए चाहे मन-बुद्धि का भोजन हो या तन का...।
शुद्ध अर्थात् परमात्मा बाप की याद में किया गया कर्म..., चाहे वो मन्सा हो, वाचा हो या कर्मणा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
19.04.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे पूरी लग्न से तपस्या कर रहे हैं अर्थात् बच्चों के अन्दर शिव बाप की याद और बाप को साथ रखने की लग्न बहुत अच्छी है ... और अन्दर से इच्छा भी एक ही है कि बाप की श्रीमत् प्रमाण 100% चलें...।

बस बच्चे, अब अपनी तपस्या का प्रत्यक्ष सबूत अर्थात् बाप का सपूत बच्चा अर्थात् बाप-समान बनकर दिखाओ...।

अब आपका 100% परिवर्तन अर्थात् आपके अन्दर 100% moulding power आ जानी चाहिए ... अर्थात योग-अग्नि में तपकर real gold बन जाओ ... अर्थात् इतने soft की हर तरह की क्या, क्यों अर्थात् no complaint ... 100% satisfied...

आपके 100% satisfied होते ही बाप (परमात्मा शिव) का कार्य शुरु हो जाएगा।

100% satisfied अर्थात् हर हाल में समर्पण भाव ... चाहे कुछ भी हो, निश्चय अर्थात् निश्चिन्त ... अर्थात् इस दुनिया से न्यारा, plain बुद्धि, उड़ता पंछी...।

जिन बच्चों को बाप की विशेष पालना और पढ़ाई मिल रही है, वो पूरे कल्प अपना विशेष part play करते हैं ... और अन्त में विशेष बन, शिव बाप के संग ही घर (परमधाम) जाते हैं।

बस, निश्चय रख धैर्यतापूर्वक चलो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
20.04.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप एक परम पवित्र आत्मा अर्थात् पवित्रता का गोला हो अर्थात् अपने powerful पवित्रता के vibrations से तमोप्रधानता को भस्म कर सतोप्रधान, पवित्र बनाने वाले हो।

देखो बच्चे...,
पवित्रता एक अग्नि है, जिस अग्नि में बुराई भस्म हो अच्छाई में परिवर्तित हो जाती है ... अर्थात् दुनिया की तमोप्रधान vibrations अर्थात् आत्माओं और पाँच तत्वों की तमोप्रधानता भस्म होती है...।

जिससे ही कलियुग, सतयुग में परिवर्तित हो जाता है अर्थात् सभी आत्मायें घर (शान्तिधाम) चली जाती हैं ... और कुछ एक आत्मायें ही सतयुग, जो उन्होंने खुद ही बनाया है ... उसमें आ राज्य करती हैं...।

बच्चे, बहुत धैर्यतापूर्वक अपनी powerful स्थिति के आसन पर स्थित हो यह अभ्यास करना है ... क्योंकि कोई भी waste जलाया जाता है तो वो धुँआ करता है, पर आपको तो परमात्मा बाप को समर्पण हो, स्वयं पर attention रख, यह अभ्यास करना है।

आपकी अचल-अडोल-एकरस स्थिति ही आपको विजयी बनायेगी।

बच्चे, जब बाप साथ है तो हुआ ही पड़ा है ना...।

बच्चे, Love and light का अभ्यास attention दे करते रहो...।

Love and light का अभ्यास अर्थात् स्वयं को point of light समझ, Supreme point of light के पास जाकर बैठ, सारे विश्व में light ही light फैला दो ... अब आँखों को जब भी use करो तो सबकुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
21.04.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, जब आप मेरे प्यार में मस्त हो जाओगे तब अन्य बातों का आप पर कोई effect नहीं आएगा...।

देखो बच्चे, अंत का समय होने के कारण आपके 63 जन्मों के संस्कार भी बाहर आयेंगे परन्तु आपको घबराना नहीं है।
जैसे-जैसे आप seat पर set होते जाओगे तो यह संस्कार बहुत हल्के रूप में आयेंगे।

अब भी यह संस्कार बाहर निकलने हैं ... परन्तु आपने क्या-क्यों ना कर, अपना समय व्यर्थ ना गँवा, बहुत हल्के रह इन्हें cross करना है ... और तुरन्त अपनी seat पर set हो शिव बाप के साथ combined हो जाना है।

Attention और अभ्यास से आप जल्दी ही बाप-समान बन जाओगे।
इसलिए आप अपना 100% दो और बाबा आपको आप-समान बना लेगा...।

इसलिए बच्चे, अलबेलेपन के संस्कार को त्याग कर अपने पुरुषार्थ को बढ़ाते चलो।
बाप भी आपके इंतज़ार में ही है...।

बच्चे, love and light के साथ-साथ पवित्रता पर भी full attention रखो। सभी बच्चे अपने-अपने पुरुषार्थ में लगे हुए हैं और लग्न भी एक ही है कि जैसे बाबा कहें, वैसे ही करना है ... फिर भी नम्बरवार है, क्योंकि बुद्धि से बाप (परमात्मा शिव) की श्रीमत की acceptance नम्बरवार है।

जिस बात को बुद्धि 100% स्वीकार कर लेती है, उसे तो वो परिवर्तन कर लेती है ... चाहे थोड़ा-सा समय लगे, परन्तु जिस संस्कार को, कमी को, हिसाब-किताब को accept करने में percentage बना लेती है, उसे फिर finish करने में भी percentage बन जाती है...! जिस कारण माला नम्बरवार बनती है...!

इसलिए बच्चे, स्वयं को 100% स्वीकार कर change कर लो, नहीं तो बाप को परिवर्तन करना पड़ेगा, जिससे number भी पीछे होगा और पश्चाताप की भी भासना होगी।
इसलिए बच्चे, अब बाप के प्यार में समा जाओ ... खो जाओ ... तो स्वयं को परिवर्तन करना भी सहज हो जायेगा...।
बाप के प्यार में खोये रहना अर्थात् अपना 100% परमात्मा बाप के आगे समर्पण कर देना...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
22.04.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्वयं पर full attention रख, love and light के साथ-साथ purity का भी अभ्यास करते रहो और सदा अपनी स्व-स्थिति के आसन पर अर्थात् एकरस स्थिति के आसन पर स्थित रहो...।

कुछ भी सोचो मत अर्थात् प्रभाव-मुक्त अर्थात...,
• किसी भी बात का,
• किसी भी atmosphere का,
• किसी के भी स्वभाव-संस्कार का,
• कोई भी, किसी भी तरह के कमज़ोरी के प्रभाव से मुक्त,
• अर्थात् किसी भी बात को वा कार्य को कहते, करते, सुनते - no effect...
इसमें मूंझो मत...।

देखो बच्चे, कोई भी अच्छी बात वा बुरी बात का पता तो चलेगा परंतु आपके संकल्पों में ना चले।

एकदम शांतचित्त बन, वरदानी मूर्त बन जाओ...।

कोई भी अकल्याण की बात वा जो बात आपके according ना हो, तो भी उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना अर्थात् अकल्याण को भी, ज्ञान के point को use कर, कल्याण में परिवर्तित कर दो।

देखो, जब शिव बाप है ही साथ में तो कल्याण है ही है...।

इसलिए 100% निश्चय, फिर निश्चिन्त अवस्था...।
निश्चिन्त अवस्था है, तो विजय हुई ही पड़ी है।

बस, इसके लिए 100% समर्पण भाव रखो।
खुद को भी परमात्मा बाप को समर्पण कर दो ... अर्थात् जहाँ बिठाये, जो खिलाये...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
23.04.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप जो रूहानी यात्रा कर रहे हो, उसमें धैर्यता के गुण की अत्यधिक आवश्यकता है।

देखो, लौकिक रीति भी जब आप यात्रा पर होते हो और घर पहुँचने से थोड़े समय पहले ही आप अशान्त हो जाओ और समय को बार-बार देख धैर्य खो दो, तो कई बार अगर train रूक भी जाती है ... तो समय कम लगने की बजाए बढ़ जाता है...!
और यदि आप खुशी-खुशी, शान्तिपूर्वक मन-बुद्धि को और तरफ busy कर लेते हो, तो station आता ही दिखता है...।

इसी तरह;
इस रूहानी यात्रा में जबकि मंज़िल पर पहुँचने ही वाले हो, तो मन-बुद्धि को परमात्मा बाप की श्रीमत प्रमाण love and light में busy कर दो, तो मंज़िल पर जल्दी से पहुँच जाओगे...।

बस आपने attention ही तो रखना है ... आपका परिवर्तन कर आपको मंज़िल तक पहुँचाना तो बाप (परमात्मा शिव)का कार्य है...।

इसलिए ज्यादा सोचो मत..., double light रहो...।

ऐसा ना हो कि मंज़िल पर पहुँचने से पहले ही आप अपना रास्ता बदल लो, जिससे मंज़िल पर समय से पहले पहुँचना मुश्किल हो जायें...!

बच्चे, हल्के रह शिव बाप को संग रख love and light का अभ्यास करते रहो।

Love and light का अभ्यास अर्थात् स्वयं को light समझना है और सबसे प्यार करने का पुरूषार्थ करना है ... अर्थात अब आँखों को जब भी use करो तो सबकुछ light ही देखो वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

इस अभ्यास में आप बच्चों को full attention रखना है ... और इस अभ्यास में ना तो थकना है और ना ही अलबेले होना है...।

क्योंकि समय देखते ही देखते अर्थात् एक second में परिवर्तन होना है ... इसलिए, समय को अपना आधार मत बनाना...।

बच्चे, आप बस attention रखते जाओ ... और अचानक ही बाप आपको गोदी में उठा मंज़िल पर पहुँचा देगा।

बस, आपको तो ever-ready रहना है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
24.04.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब अपनी ऐसी स्थिति बना लो कि सभी तरह के प्रश्नों से पार चले जाओ...।
बाप की श्रीमत प्रमाण चलते रहो...।
बस, आप समय के प्रश्नों से अर्थात कब होगा...? कितने समय में हम मंज़िल पर पहुँच जायेंगे...? नहीं...।
आप सब बाप (परमात्मा शिव) के प्यार में खो जाओ ... बिंदु बन जाओ...।
जब ‘कब होगा’ खत्म हो जायेगा ना ... तो ‘अब' आ जायेगा...।

इसलिए शान्तिपूर्वक प्यार में खोये रहो अर्थात गृहस्थ व्यवहार सम्भालते भी सबसे न्यारे रह love and light में समा जाओ...।
देखो बच्चे, बाप स्वयं आप बच्चों को सम्भालने के लिए आया है तो आप भी बाप पर इतना ही निश्चय रखो...।

आपका बाप स्वयं भगवान है, जिसे सारी दुनिया पुकार रही है...।
बाप अपने बच्चों का full ज़िम्मेवार है, आपके स्थूल और सूक्ष्म सभी खज़ाने भरपूर रखेगा...।

बस आप बच्चे बाप की श्रीमत प्रमाण हर बात में अपना कल्याण समझ बिल्कुल निश्चिन्त अर्थात हल्के और निर्भय रह, love and light का अभ्यास करते रहो...। ज्यादा सोचो मत...।
अब तो paper भी finish होने वाले हैं।

Love and light का अभ्यास अर्थात अब आपको feel होना चाहिए कि आप light के शरीर में point of light हो और आपसे प्रेम का प्रकाश फैलता चला जा रहा है ... जोकि सभी आत्माओं के साथ-साथ प्रकृति के पाँचों तत्वों को भी पहुँच रहा है...।
अब आँखों को जब भी use करो, तो सबकुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

बस, धैर्यतापूर्वक बचे हुए थोड़े से paper जोकि artificial शेर के रूप में आयेंगे, बाप पर 100% निश्चय रख, full पास हो जाओ...।
फिर देखो बाप की कमाल पर कमाल..।

बाप अपने आज्ञाकारी, वफादार, फरमानबरदार बच्चों के लिए क्या नहीं कर सकता...!
इतना निश्चय रख अपने शिव बाप पर, आगे बढ़ो...। अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
25.04.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, बाप ने आप बच्चों को महीनता से सारी पढ़ाई पढ़ा दी है और last अभ्यास भी बता दिया है कि love and light का carefully किया गया अभ्यास ही आपको इस दुनिया से न्यारा करेगा...।

बस, आप बाप पर निश्चय रख यह अभ्यास करते चलो। जल्द ही प्राप्तियां शुरु हो जायेंगी।

Love and light का अभ्यास अर्थात इस पाँच तत्वों से न्यारे होने का पुरुषार्थ ... और जो यह पुरुषार्थ अच्छी रीति कर रहे हैं, उन्हें इसके result भी positive मिल रहे हैं।
यह जो आपकी पाँच कर्मेन्द्रियाँ है ना, इनका प्रभाव भी आप पर नहीं पड़ना चाहिए अर्थात् कुछ भी देखकर, सुनकर, बोलकर कर्म का प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।

अब आँखों को जब भी use करो तो सबकुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ ... तो जल्दी ही इसके प्रभाव से न्यारे हो जाओगे...।

देखो बच्चे, शिव बाप ने तो आप बच्चों से पहले से ही promise किया हुआ है कि 100% श्रीमत पर चलने वाले बच्चों को बाप समय से पहले तैयार कर अपने साथ लेकर जायेगा।

बस, आप double light रहो अर्थात् निश्चिन्त रहो।
बाप आपको किसी भी तरह की, कोई भी परिस्थिति में फँसने नहीं देगा...।

बस, आप आने वाली हर परिस्थिति को मन-बुद्धि द्वारा हल्का कर, LET GO कर, हल्के रहो ... आपका ज़िम्मेवार परमात्मा बाप है...।

जितने आप हल्के रहोगे उतनी जल्दी बाप आपको अपने संग बिठा लेगा।
बस, आप बाप पर निश्चय रखो।
बाप की एक-एक बात पत्थर की लकीर अर्थात् 100% सत्य सिद्ध होगी।

शिव बाप अपने हर बच्चे के साथ है। बस, आप ना तो अलबेले बनना और ना ही दिलशिकस्त होना...।
देखते ही देखते बिल्कुल अचानक ही समय परिवर्तन होना है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
26.04.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप कौन हो...?
आप आत्मा एक बहुमूल्य हीरा हो ... और यह शरीर जो है ना, वो बेमोल है...।
फिर आप अपने आपको बार-बार क्यों भूल जाते हो...?

देखो बच्चे, जो बड़ा जौहरी होता है ना, वो बहुमूल्य हीरे की देख-रेख वा उसकी सफाई खुद करते हैं ... चाहे वो बाकी काम अपने assistant को दे देंगे, परन्तु बहुमूल्य हीरा उन्हें नहीं देते...।
उन्हें लगता है कि पता नहीं वो सम्भाल पायें या नहीं...।

यहाँ तो देखो, स्वयं परमपिता परमात्मा जौहरी बन, आप अमूल्य हीरों की देख-रेख वा सम्भाल कर रहे हैं।
फिर आप अपने महत्व को, श्रेष्ठता को ... वा विशेषता को क्यों भूल जाते हो...?

आप जितना अपने महत्व को जानते जाओगे, उतना ही आपका स्वमान ऊँचा होता जायेगा ... फिर आपको यह देह, देह के सम्बन्ध, देह के पदार्थ, देह के कार्य सब तुच्छ लगने लगेंगे...।

फिर आपका समय वा संकल्प भी समर्थ हो जायेंगे।

इसलिए बच्चे, सोचो तो सहीं कि आप अमूल्य हीरों की सम्भाल कौन कर रहा है...?
आप अपनी महानता को एक पल के लिए भी मत भूलो...।

जितना आप अपनी seat पर अर्थात् अपने original अनादि स्वरूप की seat पर set होंगे, उतना ही आपके हिसाब-किताब हल्के हो जायेंगे।

बच्चे, स्वयं के पुरुषार्थ पर और बाप पर 100% निश्चय रख धैर्यतापूर्वक चलो।
जो यह विश्व-परिवर्तन का कार्य हो रहा है, वह कोई छोटा कार्य नहीं है...!
और इस समय यह कार्य बहुत speed से चल रहा है ... अर्थात् अंदर खाते (internally) सारी तैयारी हो चुकी है।
बस, प्रत्यक्ष होने ही वाली है...।
बच्चे, आप 100% समर्पण हो, शिव बाप पर निश्चय रख, आगे से आगे बढ़ो...। बिल्कुल अचानक ही परिवर्तन हो जायेगा…।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
27.04.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाप पर 100% निश्चय रख हर कदम में अपना कल्याण समझ, धैर्यतापूर्वक आगे बढ़ते जाओ...। यही सर्वश्रेष्ठ विधि है अपनी-अपनी position पर पहुँचने की...।

बच्चे, निश्चयबुद्धि विजयन्ती - इस बात को महीनता से समझो...।

जब नम्बरवन बनना है, तो समय से पहले ही अर्थात् सारी दुनिया से पहले अपने सारे हिसाब-किताब clear कर अपनी seat पर set होना पड़ेगा।

इसके लिए स्वयं पर 100% attention ज़रूरी है और साथ ही धैर्यता का गुण, जो निश्चय के साथ बँधा हुआ ही है...।

- निश्चय अर्थात् निश्चिन्त स्थिति
- निश्चय अर्थात् एक बल, एक भरोसा
- निश्चय अर्थात् एक बाप दूसरा ना कोई , हर छोटी-बड़ी परिस्थिति में...।
- निश्चय अर्थात् खुशनुमा चेहरा, सदैव हल्का, संतुष्टता से भरपूर मन
- निश्चय अर्थात् रमता योगी
- निश्चय अर्थात् no question, no complaint...

जो बच्चा निश्चय और धैर्यता के गुण को अपनी शक्ति बना लेगा, वो ही मास्टर सर्वशक्तिमान् बन मास्टर भगवान बन जायेगा ... अर्थात् कल्प-कल्प की विजयी आत्मा...।

बस बच्चे, आप सभी बातों से न्यारे रहो...।
शिवबाबा बैठा है।

हर बात में 100% कल्याण समाया हुआ है, क्योंकि हर आत्मा अपना accurate part play कर रही है।
Drama का अन्त अर्थात् climax period चल रहा है, जिसमें हर आत्मा के छिपे हुए संस्कार-स्वभाव सामने आ विदाई ले रहे हैं।
आप अपनी शुभ भावना, शुभ कामना सभी आत्माओं के लिए बनाये रखो, जिससे सभी का कल्याण हो - यही बाप-समान बच्चों का कर्तव्य है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
28.04.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आपका लक्ष्य बहुत ऊँच है, अर्थात् आप मनुष्य से देवता और देवता से भगवान समान बनने का पुरुषार्थ करते हो ... अर्थात् आप सारी दुनिया के रचयिता परमपिता परमात्मा के समान इस दुनिया में रहते बनना चाहते हो।

जबकि इस दुनिया की मनुष्य आत्मायें, द्वापर से ही परमात्मा से मिलने के लिए या उनके क्षण भर के दर्शन के लिए अपना पूरा जीवन ही लगा देती है...!

परन्तु आप मुट्ठी भर बच्चे बाप की श्रीमत पर सच्चे मन से, पूरी लगन से चल, बाप-समान बन जाते हो...।

आपका परमात्मा बाप के प्रति समर्पण भाव ही आपको, आपके लक्ष्य तक पहुँचता है...।

यह समय की भी बलिहारी है जो केवल इस समय ही, कोई-कोई आत्मायें ही, शिव बाप को पहचान बाप-समान बनने का attention देती हैं ... और केवल योग्य आत्मायें ही नम्बरवार बाप-समान बन सकती है।

योग्य, अर्थात् जो आत्मायें बेहद में सोचें ... और जो बच्चे सच्चे दिल से, निश्चय और धैर्यता को अपना आधार बना आगे बढ़े...।
ऐसे बच्चों को ही बाप का हर कदम में full सहयोग मिलता है ... अर्थात् भगवान बाप ऐसी आत्माओं को ही अपने समान बना लेता है, अन्यथा भगवान तो सबका बाप है...!

कई बच्चे सोचते हैं कि पता नहीं कितना समय अभी और लगेगा...?
देखो बच्चे, बाप की शक्तियाँ अपरमअपार है, इसके कारण बाप की महिमा भी अपरमअपार है...।
बाप-समान बनने के लिए आपको स्वयं को इतना योग्य तो बनाना ही पड़ेगा कि आप बाप की दी गई शक्तियों को स्वयं में सही रीति धारण कर, उन्हें सही रीति use कर सको।

बस बच्चे, बाप पर निश्चय रख आगे बढ़ो, आप ही कल्प-कल्प के विजयी हो...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti

29.04.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप निश्चिन्त रहो...।
अब आप बच्चों की स्व-स्थिति ऊँची होती जा रही हैं अर्थात् आप सब, इस दुनिया के प्रभाव से न्यारे अर्थात् तेरा-मेरा, क्या-क्यों, ऐसे-वैसे, अच्छा-बुरा ... हर चीज़ से न्यारे होते जा रहे हो...।
अब आप बच्चों के संकल्प भी बेहद में रहते हैं।

जैसे;
जब पानी से भरे एक बर्तन को अग्नि के ऊपर रख दें, तो पानी भाप बन ऊपर उड़ता जाता हैं, इसी तरह अब आप बच्चों की स्थिति योग-अग्नि से ऊपर की तरफ अर्थात् बेहद में स्थित होती जा रही है।
अब आप दुनिया के प्रभाव से न्यारे होते जा रहे हो।

यदि कोई बच्चा अभी भी क्या-क्यों करता है, तो जैसेकि अग्नि के ऊपर plate रख देता है, जिससे वो हद में भी आ जाता हैं और योग-अग्नि भी slow हो जाती है ... इसलिए बच्चे, स्वयं पर attention रखो और हर बंधन से मुक्त रह, सभी आत्माओं को बंधनमुक्त बनाओ ... और आपकी बेहद की स्थिति अर्थात् बाप-समान स्थिति ही सभी को मुक्त कर सकती है।

आपके अंदर एक ही संकल्प हो कि;
• सब अच्छा हैं
और
• हर बात में केवल कल्याण ही कल्याण है...।

आप आधारमूर्त आत्मायें हो।
सर्व आत्माओं के प्रति आपको विशेष सम्मान और स्नेह होना चाहिए...।

आप बच्चे तो मास्टर प्रेम के सागर हो - निर्माणता, नम्रता और मधुरता तो आपके विशेष गुण है। आप सर्व विशेष हो।

आपकी presence ही सभी आत्माओं में जागृति देती है।
बस, आप अपने उच्चतम authority रुपी स्वमान में स्थित रहो...।

Paper के रूप में कोई भी बात आये, तो आप विशाल हृदय बन, सभी को क्षमा कर, स्नेह दो - यही विश्व-कल्याणकारी आत्मा के विशेष गुण है...।

आपके साथ तो स्वयं भगवान, बाप रूप में चलता है, फिर आपको तो किसी भी बात की सोच होनी ही नहीं चाहिए...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
30.04.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाप-समान बनना सहज नहीं है..., इसके लिए 100% त्याग, तपस्या अर्थात् समर्पण भाव चाहिए ... 100% निश्चय चाहिए ... क्योंकि हर कार्य सूक्ष्म है...।
इस स्थूल नेत्रों से कुछ दिखाई नहीं देता...।

परन्तु यहाँ है परमपिता परमात्मा, सर्व कल्याणकारी, पालनहार भगवान जोकि अपने बच्चों की छोटी-बड़ी हर समस्या को सहज ही अर्थात् हर तूफान को तोहफे में परिवर्तन कर देता है..., बस wait and watch की आवश्यकता है...।

भक्तों को भक्ति का फल जल्दी मिलता है, परन्तु बच्चों को हर तरह का त्याग कर अपना 100% दे, तपस्या कर, कई तरह के papers देने पड़ते हैं, तब ही बच्चे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर अपनी प्राप्तियों को, जोकि अपरमअपार है, को प्राप्त करते हैं...।

जैसे;

एक बच्चा, थोड़ी-सी मेहनत कर कमाने लग जाये, तो थोड़ी-सी मेहनत से थोड़ी बहुत प्राप्ति होनी शुरू हो जाती है ... और दूसरी तरफ एक बच्चा पढ़ने लगे ... तो उसे तन, मन, धन भी लगाना पड़ता है ... और paper भी देने पड़ते है...।

परन्तु जब तक वो अपने aim तक नहीं पहुँचता, तब तक प्राप्ति कुछ नहीं...।
परन्तु aim पर पहुँचते ही दोनों बच्चों में ज़मीन-आसमान का अन्तर दिखता है...!

इसलिए बच्चे, आप उमंग-उत्साह के साथ, स्वयं पर attention दे आगे बढ़ो...।
यहाँ पर आप बच्चों की हर तरह से सम्भाल रखने की guarantee स्वयं भगवान की है, इसलिए निश्चिन्त रहो...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
01.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, भक्तों को भी भगवान पर कितना विश्वास होता है ... अन्तिम श्वांस तक भी भक्त भगवान पर विश्वास रखते हैं ... और कई बार तो किसी के श्वांस छोड़ने के बाद भी उसके परिजन सोचते हैं कि यह वापिस आ जायेगा...!

देखो, सारी दुनिया की हर तरह की आत्मा, भगवान पर भरोसा रखकर ही अपना जीवन व्यतीत करती है ... और आप तो नम्बरवन बच्चे हो, जिन बच्चों पर भगवान को भी मान है ... विश्वास है..., कि यही बच्चे विश्व-भर में मुझे प्रत्यक्ष करेंगे..., बाप (परमात्मा शिव) का नाम बाला करेंगे...।
फिर बताओ, बाबा की हर पल नज़र आप बच्चों पर नहीं होगी, तो किसपर होगी...?

जिस तरह बाप को बच्चों पर अटूट निश्चय है, इसी तरह आप भी स्वयं पर ... बाप पर ... अटूट निश्चय रख, हर स्थिति, परिस्थिति में स्वयं का 100% कल्याण समझ आगे से आगे बढ़ो ... यह paper नहीं..., आपको आपके लक्ष्य तक पहुँचाने की विधि है, जो बस खत्म ही होने वाली है...।

निश्चय और धैर्यता का गुण, शक्ति रूप में काम कर रहा है ... यह परिस्थिति के समय ही पता चलता है...।

हर परिस्थिति में आपकी स्थिति अचल-अडोल रहे..., क्योंकि आपका रक्षक स्वयं परमपिता परमात्मा है। बस बाप जैसा कहें, वैसा करते जाओ...।
अचानक ही प्राप्तियाँ शुरू हो जायेंगी।

बच्चे, बहुत carefully, love and light के साथ-साथ पवित्रता का अभ्यास करते रहो। पूरे alert रहो। मैं भी light ... यह तन भी light ... और मेरे चारों तरफ light ही light है...।

यह light का अभ्यास ही इन पाँचों तत्वों की originality को सामने लायेगा..., तब ही तो अन्त सो आदि होगी।
बस बच्चे, बाप भी light ... आप भी light ... light ही light है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
02.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, जबकि यह समय है ही आगे बढ़ने का इसलिए आप सब बच्चे आगे से आगे ही बढ़ रहे हो।

बस अब ना ही अलबेले बनना है और ना ही दिलशिकस्त बनना है। बस स्वयं पर full attention रख love and light का अभ्यास करते रहो।

क्या, क्यों, कैसे में मत जाना, नहीं तो आपकी speed रुक जायेगी, जिससे आपका number पीछे हो जायेगा।

बस attention दे आगे से आगे बढ़ो...।
शिव बाप पर और स्वयं पर निश्चय रख, निश्चिन्त रहो। धैर्यतापूर्वक चलते चलो। विजय आप बच्चों की ही है...।

बच्चे, इस मार्ग में संस्कार परिवर्तन अति आवश्यक है। संस्कार परिवर्तन अर्थात् स्व-परिवर्तन अर्थात् विश्व-परिवर्तन।

देखो बच्चे, जो स्वयं ही स्वयं के संस्कार परिवर्तन नहीं कर सकते, तो समय आने पर बाप उन आत्माओं के संस्कार परिवर्तन कर उन्हें घर (शान्तिधाम) लेकर जाते हैं ... और जो आत्मायें स्वयं ही स्वयं के संस्कार परिवर्तन करती हैं, वो समय परिवर्तन के निमित्त बन जाती हैं ... और अपना उच्चतम् भाग्य बना लेती हैं...।

देखो, बाप (परमात्मा शिव) की सारी पढ़ाई का सार ही परिवर्तन है।
इसलिए स्वयं ही स्वयं की checking कर अपने संस्कार बाप-समान बना लो ... अर्थात् drama के हर scene पर निश्चय अर्थात् no question, no complaint, किसी भी तरह का...।

ऐसी आत्मायें ही बिन्दु रूप में स्थित अर्थात् अपने सारे संकल्पों से मुक्त, बाप-समान स्थिति में स्थित, बाप के संग विश्व-परिवर्तन का कार्य कर सकती हैं।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
03.05.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, हल्के रहो, बिल्कुल हल्के ... ज्यादा सोचो मत अर्थात् कोई भी बात वा कोई भी कार्य, या स्वयं का या किसी भी आत्मा का स्वभाव-संस्कार समझ में नहीं आता, तो उसे 100% बाप हवाले कर स्व-स्थिति में स्थित हो, बाप के संग आकर बैठ जाओ...।

हर तरफ से अपना बुद्धियोग हटा बाप (निराकर शिव) की तरफ लगाओ...।
समय बस परिवर्तन होने ही वाला है।

आप बच्चों को इस दुनिया में कुछ भी नया नहीं दिख रहा है, इसलिए आप मूँझ जाते हो...!

परन्तु बाप पर निश्चय रखो कि परिवर्तन हुआ कि हुआ...।

जब कोई ऐसी बात वा कार्य होता है, जो आपकी समझ में नहीं आता कि करना चाहिए कि नहीं...! तो जो पहला संकल्प उठे, उस according कर, उसे बाप हवाले कर दो ... अर्थात् उसका result बाप हवाले कर निश्चिन्त स्थिति में स्थित हो, बाप के संग बैठ जाओ...।

बच्चे, बिल्कुल हल्का रहना है, कभी भी स्वयं को अर्थात् संकल्पों द्वारा कहीं जुड़ना या फँसना नहीं है। अच्छे से अच्छा कार्य करने के बाद भी उस संकल्प से न्यारा हो, स्वमान में स्थित हो, बाप के संग बैठ जाओ ... अर्थात् सदा याद रहे - करनहार मैं हूँ और करावनहार बाबा है ... हर संकल्प के प्रभाव से न्यारा, बिल्कुल हल्का...।

देखो, परिवर्तन भी आपके परिवर्तन पर आधारित है..., परन्तु एक limited समय तक, फिर तो परिवर्तन होना ही है।

इसलिए बाप की समझानी की महीनता को समझ, हर चीज़ से न्यारे हो जाओ...।
न्यारी आत्मा ही अंतिम समय 100% बच पायेगी...।

यदि कही भी संकल्प फँसे, तो आपको भी अन्य आत्माओं की तरह ही पश्चाताप या दुःख की भासना होगी ... चाहे 1% हो, परन्तु होगी तो ना..., जो बाप नहीं चाहता...।

जिन बच्चों को इतना समय तक एक-एक बात की समझानी दी, इतना काबिल बनाया, वो भी अपने थोड़े से अलबेलेपन के कारण कहीं भी फँस जायें...!

बस बच्चे, बाप पर न्यौछावर हो जाओ ... तब ही बाप-समान बन पाओगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
04.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, भक्तों और बच्चों में difference होता है।

भक्त भी भगवान को याद करते हैं और इसके साथ छोटी-छोटी इच्छाएं रखते हैं ... और वो बाप को पूरी रीति जानना भी नहीं चाहते ... अर्थात् उन्होंने द्वापर से सच्ची भक्ति नहीं की होती, जिस कारण भगवान बाप भी उनकी वो ही इच्छा पूर्ण कर, उनकी भक्ति का फल उन्हें दे देता है...।

परंतु आप बच्चे, जोकि द्वापर से ही सच्ची भक्ति करते हो अर्थात् निष्काम भक्ति, जिसकी एवज में परमात्मा शिव आपको बाप रूप में मिलता है ... और आपको ऐसा ज्ञान कहो, समझानी कहो देता है, जिससे आप नम्बरवार बाप-समान बन जाते हो।

बाप आपकी छोटी-छोटी इच्छाएं नहीं पूरी करता, बल्कि आपको इतना योग्य बना देता है कि आप अपने साथ-साथ सारे विश्व की आत्माओं की इच्छा को पूर्ण कर देते हो...।

यदि बाप बीच-बीच में आपकी इच्छायें पूरी करने लग जायें, तो आपकी तपस्या का फल कम हो जाता है...!

इसलिए बाबा बार-बार कहता है कि आप समर्पण हो जाओ अर्थात् इन सभी परिस्थितियों को बाप को समर्पण कर दो अर्थात् आप बेफिक्र हो जाओ ... और जब आप इच्छा-मुक्त या परिस्थिति-मुक्त हो जाते हो, तो आपमें इतनी power आ जाती है कि आपके संकल्प कार्य करने लग जाते हैं अर्थात् आपके powerful vibrations आपके आस-पास, आपके अनुकूल वातावरण बना देते हैं।
अन्यथा आप छोटी-छोटी परिस्थिति में फँस मैं और मेरे में आ जाते हो...!
बस बच्चे, अब आप मंज़िल पर पहुँचे कि पहुँचें...।

मंज़िल पर पहुँचना - यह संकल्प उमंग-उत्साह भरा संकल्प है ... वैसे आप हो भी मंज़िल के समीप ही, परन्तु बीच-बीच में समय को आधार बना अलबेले हो जाते हो या फिर समय की counting शुरु कर देते हो - यह दोनों ही संकल्प आपको मंज़िल से दूर कर देते हैं, जो मंज़िल आपके समीप ही थी...!

इसलिए निरसंकल्प हो, जैसे बाप कहता है, वैसे करो ... तब ही आप सभी चीज़ों से अर्थात् इन पाँच तत्वों की दुनिया के प्रभाव से निकल बाप-समान बन सकते हो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
05.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, मन और बुद्धि के मालिक बन इन्हें अपने order से चलाओ।

यदि अभी भी कभी आप मालिक बनो, कभी मन-बुद्धि..., यह ठीक नहीं है...।

यदि अभी भी आप स्वराज्य अधिकारी अर्थात अपने मन-बुद्धि के राजा नहीं बनोगे, तो ना ही बाप के दिलतख्तनशीन बनोगे और ना ही विश्व अधिकारी बनोगे।

बच्चे, आपको इस दुनिया के सभी साधनों से वैराग्य आ जाना चाहिए ... नहीं तो अंत समय यह साधन आपको अपनी तरफ खींचेंगे...!

• इन साधनों से क्या प्राप्त करना चाहते हो...?
• क्या इच्छा रह गई है...?
• दुनिया के समाचार जानना चाहते हो या अपना time pass करने के लिए इन्हें use करते हो...?
• क्या बाप से यह सब प्राप्ति नहीं होती...?
• या आप स्वयं से या बाप से bore हो जाते हो या सोचते हो कि एक second तो लगता है...?

आपका एक-एक second बहुत बहुमूल्य है और फिर पूरे कल्प में ऐसे बाप (परमात्मा शिव) का साथ नहीं मिलेगा...!

अतिन्द्रिय सुख का गायन ही गोप-गोपियों का है ... और सर्व प्राप्ति अभी की और भविष्य में भी बाप से ही होनी है, इसलिए full attention दो...,
• मनन चिंतन करो,
• बाप से रुह-रिहान करो,
• मन्सा सेवा करो
और
• शांति में बैठ यह अभ्यास बढ़ाते चलो...।

बच्चे, बाबा बार-बार कह रहा है - "अभी नहीं, तो कभी नहीं..."

यदि आप मज़बूरी से कोई कार्य करते हो, तो वो भी जमा हो जाता है ... और यदि मन से करते हो, तो नीचे की तरफ आ जाते हो...!

इसलिए, हर बात को परखकर बड़ी युक्ति-युक्त ढंग से चलते चलो...।

प्रवृत्ति में रहते बड़े युक्ति-युक्त ढंग से चलना पड़ता है।
आप बच्चों को अपने गुणों और शक्तियों की seat से कभी भी नहीं उतरना है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
06.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे अपना 100% दे पुरुषार्थ कर रहे हैं।
• सबके अंदर एक ही लगन है कि बाप-समान बनना ही है।
• परन्तु, पुरुषार्थ करने के बाद भी वो powerful स्थिति नहीं बन रही है...!
• Light की dress में रहने का भी अभ्यास करते हैं
• और बाप की छत्रछाया के नीचे रहने का भी अभ्यास करते हैं, परन्तु दोनों एक साथ नहीं कर पाते...!

बच्चे, शिवबाबा की नज़र हर पल आप बच्चों पर ही है ... बाबा देख रहा है कि बच्चों के अंदर एक ही लगन है, परन्तु मगन होने में नम्बरवार है...!

यदि बच्चे आप अपना 100% दे पुरुषार्थ करते हो और आपके ऊपर अपना full attention है, तो बाप की guarantee है - बाप आपको अपने समान बना साथ ले जायेगा...।

यह अभ्यास नया होने के कारण आप बच्चों को थोड़ा मुश्किल लगता है ... परन्तु जैसे-जैसे अभ्यास बढ़ाते जाओगे उतना ही सहज हो जायेगा और पहले से सहज हुआ भी है ... और जब आप light house

- might house स्थिति में स्थित होते हो, तो automatically आपका connection main power-house के साथ हो जाता है।

इसलिए, ज्यादा सोचो मत ... ज्यादा सोचने पर दिलशिकस्त हो जाते हो।

वैसे भी हिसाब-किताब clear करने का समय होने के कारण स्थिति ऊपर-नीचे होती है।

आपका full attention होने के कारण, आप तुरन्त अपनी seat पर set हो जाते हो।

इसलिए, अपने पर निश्चय रखो ... आप ही कल्प-कल्प के विजयी रत्न हो।

बस, मैं और मेरा-पन का त्याग कर, बाबा पर 100% निश्चय रख, हल्के हो आगे से आगे उड़ते चलो ... ज्यादा सोचो मत - कैसे होगा, कब होगा, मैं कर पाऊँगा या नहीं...?

स्वयं से संतुष्ट रह, अर्थात अपने पुरुषार्थ से संतुष्ट रह, बीती को बिंदी लगा, बाप की याद की लगन में मगन रहो...।
बाबा हर पल आपके साथ है, अर्थात बाप भी आपको स्नेह, सहयोग और शक्ति दे रहा है ... फिर तो हुआ ही पड़ा है ना...।

कोई हलचल नहीं, एकदम संतुष्ट, अचल, अडोल और एकरस रहना है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
07.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप हो एक आत्मा अर्थात् संकल्प शक्ति अर्थात् point of energy अर्थात् आत्मा...।

एक तरफ हो आप थोड़ी-सी आत्मायें अर्थात् विजयी रत्न, जिन्हें बाप (परमात्मा शिव) तैयार कर रहा है...।
आपको ऐसी पढ़ाई पढ़ा रहा है, जिससे आपके अंदर केवल positive संकल्प ही होंगे, कोई mixturity नहीं ... ना ही कोई साधारण संकल्प ... ना ही कोई व्यर्थ ... सदा उमंग, उत्साह, सफलता, खुशी से भरे हुए, बेहद के कल्याण के निमित्त powerful संकल्प...।

और दूसरी तरफ, सारे विश्व के आत्मायें ... व्यर्थ, negative और साधारण संकल्पों से भरपूर ... परन्तु इस समय वो सभी आत्मायें हार चुकी है, थक चुकी है, निराश हो चुकी है और उनकी हर खुशी और सफलता क्षण भंगुर है ... उनके अंदर हर समय एक डर समाया हुआ है अर्थात् उनकी आसुरी शक्तियाँ शक्तिहीन हो चुकी है...!

और इधर आप आत्मायें दिनों-दिन शक्तिशाली होती जा रही हो, क्योंकि आपका स्वयं पर attention हर पल का है ... और आप बच्चों ने अपने इस पाँच तत्वों रुपी वस्त्र में भी अंदर रीति (internally) काफी परिवर्तन कर लिया है...।
बस, थोड़े से attention से ही सारा कार्य हो जायेगा अर्थात् आपकी ईश्वरीय ताकत, दुनिया की आसुरी ताकत पर विजय प्राप्त कर लेगी अर्थात् उन्हें तमोप्रधान से सतोप्रधान बना देगी।

अभी भी आपकी शक्तियों ने आसुरी शक्तियों को बिल्कुल कमज़ोर कर दिया है।

बस, आप सब बच्चों का एक powerful, स्थिर संकल्प ... परिवर्तन का संकल्प, सबकुछ परिवर्तन कर देगा।

बस बच्चे, बाप को, बाप की शिक्षाओं को संग रख, love and light के अभ्यास को करते आगे बढ़ो। विजय हुई ही पड़ी है...।

Love and light का अभ्यास अर्थात अब आपको feel होना चाहिए कि आप light के शरीर में point of light हो और आपसे प्रेम का प्रकाश फैलता चला जा रहा है ... जोकि सभी आत्माओं के साथ-साथ प्रकृति के पाँचों तत्वों को भी पहुँच रहा है...।
अब आँखों को जब भी use करो, तो सबकुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
08.05.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब आपका शिव बाप प्रत्यक्ष रूप में आपकी सम्भाल करने आ गया है ... इसलिए, निश्चिन्त हो जाओ...।
किसी भी बात में क्या-क्यों मत करो...।

चाहे तन है, चाहे मन है ... इसे सतोप्रधान बनाने के लिए इसकी सफाई आवश्यक है ... और जब सफाई होगी, तो कुड़ा तो निकलेगा ही..., अर्थात् तन की बीमारी और मन की कमज़ोरी बाहर किसी-न-किसी रूप में आयेगी ... और इसी में आपका 100% कल्याण समाया हुआ है...।

यह समय केवल आपके कल्याण के निमित्त है।
100% बाप पर निश्चय रख, स्वयं का परिवर्तन करो, तब ही आप विश्व-परिवर्तन कर पाओगे।

बस, बाप पर 100% निश्चय रखो। धैर्यता की बहुत आवश्यकता है।

महसूस करो कि मैं light और मेरे चारों तरफ light ही light है ... बस और कुछ नहीं है...।
बस बच्चे, यही अभ्यास बढ़ाते जाओ...।

जब कोई चीज़ खराब हो जाती है, तो उसे reuse करने के लिए एक process से गुज़ारना पड़ता है ताकि वो दोबारा use करने के काबिल बन सके।

इसी तरह, इस समय यह पाँचों ही तत्व और इसके बीच रहती आप आत्मायें तमोप्रधान हो चुकी थी, परन्तु इस समय बहुत परिवर्तन हो चुका है।

स्वयं को और पाँचो तत्वों को सतोप्रधान बनाने के लिए आप आत्मायें निमित्त बनती हो..., इसी कारण आप बच्चों को भी इस process से निकलना आवश्यक है।

जबकि आप बच्चे परिवर्तन के निमित्त बनते हो, तो मालिक भी आप ही बनते हो...।

बस बच्चे, यह process भी समाप्त होने वाला है।
आप बाप पर निश्चय रख, दृढ़तापूर्वक उमंग-उत्साह के साथ आगे बढ़ो...।
यह सब कुछ केवल आपके कल्याण अर्थ ही हो रहा है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
09.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, सूक्ष्मवतन आपके संकल्पों की दुनिया है ... अर्थात् वहाँ ऐसी light है जोकि आपके संकल्पों के according चलती है।
आप जो चाहते हो, जैसा संकल्प करते हो, वो ही चीज़ आपके सामने प्रत्यक्ष हो जाती है ... और जितना-जितना आप light के शरीर का या फरिश्तापन का अभ्यास करते हो, तो वो light नीचे आ जाती है ... और यह फरिश्तेपन का अभ्यास साक्षात्कार का काम करेगी ... अर्थात् सूक्ष्मवतन की light से आपके भिन्न-भिन्न साक्षात्कार होंगे और आप अपने संकल्पों के according किसी भी चीज़ को, किसी भी रूप में परिवर्तित कर दोगे...।

और परमधाम की light अर्थात् परमपवित्र light, जोकि बिंदु बन, बिंदु बाप के संग रहने से आती है ... और यह light परिवर्तन का कार्य कर देती है...।

परमपवित्र light अर्थात् शांति, प्रेम ... अर्थात् सभी गुणों और शक्तियों से भरपूर ... जोकि आत्माओं सहित सभी पाँच तत्वों को सदा के लिए परिवर्तन कर, सतोप्रधान दुनिया की स्थापना कर देती है।

बस, आप बच्चों को चलते-फिरते फरिश्तापन का अभ्यास करना है और योग के समय बिंदु रूप का अभ्यास करना है।

परिवर्तन तो होना ही है।
बस, जो आपका थोड़ा बहुत हिसाब-किताब रहता है, वो भी बाबा सहज से सहज रीति चुक्तु करवा रहा है।

बस, आप स्वयं को किसी भी प्रकार के संकल्पों में ना उलझा, निश्चय रख, निश्चिन्त रहो...।

परिवर्तन अचानक और बहुत wonderful होगा...।

बस बच्चे, महसूस करो कि चारों तरफ light ही light है ... बाबा की light आ रही है और आप आत्मा में समाती जा रही है...।

इसे कहा जाता है;
चिड़ियाओं ने सागर को हप कर लिया..., अर्थात् बाबा की light लेते-लेते light स्वरूप ही बन गये...।
बस बच्चे, ऐसा अभ्यास करते रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
10.05.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अंतर्मुखी बन जाओ।
किसी भी बात का ज्यादा मन्थन मत करो...।

आप बच्चे हो विश्व-कल्याणकारी बच्चे...। अभी तो आप बच्चों को भगवान-भगवती बन, दाता-वरदाता बन, बेहद की आत्माओं का कल्याण करना है ... अर्थात् विश्व की सभी आत्माओं को घर (शान्तिधाम) का रास्ता दिखाना है।

बस, आप हर पल अपने उच्चतम् स्वमान की authority में रहो। आपके ऊँच स्वमान की शक्ति ही सारा कार्य कर देगी और अभी कर भी रही है...।

बस, आप तो अपनी स्मृति का switch on रखो। आपके बैठने से ही सारा कार्य अर्थात् आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा मिलेगा।

ज्यादा सोचो मत ... ज्ञान, गुण और शक्ति के स्वरूप बन जाओ, तभी तो मास्टर भगवान कहलाओंगे।

बच्चे, हर बात में कल्याण है और कल्याण तो होना ही है।
आप द्वारा नहीं होगा, तो फिर बताओ कौन करेगा...?

विश्व-कल्याण करने के लिए स्वयं को बिल्कुल हल्का रखना है और सदा मास्टर सर्वशक्तिवान की seat पर set रहना है।
इस seat पर set होते ही दूर से ही हर तरह की आत्मायें अर्थात् आपकी संकल्प power से ही वो मुक्ति को प्राप्त कर, आपका धन्यवाद कर, खुशी-खुशी घर को जायेंगी।

बस, आपको तो केवल स्वयं को अपनी seat पर set रखने का ही attention रखना है ... और जो आत्मा अपनी seat पर set है, वो बिल्कुल हल्की और खुश है...।

तब ही तो आपके vibrations ही सारा कार्य कर देंगे...। अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
11.05.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... आप हो विश्व परिवर्तक बच्चे, अर्थात् विश्व की तमोप्रधान से तमोप्रधान वस्तु को एक second से भी कम समय में सतोप्रधान बनाने वाले...।
फिर आप बच्चों को किसी भी वस्तु की बुराई के बारे में कोई single संकल्प भी नहीं चलना चाहिए।

आपके साथ जो कुछ भी हो रहा है, वो बाप की planning के according ही हो रहा है।

हर स्थिति, परिस्थिति से गुज़र कर ही बच्चों की checking होती है, तभी तो बच्चे परिपक्व बनते हैं।

हमेशा अचल, अडोल, एकरस स्थिति में स्थित रह हर आत्मा के प्रति शुभ-भावना रखनी है। आपके सम्पर्क में आने वाली आत्मायें भी बाप के according ही आपके सम्पर्क में आ रही है। फिर तो आप बच्चों को उन आत्माओं का धन्यवाद करना चाहिए...।
जिन-जिन स्थान पर आप रह रहे हो, वो सब शिवबाबा का भंडारा है और जहाँ विजयी रत्न भोजन को स्वीकार करें ... वो भोजन, भोजन ना रहकर भोग अर्थात् प्रसाद बन जाता है...।

जिस भोजन से अन्य आत्माओं का भी कल्याण होता है।

बस बच्चे, स्वयं पर और बाप पर 100% निश्चय रख, धैर्यतापूर्वक love and light के साथ purity का भी अभ्यास करते जाओ।
परिवर्तन तो होना ही है और अचानक होना है...।

इस समय जो बच्चा;
• पूरे सच्चे मन से अपने लक्ष्य को सामने रख,
• बाप की श्रीमत प्रमाण ही अपने हर संकल्प करता है,
• अर्थात् अपनी मन्सा, वाचा, कर्मणा और सम्बन्ध, सम्पर्क में बाप की श्रीमत प्रमाण,
• अर्थात् स्व-स्थिति के आसन पर स्थित हो,
• बाप के आगे 100% समर्पण हो,
• full निश्चय रख,
• धैर्यतापूर्वक आगे से आगे बढ़ रहा है ... वो बहुत ही जल्द अपने लक्ष्य को प्राप्त कर अपना कार्य अर्थात परमात्मा बाप की post पर पहुँच, साक्षात् इस विश्व का कल्याण करना शुरू कर देगा ... और फिर सभी अपना-अपना कार्य शुरू करेंगे...।

बस, हर हाल में चाहे अच्छा हो या परिस्थिति वाला हो निश्चय के साथ-साथ समर्पण ... और धैर्यता के साथ आगे बढ़ो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
12.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... सभी बहुत उमंग-उत्साह के साथ attention दे love and light का अभ्यास कर रहे हैं।

बच्चे, जिस तरह से यह अभ्यास गुप्त है, इसी तरह गुप्त रीति परिवर्तन भी हो जायेगा।
इसलिए इस पुरुषार्थ में अलबेले मत बनना।

बस, स्वयं पर 100% attention दे पुरुषार्थ करते रहना। बाप (परमात्मा शिव) की नज़र हर पल बच्चों पर है।

इसलिए drama के हर scene में अपना कल्याण समझ आगे से आगे बढ़ते रहना...।

जब तक आप संकल्पों से कमज़ोर हो, तब तक सम्पन्नता को प्राप्त कर नहीं सकते...।

बस बच्चे, स्वयं को light समझ Supreme light के नीचे रहने का attention दो।
यही attention आपका परिवर्तन कर देगा। कुछ भी कमी-कमज़ोरी आती है, उसे छोड़ आगे बढ़ते जाओ। उसके बारे में सोचो मत...। सबकुछ बाप को समर्पण कर आगे बढ़ो...।

अभी आप यह पाँच तत्वों की दुनिया किस तरह से चलती है उसे जानते नहीं हो और जोकि अब बिल्कुल तमोप्रधान बन गई है और आप उसी तमोप्रधानता में रह परिवर्तन का कार्य करते हो और यह कार्य मुझ बाप के सहयोग के बिना नहीं हो सकता...!

देखो, परिवर्तन अचानक ही होगा।
बस आप अपना समय और किसी भी बात में लगाये बिना, स्वयं पर 100% attention दे, स्वयं को बाप-समान बना लो...। बस balance बनाकर, हल्के रहकर चलना है...।
बाप आप बच्चों के साथ ही है। आपको तो मन-बुद्धि से बस स्वयं को समर्पण करना है।

महसूस करो कि चारों तरफ light ही light है ... light ही light है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
13.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, love and light का अभ्यास करते रहो।
इसी अभ्यास से आप बच्चों समेत सारे तत्व भी अपने original स्वरूप में आ जायेंगे अर्थात् उनकी भी सफाई होती है और सच्चाई भी सामने आती है...।

इसलिए अब जबकि अंत का भी अंत है, तो इस अभ्यास की अत्यधिक आवश्यकता है...।

बस, स्वयं को light समझना है और सबसे प्यार करना है ... अर्थात् शुभ भावना, शुभ कामना सम्पन्न बनना है...।
बस आप बच्चे बाप की श्रीमत प्रमाण चलते चलो। अपनी मन-बुद्धि ज्यादा मत चलाओ।
एक बल, एक भरोसा रख चलो...।

जो बच्चे विजयी रत्न होते हैं, वो बाबा पर 100% निश्चय रख अर्थात् श्रीमत में मनमत mix ना कर, निश्चयबुद्धि बन, बाप की एक-एक बात पर निश्चय रख चलते हैं ... बाकि बाप की श्रीमत पर चलते-चलते मनमत और परमत mix कर अलबेलेपन में आ, अपना भाग्य नम्बरवार बना लेते हैं...।

देखो बच्चे, जब बाप direct आप बच्चों को पढ़ाने आया है, तो वो समय देखकर ही आया है कि अब मुझे बच्चों को सम्पन्न और सम्पूर्ण बना अर्थात् उन्हें उनका पूरा भाग्य दे, उन्हें उनकी seat पर समय से पहले set करना है अन्यथा बच्चों का सम्पन्न बनना नामुमकिन हो जायेगा...!

यदि समय होता तो बाप भी कुछ और समय इंतज़ार के बाद आता, परन्तु आप बच्चे 100% निश्चय रख धेर्यतापूर्वक चलते चलो...।

यह धैर्यता का गुण एक second में सम्पन्नता में परिवर्तन हो जायेगा...।
एक बल, एक भरोसा ... एक बाप दूसरा ना कोई ... अर्थात् निश्चयबुद्धि विजयन्ती...।

निश्चय अर्थात् निश्चिन्त अर्थात् full-stop ... अर्थात् आपकी मन-बुद्धि बिल्कुल शान्त हो अपने अनादि स्वरूप में स्थित रहें...।

निश्चय अर्थात् no complaint, no question mark ... बिल्कुल सन्तुष्ट ... अर्थात् अकल्याण के scene में भी अपना कल्याण समझना - यह है 100% निश्चय...।

और यदि आप शान्त होकर तो बैठें, परन्तु साथ ही साथ अपनी मन-बुद्धि चला - ऐसे, वैसे, क्यों, कैसे ... इस तरह question mark में आ, अपनी निश्चय की percentage बना लेते हो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
14.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... मैं हूँ शांति का सागर और आप बच्चे कहते हो Om Shanti...

ओम शांति, अर्थात् मैं एक शांत स्वरूप आत्मा हूँ...।

तो आप बच्चों को चलते-फिरते love and light का अभ्यास तो करना ही है ... साथ में शांति के गुण को अपने साथ बाँध लो, तब ही आप बाप-समान बन पाओगे...।

देखो बच्चे, जब भी कोई छोटी से छोटी वा बड़ी बात मुझे सुना आप शांत होकर बैठ जाते हो, तो बाप का कार्य start हो जाता है अर्थात वो शांति का सागर होते हुए भी करनकरावनहार है ... परन्तु जब आप हल्का-सा भी अधैर्य होते हो, अशान्त होते हो या अपनी मन-बुद्धि के according चलते हो, तो उस समय उस बात के आप स्वयं ज़िम्मेवार बन जाते हो...!

परन्तु जब बाप पर छोड़ देते हो तो बाप है ज्ञानेश्वर, त्रिकालदर्शी ... उसे पता है किस बात को, किस समय करने में बच्चों का कल्याण समाया हुआ है ... और साथ ही साथ आपके शांत होते ही आप बच्चों की 100% ज़िम्मेवारी बाप की हो जाती है।

फिर बताओ जब बाप है ही ज़िम्मेवार तो सफलता कैसे ना होगी...!
सफलता तो आप बच्चों के कदम चुमेंगी...।
बस आप भी बाप समान शांत हो बैठ जाओ, फिर देखो बाप की कमाल...।

बाबा बार बार कह रहा है कि धैर्य रखो अर्थात् शांत स्थिति में स्थित रहो।
इस रहस्य को गुह्यता से समझ practical इस गुण को use करो, फिर परिवर्तन की गति तीव्र हो, सब कार्य सम्पन्न हो जायेंगे...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
15.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, हाहाकार का समय अर्थात् दु:ख और अशान्ति वाला समय जोकि बस आने ही वाला है, उस समय इन आँखों से जो कुछ भी देखते हो, वो कुछ काम नहीं आने वाला...।

बस, आपकी अपनी स्व-स्थिति जो आपने बाप की श्रीमत प्रमाण चल बनाई है, वो ही काम आयेगी...।

इसलिए, धैर्यतापूर्वक love and light का अभ्यास करते जाओ। समय परिवर्तन हुआ कि हुआ...।

Love and light का अभ्यास अर्थात् स्वयं को point of light समझ, Supreme point of light के पास जाकर बैठ, सारे विश्व में light ही light फैला दो ... अर्थात् प्यार के सागर के पास जाकर master प्यार का सागर बन बैठ जाओ और पूरे विश्व पर यह प्रेम की light-might की किरणें फैला दो...। अब आँखों को जब भी use करो, तो सबकुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

अपने सारे इस स्थूल दुनिया के संकल्प बाप को समर्पण कर स्वयं को शुभ संकल्पों से भरपूर रखो। फिर तो देखते ही देखते आप मास्टर भगवान बच्चे, समय को चलाने वाले बन जाओगे...।

आपकी मन्सा में कभी भी यह संकल्प ना आये कि हम इतने समय से पुरुषार्थ कर रहे हैं...! इस संकल्प से आप दिलशिकस्त हो जाओगे, थक जाओगे या फिर हार ही खा जाओगे...!

देखो बच्चे, प्राप्तियाँ असीम है जोकि शुरू ही होने वाली हैं। बाप पर निश्चय ही आपकी विजय का आधार है।

निश्चय अर्थात् बाप की एक-एक बात पर निश्चय...।

बच्चे, अचल-अडोल रहना है। जो भी छोटी-छोटी हलचल के scene सन्मुख आ रहे हैं ... बस वो आपकी checking के लिए आ रहे हैं..., इसलिए स्वयं अचल रह, हर बात को drama के scene की तरह cross कर दो।

बस जल्दी ही drama change होने वाला है।
इसलिए प्रेमपूर्वक आगे बढ़ते रहो...।

बस, आपके कल्याण अर्थ छोटी-छोटी problems आ रही हैं, इसे किनारे कर बाप को अपना सहारा बना अर्थात् बाप पर निश्चय रख, बाप पर समर्पण हो अंगुली पकड़, चलते चलो। बाप जल्द से जल्द आप बच्चों को आपकी मंज़िल तक पहुँचायेगा...।

बस बच्चे, हर second स्वयं का कल्याण समझो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
16.05.2019
★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... आप सभी बच्चों को अपने व्यवहार से अपनी तपस्या का सबुत देना है। आप बच्चे ही हर आत्मा को ... वायुमण्डल को ... परिवर्तन करने वाले हो ... अर्थात् आपके परिवर्तन को देख ही सभी परिवर्तित होंगे...।

इसलिए, आपको हर पल याद रखना चाहिए कि "जो मैं करूँगा, मुझे देख और करेंगे...।"

बच्चे, धैर्यतापूर्वक, हल्के रह उमंग-उत्साह के साथ love and light का अभ्यास करते रहो...। जब भगवान मिल गया ... वो भी बाप के रूप में ... तो और क्या चाहिए...?
बस थोड़ा-सा धीरज रखो। फिर हर उल्टे को सुल्टे में परिवर्तन होते देखोगे...।

Love and light का अभ्यास अर्थात अब आपको feel होना चाहिए कि आप light के शरीर में point of light हो और आपसे प्रेम का प्रकाश फैलता चला जा रहा है ... जोकि सभी आत्माओं के साथ-साथ प्रकृति के पाँचों तत्वों को भी पहुँच रहा है...।
अब आँखों को जब भी use करो, तो सबकुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

देखो, यथार्थ ज्ञान से ही यथार्थ योग लगता है। जिसके द्वारा ही स्व-परिवर्तन सो वायुमण्डल परिवर्तन सो विश्व-परिवर्तन होता है।

बच्चे, अपने ऊँच स्वमान के स्मृति स्वरूप रहना।
आपको यह हमेशा स्मृति रहनी चाहिए कि आप मास्टर दाता हो ... अर्थात् मन्सा, वाचा, कर्मणा ... तन, मन, धन ... हर तरफ से सभी के सहयोगी बनने वाले हो।
सभी के दिलों को आराम देने वाले मास्टर दिलाराम भी आप बच्चे ही हो...।
आप कल्प के अन्तिम समय विश्व की सभी आत्माओं का कल्याण करते हो..., इसलिए सभी आत्मायें पूरे ही कल्प किसी-न-किसी रूप में आपकी सेवा करती हैं।

इसलिए, सदा अपने ऊँच स्वमान के स्मृति स्वरूप रहना है।
बस महसूस करो कि चारों तरफ light ही light है..., बस light ही light है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
17.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब आपको अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सफल होना है ... और अपने लक्ष्य तक पहुँचने का आधार आपका निश्चय और धैर्यता का गुण है...।

देखो बच्चे, बाबा बार-बार कह रहा है कि जो भी परिस्थिति आपके सामने आ रही है, वो केवल छोटे-छोटे से paper हैं और उसमें first number लेना या pass होना - यह आपके निश्चय की percentage है।

निश्चय अर्थात् निश्चिन्त बुद्धि, बिल्कुल हल्का...।

अब जबकि आप अपने लक्ष्य तक पहुँचने ही वाले हो, तो माया और प्रकृति भी बस आपके सामने झुकने ही वाली है ... परन्तु उससे पहले वो आपको 100% परिपक्व बनाने के लिए, आप पर अपना वार करेगी ... और जब आप निश्चयबुद्धि बन, बाप पर सर्मपण हो जाओगे ... तो माया और प्रकृति भी आपके आगे सर्मपण हो जायेगी।

बस, आप बच्चों को तो निश्चयबुद्धि हो रहना है।
निश्चय ही number का आधार है।

इसलिए बच्चे, अब आप स्वयं के लिए सोचना भी बन्द करो अर्थात् आने वाले कल की कोई planning मत बनाओ।

आप तो केवल बाप की श्रीमत प्रमाण अपनी seat पर set रह अपना विश्व-कल्याण का कार्य करो।

देखो बच्चे, बीता हुआ कल भूतकाल है, उसके बारे में सोचना अर्थात् भूतों को बुलाना अर्थात् अपना एक-एक second करते काफी समय बर्बाद कर देना ... और अब जबकि direct बाप (परमात्मा शिव) आपके लिए आ गया है और बाप, आपके प्रति सोचने का कार्य भी स्वयं कर रहा है ... और बाप के पास आपके लिए future की "The Best Planning" है..., तो आप अपनी मन-बुद्धि ना लगा अर्थात् बाप के कार्य में interfere ना कर, बाप पर 100% निश्चय रख, समर्पण हो जाओ..., फिर देखना बाप की कमाल पर कमाल...।

आप बच्चों की guarantee स्वयं परमपिता परमात्मा ले रहा है।
बस आप तो present में रह अर्थात् अपनी स्व-स्थिति के आसन पर स्थित रह अपने चारों तरफ powerful vibrations फैलाओ।

स्वयं पर 100% attention रखो। जिस समय, जिस गुण और जिस शक्ति की ज़रूरत है, उसी का स्वरूप बन जाओ।
हर बात में स्वयं का कल्याण समझो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
18.05.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, मैं हूँ परमपिता परमात्मा शिव, सारी दुनिया का रखवाला ... भगवान, ईश्वर, अल्लाह अर्थात् मेरे कई नाम हैं और मुझे हर बच्चा इस समय पुकार रहा है...।
और आप बच्चे हो मास्टर भगवान, अर्थात् मैं पिता और आप मेरे पुत्र...।

जिस तरह लौकिक में कोई भी राजा अपनी seat तब ही अपने पुत्र को देता है जब वह इतना काबिल बन जाए कि वो उसके राज्य को सुरक्षित रख सकें।

इसी तरह drama का अब अन्तिम समय का भी अंत होने वाला है..., तो मैं बाप, आप बच्चों को अपनी post अर्थात् मास्टर भगवान बना, यह दुनिया आपके हवाले कर देता हूँ कि अब इन सबकी (सभी आत्माओं की) पुकार सुन इनका कल्याण करो।

परन्तु इससे पहले, मैं आपको वह सारी शक्तियाँ दे देता हूँ जिससे आप अपना कार्य accurate ढंग से कर सको।

बच्चे, कभी आपने सोचा है कि बाबा में कौन-कौन सी शक्तियाँ हैं...?

जो बाप की सबसे बड़ी शक्ति है, वह यह है कि वह सबकुछ कर सकता है, परन्तु फिर भी साक्षी हो समय का इन्तज़ार करता है ... अर्थात् उसे पता हैं कि किस कार्य को, किस समय, किस रीति से करने में कल्याण समाया हुआ है और बाप को drama पर 100% निश्चय है कि ड्रामा कल्याणकारी है।
इसी तरह;
इस समय बाप को आप बच्चों पर भी इतना निश्चय है कि "हैं तो यह ही..." चाहे अभी समय ले रहे हैं...!
मेरी post सम्भालने के लायक भी यह ही बनेंगे।

इसलिए निश्चिन्त स्थिति में रह आप बच्चों को रोज़-रोज़ समझानी देता हूँ।
बस बच्चे, अब आपको इस drama से साक्षी हो अपनी seat पर 100% set रहना है, तब ही वह चमत्कारी शक्ति आप बच्चों के पास आयेगी और आप मास्टर भगवान बन सभी आत्माओं की पुकार सुन उनका कल्याण करोगे।

आपको हर परिस्थिति में बिल्कुल निश्चिन्त रहना चाहिए...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
19.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, जो आप daily का विभिन्न स्वरूप या स्वमान का अभ्यास कर रहे हो उसे बहुत alert होकर करना है।

यह नहीं कि योग तो लगा रहे हैं, गलत तो कर नहीं रहे, बस ठीक है ... नहीं बच्चे...!

यदि ऊँचा पुरुषार्थ करना है, तो daily के पुरुषार्थ का अच्छे से मन्थन करो।
उस स्वरुप में स्थित होने से आपकी स्थिति कितनी ऊँची होती है अर्थात् आप इस दुनिया से कितने न्यारे, हल्के और निश्चिन्त रहते हो - यह checking अपनी हर पल होनी चाहिए।
फिर बहुत carefully रात को check कर अपने marks देने है।

जैसे आपका आनन्द स्वरुप का स्वमान है ... अब आनन्द स्वरुप की स्थिति कितनी ऊँची है।
अतीन्द्रिय सुख अर्थात् फरिश्तों के समान ऊँच स्थिति, बाप-समान स्थिति है...।

इसी तरह, जो आपका स्वमान है - मास्टर सर्वशक्तिवान् ... पहले इस स्वमान का अच्छी तरह से मन्थन करो, फिर हर कोई दो-दो point स्वमान के according लिखे ... जिससे आपको enjoy भी होगा और इसका अभ्यास easy भी हो जाएगा।

इसी तरह knowledgeful होकर ही हर स्वरुप का अभ्यास करना है, तब ही आप powerful बन सकते हो।

और powerful आत्मा ही स्व-परिवर्तन सो विश्व-परिवर्तन का कार्य कर सकती है।

केवल बाप (निराकार शिव) की याद में बैठने से बुद्धि इधर-उधर चली जाती है और आपको पता भी नहीं चलता...!

इसलिए स्वयं पर full attention दे तीव्र पुरुषार्थ करो।
हिम्मत रखने पर ही बाप की मदद है और बाप की मदद है तो सफलता है ही है...।

बाबा ने आप सभी को कई स्वमान दिये हैं ... जितना आप मन-बुद्धि से इन स्वमान को स्वीकार करते जाओगे, उतनी ही जल्दी आप जागृत हो अपनी seat पर set हो जाओगे...।

जैसे;
हम ही हैं बाप-समान ... हम ही हैं विजयी रत्न ... हम ही हैं विश्व-कल्याणकारी ... हम ही हैं पूर्वज ... हम ही हैं आधारमूर्त, उद्धारमूर्त ... हम ही हैं विश्व-परिवर्तक ... हम ही हैं श्रेष्ठ पूजनीय आत्मा ... सारी दुनिया इस दुःख के समय हमें ही पुकार रही है ... हम ही हैं विघ्न-विनाशक ... हम ही हैं श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ परमात्मा बाप के मस्तक के ताज ... हम ही हैं दुःखहर्ता-सुखकर्ता ... हम ही हैं बाप की आशाओं को पूर्ण करने वाले, ज़िम्मेवार आत्मा...।

इस तरह समय प्रति समय अपने श्रेष्ठ स्वमान में स्थित हो अपनी चमक द्वारा विश्व-परिवर्तन का कार्य जल्दी से जल्दी सम्पन्न करो...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
20.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, मैं भी एक आत्मा ही हूँ, मुझमें भी मन-बुद्धि है ... मैं सभी चीज़ को enjoy करता हुआ भी इससे न्यारा हूँ, क्योंकि अपनी seat पर हूँ।

मैं सदा शिव हूँ ... मुझे कभी भी किसी भी बात का प्रभाव नहीं पड़ता...।

किन्तु आप बच्चे, जोकि इस दुनिया में अर्थात् पाँच तत्वों के बीच रहते हो, तो इसके प्रभाव से प्रभावित हो जाते हो...!

परन्तु अब, जबकि आप बच्चों को बाप (परमात्मा शिव) की seat लेनी है ... तो इनके बीच रहते, इन पाँच तत्वों के प्रभाव से न्यारा रहना है ... तब ही आप विजयी बन सभी आत्माओं का और प्रकृति का कल्याण कर सकोगे...।

और इस काबिल बनाने के लिए शिव बाप आपको पढ़ा भी रहा है और सूक्ष्म में मदद भी कर रहा है।

बस, आप केवल अपने पर 100% attention रखो। बाप साथ है, तो हुआ ही पड़ा है...।

बस बच्चे, बार-बार अपने स्वमान की seat पर आ बाबा के संग अर्थात् शान्ति के सागर के संग बैठ चारों तरफ शान्ति की किरणें फैला दो ... और मौन में रहने का अभ्यास करो ... साधारण और व्यर्थ संकल्पों का द्वार बन्द कर दो .... अर्थात् स्वयं के संकल्पों पर 100% attention दे साधारण और व्यर्थ संकल्पों की छुट्टी कर दो।

यह एक-एक दिन का किया गया ऊँचा अभ्यास आपको permanent अपनी seat पर set कर देगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
21.05.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, मैं आप सब बच्चों को लेकर जाने के लिए आया हूँ..., परन्तु मैं आपको तभी लेकर जा सकता हूँ जब आप अपनी सारी स्थूल और सूक्ष्म ज़िम्मेवारी कहो, इच्छा कहो, संकल्प कहो, से न्यारे नहीं हो जाते..., अर्थात् इस पुरानी दुनिया से न्यारे नहीं हो जाते...।

इसलिए मैं बार-बार कहता हूँ - बच्चे, मेरे प्यार में समा जाओ ... खो जाओ ... अर्थात् 100% समर्पण हो जाओ...।

बच्चों की इच्छा भी यही है कि हम बाप के संग जल्दी से जल्दी जाए ... परन्तु फिर भी बार-बार स्वयं को किसी-न-किसी संकल्प से बाँध लेते हैं...!

देखो बच्चे, आप स्वयं के संकल्पों पर attention देकर ही इस दुनिया से न्यारे हो सकते हो।

न्यारे होने के लिए ही बाबा ने कई अभ्यास बताए हैं;

• हर बात बाप को दे दो,
• अर्थात् सबसे पहले बाप से share करो,
• फिर भी उसके संकल्प आयें, तो attention दे स्वयं के उच्चतम् स्वमान में अर्थात् अपने इस पुराने जीवन से न्यारे हो, जो बाप ने आपको नए-नए उच्चतम् स्वमान दिए हैं, उसकी स्मृति में स्थित हो जाओ।

उस स्वमान के according अपनी मन्सा-वाचा-कर्मणा रखो अर्थात् साधारणता में भी विशेषता ले आओ...।

जब बाप आप बच्चों की 100% guarantee ले रहा है, फिर आप निश्चिन्त रहो ना...!

देखो, आपके इस दुनिया से न्यारे होते ही मैं आपको अपने समान बना ... आपकी स्थूल और सूक्ष्म सारी ज़िम्मेवारियाँ आप द्वारा ही पूरी करवा, विश्व-परिवर्तन का कार्य आप द्वारा ही पूरा करवाऊँगा...।

बस, आप एक छोटे बच्चे की तरह मुझ पर समर्पण हो जाओ...।

बाबा बार-बार कह रहा है कि बाबा ने बच्चों को मौज में रखा है, तो आगे भी मौज में ही रखेगा ... यह छोटी-छोटी सी परिस्थितियाँ बस आपको परिपक्व बनाने के लिए ही आ रही है।
इसलिए इनका मन्थन मत करो...।
मन्थन करने से परिस्थितियों के vibrations फैलते हैं, जोकि आपको और आपके सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को, और भारी कर देते हैं...!

और जबकी आप ज़िम्मेवार आत्मा हो तो आपके हल्के होने पर ही सभी आत्मायें हल्की होंगी।

कोई बड़ी से बड़ी बात जो आप समझते हो कि यह बड़ी बात है वो सुनकर कोई जल्दी से, और संकल्प ना चला अपने उच्चतम् स्वमान में स्थित हो बाप को वह बात सुना, हल्के हो सामने आने वाली आत्मा को हल्का कर दो...।

आपके positive संकल्प ही आपकी परिस्थितियों को हल्का कर देंगे और बाप तो आपके संग है ही ... वह क्या नहीं कर सकता...!
परन्तु इस समय मैं केवल आप बच्चों को ही तैयार कर रहा हूँ और आप परिस्थितियों को cross कर अर्थात् परिास्थितियों के समय भी हल्का रहकर ही स्वयं को सम्पन्न बना सकोगे...।

बस बच्चे, बाप पर निश्चय रख आगे से आगे बढ़ो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
22.05.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बस बच्चे, जो पढ़ाई अभी बाप ने आपको पढ़ाई है और भिन्न-भिन्न अभ्यास आपको बताये हैं, उसी according स्वयं पर attention दे करते रहो।
भिन्न-भिन्न स्वमान का अभ्यास करते रहो...।

बार-बार आप अपनी seat पर set हो जाओ...,
• कभी light रूप में,
• कभी भिन्न-भिन्न पूज्य स्वरूप में, और
• कभी चलता-फिरता light house, might house फरिश्ता रूप में...।
जितना-जितना आप attention दे यह अभ्यास करोगे, उतनी ही जल्दी आपकी प्रत्यक्षता शुरू हो जायेगी।

देखो;
जैसे एक मंदिर की स्थापना होती है, तो पहले मंदिर बनता है फिर उसमें मूर्ति स्थापन की जाती है। धीरे-धीरे भक्त दर्शन करने आते हैं ... और जैसे-जैसे कुछ एक भक्त की भी इच्छा पूर्ण होती है, तो वह मंदिर मशहुर हो जाता है...।

इसी तरह, आप सारा कार्य एक साथ कर रहे हो - शरीर रूपी मंदिर को तैयार करना और चैतन्य रूप में देवी या देवता बन बैठ जाना ... और जैसे ही आप प्रभाव-मुक्त हो seat पर set हो जाओगे, तो आपका प्रत्यक्षता का कार्य शुरू हो जायेगा।

देखो बच्चे, बाप तो गुप्त है, करावनहार है..., करनहार आप हो...।
तो विभिन्न देवी-देवता रूप में प्रत्यक्ष भी आप होंगे। आपका बाबा तो केवल light रूप में ही जाना जायेगा।

जितना आप इच्छा मात्रम् अविद्या अर्थात् सम्पन्न, संतुष्ट ... स्वयं में भरपूरता महसूस करोगे अर्थात no question - no complaint, एक single second के लिए या एक single संकल्प में, तब ही तो आप दाता बन सबका कल्याण करोगे...।

बस बच्चे, आप निश्चिन्त रह स्वयं पर 100% attention रख जैसे बाप कहें वैसे करते जाओ...। काफी परिवर्तन हो चुका है जो आपको पता नहीं...!
इसलिए last में कुछ percent अचानक ही परिवर्तन हो जायेंगे, क्योंकि हर कार्य slow start होता है, फिर जब करना आ जाये तो finish भी एक second में हो जाता है अर्थात् अचानक हो जाता है और पता भी नहीं चलता...!

क्योंकि यह एक ऐसा कार्य है जो दिख नहीं रहा, बस आप अनुभव द्वारा ही जान सकते हो...। अच्छा।
ओम् शान्ति।
Om Shanti
23.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, मैं (परमात्मा शिव) इस दुनिया से न्यारा होते हुए भी अर्थात् बन्धनमुक्त होते हुए भी आपके प्यार में हर पल बँधा रहता हूँ ... अर्थात् आप बच्चों से अलग होते हुए भी अलग नहीं हूँ...।

जैसे-जैसे आप इस स्थूल दुनिया से न्यारे होते जा रहे हो ... वैसे-वैसे सूक्ष्म खेल बढ़ता जा रहा है।

बस, आप attention दे स्वयं की मन-बुद्धि को 100% इससे न्यारा कर दो अर्थात् इस दुनिया का स्थूल कर्तव्य करते हुए भी इसके प्रभाव से न्यारे अर्थात् रूहानी प्रभु के मिलन की मस्ती में मस्त रहो।

देखो, आपका ज्ञान से भरपुर सच्चा दिल मुझे खींचता है ... जिससे आपमें इससे न्यारे होने की शक्ति अत्यधिक हो जाती है।

बस, थोड़ा-सा attention और दो। कोई भी पुराना स्वभाव-संस्कार, हिसाब-किताब की परवाह किए बिना, मेरी श्रीमत प्रमाण मेरे प्यार में लीन हो जाओ ... तो मेरे प्रेम की खिंचावट आपको ऊपर खींच लेगी।

जो बच्चे परमात्मा बाप पर समर्पण हो जाते हैं, उनकी विजय निश्चित है।

समर्पण की गुह्यता को समझो...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
24.05.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, 100% निश्चयबुद्धि बन बाप की एक-एक बात को महीनता से समझ धैर्यतापूर्वक आगे बढ़ो...।

जब स्वयं बाप (परमात्मा शिव) आ गया है तो ज़िम्मेवारी बाप की है ... आपकी नहीं...। निश्चयबुद्धि बन, निश्चिन्त रहो...।

निश्चयबुद्धि विजयी रत्न अर्थात् आपकी highest स्थिति अर्थात् बाप-समान स्थिति...। जिस स्थिति में आपका हर गुण, आपकी शक्ति बन गई...।

शक्तियों के द्वारा ही विजय होती है ना ... अर्थात् आपने शांति, प्रेम, आनंद, सुख, पवित्रता का शक्ति रूपी कवच पहना हुआ है। जिस कारण आपको कोई भी आत्मा, माया और प्रकृति हिला नहीं सकती ... अर्थात् आपने हर तरह की opposition पर विजय प्राप्त कर ली है, तब ही तो बने ना विजयी रत्न..., और विजय का आधार है - निश्चयबुद्धि ... और निश्चयबुद्धि आत्मा ही हर second, attention दे बाप की श्रीमत प्रमाण स्वयं को विजयी बना, विश्व-परिवर्तन का कार्य कर सकती है।

अब आपको अचल, अडोल, एकरस स्थिति में स्थित रहना है ... क्योंकि आपको निश्चय है - "हम ही विजय रत्न है..." और वैसे भी जिन बच्चों के साथ परमात्मा बाप है, उनकी विजय कौन रोक सकता है...?

बस, आप तो attention रखो। जिससे जल्दी से जल्दी आप अपनी seat पर पहुँच, मुझ बाप से मिलन मना सको...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
25.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, महसूस करो कि चारों तरफ light ही light है ... बहुत अधिक light है ... और आपके अन्दर खुशी और प्रेम का सागर बह रहा है..., अत्यधिक प्रेम का ... और आपके अन्दर विश्व की हर चीज़ के लिए ... हर आत्मा के लिए ... केवल प्रेम है और कोई संकल्प नहीं...।
एक परमात्मा बाप से मिलन की खुशी और प्रेम...।

बच्चे, जब आप इस तरह प्रेम से भरपूर हो जाओगे ... तो बाप भी आपसे मिलन की खुशी में भाव-विभोर हो आपसे मिलन मनायेगा...।

बस, आप मेरे प्यार में खो जाओ ... समा जाओ...।
यह पवित्र प्रेम ही पवित्र दुनिया को लायेगा...।

अब समय अनुसार आप बच्चों को 100% साक्षी हो जाना है अर्थात् अब आपकी मन-बुद्धि किसी भी आत्मा या किसी भी बात में नहीं जानी चाहिए...।

जैसे ही आप बच्चों की मन-बुद्धि अपने लक्ष्य से या बाप से हटती है तो कई तरह के प्रश्न आ जाते हैं, जिससे आपकी speed कम हो जाती है।

इसलिए स्वयं पर 100% attention रखो और कोई भी बात मन-बुद्धि में आये उसे समय गंवाये बिगर बाबा को समर्पण कर दो...।

हर पल मौज में रहो अर्थात् हर पल आपके अन्दर एक ही संकल्प हो कि "मैं एक श्रेष्ठतम आत्मा हूँ..." और बस हमारी मंज़िल हमारे नज़दीक ही है, अर्थात् पहुँचे कि पहुँचे...।

बाप की इस बात पर 100% निश्चय रख, जल्दी से जल्दी अपनी मंज़िल पर पहुँचो।

बाप आपकी इन्तज़ार में है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
26.05.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, मैं आप आत्माओं को शुद्ध, सूक्ष्म और स्थिर बना देता हूँ ... यही मेरी power है।

देखो बच्चे, इतने समय से इतनी गुप्त रीति बच्चों को आकर पढ़ाना और सूक्ष्म में 100% सम्भाल भी करना .. यह बाप (परमात्मा शिव) की ही तो power है ... अर्थात् आपका प्यार मुझे खींच लेता है...।

यह मार्ग मेहनत का नहीं, मोहब्बत का है, इसलिए इसे सहज कहा जाता है।

जिस बच्चे ने बाप से सच्ची मोहब्बत की है, उसने 100% बाप पर स्वयं को समर्पण कर दिया है ... और वह बहुत सहज ही बुद्धियोग के द्वारा ज्ञान को भली-भान्ति समझ, अपने सारे पुराने स्वभाव-संस्कार को त्याग, निमित्त बन अपने part को play करता है...।

उसकी यह सच्ची मोहब्बत बाप की power को स्वयं में भर लेती है अर्थात् उसका मैं और मेरा-पन 100% खत्म हो ... 100% बुद्धि बाप की श्रीमत प्रमाण चलती है, जिससे वो सहज ही बाप-समान बन जाता है।

बस बच्चे, स्वयं से, बाप से वफादार रहना अर्थात् जहाँ बाप बिठायें ... जो खिलायें ... सब मंज़ूर...।

देखो, बाबा बार-बार कहता है - मैं क्या नहीं कर सकता...! बाप ऐसे ही नहीं कहता...।
बाप drama का रचयिता है और वह जब चाहे drama को जिस रीति भी घुमा सकता है।

बाप सर्वशक्तिमान् है ... अर्थात् उसकी power असीम है, पर वह तो जाने से पहले आपको 100% योग्य बनाने के लिए, साक्षी हो, आपको सब paper से गुज़ारता है, ताकि बाप के जाने के बाद, आप इस कल्प-वृक्ष की सही रीति सम्भाल कर सको...।

देखो बच्चे, आप बाप से सच्चा प्यार करते हो, तो बाप भी आपसे असीम प्यार करता है ... और वह आपके लिए एक second से भी कम समय में कुछ भी परिवर्तन कर सकता है ... इसलिए अपने प्यार पर और बाप पर 100% निश्चय रख, आगे से आगे बढ़ो...।

बाप भी आपकी सम्पूर्णता के इन्तज़ार में है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
27.05.2019

★【 आज का पुरूषार्थ】★
बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, बाप है प्यार का सागर, विश्व कल्याणकारी और त्रिकालदर्शी - उसे तो आत्माओं को जब वह प्रकृति, माया या स्वभाव-संस्कार वश ऐसा कार्य करती हैं, जो उन्हें नहीं करना चाहिए ... तो उनके प्रति बाप को बहुत प्रेम आता है कि यह आत्मा क्या कर रही है...! व्यर्थ ही अपना हिसाब-किताब बना रही है...!
पर बाप तो विश्व कल्याणकारी है, वह तो उन आत्माओं के प्रति और ही कल्याण की भावना रखता है।
बच्चे, बाप कभी भी किसी भी आत्मा को सज़ा नहीं दे सकता, हर आत्मा अंत में अपने किये गए कर्म के according ही अपनी सज़ा fix करती है ... परन्तु आप बच्चों की और बाप की शुभ भावना और शुभ कामना उन आत्माओं को इतनी शक्ति देती है कि वो सहज रीति अपने कर्मों के बन्धन से मुक्त हो घर (शान्तिधाम) जाते हैं।
इसलिए बच्चे, अब तो आप बच्चों को भी हर हाल में हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखनी है, क्योंकि आप ही तो बाप-समान बच्चे हो...।

बस बच्चे, दृढ़तापूर्वक love and light का अभ्यास कर जो आपने अपना chart बनाया है, उसमें 100% marks लो, ताकि जल्द से जल्द बाप-समान स्थिति में स्थित हो परमात्मा बाप के साथ विश्व-परिवर्तन का कार्य कर सको।

Love and light का अभ्यास अर्थात अब आपको feel होना चाहिए कि आप light के शरीर में point of light हो और आपसे प्रेम का प्रकाश फैलता चला जा रहा है ... जोकि सभी आत्माओं के साथ-साथ प्रकृति के पाँचों तत्वों को भी पहुँच रहा है...।
अब आँखों को जब भी use करो, तो सबकुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
28.05.2019
★【आज का पुरुषार्थ】★
बाबा कहते हैं ... बच्चों ने अपना बहुत परिवर्तन किया है और त्याग भी, परन्तु अभी भी कभी-कभी अपना पुराना स्वभाव आ जाता है ... अर्थात् अभी flawless नहीं बने हैं।
देखो बच्चे, जब numberone बनना है, तो अपना स्वभाव लौकिक रीति 100% numberone बनाना पड़ेगा।
परन्तु बच्चों की speed अच्छी है। बस, थोड़ा-सा attention देते ही अपनी seat पर set हो जाओगे।
इसलिए बच्चे, अपना attention और बढ़ाओ...!
देखो, यदि विजयी बनना है, तो checking भी सूक्ष्म रीति होनी चाहिए। हर बात की तरफ full attention देना चाहिए।
पुराने स्वभाव-संस्कार से 100% विदाई ... तब ही बाप-समान बन सकेंगे। वैसे सभी बच्चों का पुरुषार्थ अच्छा है ... और attention भी रख रहे हैं।
लेकिन बीच-बीच में अपना वह ही पुराना स्वभाव-संस्कार आ जाता है, जोकि नहीं आना चाहिए...!

बस बच्चे, जब आप स्वयं को 100% बाप पर सर्मपण कर दोगे, तो बाप-समान जल्द ही बन जाओगे।
निश्चयबुद्धि अर्थात् 100% समर्पित आत्मा, जिसकी निशानी है - एकरस स्थिति और अचल, अडोल...।
जब आप बच्चे यहाँ अपना 100% attention दे उमंग-उत्साह में रह, आगे से आगे बढ़ते हो ... अर्थात् हर तरह के paper easily cross करते हो अर्थात् उसमें अपनी मन-बुद्धि ना लगा ... बाप को समर्पण हो जाते हो, तो आपकी सम्पन्नता की ओर बढ़ने की speed तीव्र हो जाती है, जिससे बहुत जल्द ही बेहद की सेवा का कार्य finish हो जायेगा...।
और इस समय तो बाप का भी एक ही लक्ष्य है कि बाप-समान बच्चों को बाप की post पर बिठा, कार्य (विश्व-परिवर्तन का कार्य) को सम्पन्न करें...।
बस बच्चे, आप भी इसी तरह उमंग-उत्साह में रह तीव्र गति से एक second भी waste किये बिना आगे बढ़ो...। बाप जानता है कि विजय मेरे बच्चों की ही होगी...।
वाह बच्चे वाह ... 100% समर्पण बुद्धि वाले बच्चों की विजय समय से पहले निश्चित है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
29.05.2019

★【 आज का पुरूषार्थ】★
बाबा कहते हैं ... बच्चे, मैं जो हूँ, जैसा हूँ ... मुझे उसी रूप में जान और मान ... और आप भी, अपने आपको जैसे भी हो वैसे मान, मुझे याद करो अर्थात् बाप (परमात्मा शिव) ever पवित्र है, शुद्ध है ... वह कभी प्रकृति के प्रभाव में नहीं आता अर्थात् उसमें कभी भी, किसी भी तरह की कोई मिलावट नहीं होती ... वह हमेशा अपने original स्वरूप में ही रहता है...।

और इस समय बाप ने आपको स्मृति दिलाई है कि;
• आप शुद्ध, पवित्र आत्मा हो,
• आप, परमात्मा बाप के समीप रहने वाली हो ... और आप जितना स्वयं को पवित्र मान बाप के साथ योग लगाते हो, उतनी ही जल्दी अपने original स्वरूप में स्थित हो सकते हो ... और तब आप प्रकृति के बीच में रह, अपने original स्वरूप में स्थित हो, प्रकृति को भी light अर्थात्

प्रकृति के भी original स्वरूप को जान और मान ... बस इतना ही सोचते हो कि तुम (प्रकृति) तो बहुत पवित्र हो, क्योंकि तुम्हारा original स्वरूप भी पवित्र ही है...।

तो बहुत ही जल्दी आपके संकल्पों से प्रकृति पवित्र बन, पवित्र दुनिया स्थापन कर देगी, क्योंकि प्रकृति ही दुनिया है...।
इसी तरह, आप किसी भी आत्मा के बारे में कोई भी संकल्प ना चला, केवल उसे उसके original स्वरूप में देखो, तो वह बहुत जल्दी आपके संकल्पों से परिवर्तन हो जायेगा...।

जैसे;
सोने में कोई मिलावट नहीं तो वह पवित्र है..., दूध में, घी में कोई मिलावट नहीं अर्थात् वह अपने शुद्ध स्वरूप में है ... और हर चीज़ को पवित्र बनाने के लिए अग्नि का प्रयोग किया जाता है...।

अग्नि अर्थात light ... जब आप स्वयं को original स्वरूप अर्थात् light समझ, सबको उनके original स्वरूप में देखने या संकल्प मात्र से भी, अर्थात् पवित्र light से सबकुछ पवित्र light में परिवर्तन हो जायेगा...।
बच्चे, महसूस करो कि सब light ही light है ... बस light ही light है ... अर्थात् जो कुछ भी इन आँखों से देखते हो और महसूस करते हो, वो सब light है...।
हर पल आपके अन्दर यह संकल्प होना चाहिए कि मैं इन सबकी मालिक, अपने पिता point of light के संग इन सबके कल्याण अर्थ यहाँ अवतरित हुई हूँ ... बस, अब इन सबका अर्थात् इस विश्व का कल्याण हुआ कि हुआ...।
न्यारा अर्थात् प्रभाव-मुक्त ... न्यारी आत्मा ही सबकी प्यारी बनती है ... न्यारी आत्मा ही सभी का कल्याण कर सकती है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
30.05.2019
★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, सम्पूर्ण रीति समर्पण हो जाओ अर्थात् अब आपके पास कुछ भी पुराना नहीं है।

• यह तन, अर्थात् तन की कोई भी, किसी भी तरह की problem...
• यह मन, अर्थात् मन की हर तरह की कमी-कमज़ोरी...
• धन, अर्थात् आपके कारोबार का फायदा और नुकसान...
• सम्बन्ध-सम्पर्क, अर्थात् आपके connection में आने वाली चाहे वह आपकी माँ, पत्नी या पुत्र..., कोई भी, हर तरह की आत्मा...
• और स्वभाव-संस्कार, स्वप्न सब बाप का है ... अर्थात् आप आत्मा केवल बाप की हो ... और आपका मेरा, एक बाप ही है।

जो कुछ भी आपके पास आए सब बाप को दे दो ... और निश्चय रखो कि जब बाप को दिया है तो जो भी कुछ हो रहा है, वह बाप का हो रहा है ... और एक-एक कार्य में, बात में, केवल कल्याण समाया हुआ है...।

अब परमात्मा बाप की direct नज़र आप बच्चों पर है।
बाप अपने समान आज्ञाकारी, वफादार, फरमानबरदार और ईमानदार अर्थात् अपने दिल के टुकड़े की सम्भाल नहीं करेगा, तो किसकी करेगा...?

बस, आप तो बाप पर बलिहार चले जाओ, अर्थात् सम्पूर्ण समर्पण हो जाओ...।
बाप तो आपकी मन-बुद्धि जिसे आप अपना समझते हो, उसे भी best तरीके से चला, उसी के द्वारा आपका श्रेष्ठ भाग्य बना देगा...।

बस बच्चे, अब सोचना बन्द करो। कुछ भी हो एक second से कम समय में बाप को दे दो।
बस, निश्चय और धैर्यता की ज़रूरत है।
निश्चिन्त होते ही विजय हुई पड़ी है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
31.05.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★
बाबा कहते हैं ... बच्चे, मुझे आपके संकल्पों का सहयोग चाहिए।

बस, आप तो संकल्पों की स्थिरता के द्वारा अपनी seat पर set रहो।
देखो, set का भी अर्थ समझो ... set माना set - कोई हलचल नहीं...।

आपके संकल्पों का minor सा भी ऊँचा-नीचा अर्थात् पता नहीं क्या, क्यों, कैसे, ऐसे, वैसे ... बाप के कार्य की speed कम कर देता है।
अब तो आप knowledgeful बन seat पर set रहो, फिर तो झट-पट कार्य सम्पन्न हो जायेगा...।
बस, अपनी seat पर set हो, अन्य आत्माओं के कल्याण की भावना रखनी है। बहुत जल्द से जल्द, उससे भी जल्द आपके संकल्प सिद्ध होने शुरू हो जायेंगे..., लेकिन उससे पहले आपके एक-एक संकल्प की भावना बहुत ऊँच, कल्याणकारी अर्थात् किसी भी आत्मा के कर्मों के according नहीं होनी चाहिए, क्योंकि इस समय लौकिक और अलौकिक ... सभी आत्मायें बहुत कमज़ोर हो चुकी है, इसलिए आप तो केवल अपनी विशेषताओं के according ही अर्थात् उच्चतम् स्वमान के according ही अपने संकल्प और भाव रखो...।
आपके संकल्पों की vibrations, आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनती है ... तो साथ ही साथ उन्हें अपनी post तक पहुँचने में रोकती भी हैं...!
बस, आप तो बाप-समान seat पर अर्थात् सभी आत्माओं के पिता बन, सबके कल्याण के निमित्त बन जाओ।

देखो, जो बाप आपको पढ़ाई पढ़ा रहा है ... यह बाप के कार्य की speed और समय की speed को दर्शाता है।
बस, आप तो स्वयं पर 100% attention रख, आगे से आगे बढ़ो।
Attention में minor सा भी हल्का ना हो ... हल्के रह परमात्मा बाप के कार्य को सम्पन्न करने में सहयोगी बनो।

अब सूक्ष्म सेवा शुरू करो। अपने अलौकिक परिवार में चारों तरफ light ही light फैला दो, ताकि जल्दी से जल्दी यज्ञ की आत्मायें अपनी-अपनी seat पर set होना शुरू हो जायें...।

आपके अन्दर यही लगन होनी चाहिए कि अब जल्द से जल्द कार्य सम्पन्न हो।
Charity begins at home...

बस, अपनी ज़िम्मेवारी समझ अर्थात् ज़िम्मेवार बन अब समय अनुसार अपनी अलौकिक नांव को किनारे पर लगाओ। सब आपको पुकार रहे हैं...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
01.06.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, महसूस करो कि एक बहुत powerful light का गोला जोकि विभिन्न रंगों में परिवर्तन हो रहा है, नीचे आ रहा है...।
यह सभी गुणों रूपी शक्तियों का गोला है, जोकि आप बच्चों को धारण करना है।

देखो, बाबा का इस समय एक ही लक्ष्य है कि जल्दी से जल्दी बच्चों को अपनी seat पर set करें।

फिर कई बच्चे पूछते हैं कि बाबा, आप तो कहते हो कि जल्दी नहीं करनी...?

देखो बच्चे, बाप त्रिकालदर्शी है। वो अपनी seat पर set हो बहुत युक्तियुक्त ढंग से अपना कार्य करता है।
लेकिन आप बच्चे जब जल्दबाज़ी करते हो, तो अपनी seat से उतर स्थूल रीति कार्य करना शुरू कर देते हो ... अर्थात् आप यह सोचते हो कि समझानी देकर या इससे बात करके उसे ठीक कर दें...!

अब, जबकि हर आत्मा वातावरण के according कमज़ोर हो चुकी है, तो या तो वो दिलशिकस्त हो जाती है या अभिमान वा अपमान महसूस करती है। इस कारण कार्य की speed slow हो जाती है अर्थात् उन आत्माओं के vibrations वायुमण्डल में speed से फैलते हैं...।

इसलिए जब आप अपनी seat पर set हो सूक्ष्म रीति उन आत्माओं की पालना करोंगे, तो जल्दी से जल्दी समस्या भी solve होगी और vibrations भी positive होंगे..., जिससे बाप के कार्य की speed, और बढ़ जायेगी...।

बस बच्चे, आप धैर्यतापूर्वक अपनी seat पर set रह बाप की श्रीमत प्रमाण चलो। फिर तो जल्दी से जल्दी बहुत-बहुत-बहुत ही wonderful कार्य होने है।

Drama के हर second के, हर scene पर वाह-वाह होगी...। यह समय आपके लिए बहुत ही आनन्दमय होगा, जोकि अभी तक आपके संकल्प और स्वप्न में भी नहीं है...!

उस समय आप अपनी seat पर भी होंगे और साथ ही साथ हर सुख का, आनन्द का गहराई तक अनुभव करोगे अर्थात् आपको अपने थोड़े से भी थोड़े किये गये पुरुषार्थ की value का अनुभव होगा कि हमने थोड़ा-सा कर इतना अधिक अर्थात् असीम पाया ... और अन्य आत्माओं ने इतना गँवाया ..!

और जिन आत्माओं ने अपने पुरुषार्थ के attention में कमी रखी, उनकी प्राप्ति में भी इतना difference रहा...! चाहे नम्बरवार है, फिर भी आत्माओं को feel तो होगा ना...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
02.06.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, महसूस करो कि सब light ही light है ... बस light ही light...।
मैं भी light ... बाप भी light ... और चारों तरफ बस light ही light है...।

यह light ही सब कुछ परिवर्तन कर देगी, अर्थात् जितना आप संकल्पों द्वारा यह अनुभव करोगे कि जो कुछ मैं आँखों से देख रहा हूँ ... सुन रहा हूँ ... महसूस कर रहा हूँ ... सब पवित्र light है...।

यह पवित्र light का अभ्यास ही परमधाम की light को नीचे लायेगा ... तब ही SUPREME LIGHT CEREMONY होगी...।

बच्चे, अपने एक-एक संकल्प की value को समझो...,
• आपके संकल्प से ही दुनिया बनी,
• आपके संकल्प से ही भगवान धरा पर आया
• और अन्त में आप अपने संकल्प की power से ही विश्व-परिवर्तन का कार्य करोगे।

देखो बच्चे, आप स्वयं के साथ-साथ बाप (परमात्मा शिव) को भी विश्व में प्रत्यक्ष करने वाली आत्मायें हो ... तो आपका एक-एक संकल्प और बोल पर attention होना चाहिए...।

बच्चे सोचते हैं कि जल्दी से जल्दी कुछ परिवर्तन दिखें...!
परन्तु बच्चे, बाबा पहले भी बता चुका है कि जब तक आप सम्पूर्ण नहीं बनते, तब तक कुछ नहीं होगा ... क्योंकि परिवर्तन करने वाले आप ही हो ... आप महीनता से अपनी checking करो कि;
• मैं बन्धनमुक्त अर्थात् किसी भी तरह का कोई बन्धन नहीं ... अर्थात् अपनी seat पर set, बेहद में रह, विश्व-कल्याण के निमित्त हूँ...?
• मैं बिल्कुल हल्की, सन्तुष्ट और खुश हूँ...?
तब ही तो आप सभी आत्माओं को मुक्ति अर्थात् बन्धनमुक्त जीवनमुक्ति अर्थात् आत्माओं को यथाशक्ति, गुणों और शक्तियों का दान दे सकते हो...।

बच्चे, आप योग लगाने वाली नहीं, बल्कि योगयुक्त रह सारी आत्माओं का, प्रकृति का कल्याण करने वाली हो।
तब ही तो आप प्रकृतिपति, विश्व की सभी आत्माओं के मालिक बन ... सभी का परिवर्तन कर दोगे...।

बच्चे,
• अब हर पल अपनी seat पर set रह, अपना कार्य शुरु करो।
• अब हर पल बाप को संग रख, स्वयं की और सेवा की रुप-रेखा change कर, सहज और जल्द से जल्द सफलताओं के अधिकारी बनो।
बाप समेत सभी आत्मायें आपकी इंतज़ार में हैं।

इसलिए बच्चे, अब समय अनुसार ना सोचो ... ना बोलो ... बस, बाप के संग रह, बाप की श्रीमत प्रमाण चलते चलो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
03.06.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, जो आप daily का अभ्यास कर रहे हो, वह पूरी लगन के साथ करो।

बाप को अपने अंग-संग जान अर्थात् बाप की हर second आप पर नज़र है ... यह जान कर, आपकी पूरी लगन से किया गया अभ्यास आपको आगे से आगे लेकर जा रहा है...।

जैसे आपने प्रेम स्वरूप और पवित्र स्वरूप का attention रखा ... जो बहुत अच्छा है...।
इस अभ्यास को दिल वा जान, सिक वा प्रेम से करना, full attention देकर करना।
यह ही अभ्यास आप बच्चों को आपके original स्वरूप तक पहुँचाएगा।

आप बच्चे गुणों और शक्तियों के साथ-साथ विभिन्न ज्ञान के points का मंथन कर, उस पर भी attention रख, स्वयं की स्थिति ऊँची कर सकते हो।

यह उड़ती कला का अभ्यास है, क्योंकि यह attention आपके मन-बुद्धि को busy कर देता है।

बस बच्चे, alert होकर करते रहना। यदि कोई गलती हो भी जाये या आप किसी कारणवश दिन का कुछ समय attention ना भी दे पाओ, तो दिलशिकस्त मत होना ... पूरे उमंग-उत्साह के साथ करना...।

आप इस तरह का अभ्यास स्वयं के लिए और बाप के लिए कर रहे हो, अर्थात् बाप भी तो आपको आपके लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए आया है।

Daily अपना chart भी देना। संगठन में करने से attention अच्छा रहता है।

देखो बच्चे, यदि कभी attention की कमी के कारण जैसा आप चाहते हो उतना नहीं कर पाते, तो भी निश्चिन्त स्थिति में स्थित हो अपना chart लिखना, क्योंकि बाप आप सब बच्चों की लगन को जानता है...। बस bore नहीं होना है, बहुत प्रेम से अपने लक्ष्य को सामने रख करना है।

हिम्मत रखोगे तो बाप की मदद है ही है...।

जैसे, जब भी दर्पण के सम्मुख जाते हो, तो उसी समय महसूस करो कि - ये मैं नहीं हूँ ... मैं तो एक श्रेष्ठतम् आत्मा हूँ ... मैं तो जगत का कल्याण करने वाली हूँ...।
इसी तरह, इस तन को जब कुछ खिलाते-पिलाते हो, तो भी यह ध्यान रखो कि - ये मैं नहीं ... मैं इस तन की ... इस परिवार की care taker हूँ...।

कोई भी पुरानी बात, पुराना हिसाब-किताब सम्मुख आता है, तो उसी पल ध्यान रहे कि - यह तो मेरा role है ... मैं तो बाप-समान विश्व-कल्याणकारी, विश्व-परिवर्तक आत्मा हूँ...।
इससे आपकी स्थिति निश्चिन्त, हल्की, सन्तुष्ट और खुशनुमा हो जायेगी...।

और हर पल अपने बाप (परमात्मा शिव) और अपने धाम (शान्तिधाम) की स्मृति में रहो..., साथ ही साथ रूहानी नशे में भी, जो आपको आनन्द से भरपूर कर देगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
04.06.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाप की हर पल नज़र आप पर ही है।

देखो, आप ही तो 100% बाप-समान बनने वाले ... और बाप को प्रत्यक्ष करने वाले ... बाप के विशेष बच्चे हो। फिर बाप आपकी सम्भाल नहीं करेगा, तो किसकी करेगा...?

बस, बाप तो सहज से सहज रीति आपके बचे हुए थोड़े बहुत हिसाब-किताब पूरे करवा रहा है।

आप बेफ्रिक रहो ... आपका शिव बाप आपके साथ है। बस आप तो बाप के नयनों में समाए रहो...।

देखो बच्चे, अति के बाद अन्त होती है। आप निश्चिन्त रहो ... मैं आपका ही नहीं, सभी का बाप हूँ ... और इस ईश्वरीय परिवार की सभी आत्माओं के ऊपर मेरी विशेष नज़र है।

बस, आप तो अपनी seat पर बैठे रहो, सब ठीक हो जाएगा और होना ही है...।

देखो बच्चे, दुनिया में तमोप्रधान वायुमण्डल का और माया की ग्रहचारी, दिनों-दिन बढ़ती जा रही है ... जिससे हर आत्मा दु:खी है, परेशान है .. और जैसे-जैसे second-by-second पास हो रहा है, इसकी speed और तीव्र हो रही है।

इसलिए बाबा कहता है ... बच्चे, जल्दी करो ... जल्दी करो ... क्योंकि बाप नहीं चाहता कि इस ईश्वरीय परिवार की, जिसे बाप sample बना रहा है, उन आत्माओं का अर्थात् मेरे विशेष बच्चों को कोई touch भी करें...!

बस आप हल्के रहो, बहुत जल्द और उससे भी जल्द बाप आप सबको तमोप्रधान वायुमण्डल से न्यारा कर देगा।

बच्चे, अब तो आनन्दमय दिन आयो कि आयो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
05.06.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, विजयी रत्न वह ही आत्मायें बनेंगी, जिन आत्माओं ने 100% बाप की श्रीमत प्रमाण स्वयं पर attention रख पुरूषार्थ किया है।

अभी भी समय है कि आत्मायें;
• ज्ञान को भली-भान्ति समझ अर्थात् knowlegdeful बन, जो अन्तिम light का अभ्यास बताया है, इस पर full attention दे स्वयं को हर चीज़ से, आत्माओं से न्यारा करती जाये।
• कोई भी पुराना स्वभाव-संस्कार आये, उसे एक second में ही बिन्दी लगा, अपनी seat पर set हो जाये...।
इसके लिए बाबा ने आप बच्चों को विभिन्न युक्तियाँ भी बतलाई हैं।

इस समय, जो बच्चा स्वयं पर full attention रख समर्थ संकल्प और समर्थ वाचा में आयेगा, वह आत्मा ही अपनी seat पर set है ... और उसके कुछ दिन की ही ऐसी practice और attention से उसकी प्राप्तियाँ शुरु हो जायेंगी।

देखो बच्चे, किसी तरह की भी प्राप्तियों का शुरु होना अर्थात् attention पर बिन्दी लग जाना। इसलिए, अभी आप बच्चों के लिए पुरुषार्थ सहज भी हो रहा है और कभी-कभी थोड़ी बहुत प्राप्ति भी होती है, परन्तु 100% प्राप्ति अर्थात् सदैव की प्राप्ति के लिए सदा seat पर set रहना अति आवश्यक है।

केवल विजयी रत्न ही अपनी seat पर set हो पायेंगे ... वो भी नम्बरवार...।

जो-जो बच्चे, स्वयं को विजयी रत्न समझते हैं, वो स्वयं को उसी ऊँच स्वमान में स्थित हो, कर्म व्यवहार में आयेंगे ... अर्थात् अपने संकल्पों और बोल पर attention रखेंगे...।

एक ऊँच स्वमान में स्थित आत्मा ही दूसरी आत्मा को उसके ऊँच स्वमान में स्थित कर सकती है...।

जो विजयी रत्न हैं, वो स्वयं ही स्वयं को अपने ऊँच स्वमान में स्थित कर, अर्थात् स्वयं को विजयी रत्न समझ, उसी स्वमान के according अपना attention रख, अपना number fix करते हैं ... और उनकी स्वमान की seat ही उनका number, set कर देती है...।

इसलिए, सभी उमंग-उत्साह में रह, खुशी-खुशी बाप की श्रीमत् प्रमाण आगे से आगे बढ़ परमात्मा बाप के कार्य को सम्पन्न करें...।

आखिर माला तैयार तो होनी ही है ... और माला की सभी आत्मायें जहाँ कहीं भी हैं, सभी drama plan अनुसार एक ही जगह संगठित रुप में मिलन तो मनायेगी ना...!

बस बच्चे, आप तो निश्चय रख, धैर्यतापूर्वक चलते चलो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti

06.06.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब समय अनुसार आप बच्चों के एक-एक संकल्प समर्थ होने चाहिए अर्थात् व्यर्थ और साधारण मुक्त...।

बस, अब आप बच्चों को अपने गुणों और शक्तियों रुपी seat पर set हो अर्थात् स्वयं और विश्व-कल्याण अर्थ ही संकल्प करने हैं।

अब वो समय आ चुका है, जब आप बच्चों को अपने संकल्पों की सिद्धि प्राप्त होनी शुरु हो जायेगी।

बच्चे, आप अपने संकल्पों की power को भली-भान्ति समझ संकल्प करो ... आपके एक-एक संकल्प आपको सिद्धि दिलायेंगे...।

बस आप अपने संकल्पों को सही रीति use करो।
आपको 100% निश्चय होना चाहिए कि मेरे एक-एक संकल्प सिद्ध होंगे अर्थात् मेरे संकल्प और बोल वरदानी मूर्त बन जायेंगे।

अब आपके संकल्पों के द्वारा कमाल पर कमाल शुरु होगी। बस, धैर्यतापूर्वक अपने संकल्पों को use करना शुरु करो।

बच्चे, बाप हर पल आप बच्चों के साथ है, इसलिए स्वयं पर 100% निश्चय रखो।
बाप जो कह रहा है, वह 100% सत्य है...।

बस, अब आप बच्चे अपनी मन-बुद्धि को इस पुरानी दुनिया से detach करो ... इसके लिए, सब कुछ करते इससे न्यारे रहो अर्थात् हर छोटी से छोटी बात भी बाप को समर्पण कर दो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
07.06.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आपको सभी आत्माओं के प्रति केवल शुभ-भावना, शुभ-कामना ही रखनी है। आपकी शुभ-भावना ही सभी आत्माओं का कल्याण करेगी।

सभी आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनने के लिए आपको 100% साक्षी बनना पड़ेगा, अर्थात् आत्माओं के कर्म और व्यवहार को ना देख, उन्हें नासमझ और कमज़ोर जान अर्थात् एक छोटा बच्चा मान ... जिस तरह एक छोटा बच्चा ज़िद्द में आ छोटी-छोटी बातों में रोता भी रहता है और छोटी-सी प्राप्ति में खुश भी हो जाता है...!

इसलिए इस समय सभी आत्माओं के मात-पिता बन, इनके कल्याण के निमित्त बनो...।

बच्चे, यह कलियुग का भी अन्तिम चरण जा रहा है जोकि हिसाब-किताब clear करने का है ... तो घर जाने से पहले वह clear तो होने ही है...।

बस, आप तो अपनी प्रेम और रहम की भावना बनाए रखो और सभी आत्माओं को बाप हवाले कर दो।

इस ईश्वरीय परिवार की सभी आत्माओं पर बाप की नज़र है और बाप इस समय सभी के जल्द से जल्द और सहज से सहज रीति हिसाब-किताब पूरे करवा रहा है ... इसलिए आप इन आत्माओं से भी साक्षी हो जाओ अर्थात् बाप हवाले कर दो।

यदि कोई भी सलाह देने की आवश्यकता महसूस करते हो, तो बाप को बुला कुछ समझानी दो ... फिर बाबा आपके द्वारा ही इन आत्माओं का कल्याण करवा देगा।

बस बच्चे, आप निश्चिन्त रह अर्थात् अपने उच्चतम् स्वमान की seat पर set रह, हर तरफ अपनी शुभ-भावना, शुभ-कामना की vibrations फैला दो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
08.06.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, परिवर्तन-परिवर्तन-परिवर्तन ... अर्थात् पुरानी दुनिया का नई दुनिया में परिवर्तन होना ... अर्थात् पुरानी दुनिया की हर वस्तु ... देह ... आत्मायें ... सभी का परिवर्तन हो जाना...।

आप बच्चे हो परिवर्तन कर्ता...। आप बच्चों की स्मृति, वृत्ति, दृष्टि के परिवर्तन होने पर ही विश्व-परिवर्तन होगा।

• *स्मृति का परिवर्तन होना* अर्थात् - आपको हर पल स्मृति में रहें कि हम आत्मायें और पाँचों तत्वों से बनी हर चीज़ light है, पवित्र light अर्थात् हर चीज़ की originality की स्मृति में रहना।

• *वृत्ति का परिवर्तन होना* अर्थात् - आपकी वृत्ति बेहद की, अर्थात् हम सब आत्मायें एक ही घर से आये हैं और सबने भिन्न-भिन्न पाँच तत्वों से बने light के वस्त्र पहने हुए हैं और सभी पवित्र हैं और अब सबको घर (शान्तिधाम) जाना है।

• *दृष्टि का परिवर्तन होना* अर्थात् - सभी को बहुत प्रेम पूर्वक, उनके पवित्र स्वरूप अर्थात् उनके original स्वरूप में देखना।

बच्चे, जब आपकी 100% स्मृति, वृत्ति, दृष्टि परिवर्तन हो जायेगी तो झटके से विश्व-परिवर्तन हो जायेगा...।

देखो बच्चे, आपका यह अभ्यास काफी natural होता जा रहा है ... और बाबा ने यह भी देखा है कि बच्चे स्वयं पर 100% attention रख, बाप को संग रख, सफलता प्राप्त कर रहे हैं। बस बीच-बीच में थोड़ा-सा attention में हल्के हो जाते हैं, जिससे परिवर्तन की जो vibrations फैल रही हैं, उसकी speed slow हो जाती है ... फिर speed तीव्र करने में समय लगता है...।

इसलिए बच्चे, एक बल-एक भरोसे रह, विदेही बन, अपने कार्य में तत्पर रहो ... परिवर्तन के समीप ही हो अर्थात् स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन गाया हुआ है और बाप (परमात्मा शिव) तो आप बच्चों के साथ ही है, तो अब कोई भी शक्ति आपको रोक नहीं सकती...!

परन्तु बाप चाहता है कि अब यह परिवर्तन speed से हो जाये ... और मेरे बच्चे प्राप्तियों का सदा अनुभव करें...।

अच्छा। ओम् शान्ति

Om Shanti
09.06.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, आप थोड़े से ही बच्चे बाप की समझानी कहो, knowledge कहो, श्रीमत कहो ... को ठीक रीति समझ, उसी according चलते हो...।

बाप (परमात्मा शिव) आकर पढ़ाता तो सभी बच्चों को है, लेकिन बच्चे नम्बरवार बन जाते है...!

जबकि ज्ञानी भी हैं, योगी भी हैं और सेवा भी करते हैं और सच्चा दिल भी है, परन्तु knowledgeful ना बनने के कारण, कहीं-न-कहीं त्याग में अर्थात् स्वयं को परिवर्तन करने में कमज़ोर बन जाते हैं ... अर्थात् हल्का सा भी मैं-पन के कारण ज्ञान को समझते हुए भी नासमझ बन जाते हैं ... जिस कारण बाप पर पूर्ण रीति बलिहार कहो, समर्पण कहो, नहीं हो पाते और स्वयं को numberone के बजाए नम्बरवार में ले आते हैं...!

बाप की इस गुह्य से गुह्य पढ़ाई ... गुह्य part को मेरे कुछ बच्चे ही समझ पाते हैं और वह ही बच्चे, बाप पर बलिहार जा, आगे से आगे बढ़ जाते हैं।

जो बच्चे स्वयं को सम्पन्न समझ रुक जाते हैं, उनकी seat वहीं fix हो जाती है, यही माला के मणकों में number बनने का आधार बन जाता है...!

Drama के किसी भी तरह का, कोई भी scene देख, क्या-क्यों करने वाली आत्मा आगे नहीं बढ़ सकती...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
10.06.2019
★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बिल्कुल शान्तचित हो जाओ ... अर्थात् अब आपके पास केवल निश्चय और नशे के ही संकल्प होने चाहिए ... अर्थात् आपको अपने एक-एक संकल्प पर निश्चय होना चाहिए कि जो भी संकल्प मैं कर रहा हूँ उसमें मुझे 100% सफलता मिलेगी...।

और जिस बच्चे को अपनी instant सफलता पर 100% निश्चय है, उसकी सफलता अर्थात् हर कार्य में विजय हुई ही पड़ी है।

बच्चे, बाबा की एक-एक बात पर 100% निश्चय रखो।
जो बाबा कह रहा है कि थोड़ा-सा धैर्य रखो तो थोड़ा सा ही है ... और अब तो आपकी speed भी बढ़ चुकी है, तो थोड़ा सा तो कभी भी खत्म हो सकता है ना...!

परन्तु होता क्या है कि जब कोई भी बात आती है तो निश्चय के साथ-साथ सूक्ष्म में यह भी संकल्प कर लेते हो कि पता नहीं कब होगा ... कैसे होगा...?
परन्तु बच्चे, आपके 100% सकारात्मक अर्थात् positive, विजय भरे संकल्प होने से अभी-अभी होगा...।

आपका संशय का minor सा भी संकल्प, या कमज़ोर संकल्प आपको आपकी सफलता से दूर कर देता है...!

आप बच्चों को powerful अनुभव भी हो रहा है और स्वयं में परिवर्तन भी दिख रहा है ... फिर भी बच्चे जल्दबाज़ी के कारण क्या, क्यों, कैसे, कब ... में आ जाते हैं ... जिस कारण आपकी विजय में समय लग जाता है...!

आप अपनी विजय के एक ही संकल्प में एकाग्र हो जाओ, फिर देखो कमाल पर कमाल...।

बाप आपके साथ है। बस आप 100% निश्चय रखो और आगे से आगे बढ़ो ... मंज़िल के समीप पहुँचकर जल्दबाज़ी के कारण मंज़िल से दूर नहीं होना है।

आप ही तो हो बाप (परमात्मा शिव) के विजयी रत्न..., आप ही बाप की हर आशा को पूर्ण करने वाले मस्तक के ताज हो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

**IMPORTANT POINT*

आपका संशय का minor सा भी संकल्प, या कमज़ोर संकल्प आपको आपकी सफलता से दूर कर देता है…।

Om Shanti
11.06.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाप (परमात्मा शिव) की पढ़ाई का सार ही है - शान्त रहो ... खुश रहो ... हल्के रहो ... और सन्तुष्ट रहो...।
इन सब गुणों से भरपूर आत्मा ही बाप-समान स्थिति में स्थित हो विश्व-कल्याण का कार्य कर सकती है।

बस बच्चे, बाप पर 100% निश्चय रख, स्वयं की checking कर, आगे से आगे बढ़ो...।

कुछ भी हो आप बच्चों ने अपने उच्चतम् स्वमान की seat नहीं छोड़नी है...।
आपका शिव बाप आपके साथ है।

हर बात में स्वयं का कल्याण समझ, स्थिर अर्थात् अचल-अडोल रहना है...।

जितना-जितना आप light का अभ्यास, अपनी daily की दिनचर्या में बढ़ाते जाओगे, उतनी ही जल्दी आप अपनी seat पर set हो जाओगे अर्थात् प्रभाव मुक्त हो जाओगे ... अर्थात् कोई भी परिस्थिति, कोई भी तरह की बीमारी, अन्य किसी भी तरह की कोई भी problem आपको हिला नहीं सकेगी...!

बस बच्चे, light ही light है ... यह light ही आपके कार्य को सम्पन्न करेगी।

आप बच्चे ही मेरे दिलतख्तनशीन बच्चे हो, जो बाप की श्रीमत् पर 100% चल अर्थात् अपने एक-एक कर्म बाप समान बना, बाप को विश्व में प्रत्यक्ष करते हो...।

जैसे, छोटे बच्चे को किताब दिखाकर यह बताया जाता है कि यह हाथी है, यह शेर है ... इसी तरह आपको केवल एक ही पाठ पक्का करना है कि सबकुछ light है ... बस पवित्र light है...।
अच्छा। ओम् शान्ति।

**IMPORTANT POINT*
आपको केवल एक ही पाठ पक्का करना है कि सबकुछ light है ... बस पवित्र light है...।
Om Shanti
12.06.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, जो present का समय जा रहा है, इस समय में यह महत्व नहीं रखता कि आपने परिस्थितियों का सामना किस रीति किया, बल्कि महत्व इस बात का है कि;
• present में आप किस स्थिति में स्थित हो
• अर्थात् आप बीजरूप स्थिति में कितनी जल्दी
• अर्थात् सारे drama के ज्ञान के राज़ को समझ और समाकर, कितनी जल्दी आप अपने original स्वरूप में स्थित हो जाते हो,
• अर्थात् बिल्कुल शान्त...
• कोई past के संकल्प नहीं...
• केवल कल्याणकारी संकल्पों से भरपूर
• अर्थात् बाप-समान स्थिति में स्थित हो जाना...।

इस समय, केवल इसी स्थिति का महत्व है ... साथ ही साथ जितने कम समय में आप अपने अनादि स्वरूप में स्थित होते हो, उतने ही माला के नज़दीक के मणके हो।

बच्चे सोचते हैं कि कुछ हो तो रहा नहीं...?

परन्तु देखो, आपकी love and light की vibrations अपना कमाल कर रही हैं ... अर्थात् प्रकृति को भी अब यह acceptance आ गई है कि हमारा असली स्वरूप light का ही है।

चाहे वो इस समय pure होने में थोड़े हलचल के vibrations, create कर रही है ... अर्थात् आप रचता के आगे थोड़ा opposition कर रही है, परन्तु आपकी loveful vibrations, जो आपने अभी तक जितनी फैलाई है, उतनी ही प्रकृति आपकी मित्र बन गई है...।

इसलिए आप love के साथ purity के vibrations फैलाओ...।

देखो बच्चे, आप सबको भी तो स्वयं का, बाप का और drama की reality समझने में कितना समय लगा...!

परन्तु अब जबकी आप रचता, powerful स्थिति अर्थात् बाप-समान स्थिति में स्थित हो जब इन्हें loveful, pure दृष्टि से देखते हो और अपनी वृत्ति की स्थिर vibrations फैलाते हो, तो आपकी रचना, यह प्रकृति झट से परिवर्तन होने का attention दे रही है।

आपकी vibrations सारे विश्व के पाप सदा के लिए खत्म कर रही है...।
और अब तो सभी हार चुके है...! बस, अब आपका एक ही powerful संकल्प इन सबका परिवर्तन करने में सहयोगी बन जाएगा...।

बस बच्चे ... स्वयं पर, स्वयं के कार्य पर, बाप पर, 100% निश्चय रखो...।
सबकुछ हुआ ही पड़ा है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

**IMPORTANT POINT*

आप love के साथ purity के vibrations फैलाओ..।

Om Shanti
13.06.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, इस स्थूल दुनिया का स्थूल कोई भी कार्य, हो या ना हो ... उसका कोई महत्व नहीं रखता...।

महत्व है, सिर्फ आपके अपने स्वमान की उच्चतम् seat पर बैठने का अभ्यास natural हो जाना..., अर्थात् आप अपने संकल्पों द्वारा अपनी seat पर set हो ही हो, उसके लिए कोई भी efforts ना करने पड़े, अर्थात् स्वयं को स्मृति ना दिलाना पड़े।

देखो बच्चे, जो शक्तियों और आपके बीच में पर्दा था, वो अब उठ चुका है अर्थात् आप शक्ति सम्पन्न बन चुके हो।

बस, आप अपनी seat पर set होने के बाद संकल्पों से हिलो मत।

देखो बच्चे, आप सोचते हो हमारे पास कोई भी शक्ति हो और उसका प्रभाव स्वयं में दिखें, तब तो हमारा स्वमान natural हो...!

लेकिन, आप अपनी शक्तियों को इस समय use करो परन्तु उसके result को ना देख, उस खुशी में रहो - यही दुनिया का सबसे difficult कार्य है, जिसे करवाने के लिए स्वयं आपका बाप और दुनिया वालों का भगवान आता है...!

आप बाप पर निश्चय रख, बस थोड़ा-सा ही समय अपनी शक्तियों रूपी seat पर set रहो, फिर अचानक ही आपका परिवर्तन हो जायेगा...।

अब जबकि समय अनुसार परिवर्तन हो जाना चाहिए और बाप भी आप बच्चों के इस परिवर्तन के इंतज़ार में ही है...।

बस बच्चे, अब अपनी seat पर स्थिर रहो, बाकी सारा कार्य बाप स्वयं कर देगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

**IMPORTANT POINT*

आप अपनी seat पर set होने के बाद संकल्पों से हिलो मत।

Om Shanti
14.06.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आपके सामने छोटी-छोटी जो परिस्थितियाँ आ रही है, उनके कारण और निवारण को ना जानने के कारण आप अपनी स्थिति को ऊपर-नीचे करते रहते हो...!

Actually में आप बच्चों के आगे यह परिस्थितियाँ कुछ है ही नहीं...।
क्योंकि आप बहुत अधिक शक्तिशाली हो, परन्तु अभी अपनी शक्तियों का भली-भान्ति ज्ञान ना होने के कारण थोड़ा भारी हो जाते हो...!

और मैं बाप, इस समय केवल आप बच्चों को सर्वशक्तिवान् की seat पर set करने के लिए श्रीमत दे रहा हूँ...।
• इस समय ना तो मैं बाप आपकी क्षण भंगुर छोटी-छोटी सी परिस्थितियाँ, जिनकी कोई value ही नहीं है, उसे ठीक कर रहा हूँ
• और ना ही आपकी तपस्या का उस पर कोई प्रभाव है, क्योंकि इस समय आपका स्वयं पर attention बहुत ज़रूरी है।

परिस्थितियों का क्या है, वो तो एक जाएगी और दूसरी आएगी...!
इसलिए बाप (परमात्मा शिव) का full attention आप पर ही है और बहुत ही जल्दी आपकी शक्तियाँ एक गुण के साथ बाहर आयेंगी और आपकी सभी परिस्थितियाँ एक सपने की तरह खत्म हो जायेंगी...।

बस, स्वयं पर और बाप पर 100% निश्चय रख अपने कार्य पर तत्पर रहो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

**IMPORTANT POINT*

इस समय आपका स्वयं पर attention बहुत ज़रूरी है। परिस्थितियों का क्या है, वो तो एक जाएगी और दूसरी आएगी...!

Om Shanti
15.06.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... जो बच्चा 100% निश्चयबुद्धि होगा, वह ही अपना 100% समर्पण कर अर्थात् अपना सूक्ष्म से सूक्ष्म संकल्प भी बाप को समर्पण कर सकेगा।

क्योंकि उसे बाप पर निश्चय है कि बाप इस समय केवल मेरा है ... और वो मुझे हर हाल में शीघ्र से शीघ्र seat पर set कर देगा अर्थात् बाप-समान seat पर set कर विश्व-परिवर्तन का कार्य करवायेगा ... और वह निश्चिन्त स्थिति में स्थित रह, हर उतार-चढ़ाव को easily cross कर बाप की श्रीमत को 100% follow करेगा।

देखो बच्चे, बाप तो आपको अभी के अभी सम्पन्न बना दें, परन्तु आप बच्चों को बेहद के कार्य करने हैं, जो आप हर रास्ते को cross करने पर ही कर सकते हो ... और आपको तो full उमंग-उत्साह में रहना चाहिए कि;
• इस अन्तिम दु:ख भरे समय में आपका साथी कौन बना है...?
• और आपको भी अपने समान ही दु:खहर्ता-सुखकर्ता बना रहा है...!
और बच्चे, वैसे भी आपका परिवर्तन आपको बताकर नहीं होगा, अचानक ही होगा।

इसलिए उमंग-उत्साह में रहो और जो बाप ने कहा कि कभी भी हो सकता है, तो इस बात पर भी 100% निश्चय रखो।

बस, बाप भी सहज से सहज समय में आपका परिवर्तन करवाना चाहता है।
बनना तो आपको ही है ना...! आप सभी तो मेरे वाह-वाह बच्चे हो...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

**IMPORTANT POINT*
जो बच्चा 100% निश्चयबुद्धि होगा, वह ही अपना 100% समर्पण कर अर्थात् अपना सूक्ष्म से सूक्ष्म संकल्प भी बाप को समर्पण कर सकेगा...।
Om Shanti
16.06.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... जिन बच्चों ने बाप की श्रीमत प्रमाण शुरू से ही त्याग और तपस्या की है ... उनके सारे हिसाब-किताब अब पूरे हो चुके है।

जो भी छोटी-मोटी परिस्थिति, paper के रूप में आ रही है ... वो बस आप बच्चों को आपकी seat पर set रखने के लिए आ रही है।
इसलिए थोड़ा-सा धैर्य और रख, सब बाप को समर्पण कर, अपनी seat पर set रहो...।

जब आप बच्चे प्रेमपूर्वक pure light की vibrations स्मृति, वृत्ति और दृष्टि द्वारा फैला रहे हो, तो यह vibrations बहुत speed से अपना कार्य कर रही हैं।

चाहे अभी आपको महसूस नहीं हो रहा, परन्तु बहुत ही जल्द आप अपने निःस्वार्थ भाव से फैलाई गई vibrations का प्रत्यक्ष फल अनुभव करोगे...।

इस समय परिवर्तन की speed तीव्र हो चुकी है अर्थात् attention रखने वाले बच्चों को बाप का भी और अपने ऊँच साथी, सहयोगी बच्चों की भी पूरी मदद है अर्थात् सूक्ष्म vibrations उन्हें भी उनकी seat पर set करने का कार्य कर रही है।

बस बच्चे, निश्चय रख आगे से आगे बढ़ो।

देखो बच्चे, बाप है रचता और आप बच्चे भी बाप के साथ-साथ मास्टर रचता हो। तो जो रचता होते हैं, वह विनाश के निमित्त नहीं बनते...! अर्थात् वह विश्व का विनाश नहीं करते ... वह तो केवल दुःखहर्ता-सुखकर्ता बन, परिवर्तन का कार्य करते हैं...।
और इतना विशाल परिवर्तन बिना शक्तियों के हो नहीं सकता...।

सही रीति अर्थात् सभी आत्माओं को, प्रकृति को, सन्तुष्ट कर, परिवर्तन कर देना, यह आत्माओं की शक्ति की कमाल होगी...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

थोड़ा-सा धैर्य और रख, सब बाप को समर्पण कर, अपनी seat पर set रहो...।

Om Shanti
17.06.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, ना कुछ सोचने की ज़रुरत है और ना कुछ बोलने की...।
सब कुछ light है ... आप भी light हो, मैं भी light हूँ ... सब कुछ light ही light है।
यह light ही सब कुछ परिवर्तन कर देगी...।

आप बच्चे अब एक ऐसे barrier को cross कर चुके हो जहाँ आकर किसी भी बात का कोई महत्व ही नहीं है।

बस, आप अपना 100% दे बहुत प्यार के साथ पवित्रता के vibrations फैलाते रहो ... यह पवित्र vibrations ही सम्पूर्ण परिवर्तन का कार्य कर देंगे...।

बच्चे, आप अपनी seat पर set रहो। जो कुछ भी हो रहा है उन सब चीज़ों के प्रभाव से प्रभाव-मुक्त हो जाओ। अब किसी भी चीज़ में कोई तन्त (सार) नहीं रहा ... और इस समय, परिवर्तन की परिक्रिया बहुत speed से चल रही है और कभी भी परिवर्तन हो सकता है...।

इसलिए आप सब अपनी numberone seat पर set हो, उसी खुशी और उमंग-उत्साह में रहो।

जैसे किसी भी आत्मा को बड़े सम्मान के साथ कोई ऊँच पद की seat दी जाती है, तो उसे कितनी खुशी होती है...!
इसी तरह आप सब तो पूरे विश्व के numberone hero-heroine की seat पर set हो ... तो आपको खुशी कितनी ना होनी चाहिए...!

बस बच्चे, आपकी खुशी ही आप बच्चों का झटके से परिवर्तन कर देगी...।

अच्छा। ओम शांति।

Om Shanti
18.06.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... कई बच्चे पूछते हैं कि बाबा, क्या हमारे ज्ञान को science prove नहीं करेगी...?

बच्चे, prove उसे किया जाता है, जो प्रत्यक्ष ना हो...! परन्तु आप जब स्वयं प्रत्यक्ष हो जाओगे, तो सब कुछ स्वयं ही prove हो जायेगा ... क्योंकि उस समय आप बच्चों का full connection केवल मेरे साथ ही होगा, अर्थात् आप बाप-समान बच्चे, जो बोलोगे, वो सत्य ही होगा ... उसे सिद्ध करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी...।
प्रत्यक्ष को प्रमाण की ज़रूरत नहीं होती...।

बच्चे, अपना 100% दे बहुत प्रेमपूर्वक पवित्रता की vibrations फैलाते रहो अर्थात् love, light और purity की vibrations फैलाते रहो।

यह vibrations कितनी कमाल का कार्य कर रही हैं, अभी आपको पता नहीं चल रहा है...! परन्तु बहुत ही थोड़े से थोड़े समय में आपकी vibrations की कमाल आपके सामने आयेगी। बस, alert होकर यह कार्य करते रहो ... इसमें अलबेले नहीं होना है।

बच्चे, देखो तमोप्रधान दुनिया ... तमोप्रधान वातावरण के बीच रहते आपको सतोप्रधान vibrations फैलाने हैं ... और अब जबकि कई बच्चों का यह अभ्यास natural हो गया है अर्थात् उनके अन्दर हर आत्मा, हर चीज़ के लिए प्रेम और पवित्रता की भावना natural हो गई है, तो यह natural संकल्प अपना कमाल कर रहे हैं ... और यह कार्य भी अभ्यास से ही हुआ है...।

इसलिए अब सभी बच्चे love and light की तरफ attention दे अपना स्वभाव natural ही love, light और pure thought का बनाये।

परिवर्तन तो हुआ ही पड़ा है। बस विजयी रत्नों की full attention की ज़रूरत है...।

Love and Light का अभ्यास अर्थात् स्वयं को light समझना है और सबसे प्यार करने का पुरुषार्थ करना है अर्थात अब आँखों को जब भी use करो तो सबकुछ light ही देखो वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

अब सभी बच्चे love and light की तरफ attention दे, अपना स्वभाव natural ही love, light और pure thought का बनाये…।

Om Shanti
19.06.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, किसी भी बात में कोई सार नहीं रहा।

बस बच्चे, शान्त स्थिति में स्थित हो प्रेमपूर्वक पवित्रता की light फैलाते रहो।

बच्चे, कुछ भी होता रहें, चाहे स्वयं के द्वारा, दूसरों के द्वारा ... या किसी भी तरह की काई भी बाहरी बात आये, सब कुछ मन-बुद्धि द्वारा छोड़ते जाओ...।

देखो बच्चे, बाप आप बच्चों के परिवर्तन की इंतज़ार में ही है और जब आप खुश और हल्के रह light ही light है ... light ही light है ... अर्थात् सारा दिन बहुत प्रेमपूर्वक, पवित्र light को स्वयं में समा, चारों ओर भी light ही light फैलाते रहते हो, तो यही light का अभ्यास आपको, सभी जीव-जन्तु, प्रकृति और वातावरण का परिवर्तन कर सतोप्रधान बना देता है।

इसलिए बच्चे, निश्चिन्त रह, यह अभ्यास करते रहो ... आपका बाप हर पल आप बच्चों के साथ ही है।

कुछ भी करो, किसी भी चीज़ की मना नहीं है ... परन्तु यह अभ्यास अति-अति आवश्यक है। परिवर्तन light के अभ्यास पर ही depend है।

देखो बच्चे, परिवर्तन तो होना ही है और करने वाले भी आप ही हो।
बस यदि आप attention दे यह light का अभ्यास करते हो, तो परिवर्तन झटके से हो जायेगा...।

इसलिए बाप कहता है कि आप निश्चिन्त रहो ... क्योंकि आप मास्टर रचयिता बच्चों की खुशी की vibrations ही इस दुनिया से सदा के लिए दुःख को खत्म कर देंगी .... और निश्चिन्त, हल्का, खुश और सन्तुष्ट रह कर ही विश्व-परिवर्तन का कार्य हो सकता है ... और इस समय सबसे बड़ी बाप की श्रीमत भी यही है...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

किसी भी तरह की काई भी बाहरी बात आये, सब कुछ मन-बुद्धि द्वारा छोड़ते जाओ ... शान्त स्थिति में स्थित हो प्रेमपूर्वक पवित्रता की light फैलाते रहो…।

Om Shanti
20.06.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, बाप आया ही है परिवर्तन के लिए और अब तो बाप को भी परिवर्तन का ही इंतज़ार है।

बस थोड़ा-सा और, प्रेमपूर्वक पवित्रता की light का अभ्यास करो ... फिर देखते ही देखते परिवर्तन हो जायेगा...।

बच्चे, किसी भी बात में कोई सार नहीं है। आप निश्चिन्त और हल्के रहो।

देखो बच्चे, यह अभ्यास इतना सरल नहीं है, इसलिए भगवान को स्वयं बाप रूप में आकर आप बच्चों को बहुत प्रेमपूर्वक आगे से आगे बढ़ाना पड़ता है।

इस तमोप्रधान दुनिया में, तमोप्रधान vibrations में रहते हुए, सतोप्रधान संकल्प उत्पन्न करना अैर साथ ही साथ जो दिख रहा है वा महसूस हो रहा है, उस तरफ attention ना दे, बाप की श्रीमत प्रमाण, संकल्पों द्वारा उसे पवित्र light समझ, परिवर्तन कर देना ... यह कार्य आप कुछ ही परमात्मा बाप के चुने हुए बच्चे ही कर सकते हो...।

बस, बाप पर और स्वयं पर निश्चय रख आगे से आगे बढ़ो। जितना भी कर सकते हो, हल्के और खुश रहकर करो। आपका बाप आपके संग है, फिर तो हुआ ही पड़ा है ना...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

इस तमोप्रधान दुनिया में, तमोप्रधान vibrations में रहते हुए, सतोप्रधान संकल्प उत्पन्न करना और साथ ही साथ जो दिख रहा है वा महसूस हो रहा है, उस तरफ attention ना दे, बाप की श्रीमत प्रमाण, संकल्पों द्वारा उसे पवित्र light समझ, परिवर्तन कर देना…।

**IMPORTANT POINT*

आप अपनी seat पर set रहो, जो कुछ भी हो रहा है उन सब चीज़ों के प्रभाव से प्रभाव-मुक्त हो जाओ ... अब किसी भी चीज़ में कोई तन्त (सार) नहीं रहा…।

Om Shanti
21.06.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं...
• योग क्या है...?
योग है एक प्यार ... जोकि हमें इस समय केवल एक बाप (परमात्मा शिव) से करना है, अर्थात् सब सम्बन्धों का सुख, वैभव, वस्तुओं का सुख केवल बाप से ही अनुभव करना है ... और इस सुख, आनन्द, खुशी और संतुष्टता के आगे दुनिया से प्राप्त होने वाला सुख, मिट्टी के बराबर है...।

• योग..., अर्थात् आत्मा और परमात्मा का प्यार भरा सम्बन्ध और बाप द्वारा सर्व गुणों और शक्तियों की प्राप्ति...।

• योग..., अर्थात बाप की याद से, बाप से गुण और शक्तियाँ ले, अपने original स्वरुप में स्थित होना...

• देखो, यथार्थ ज्ञान से ही यथार्थ योग लगता है। जिसके द्वारा ही स्व-परिवर्तन सो वायुमण्डल परिवर्तन सो विश्व-परिवर्तन होता है।

• कई बार कर्म करते भी आपका powerful connection बाप के साथ होता है, परन्तु आप अनुभव नहीं कर पाते..., और यही सोचते हो कि बैठकर तो योग किया नहीं...! बैठकर योग लगाना बहुत-बहुत-बहुत अच्छा है, परन्तु कर्मयोगी की stage भी कम नहीं...।

• बस इसमें कर्म consicous होने के बजाए कर्मयोगी अर्थात् स्वयं को आत्मा समझ, बाप के साथ combined रहने का बहुत अभ्यास चाहिए। योग के साथ-साथ स्वयं के परिवर्तन पर full attention रखना है।

• अभी भी बच्चे बीच-बीच में मूँझ जाते हैं और सोचते हैं, सारा दिन योग थोड़े ना ही लग सकता है...! देखो बच्चे, कौन कहता है सारा दिन योग लगाओ...? बाप तो केवल यही कहता है ... बच्चे, परमात्मा से सर्व सम्बन्धों के सुख का अनुभव करो...। समीप सम्बन्ध को निभाने में सोचना नहीं पड़ता कि कैसे निभाएं...?

• लौकिक में तो सभी सम्बन्ध स्वार्थ वश हैं, चाहे तो एक percent, चाहे तो 100 percent ... परन्तु परमात्मा बाप तो आप बच्चों के साथ सभी सम्बन्ध निःस्वार्थ निभाता है...।

• बच्चे, हर कर्म को बड़े प्रेमपूर्वक, शान्ति से और बाप के संग रहकर करना है। किसी भी कार्य में जल्दबाज़ी या हड़बड़ी नहीं करनी...। यह नहीं सोचना कि जल्दी से कार्य खत्म हो और मैं योग में बैठूँ...!

• बैठकर योग लगाना बहुत अच्छा है, परन्तु उससे भी ज्यादा ज़रूरी है हर second अपनी स्थिति में रहना अर्थात् बाप के साथ रह और अपने स्वमान की स्मृति में रहकर कार्य करना...।

• और आप बच्चे जब बाप की याद में रहकर कर्म करते हो तो आपकी double कमाई हो जाती है - एक मंसा और एक कर्मणा...।

• इसी तरह, जब आप बाप की याद और स्वमान में स्थित होकर बात करते हो, तब भी double कमाई हो जाती है - इसे कहते हैं हर कदम में पदम...।

• चारों ही subjects का result जो हैं, वह गुण स्वरूप और शक्ति स्वरूप बन seat पर set होना है। इसलिए आप बच्चों को इस तरफ विशेष attention देना है।

• आप बच्चों को विशेष ध्यान रखना है कि चाहे योग के लिए, चाहे धारणा के लिए अपने मूल स्वरूप एवं स्थिति से नीचे नहीं आना है...।

• देखो, आप बच्चों के लिए ही यह सहजयोग, कर्मयोग, निरन्तर योग और राजयोग मशहुर है। यह सहज से सहज योग है...। जहाँ मर्ज़ी, जिस मर्ज़ी स्थिति में आप बाप को याद कर सकते हो। कर्म करते वक्त भी बाप को याद करो ... और यही निरन्तर योग होने से राजयोग सहज हो जाता है...।

• और अब इस अभ्यास को बढ़ाते चलो, फिर naturally ही आप स्वयं के और बाप के स्मृति स्वरूप हो जाओगे...। इसलिए, बाबा बार-बार कहता है कि ज्यादा सोचो मत, बस हर पल मुझे याद करते रहो...।

• यह पढ़ाई ही है मनुष्य से देवता अर्थात् तमोगुणी आत्मा को परिवर्तन कर सतोगुणी आत्मा बना देने की..., इसलिए check and change...

• जब आप स्वयं का अर्थात् आत्मा को स्वच्छ बनाने का attention रख पुरूषार्थ करोगे, तो बहुत जल्दी ही बाप की मदद से flawless diamond बन पाओगे...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

चारों ही subjects का result जो हैं, वह गुण स्वरूप और शक्ति स्वरूप बन seat पर set होना है। इसलिए आप बच्चों को इस तरफ विशेष attention देना है।

Om Shanti
22.06.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, light का अभ्यास अति आवश्यक है।
इसलिए केवल स्वयं पर attention रख, light का अभ्यास करते रहो। यही अभ्यास परिवर्तन की सूई है...।

सभी बच्चों का आगे से आगे बढ़ने का लक्ष्य है, लेकिन अब समय अनुसार अर्थात् अन्त के भी अन्त, का भी अन्त जा रहा है..., तो रहा हुआ व्यर्थ का खाता किसी भी रूप में, किसी भी आत्मा के पास आ सकता है ... इसलिए इन सब बातों की परवाह किए बिना, अपने स्वमान की seat पर set हो, silence और साक्षीपन की seat का full अभ्यास रखना है ... और साथ ही साथ हर second का स्वयं पर attention ज़रूरी है, कि मैं अपनी seat पर set प्रभाव-मुक्त हूँ...?

बस बच्चे, घबराना नहीं है ... दृढ़तापूर्वक light का अभ्यास करते रहना है।

परिवर्तन भी होना है और परिवर्तन-कर्ता भी आप ही हो ... और केवल आप बच्चों के साथ ही शिव बाप है।

इन बातों पर अटूट निश्चय रख, निश्चिन्त रह आगे से आगे बढ़ना है ... लक्ष्य कभी भी सामने आ सकता है...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

हर second का स्वयं पर attention ज़रूरी है, कि मैं अपनी seat पर set प्रभाव-मुक्त हूँ...?

Om Shanti
23.06.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बस बच्चे, आप निश्चिन्त रहो, हल्के रहो, खुश रहो...। आपका बाप आप बच्चों के संग ही है और यह परिवर्तन का कार्य स्वयं बाप कर रहा है, जिसे किसी भी तरह की कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती...।

LIGHT, जो सभी गुणों और शक्तियों की जननी कहो, परिवर्तन की शक्ति कहो, हैं ... और यह light आपके परिवर्तन के साथ-साथ प्रकृति के भी परिवर्तन का कार्य शुरू कर चुकी है, जिसे अब कोई रोक नहीं सकता...!

जैसे पानी अपना रास्ता बना लेता है, उसी तरह यह light भी हर रुकावट को cross कर परिवर्तन का कार्य कर रही है...।

और जब आप स्वयं भी light का अभ्यास करते हो, तो जैसेकि आप परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बन जाते हो।
फिर कार्य सहज और जल्दी हो जाता है, अन्यथा होना तो है ही...।

बस बच्चे, आप हल्के रह करते रहो, अपने प्रति single और छोटा-सा भी संकल्प कमज़ोरी का ना हो।

आप ही हो माना आप ही हो, बाप-समान...।

बस निश्चय रख निश्चिन्त रहो, फिर जल्दी ही आपका सम्पन्न स्वरूप अर्थात फरिश्ता स्वरूप, आपको धारण कर लेगा, जिससे आप सम्पूर्ण और सम्पन्न बन जाओगे...।

आपका सम्पन्न स्वरूप भी प्रकृति के परिवर्तन की इंतज़ार में ही है...।

Light का अभ्यास अर्थात *अब आँखों को जब भी use करो, तो सब कुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।*

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

जब आप स्वयं भी light का अभ्यास करते हो, तो जैसेकि आप परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बन जाते हो। बस बच्चे, आप हल्के रह करते रहो, अपने प्रति single और छोटा-सा भी संकल्प कमज़ोरी का ना हो।

Om Shanti
24.06.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाप हैं शिव और आप सब हो पार्वतियां अर्थात् बाप हैं शिव पिता और आप सब हो पार्वती माता अर्थात् जगतमाता...।

यह सदा आप बच्चों को याद रहना चाहिए कि ... मैं आत्मा जगतमाता, विश्व के कल्याण के निमित्त हूँ...।

देखो बच्चे, माँ का दिल तो वैसे भी ममतामई होता है अर्थात् प्रेम, रहम और कल्याण की भावना से भरपूर होता है ... वो हर हाल में अपने बच्चों का कल्याण ही करती है।
उसकी एक-एक श्वांस में बच्चों के प्रति प्यार समाया रहता है - तो आपको यह सदा स्मृति रहनी चाहिए...।

अब आप बच्चों को इस देह के सम्बन्ध और साथ में ... मैं पुरुष हूँ, मैं नारी हूँ, मैं उम्र में छोटा बच्चा हूँ - यह सब भूल जाना चाहिए ... सभी स्वयं को आत्मा समझ, विश्व की आधारमूर्त आत्मायें समझें...।

जब आप सब हो ही विजयी रत्न, तो फिर क्या हुए...?
पूर्वज हुए ना...!

तो स्वयं को जगतमाता समझ पूरे विश्व का कल्याण करो ... अर्थात् एक-एक आत्मा के प्रति आपके अन्दर कल्याण की भावना हो।
जितना प्रेम होगा, उतना रहम और कल्याण की भावना होगी।

अब आप सब क्या हो गए...? भारत माता सो विश्व माता...।

इसलिए गायन है - "वन्दे मातरम्..." अर्थात् भारत के कल्याण में ही विश्व का कल्याण समाया हुआ है...।

बस बच्चे, अब सभी आत्माओं को रावण की जेल से स्वतंत्र करो। आपके संकल्प ही यह कार्य करेंगे, संकल्पों को अन्दर समाते चले जाओ।
फिर एक ही संकल्प उठेगा - "परिवर्तन" ... आप सभी का यही एक संकल्प विश्व का परिवर्तन कर देगा...।
बच्चे, आप हो जगत माता अर्थात् जगत जननी ... सभी आत्माओं समेत सारी प्रकृति को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने वाली...।

बस, सब पर रहम, प्रेम और कल्याण की भावना रखनी है। ऐसे समझो कि जैसे, यह सारी दुनिया आपके बच्चे हैं...।

देखो, यह पूत, कपूत बन सकते हैं ... परन्तु जब आप अपने को माँ समझोगे, तो आपमें बेहद का प्यार, बेहद की रहम-कल्याण की भावना जागृत हो जायेगी...।

बस हर पल, हर कार्य बाप के संग रहकर करना है। परमात्मा बाप का साथ आपको हर कार्य में सफलता दिलायेगा।
आप खुश और हल्के रहोगे...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

अब आप बच्चों को इस देह के सम्बन्ध और साथ में ... मैं पुरुष हूँ, मैं नारी हूँ, मैं उम्र में छोटा बच्चा हूँ - यह सब भूल जाना चाहिए ... सभी स्वयं को आत्मा समझ, विश्व की आधारमूर्त आत्मायें समझें...।

Om Shanti

25.06.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, पहले तो यह मानो कि जो सम्पन्न स्वरूप अर्थात फरिश्ता स्वरूप है, वो *मैं ही हूँ* ... और वो सतोप्रधान light से भरपूर है, अर्थात उसमें असीम गुण और शक्तियाँ है ... बहुत ज्यादा bright है...।

जिस तरह बाप अपनी सारी शक्तियाँ मर्ज करके आता है, क्योंकि बाप को पता है कि तमोप्रधान तन में ताकत नहीं बाप (परमात्मा शिव) की एक परसेन्ट शक्ति को भी धारण करने की...!

इसी तरह, आपका सम्पन्न स्वरूप भी बाप-समान ही है ... और जबकी अब परिवर्तन का ही समय है, तो सम्पन्न स्वरूप कुछ शक्ति साथ लेकर आयेगा ही, जिसके लिए आपको अपने तन को कम से कम रजोप्रधान तो बनाना ही पड़ेगा...!

बाप तो जल्दी-जल्दी परिवर्तन कर दे, परन्तु आपकी मन-बुद्धि सहज रीति ही परिवर्तन को accept कर आगे बढ़ती है, क्योंकि परिवर्तन में हलचल तो होती है।

अब जबकि कार्य अर्थात् प्रकृति का परिवर्तन भी होने वाला ही है, तो बस आप हल्के रह light का अभ्यास करते रहो...।

पूरे तन में पवित्रतम् light अर्थात् गुणों और शक्तियों से भरपूर light को चलता हुआ महसूस करो...।

Light का अभ्यास अर्थात *स्वयं को आत्मा, point of light निश्चय कर, अब आँखों को जब भी use करो, तो सब कुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।*

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

आप हल्के रह light का अभ्यास करते रहो...। पूरे तन में पवित्रतम् light अर्थात् गुणों और शक्तियों से भरपूर light को चलता हुआ महसूस करो...।

Om Shanti
26.06.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... जो बच्चे, 100% बाप की श्रीमत प्रमाण चलते हैं, तो बाप भी उन बच्चों का 100% ज़िम्मेवार है ... और बाप की इस समय एक ही श्रीमत है कि निश्चिन्त रहो, खुश रहो ... और हल्के रह attention दे, light का अभ्यास करते रहो...।

और यदि कोई भी कमी-कमज़ोरी आती है, तो attention दे, सच्चे दिल से बाप को समर्पण हो जाओ, तो बाप आप बच्चों की कमी-कमज़ोरी तो दूर करेगा ही, साथ ही साथ आगे बढ़ने के लिए शक्ति भी देगा...।

बस, बाप की श्रीमत को follow करने के लिए, स्वयं पर attention बहुत ज़रूरी है।

जब आप हल्के हो समर्पण हो जाते हो, तब ही तो बाप आप बच्चों का सहयोगी बन सकता है ... और जब आप स्वयं ही छोड़ना नहीं चाहते, तो बाप भी साक्षी हो जाता है, क्योंकि बाप (परमात्मा शिव) है lawful और वो समर्पण बुद्धि बच्चों का ही सहयोगी बन सकता है...।

जितना आप मन-बुद्धि से बाप की श्रीमत प्रमाण हल्के रहते हो, तो उतनी जल्दी ही लक्ष्य के समीप पहुँच सकते हो...।

Light का अभ्यास अर्थात *स्वयं को आत्मा, point of light निश्चय कर, अब आँखों को जब भी use करो, तो सब कुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...।*

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

बाप की इस समय एक ही श्रीमत है कि निश्चिन्त रहो, खुश रहो ... और हल्के रह attention दे, light का अभ्यास करते रहो...।

Om Shanti
27.06.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, जब आप निश्चिन्त रहते हो, तब ही आप हल्के रह light का अभ्यास कर सकते हो।

बच्चे, अब किसी भी बात में कोई सार नहीं रहा, चाहे आपको पता नहीं चल रहा, परन्तु बाप तो सब देख रहा है।

जैसे एक काली रात में चलता मुसाफिर सुबह की इंतज़ार में होता है, परन्तु सुबह होने से पहले रात और काली हो जाती है ... और वो अधिकतम् रात का काला समय नई सुबह का शुभ सन्देश लेकर आता है, जिसे मुसाफिर नहीं जानता...!

पर यहाँ स्वयं शिव बाप आपको सब बता रहा है कि बस बच्चे, परिवर्तन की नई सुबह शुरु होने ही वाली है।

बच्चे, बाबा साथी बन आप बच्चों का हर पल साथ निभा रहा है। बस, बाप की श्रीमत प्रमाण हिम्मत रख, स्व-परिवर्तन और प्रकृति के परिवर्तन का कार्य, थोड़ा-सा जो रह गया है, वो कर लो...।

जो बाप बार-बार कह रहा है कि कभी भी परिवर्तन हो सकता है, तो ऐसे ही नहीं कह रहा...।
बस खुश रहो ... हल्के रहो, क्योंकि इस परिवर्तन के कार्य में आपका खुश और हल्के रहना अत्यधिक आवश्यक है।

इसलिए ... निश्चय रख, निश्चिन्त रह आगे बढ़ो, परिवर्तन भी आपकी इंतज़ार में ही है...।

Light का अभ्यास अर्थात स्वयं को आत्मा, point of light निश्चय कर, अब आँखों को जब भी use करो, तो सब कुछ light ही देखो, अर्थात *हर चीज़ को उसके original स्वरूप में अर्थात light देखो* ... और वो भी बहुत प्रेम के साथ...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

जब आप निश्चिन्त रहते हो, तब ही आप हल्के रह light का अभ्यास कर सकते हो...।

Om Shanti
28.06.2019

★【आज का पुरूषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप हो जगत माता अर्थात् जगत जननी ... सभी आत्माओं समेत सारी प्रकृति को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने वाली...।

इसलिए विश्व-परिवर्तन से पहले अपनी शक्तियों रूपी अग्नि से देह रूपी प्रकृति को सतोप्रधान बनाने में use करो, अर्थात् मालिक बन अपनी शक्तियों को order करो कि अब प्रकृति को सतोप्रधान बनाये...। साथ ही साथ आप अपने मन-बुद्धि को इस संकल्प में एकाग्र कर दो और 100% निश्चय के साथ निश्चिन्त रहो।

बच्चे, आप बच्चों के संकल्प सिद्ध नहीं होंगे, तो फिर बताओ किसके होंगे...?

अभी भी आपकी powerful vibrations कार्य कर रही हैं। परन्तु अभी संकल्पों में एकाग्रता नहीं है, जिस कारण जो सफलता आप चाहते हो, वो प्राप्त नहीं हो रही...!

इसलिए संकल्पों को निश्चयबुद्धि बन एकाग्र करो। दृढ़तापूर्वक करने से, अर्थात् संशय को 100% समाप्त कर, अपनी शक्तियों पर 100% निश्चय रख, उन्हें use करो ... फिर सफलता आपके पांव चुमेगी...।

बच्चे, charity begins at home...

Starting में किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने में कई बार थोड़ा टाइम लग जाता है, परन्तु आप धैर्यतापूर्वक शक्तियों का use करो।
एक सफलता प्राप्त होने के बाद आपकी speed तीव्र हो जायेगी।

बस बच्चे, सबकुछ होना ही है ... और जिन बच्चों को परमात्मा बाप का 100% सहयोग है, वो ही बच्चे बाप-समान स्थिति में स्थित हो सफलतामूर्त बन जाते हैं...।

बस बच्चे, बहुत प्रेमपूर्वक पवित्रता की vibrations फैलाते रहो।
आप बच्चों के आनंद के दिन आये कि आये...।

*** *देह रूपी प्रकृति को सतोप्रधान बनाना* अर्थात *अपने पाँच तत्वों से बने शरीर को पवित्र light बना, पूरे तन में पवित्रतम् light अर्थात् गुणों और शक्तियों से भरपूर light को चलता हुआ महसूस करो...।*

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

संकल्पों को निश्चयबुद्धि बन एकाग्र करो ... दृढ़तापूर्वक करने से, अर्थात् संशय को 100% समाप्त कर, अपनी शक्तियों पर 100% निश्चय रख, उन्हें use करो ... फिर सफलता आपके पांव चुमेगी...।

Om Shanti
29.06.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाप (परमात्मा शिव) स्वयं आकर आप बच्चों को विशेष पालना दे, विशेष ज्ञान दे रहा है ... इसलिए बाप की पढ़ाई के एक-एक शब्द पर निश्चय रखो...।

जिस समय, जिस संकल्प की ज़रूरत होती है, बाप उसी according आप बच्चों के संकल्प परिवर्तन कर देता है।

देखो, संकल्पों से ही दुनिया बनी और संकल्प से ही परिवर्तन होगा। बस, आप उसी according अपने संकल्प रखो, जो बाप कह रहा है...।

बाप आप बच्चों के द्वारा ही सारा कार्य करवाता है।
वैसे बाप क्या नहीं कर सकता...!
आप सबके भी तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क ... हर तरह की problem, एक second से भी कम समय में ठीक कर सकता है। परन्तु बाप, आप बच्चों को आप-समान बना, विश्व-परिवर्तन का कार्य आप द्वारा ही करवाता है...।

बस आप हर तरह की हर बात, समर्पण कर वो ही संकल्प करो, जो बाप कह रहा है...।

बच्चे, अब इस तमोप्रधान दुनिया के किसी भी चीज़ में कोई सार नहीं रहा है ... ना ही कहीं खुशी है और ना ही कहीं दुःख...।
बस, आप तो इन सबसे न्यारे हो, स्वयं के संकल्पों पर attention रख, परिवर्तन के कार्य को सम्पन्न करो। सभी आपके इंतज़ार में हैं।

परिवर्तन तो होना ही है। बस आप बच्चों के attention देने से झटपट हो जायेगा..., अर्थात् बिल्कुल थोड़े से ही attention से परिवर्तन हो जायेगा...।
बस न्यारेपन की स्थिति चाहिए अर्थात् सब कुछ करते भी मन-बुद्धि से न्यारे...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

अब इस तमोप्रधान दुनिया के किसी भी चीज़ में कोई सार नहीं रहा है ... ना ही कहीं खुशी है और ना ही कहीं दुःख...। बस आप तो इन सबसे न्यारे हो, स्वयं के संकल्पों पर attention रख, परिवर्तन के कार्य को सम्पन्न करो...।

Om Shanti
29.06.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाप (परमात्मा शिव) स्वयं आकर आप बच्चों को विशेष पालना दे, विशेष ज्ञान दे रहा है ... इसलिए बाप की पढ़ाई के एक-एक शब्द पर निश्चय रखो...।

जिस समय, जिस संकल्प की ज़रूरत होती है, बाप उसी according आप बच्चों के संकल्प परिवर्तन कर देता है।

देखो, संकल्पों से ही दुनिया बनी और संकल्प से ही परिवर्तन होगा। बस, आप उसी according अपने संकल्प रखो, जो बाप कह रहा है...।

बाप आप बच्चों के द्वारा ही सारा कार्य करवाता है।
वैसे बाप क्या नहीं कर सकता...!
आप सबके भी तन, मन, धन, सम्बन्ध, सम्पर्क ... हर तरह की problem, एक second से भी कम समय में ठीक कर सकता है। परन्तु बाप, आप बच्चों को आप-समान बना, विश्व-परिवर्तन का कार्य आप द्वारा ही करवाता है...।

बस आप हर तरह की हर बात, समर्पण कर वो ही संकल्प करो, जो बाप कह रहा है...।

बच्चे, अब इस तमोप्रधान दुनिया के किसी भी चीज़ में कोई सार नहीं रहा है ... ना ही कहीं खुशी है और ना ही कहीं दुःख...।
बस, आप तो इन सबसे न्यारे हो, स्वयं के संकल्पों पर attention रख, परिवर्तन के कार्य को सम्पन्न करो। सभी आपके इंतज़ार में हैं।

परिवर्तन तो होना ही है। बस आप बच्चों के attention देने से झटपट हो जायेगा..., अर्थात् बिल्कुल थोड़े से ही attention से परिवर्तन हो जायेगा...।
बस न्यारेपन की स्थिति चाहिए अर्थात् सब कुछ करते भी मन-बुद्धि से न्यारे...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

अब इस तमोप्रधान दुनिया के किसी भी चीज़ में कोई सार नहीं रहा है ... ना ही कहीं खुशी है और ना ही कहीं दु:ख...। बस आप तो इन सबसे न्यारे हो, स्वयं के संकल्पों पर attention रख, परिवर्तन के कार्य को सम्पन्न करो...।

Om Shanti
30.06.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, ना ही मैं आपको धनवान बनाने के लिए आया हूँ ... और ना ही आप सबकी daily की problem solve करने के लिए आया हूँ...!

अर्थात मैं कोई भी तरह का क्षण-भंगूर सुख नहीं देता..., जिसके पीछे आप द्वापर से भागते आये हो...!

और वैसे भी यह सब तो भक्ति मार्ग में भी प्राप्त हो जाता है अर्थात भगवान की प्रार्थना-याचना करने से मिल जाता है...!

बच्चे,
• मैं तो आप बच्चों को आपकी स्व-स्थिति की seat पर set कराने के लिए आया हूँ ...
• अर्थात आपको आपका ही मालिक बनाने आया हूँ ...
• अर्थात विस्मृत आत्मा को स्मृति दिलाने आया हूँ ...
• अर्थात आपके पुराने, विकारी संस्कारों का संस्कार करा, आपको शुद्ध और पावन बना, स्व-स्थिति के आसन पर set कर देता हूँ..., जिससे आपकी सम्पन्नता को, जो आप में ही है, वो बाहर आ जाती है..., और आप स्थूल में सम्पन्न बन जाते हो
• अर्थात सम्पूर्ण देवता बन जाते हो
• अर्थात सभी को सूक्ष्म और स्थूल सम्पन्नता देने वाले
• अर्थात पूजनीय आत्मा, जिनका आप सब गायन-पूजन करते आये हो...।

जैसे, एक राजा की कहानी बनाई है कि जिसमें भिखारी राजा से भीख माँगने आता है और राजा को भगवान से माँगता हुआ देखता है..., अर्थात भगवान से माँगने वाले को देवता नहीं कहा जा सकता...। अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*
भगवान से माँगने वाले को देवता नहीं कहा जा सकता...।

Om Shanti
01.07.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप बच्चों का बाप विश्व-कल्याणकारी है, तो आप बच्चों का कल्याण तो हर second में है ही है ना...।

बस, आप सब कुछ बाप हवाले कर दो अर्थात् जो भी कीचड़ पट्टी है, जोकि इस दुनिया के हिसाब से बहुत valuable है, सब मन-बुद्धि से बाप (परमात्मा शिव) हवाले कर दो...।

आपका भविष्य अर्थात् आने वाला कल, अर्थात् इस जन्म का भविष्य प्राप्तियों से भरपूर है...। किसी भी तरह की कोई कमी महसूस नहीं होगी। हर तरफ से अर्थात् तन, मन, धन, जन से भरपूर रहोगे अर्थात् healthy, wealthy और happy रहोगे।

बस बच्चे, बाप को अपना मान अर्थात् मेरा बाप है और है भी कौन...? अर्थात् मुझ से ज्यादा भाग्यशाली कोई नहीं...! - यह मान, सहज रीति परिवर्तन के process को पूरा करो...।

हर समय, हर हाल में बाप आपके साथ है, बस आप मन-बुद्धि से बाप के आगे समर्पण हो जाओ ... ज्यादा सोचो मत...।

बच्चों के कल्याण के निमित्त मैं आ गया हूँ, तो अकल्याण तो हो ही नहीं सकता...!

बस बच्चे, हल्के रहो ... खुश रहो...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

बाप को अपना मान अर्थात् मेरा बाप है और है भी कौन...? अर्थात् मुझ से ज्यादा भाग्यशाली कोई नहीं...! - यह मान, सहज रीति परिवर्तन के process को पूरा करो...।

Om Shanti
02.07.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, जो भी कार्य करना है, कर लो ... परन्तु सोच-सोच कर उसमें अपनी मन-बुद्धि मत लगाओ।

संकल्पों के द्वारा इस दुनियावी हर कार्य से न्यारे होते जाओ...। आपका न्यारापन ही आपको उड़ाकर उस पार ले जायेगा...।

देखो, इस दुनिया का हर कार्य वैसे ही होगा, जैसे होता आया है ... एक परसेन्ट भी परिवर्तन अनुभव नहीं होगा...!

जो तमोप्रधान दुनिया की हर चीज़ गिरावट में जा रही है, वो बढ़ती जायेगी..., परन्तु परिवर्तन आपको स्व-परिवर्तन के बाद ही दिखने लगेगा...।

इसलिए बाबा कहता है कि स्वयं को हर बात से न्यारा कर लो...। अपनी मन-बुद्धि में बाबा को बसा लो, अर्थात् बाबा के एक-एक बोल, बाबा की याद आपके अन्दर समा जायें...।

जिस समय आप बाबा को भूल जाते हो, या unconsciously कोई गलती हो भी जाती है, तो उस समय को भी भूल जाओ...। केवल संकल्पों में बाप की याद और बाप से हुई प्राप्तियों की, अर्थात् अपने भाग्य की खुशी रहनी चाहिए...।

देखो, सभी आपके परिवर्तन के ही इंतज़ार में हैं ... और यह कभी भी झटके से हो जायेगा...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

इस दुनिया का हर कार्य वैसे ही होगा, जैसे होता आया है ... एक परसेन्ट भी परिवर्तन अनुभव नहीं होगा..., परन्तु परिवर्तन आपको स्व-परिवर्तन के बाद ही दिखने लगेगा...।

Om Shanti
03.07.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बस अब एक ही संकल्प हो - मैं light, Supreme light और light का शरीर ... और साथ ही साथ एक ही संकल्प कि अभी-अभी परिवर्तन होगा...।
परिवर्तन तो हुआ ही पड़ा है...!

देखो बच्चे, आप बच्चों को आपके लक्ष्य तक पहुँचाने की ज़िम्मेवारी बाप की है और बाप है इस drama का रचियता...।

बस, आप तो बाप पर 100% निश्चय रख, बाप की श्रीमत प्रमाण अपनी seat पर set रहो। बाप सबसे सहज और शीघ्रता से लक्ष्य तक पहुँचाने की विधि द्वारा ही, आप बच्चों को आपके लक्ष्य तक पहुँचा रहा है...। बस अपनी मन-बुद्धि ज्यादा use मत करो...।

जो भी drama का scene आपके सामने आ रहा है, उसे सहज रीति पार करो..., जिससे आप बच्चे बाप के सहयोगी बन जाते हो और बाप का कार्य भी जल्दी-जल्दी पूरा हो जायेगा, अन्यथा पूरा तो होना ही है, जिसे कोई भी ताकत रोक नहीं सकती...।

बच्चे, आप 100% निश्चिन्त रह, बाप की एक-एक बात पर 100% निश्चय रख, बाप की श्रीमत प्रमाण अपनी seat पर set रहने का attention देते रहो।
यह attention ही आपके present स्वरूप और आपके ही original स्वरूप के बीच का पर्दा उठायेगा..., जिससे आप विश्व में प्रत्यक्ष हो जाओगे...।

बस बच्चे, light का अभ्यास करते रहो...।

Light का अभ्यास अर्थात स्वयं को आत्मा, point of light समझ, अब आँखों को जब भी use करो, तो *सब कुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...,* अर्थात हर चीज़ और हर किसी को उसके original स्वरुप में, light ही देखो...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

आप 100% निश्चिन्त रह, बाप की एक-एक बात पर 100% निश्चय रख, बाप की श्रीमत प्रमाण अपनी seat पर set रहने का attention देते रहो...।

Om Shanti
04.07.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, महसूस करो कि चारों तरफ पवित्र light है ... यह कमरा पवित्र light का बना हुआ है।
इसी तरह के अभ्यास से यह प्रकृति आपकी सहयोगी-साथी बन जायेगी...।

जिस तरह से विश्व-परिवर्तन के कार्य के लिए बाप ने आपको सहयोगी-साथी बनाया है, इसी तरह आप प्रकृति के द्वारा विश्व-परिवर्तन का कार्य सम्पन्न करोगे।

बच्चे, परिवर्तन तो होना ही होना है, अर्थात् हुआ ही पड़ा है। बस आप तो तैयार रहो ... और सब बाबा सम्भाल लेगा..., क्योंकि ज़िम्मेवारी बाप की है, आपकी नहीं..., आप तो निमित्त मात्र हो।

केवल विजयी रत्न बच्चे ही ऐसे हैं, जो निश्चयबुद्धि बन अर्थात् बाप की हर बात पर निश्चय रख, बाप-समान बनते हैं ... और असलियत में बच्चा केवल वो ही होता है, जो बाप-समान हो और बाकी तो कहने मात्र के लिए ही बच्चे हैं, अन्यथा बाप उनके लिए भगवान ही है...।

बच्चे, कभी आपने ऐसा सोचा था कि परमात्मा बाप, आप बच्चों को आकर स्वयं पढ़ायेगा...?
अभी तक आपको यह स्वप्न मात्र ही लगता होगा...!

इसी तरह, जब आप बाप-समान बन जाओगे तो आपको स्वयं पर आश्चर्य भी लगेगा और यह एक स्वप्न सा feel होगा कि हम ही थे और हम ही हैं..., परन्तु हो तो आप सब ही ना कल्प-कल्प के बाप के दिलतख्तनशीन, नूरे रत्न, मस्तकमणी बाप समान बच्चे...।

बच्चे, बाप को भी आप बच्चों पर नाज़ है ... निश्चयबुद्धि विजयन्ति...।

इसलिए बच्चे, अपने गुणों रूपी शक्तियों को use करो ... जितना ज्यादा आप इन्हें use करोगे, उतना अधिक अपनी seat पर set रहोगे ... और जितना अधिक आप अपनी set पर set रहोगे, उतनी जल्दी परिवर्तन का कार्य शुरु हो जायेगा ... और फिर तो सहज ही बाप-समान बन, विश्व-परिवर्तन का कार्य सम्पन्न कर दोगे...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

असलियत में बच्चा केवल वो ही होता है, जो बाप-समान हो और बाकी तो कहने मात्र के लिए ही बच्चे है, अन्यथा बाप उनके लिए भगवान ही है...।

Om Shanti
05.07.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बाबा बच्चों के पुरुषार्थ को check कर रहे थे।
तो बाबा ने देखा कि, बच्चों को बाबा से बहुत प्यार है, बच्चे ज्ञानी भी हैं और योगी भी हैं ... परन्तु संस्कार परिवर्तन करने में नम्बरवार हैं...।

स्वयं को परिवर्तन कर नहीं पाते, इसलिए परमात्मा से और अन्य आत्माओं से किसी-न-किसी तरह की complaint रहती है...! जिस कारण ऐसी आत्मायें अन्दर से ना तो संतुष्ट रहती हैं और ना ही हल्की..., फिर बताओ यह कैसा पुरुषार्थ है...?

देखो बच्चे, बाबा बार-बार कह रहा है...,
• संस्कार परिवर्तन करो।
• स्वयं की checking करो, बाप की श्रीमत प्रमाण...।
• मैं-मेरे में मत फँसो।
• सब कुछ समर्पण कर दो...।

परन्तु जब आप मैं-मेरे में फँस जाते हो, तो जैसेकि आप अज्ञानी आत्मा हो...।

देखो, यह समय फिर नहीं मिलेगा...। अभी आप चाहे कितने भी complaint स्वरूप बनो परन्तु अंत में अपना part देखकर स्वयं ही पश्चाताप करना पड़ेगा...!
यह ही फिर कल्प-कल्प की बाज़ी बन जायेगी...!

देखो, इस मार्ग में किसी भी तरह की कोई भी complaint ना स्वयं से अर्थात् स्वयं के भाग्य से, ना परमात्मा से और ना ही अन्य आत्माओं से होनी चाहिए...।

इसके लिए बाप की हर श्रीमत को महीनता से समझ अपने जीवन में apply करो।

आप बच्चों की सारी पढ़ाई बाप ने सार में भी और विस्तार में भी अच्छी तरह से पढ़ा दी है, अब त्रिकालदर्शी बन स्वयं को check कर, change करो...।

अभी फिर भी थोड़ा-सा समय बचा है, उसे सफल करो ... अन्यथा पश्चाताप की घड़ियां बहुत कड़ी है।

रास्ते में किसी भी तरह की कोई भी परिस्थिति, कोई भी स्वभाव-संस्कार आये, उसे जल्दी से जल्दी अपने स्वमान की seat पर set हो बाप को दे दो।

यदि, उसे थोड़ी देर भी अपने पास रख लोगे, तो उसे निकालना मुश्किल हो जायेगा...!

इसलिए, ATTENTION PLEASE...

सहज रीति पुरुषार्थ कर आगे बढ़ो, जब तक हिसाब-किताब clear नहीं होंगे, तब तक सम्पन्न नहीं हो पाओगे...!

इसलिए, हल्के हो हिसाब-किताब clear करो, ना कि भारी होकर...।

बाबा की हर पल नज़र आप बच्चों पर ही है। समय आते ही बाप स्वयं आपको ऊपर उड़ाकर ले जायेगा।

देखो, जब भी कोई पुराना हिसाब-किताब आता है और आप शांति-पूर्वक बाप पर निश्चय रख, सच्चे दिल से पुरुषार्थ करते रहते हो ... तो बाप भी जल्दी ही किसी-न-किसी युक्ति के द्वारा आप बच्चों को मुक्ति दिला देता है ... और जब आप भारी हो जाते हो, तो वो ही हिसाब-किताब लम्बा हो जाता है...!

अच्छा, आप बच्चों को तो पता है कि बाप (निराकार शिव) अभोक्ता है, फिर भी आप भोग स्वीकार करवाते हो...!

परन्तु अब समय अनुसार जबकि बिल्कुल अंतिम घड़ियां चल रही है, ऐसे समय में आपको भोजन के समय full attention रखना है ... क्योंकि इस समय सब कुछ तमोप्रधान है और बाप की याद में रह स्वीकार की गई एक-एक bite सतोप्रधान बन, आपके मन और तन को तंदुरुस्त कर देती है...।

अच्छा। ओम् शांति।

**IMPORTANT POINT*

जब आप मैं-मेरे में फँस जाते हो, तो जैसेकि आप अज्ञानी आत्मा हो...। देखो, यह समय फिर नहीं मिलेगा...। अभी आप चाहे कितने भी complaint स्वरूप बनो परन्तु अंत में अपना part देखकर स्वयं ही पश्चाताप करना पड़ेगा...! यह ही फिर कल्प-कल्प की बाज़ी बन जायेगी...!

Om Shanti
06.07.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... जो बच्चे स्वयं पर 100% attention रख श्रीमत प्रमाण चल रहे हैं अर्थात् उनका attention, केवल स्वयं को परिवर्तन करने का ही है ... उन बच्चों की ज़िम्मेवारी बाप की है, अन्यथा नहीं...!

देखो बच्चे, यदि आप किसी भी आत्मा को शुभ भावना - शुभ कामना से समझानी देते हो और वह उसे positively accept कर लेती है और आपकी स्थिति भी एकरस रहती है, तो भल उसे समझानी दो, अन्यथा उसे बाप हवाले कर दो ... और स्वयं की सम्भाल रखो कि उसका प्रभाव आप पर ना पड़े...!

यदि उसके vibrations आप पर effect डाल रहे हैं, तो आप अपनी seat पर set हो बाप से शक्ति ले, शक्तिशाली बनो...।

देखो, जो यह कल्प का अंतिम से भी अंतिम समय जा रहा है, जिसमें बाप (परमात्मा शिव) ने आपको केवल स्व-स्थिति के आसन पर बैठ स्वयं को परिवर्तन करने की श्रीमत दी है, तो उसी प्रमाण चलो...।

व्यर्थ में अपना एक second, waste मत करो, क्योंकि कई बार एक second आपको भारी कर, कई minutes में परिवर्तन हो जाता है...!

इसलिए अब समय की बचत कर, समय को सफल करो...।

आप बच्चों की ज़िम्मेवारी स्वयं को बाप-समान बनाने की है, साथ ही साथ अन्य आत्माओं की पालना अच्छी तरह करने की है।
आपकी पालना और आपके शुभ-भावना के vibrations से वो स्वयं परिवर्तन होंगे...।

देखो, बनेंगे तो नम्बरवार ना..., सब first नहीं बन सकते...!

इसलिए सबसे पहले अपनी स्थिति की तरफ attention रखो।

गायन भी है;
"स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन..."

देखो बच्चे, बाप स्वयं आकर आप बच्चों को सहज से सहज रीति पुरुषार्थ की विधि बता रहा है, तो उसी according पुरुषार्थ करो, फिर बाप भी आपको अपने समान बना लेगा...।

बाप के 100% आज्ञाकारी बनो, मोटे रूप से checking मत करो...।

देखो, आप बच्चे कल्प-कल्प के विजयी हो, तो आप बच्चे भी स्वयं के पुरुषार्थ प्रमाण अर्थात् स्व-परिवर्तन प्रमाण, स्वयं को अच्छी तरह जान और मान, स्वयं पर attention रखो...।

स्व-परिवर्तन के लिए हर बात से, हर किसी के part से, न्यारा होना अति आवश्यक है।

जितना न्यारा, उतना प्यारा ... अर्थात् जो बच्चा बाप का प्यारा है, वह तो स्वतः ही सबका प्यारा हो जायेगा...।

जो वरदानीमूर्त बच्चे होते हैं, वो इस पाँच तत्वों से बनी दुनिया की हर चीज़ से न्यारा बन सबको वरदान दे, सभी के कल्याण के निमित्त बनते हैं...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

**IMPORTANT POINT*

बाप ने आपको केवल स्व-स्थिति के आसन पर बैठ स्वयं को परिवर्तन करने की श्रीमत दी है, तो उसी प्रमाण चलो...। व्यर्थ में अपना एक second, waste मत करो। स्व-परिवर्तन के लिए हर बात से, हर किसी के part से, न्यारा होना अति आवश्यक है।

Om Shanti
07.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... धर्मराज कोई भी आत्मा वा परमात्मा नहीं है।

जिस तरह, रावण ... पाँच विकारों के रूप को कहा जाता है, इसी तरह हर आत्मा के किये गये पापकर्म, धर्मराज का रूप ले लेते हैं। जिस कारण पापकर्म करने वाली आत्मा भयानक सज़ाओं का अनुभव करती है...!

बाप (परमात्मा शिव) तो सभी बच्चों के लिए हमेशा कल्याणकारी रहता है - चाहे वो लौकिक हो ... चाहे अलौकिक...।

देखो, सबसे पहले स्वयं के द्वारा किये गए पापकर्म स्वयं के आगे प्रत्यक्ष होंगे..., फिर अन्य आत्माओं के सामने...! जिस कारण वो बाप के सहयोग का फायदा नहीं उठा पायेंगी...!
अर्थात् उनके पापकर्म ही उनको बाप से साक्षी कर देते हैं।
जिस कारण उनकी भोगना और बढ़ जाती है और यह वो आत्मायें होती है;
• जो बाप के प्यार के आधार को छोड़ दूसरे-दूसरे आधार पर चलती हैं।
• स्व-परिवर्तन की बजाए अन्य आत्माओं का परिवर्तन करना चाहती हैं।
• सुखकर्ता की बजाए दुःखकर्ता बन जाती है अर्थात् dis-service के निमित्त बन जाती है...।
यही कर्म उनकी सज़ाओं के निमित्त बनते हैं ... और यह कार्य शुरू हो चुका है, अर्थात् जो कहते हो ना कि सद्गुरु का role शुरू हो जायेगा ... वह हो चुका है...।

कोई भी कार्य पहले slow होता है, फिर जल्दी वो प्रत्यक्ष रूप में दिखने लगता है...!

अष्ट रत्न ... सौ रत्न ... अर्थात् सभी माला के दाने स्वयं के पुरुषार्थ अनुसार स्वयं ही प्रत्यक्ष होते हैं, जोकि सभी आत्माओं को मान्य होते हैं।

बाप का कार्य सभी आत्माओं को केवल प्यार, रहम, कल्याण की भावना से मुक्ति और जीवनमुक्ति देने का है।
परन्तु, सभी अपने मन्सा-वाचा-कर्मणा द्वारा नम्बरवन और नम्बरवार बनते हैं...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

**IMPORTANT POINT*

हर आत्मा के किये गये पापकर्म, धर्मराज का रूप ले लेते हैं - बाप के प्यार के आधार को छोड़ दूसरे-दूसरे आधार पर चलना ... स्व-परिवर्तन की बजाए अन्य आत्माओं का परिवर्तन करना ... सुखकर्ता की बजाए दुःखकर्ता बन, अर्थात् dis-service के निमित्त बन जाना - यही कर्म उनकी सज़ाओं के निमित्त बनते हैं।

Om Shanti
08.07.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप निश्चिन्त रहो...।

आप हर बात में हाँ-जी, हाँ-जी करते रहो। स्वयं भी हल्के रहो और दूसरों को भी हल्का रखो...।

देखो बच्चे, किसी भी बात को instant मना मत करो, उस समय मुस्कुराकर उस बात को हल्का कर दो। फिर अपने ऊँच स्वमान में स्थित हो, बाप को संग रख, अपने दिल की बात कह दो...।

यदि फिर भी कोई अपनी बात ऊपर रखें, तो उनके अनुसार चलो परन्तु वातावरण को भारी मत करना, ना ही स्वयं की सोच से, ना ही उस आत्मा की सोच से..., बस स्वयं के संकल्प को भी तेरा-तेरा कर दो और उस आत्मा को भी। फिर जल्दी ही वह आत्मा भी परिवर्तन हो जायेगी...।

देखो, उन आत्माओं पर भी आपकी vibrations का प्रभाव पड़ता है। बस वो आपको परिवर्तन करने के निमित्त हैं। इसलिए, स्वयं के स्वभाव-संस्कार को बिल्कुल flexible बना लो।

जितना-जितना आपके अन्दर moulding power आती जायेगी, उतनी ही आपकी शुभ भावना, शुभ कामना उन आत्माओं को परिवर्तन कर देगी।

बस, आप स्वयं पर attention रखना। खुद को किसी भी बात में भारी मत करना।

जब present में रहोगे अर्थात् ना ही past का सोचोगे और ना ही future का..., बल्कि present में रह हर संकल्प को बाप को समर्पण कर, हल्के और निश्चिन्त रहोगे, तो जल्दी ही आप सभी में एक बड़ा परिवर्तन अनुभव करोगे...।

बस, उन आत्माओं के प्रति रहम और कल्याण की भावना रखना...।

देखो बच्चे, आपके परिवर्तन से ही वो आत्मायें परिवर्तन होगी। फिर आपके स्थान का वातावरण भी परिवर्तन होगा।
फिर ही तो आपका स्थान light house - might house बनेगा...।

बस, हर बात में positive रहना है...।

जब आप बच्चों पर बाप की नज़र है और आप बच्चे भी हर कदम बाप की श्रीमत प्रमाण उठाते हो, तब तो हर बात में कल्याण ही कल्याण है...।

देखो, बाप आप बच्चों को आप समान बनाने आया है ... तो आप भी अपना full सहयोग दो।

बस, हर संकल्प को तेरा-तेरा करते चलो, निश्चय रखो और निश्चिन्त रहो...।
बस फिर तो देखते ही देखते मंज़िल पर पहुँच जाओगे...।

अच्छा। ओम शान्ति।

**IMPORTANT POINT*

जब present में रहोगे अर्थात् ना ही past का सोचोगे और ना ही future का..., बल्कि present में रह हर संकल्प को बाप को समर्पण कर, हल्के और निश्चिन्त रहोगे, तो जल्दी ही आप सभी में एक बड़ा परिवर्तन अनुभव करोगे...।

Om Shanti
09.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब आप बाप के प्यार में खो जाओ ... समा जाओ ... और आप सबको कुछ नहीं करना...।

बच्चे, जितना-जितना आप बच्चों का light का अभ्यास powerful होता जा रहा है, उतना ही आप स्वयं के साथ-साथ, अपने पाँच तत्वों से बने शरीर को भी पवित्र light बना, इन तत्वों से न्यारा कर लेते हो ... और धीरे-धीरे, जितना आपका इस दुनिया से न्यारेपन का अभ्यास बढ़ता जायेगा, उतनी जल्दी आप बाप से बाप-समान बनने की शक्ति लेने के काबिल बन जाओगे...।

देखो बच्चे, यह process भी खत्म तो होना ही है, यदि आप थोड़ा सा प्रभाव-मुक्त रहने का attention रखो, अर्थात जीते-जी मर जाना अर्थात कुछ भी हो रहा है, हम साक्षी हैं...।
इसका attention होते ही झटके से परिवर्तन हो जायेगा...!

कई बच्चे सोचते हैं कि सबकुछ हमें ही करना पड़ेगा...!
परन्तु बच्चे, शक्ति तो बाप देगा ही ... साथ ही साथ बाप आपकी बुद्धि रूपी बर्तन को पवित्रतम् light बनाने की युक्ति भी बता रहा है ... और वह तो आपको बाप से शक्ति लेने के लिए, अपनी बुद्धि रूपी बर्तन को clear अर्थात् साफ तो करना ही पड़ेगा ना...!

आप बच्चों ने बहुत अच्छा attention रखा है, जिस कारण यह कार्य automatically हो जायेगा...।
परन्तु आप यदि जल्दी चाहते हो, तो थोड़ा-सा attention देते ही झटके से हो जायेगा...।

Light का अभ्यास अर्थात स्वयं को आत्मा, point of light समझ, अब आँखों को जब भी use करो, तो *सब कुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ...,* अर्थात हर चीज़ और हर किसी को उसके original स्वरुप में, light ही देखो...।अच्छा। ओम शांति।
Om Shanti
10.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, जो भी संकल्प, जिस तरह के भी संकल्प हों, वो बाप को समर्पण करते जाओ...।

ऐसा करने पर आप अपनी यात्रा में आगे की तरफ ही चल रहे हो ... और आगे चलना, अर्थात् बाप-समान बनते जाना ... और देखो, आपका बाप (परमात्मा शिव) इस सारे विश्व का रखवाला है और बाप की श्रीमत पर 100% चलने वाले बच्चों से तो बाप असीम प्यार करता है।

बाप आप बच्चों के लिए हर पल हाज़िर है। फिर भी एक second से भी कम समय में बिल्कुल हल्का, अर्थात् आप बच्चों से भी न्यारा हो जाता है...!

बाप का यह विशेषतम् गुण है, अर्थात् सबसे प्यार करते हुए भी अर्थात् 'न्यारा और प्यारा' - यह गुण आप बच्चों में इस दुनिया में रहते समर्पण भाव से ही आ सकता है...।

बच्चे, आज पूरे दिन अपने original स्वमान अर्थात् बाप-समान स्थिति में स्थित हो, अपने सम्पन्न स्वरुप अर्थात फरिश्ता स्वरुप को भी अपने साथ ही अनुभव कर अर्थात हम एक हैं - यह अनुभव कर, बाप के संग बैठे रहो...।

अच्छा। ओम शांति।

Om Shanti
11.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाप का इस समय एक ही लक्ष्य है - आप बच्चों को हर हाल में जल्दी से जल्दी, seat पर set कर, अपनी ज़िम्मेवारी पूरी करे...।

जिस तरह लौकिक में भी, कोई teacher अपने सभी students में से कुछ एक student को doctor बनाने का लक्ष्य रख ले, तो उसका full attention अपने उन्हीं बच्चों पर रहेगा, कि कैसे मेरे बच्चे doctor बनें...!

और वैसे भी बच्चे, हर कार्य की सम्पन्नता की एक limit तो है ही ना...!
और यहाँ तो स्वयं परमात्मा बाप ने teacher बन, आप बच्चों को select किया है, विश्व के इलाज के लिए..., जहाँ बीमारी रोज़ multiple हो रही है...!

तो बताओ, स्वयं भगवान, है तो सबका बाप ही ना...!
तो बाप भी तो जल्दी से जल्दी अपने सभी बच्चों के दुःखों को खत्म करेगा ना ... और वो दुःख खत्म होने शुरु होंगे, आप बच्चों के अपनी seat पर set होने पर...।

बस बच्चे, आप खुश रहो ... निश्चिन्त रहो ... ज़िम्मेवार आप नहीं, मैं हूँ..., आपको अपने लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए...।

Seat पर set रहना अर्थात हर परिस्थिति में अचल, अडोल और एकरस रहना, अर्थात *present में रहना..।*

अच्छा। ओम शांति।

Om Shanti
12.07.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्वयं को 100% स्वतंत्र रखो, अपने संकल्पों को किसी भी चीज़ के साथ बाँधो मत, अर्थात् यह करना है, यह नहीं करना है ... नहीं बच्चे...!

बिल्कुल easy हो, जैसा समय वैसे करते चलो ...बिल्कुल निर्बन्धन रहो...। इसी की इस समय ज़रूरत है।

इस समय, आप सब परमात्मा बाप की छत्रछाया के नीचे हो और जो भी हो रहा है, वह 100% कल्याणकारी हो रहा है ... इसलिए किसी भी बात में कुछ भी सोचो मत, जो अच्छा लगे, वो कर लो।

देखो बच्चे, बाप आप सब बच्चों के लिए ही रुका हुआ है और जल्द से जल्द अपना कार्य सम्पन्न कर, अर्थात् सहज से सहज विधि से आप बच्चों को बाप समान बना, सारा विश्व आपके हवाले कर देगा।

बस, आप स्वयं को स्वतंत्र रखो...। कोई बाँध (barrier) मत लगाओ, जो सहज लगे वह कर लो, क्योंकि इस समय आप बच्चों का स्व-परिवर्तन का कार्य speed से चल रहा है।
बस, आपके हल्के संकल्प रखने से, अर्थात् संकल्पों में हल्का रहने से झटपट बाप का कार्य सम्पन्न हो जायेगा...।

बच्चे, आपकी सोच बिल्कुल हद में है, परन्तु बाप के पास आप बच्चों की full planning है।

जो कुछ भी हो रहा है, उसमें केवल कल्याण ही कल्याण है...।

अच्छा। ओम शांति।

Om Shanti
13.07.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, महसूस करो कि; एक powerful बहुत bright light का झरना, आप बच्चों के ऊपर आ रहा है।

बस बच्चे, आप शान्ति से बैठे रहो ... यह झरना स्वयं ही minor सा जो किचड़ा रह गया है, उसे बाहर निकाल देगा...।

स्वयं पर निश्चय रखो कि, मैं बाबा का सबसे प्यारा और मीठा बच्चा हूँ ... और मेरा बाप, जो एक surgeon है, उसने अपना काम सम्पन्न कर दिया है।
बस मुझे तो निश्चिन्त स्थिति में स्थित रह, हर हाव-भाव बाप को समर्पण करते जाना है और इसी संकल्प में रहना है कि ... मेरा देह (प्रकृति) सहित परिवर्तन हुआ कि हुआ ... अर्थात् मेरे सम्पन्न स्वरूप अर्थात फरिश्ता स्वरूप ने मुझे धारण किया कि किया...।

बच्चे, बस आप बच्चों के अन्दर अर्थात मन-बुद्धि में यह समा जाना चाहिए कि बाप हमारे परिवर्तन का कार्य कर चुका है और इसी feeling में रहना है। यदि बाहरी कोई बात आये भी, तो निश्चिन्त रह, वो बाप को समर्पण कर देना है। इससे आपको स्वयं के परिवर्तन की result स्पष्ट नज़र आने लग जायेगी, जिससे परिवर्तन जल्द से जल्द सम्भव हो जायेगा...।

बस, आप बच्चों को तो खुशी में नाचना-गाना ही है और तो कुछ करना नहीं...!

अभी भी हर बच्चे के साथ practical में बाप (परमात्मा शिव) है ... और जब तक बाप आप बच्चों को अपनी seat नहीं देता, तब तक आपका 100% ज़िम्मेवार भी है।

"अभी भी हर राधा के साथ कृष्ण है अर्थात् मैं बाप हूँ..." - यही feeling आपको जल्द से जल्द, बाप के मिलन का practical अनुभव करायेगी...।

अभी तो आपको निश्चिन्त रहना है और हर तरह का हर संकल्प बाप को समर्पण कर, खुशी में झूमते रहना है...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

"अभी भी हर राधा के साथ कृष्ण है अर्थात् मैं बाप हूँ..." - यही feeling आपको जल्द से जल्द, *बाप के मिलन* का practical अनुभव करायेगी…।

Om Shanti
14.07.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं कि, बाबा ने देखा कि कई बच्चों के अंदर काफी हलचल है और इसका कारण केवल और केवल - मैं और मेरा पन है...।
जिस कारण बाप की planning पर निश्चय नहीं कर पाते और ऊपर-नीचे होते रहते हैं...!

बच्चे, यह समय तो पुराने दाग को भी खत्म करने का, खत्म हो चुका है, परंतु बच्चे नये लगा रहे हैं..., और इसका परिणाम समझ नहीं पा रहे हैं...!

अब जबकि इस ईश्वरीय परिवार की आत्माओं की cassette rewind होने का समय आ गया है, तो पश्चाताप भी स्वयं ही करना पड़ेगा और वाह-वाह भी स्वयं की स्वयं ही...!
क्योंकि photo चाहे कितने भी member की हो, attention सबसे पहले स्वयं पर ही जाता है...!

हर आत्मा को अपने कर्मों का भुगतान स्वयं ही करना पड़ता है और उसके साथ जो कुछ भी हो रहा है, उसका ज़िम्मेवार वह स्वयं ही है...।

बाप तो आप सब बच्चों के कल्याण के निमित्त आया है ... यदि निश्चय नहीं है, तो बाप को छोड़ दो...। क्योंकि बाप ने किसी को पकड़ा नहीं हुआ, हर आत्मा के पास अभी भी free will है...।

बहुत जल्दी ही बाबा का बाप-टीचर-सतगुरु का role परिवर्तन हो जाएगा ... और part परिवर्तन होते ही आपके जमा किये गए भाग्य और अभाग्य, दोनों का आरंभ हो जायेगा...।

कई बच्चे मैं और मेरे-पन की हलचल में आ, अशुद्ध संकल्प रूपी भोजन को स्वीकार करते हैं और फिर उल्टी करते हैं ... परंतु इस तरह की गई उल्टी की सफाई भी स्वयं ही करनी पड़ेगी...!
उसका ज़िम्मेवार ना ही बाप है और ना ही कोई अन्य आत्मा...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

हर आत्मा को अपने कर्मों का भुगतान स्वयं ही करना पड़ता है और उसके साथ जो कुछ भी हो रहा है, उसका ज़िम्मेवार वह स्वयं ही है...।

Om Shanti
15.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप बच्चों के साथ जो कुछ भी हो रहा है अर्थात् आपके मन में, तन में और सम्बन्ध-सम्पर्क में, जो भी परिवर्तन हो रहा है अर्थात् आपके जीवन में जो भी up-down हो रहे हैं, उसे easily accept कर आगे बढ़ो, क्योंकि यही आगे बढ़ने का way है।

देखो बच्चे, मन का प्रभाव तन पर ... और मन और तन का प्रभाव, सम्बन्ध-सम्पर्क पर पड़ता है ... और इस समय, परिवर्तन की speed अत्यधिक तीव्र होने के कारण, आप समझ नहीं पा रहे हो कि क्या हो रहा है...?

इसलिए, आप स्वयं को हर बात से स्वतन्त्र रख, स्वयं को हल्के और खुश रखने का attention रखो और यदि attention रखते-रखते भी मन में हलचल होती रहती है, तो वो भी बाप (परमात्मा शिव) को समर्पण कर दो, क्योंकि इस समय हर second आपका परिवर्तन हो रहा है।
बस, निश्चय और समर्पण चाहिए ... no question mark, only acceptance चाहिए...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

बस निश्चय और समर्पण चाहिए ... no question mark, only acceptance चाहिए...।

Om Shanti
16.07.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... जो बच्चे, बाप द्वारा पढ़ाई गई पढ़ाई को पढ़ रहे हैं और उन्होंने निश्चयबुद्धि बन, बाप के प्यार में समा, बाप की श्रीमत प्रमाण अपनी मन-बुद्धि को अधिक से अधिक समर्पित करने का attention भी रखा है, उन्हें देख बाबा खुश है...।

देखो, मणके नम्बरवार हैं, तो बाप की श्रीमत प्रमाण मन-बुद्धि को समर्पित करना भी नम्बरवार है...!

कई बच्चों ने तो मेहनत को भी मोहब्बत में परिवर्तन कर अपना नम्बर आगे बढ़ा लिया है ... और कई तो केवल मोहब्बत में ही झूमते रहते हैं ...! वो मेहनत शब्द से ही अनभिज्ञ है...!

परन्तु अब जो समय जा रहा है, वो speed से परिवर्तन का है...। चाहे आप अनुभव नहीं कर पा रहे हो, परन्तु आपके साथ-साथ आपके चारों तरफ भी परिवर्तन की speed तीव्र है।
जिस कारण स्वयं पर attention रखते-रखते भी, मन-बुद्धि इधर-उधर हो जाती है ... अर्थात् मन-बुद्धि में कई तरह के संकल्प उत्पन्न हो रहे हैं।

परन्तु बच्चे, आप बच्चों की मोहब्बत में समा, आपका बाप आपको एक ही बात कहता है ... कि हर तरह के संकल्प बाप (परमात्मा शिव) को समर्पण कर दो...।

बाप अपने हर बच्चे को खुश देखना चाहता है...।

बच्चे, लौकिक में भी critical समय, किसी भी परिस्थिति का बिल्कुल थोड़ा-सा ही होता है। बस, उस समय बिल्कुल थोड़ा-सा ही धीरज रखने पर, विजय हो जाती है...।

बस बच्चे, अपने बाप के प्यार में समाये रहो...।

कोई भी कमज़ोर संकल्प स्वयं में मत लाओ, अर्थात् अभी तो कुछ लग नहीं रहा...! या अभी भी कुछ कमज़ोर संकल्प आ जाते हैं...?
नहीं...।

स्वयं को powerful अनुभव करते रहो ... खुश और हल्के रहने का attention रखते रहो, जिससे complete रीति परमात्मा बाप का कार्य सम्पन्न हो...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

कोई भी कमज़ोर संकल्प स्वयं में मत लाओ ... स्वयं को powerful अनुभव करते रहो ... खुश और हल्के रहने का attention रखते रहो, जिससे complete रीति परमात्मा बाप का कार्य सम्पन्न हो...।

Om Shanti
17.07.2019

★【आज का पुरुषार्थ】★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, महसूस करो कि आकाश से एक light का fountain निकल रहा है ... वो light पूरे विश्व globe पर फैल रही है।

बच्चे, यह light अपना सारा कार्य कर देगी...। बाबा जो मुरलियों में बोलता है कि;
आप सबकी योग ज्वाला से प्रकृति हलचल में आती है..., तो वह कार्य भी शुरु हो चुका है...।

बस बच्चे, अब तो कार्य सम्पन्न होने जा रहा है। आपका सम्पन्न स्वरूप आपके नज़दीक ही है।

मूँझों मत ... प्रभावमुक्त रह, हल्के रहो...। बस आप बच्चे, उस light को स्वयं में अनुभव करते रहो, जिससे कार्य जल्दी सम्पन्न हो जायेगा...।

देखो, आप सब बच्चों की एक ही मंज़िल है ... परन्तु उस मंज़िल तक पहुँचने का तरीका अपना-अपना है...! इसलिए, आप किसी और को मत देखो।

Driver बन, full speed से आगे बढ़ते चलो। कुछ समझ में ना आये, तो सहयोग ले सकते हो, परन्तु संकल्पों में अन्य आत्माओं के पुरुषार्थ की विधि के बारे में मत सोचो। यदि किसी का तरीका अच्छा अर्थात् accurate लगे, तो वो अपना लो...।

बच्चे, जो बाप का बाप-समान बनाने का process चल रहा है, वो जब तक आप बाप-समान नहीं बनते, तब तक चलता रहेगा...। चाहे तो स्थूल रूप में ... चाहे तो सूक्ष्म रूप में ... बस, आप सबको बाप की श्रीमत प्रमाण हल्के रहना है।
बाप सबका ज़िम्मेवार है...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

आप सब बच्चों की एक ही मंज़िल है ... परन्तु उस मंज़िल तक पहुँचने का तरीका अपना-अपना है...! इसलिए, आप किसी और को मत देखो। यदि किसी का तरीका अच्छा अर्थात् accurate लगे, तो वो अपना लो...।

Om Shanti
18.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, महसूस करो कि;

मैं आत्मा एक बहुत ही shining star हूँ ... ये body crystal की हो गई है .... मैं फरिश्ता बन उड़ रहा हूँ...।

बस, यह सोचते-सोचते ही आपका सम्पन्न स्वरूप अर्थात फरिश्ता स्वरूप आपको धारण कर लेगा और अनायास ही परिवर्तन हो जायेगा...!

- काम, आनन्द में ...
- क्रोध, शक्तियों में ...
- लोभ, खुशी में ...
- मोह, प्यार में ...
- अहंकार, समर्पण में convert हो रहा है...।

बिल्कुल निश्चिन्त और समर्पण...।

बाबा कहता है ... "मैं कौन हूँ और बना क्या रहा हूँ...?"

बाबा का teacher का role पूरा हो गया। अब बाबा ... बाप, सतगुरु के रूप में आप बच्चों को भी बाप-समान बना रहा है।

बच्चे, चाहे मैं आपको अनुभव होता हूँ या नहीं, परन्तु इस सुहावने समय पर अन्त तक आपके साथ ही हूँ ... अर्थात् आपसे जुदा हो नहीं सकता...!

बस, बाप तो आपको हर तरफ से निर्बंधन बनाना चाहता है...। बाप ज़िम्मेवार है, तो समय से पहले आपको लक्ष्य तक पहुँचा ही देगा। बस आप, बाप के according चलते चलो...।

देखो बच्चे, बाप आपको आप समान मास्टर भगवान बना रहा है, तो आपको इस दुनिया के संकल्पों से 100% न्यारा होना पड़ेगा ना...!

परन्तु इसके लिए आपको करना कुछ नहीं है, बस जो भी संकल्प आये वो बाप को समर्पण करते जाना है और हर पल हल्के रहना है। एक second के लिए भी भारी नहीं होना।

देखो, बाप-समान post तक पहुँचने की सीढ़ी ही है - हल्के रहना ... और एक यही सीढ़ी है जो आपको बाप-समान बनायेगी ... और हल्का वह ही रह सकता है, जो मन-बुद्धि से समर्पित है और समर्पित आत्मा ही खुश है...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

काम, आनन्द में ... क्रोध, शक्तियों में ... लोभ, खुशी में ... मोह, प्यार में ... अहंकार, समर्पण में convert हो रहा है...।

Om Shanti
19.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप जितना अपनी प्रालब्ध के बारे में सोचते हो, उससे कई गुणा ज्यादा प्राप्तियाँ होंगी ... अर्थात् बेहद की होंगी, जिसका आप अनुमान भी नहीं लगा सकते...!
परन्तु होगा ये सारा कार्य systematically ... अर्थात्
• जब तक आप सम्पूर्ण रीति तैयार नहीं हो जाते, अर्थात्
• आप अपना हर संकल्प बाप को समर्पण नहीं करते, अर्थात्
• अपनी मन-बुद्धि के बन्धन से भी मुक्त, अर्थात्
• सब कुछ महसूस करते भी उसे एक second में बाप के आगे समर्पण कर देना...।
ऐसी स्थिति होने पर ही आपकी प्राप्तियाँ शुरु हो जायेगी...।

समर्पण अर्थात् हल्कापन ... हल्कापन अर्थात् बिल्कुल स्वतंत्र, खुशी से भरपूर ... और खुशी से भरपूर वो ही आत्मा रह सकती है, जो बाप (परमात्मा शिव) के एक-एक शब्द पर निश्चय रखकर चलती है...।

बच्चे, किसी भी उलझी चीज़ को सुलझाने में time नहीं लगता, अर्थात् विधि आने पर एक second से भी कम समय में कार्य सम्पन्न हो जाता है...।

देखो बच्चे, आप बच्चे हो परिवर्तन कर्ता, तो आप बच्चों को परिवर्तन के process को complete तो करना ही पड़ेगा ना...!

बस अब आप थोड़ा-सा बचा हुआ समय बाप को समर्पण कर, स्वयं के मालिक बन, खुशी-खुशी के साथ इस process को finish करो...।

बच्चे, मैं अपने हर बच्चे के संग, हर पल हूँ, चाहे वो मुझे अनुभव ना भी करे, परन्तु मैं हर पल साथ निभा रहा हूँ...।

जो बाप के सिकीलधे, लाडले बच्चे होते हैं, यदि वो थोड़ी-सी भी problem में हों, तो उनका बाप जी-हाज़िर हो जाता है...।

इसी तरह, इस अन्तिम घड़ी में मैं भी अपने हर बच्चे के साथ हर पल हूँ...।
अब तो परिवर्तन हुआ कि हुआ...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

समर्पण अर्थात् हल्कापन ... हल्कापन अर्थात् बिल्कुल स्वतंत्र, खुशी से भरपूर ... और खुशी से भरपूर वो ही आत्मा रह सकती है, जो बाप के एक-एक शब्द पर निश्चय रखकर चलती है...।

Om Shanti
20.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, महसूस करो कि आप आत्मा एक बहुत powerful light के chamber में बैठे हो ... जिसके चारों तरफ से light ही light निकल आप पर पड़ रही है...।

बच्चे, परिवर्तन के process का कार्य बहुत speed से automatically चल रहा है ... बस आपको कुछ नहीं करना, बस खुश रहना है और बीच-बीच में light का अनुभव करना है...।

बच्चे, अब खुशी-खुशी अर्थात् हँसते-नाचते यह परिवर्तन का process भी complete करो, ताकि आप बाप-समान seat पर set हो, बाप (परमात्मा शिव) के कार्य को सम्पन्न कर सको...।

बाबा का कार्य बहुत speed से चल रहा है और बाप को अपने कार्य को सम्पन्न करने की जल्दी है, परन्तु साथ ही साथ स्थिरता अर्थात् शान्ति है, प्रेम है ... जिससे कार्य बिल्कुल accurate अर्थात् 100% successful और समय से पहले ही finish हो जायेगा।

सम्पन्नता का कार्य बहुत speed से परन्तु सहज तरीके से हो रहा है, ताकि आप सहज और जल्द से जल्द अपने सम्पन्न स्वरुप अर्थात फरिश्ता स्वरुप को धारण कर, स्व-परिवर्तन सो विश्व-परिवर्तन का कार्य कर सको...।

निश्चिन्त स्थिति में स्थित रहो। अब तो कार्य हुआ ही पड़ा है...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

आपको कुछ नहीं करना, बस खुश रहना है और बीच-बीच में light का अनुभव करना है..., ताकि आप बाप-समान seat पर set हो, बाप (परमात्मा शिव) के कार्य को सम्पन्न कर सको...।

Om Shanti
21.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... जिन बच्चों ने जबसे बाबा ने पढ़ाना शुरु किया है, तब से ही बाप की श्रीमत प्रमाण अपना तन, मन, धन, जन सफल किया है, उनकी प्रालब्ध का समय शुरु हो गया है ... अर्थात् उन्हें अपने किये गये त्याग का फल मिलना शुरु हो गया है ... और यह प्रालब्ध, समय के साथ-साथ बढ़ती जायेगी...।

और जिन बच्चों ने बाप की श्रीमत प्रमाण चलने का पुरुषार्थ तो किया है, परन्तु अभी भी उनकी मन-बुद्धि पुरानी दुनिया में कहो ... माया में कहो ... रावण कहो ... खींचती है, अर्थात् उन्हें अभी भी बार-बार स्वयं पर attention रखना पड़ता है, पुरानी दुनिया से मुक्त होने के लिए...,
• तो उन्हें light के अभ्यास की तरफ attention बढ़ाना पड़ेगा...।
• बार-बार मन-बुद्धि को बाप (परमात्मा शिव) के आगे समर्पण करना पड़ेगा..., तब ही वो सहज रीति अपने परिवर्तन के कार्य को सम्पन्न कर पायेंगे...।

इस समय आप सब बच्चे तमोप्रधानता के बीच में रह रहे हो, इस कारण कभी-कभी तमोप्रधानता का प्रभाव आता है। जिसे attention देते ही finish कर देते हैं - यह हैं नम्बरवन बच्चे ... और उनके प्रालब्ध का समय भी शुरु हो गया है...।

और जिन बच्चों को पुरानी दुनिया खींच रही है, अर्थात् अभी भी उन्हें अपना attention और समय देना पड़ता है, बाप की श्रीमत पर रहने के लिए..., उन्हें अभी light के अभ्यास की आवश्यकता है।

देखो बच्चे, परिवर्तन के कार्य की speed बहुत तीव्रता से कार्य कर रही है और जल्द ही यह कार्य finish हो जायेगा, अर्थात् परिवर्तन हो जायेगा...।
जिस समय के लिए बाप ने इतने लम्बे समय तक, अर्थात् यज्ञ के आदि से ही बच्चों को पालना दें, पढ़ाई पढ़ा, पूरा स्नेह और सहयोग दिया, ताकि बच्चे बाप-समान दुःखहर्ता-सुखकर्ता बन विश्व-कल्याण का कार्य कर सकें...।

Light का अभ्यास अर्थात स्वयं को आत्मा, point of light समझ, अब आँखों को जब भी use करो, तो सब कुछ light ही देखो, वो भी बहुत प्रेम के साथ..., अर्थात *हर चीज़ और हर किसी को उसके original स्वरुप में, light ही देखो...*

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

जिन बच्चों की मन-बुद्धि पुरानी दुनिया में कहो ... माया में कहो ... रावण कहो ... खींचती है, अर्थात् उन्हें अभी भी बार-बार स्वयं पर attention रखना पड़ता है, पुरानी दुनिया से मुक्त होने के लिए..., तो उन्हें light के अभ्यास और बार-बार मन-बुद्धि को बाप (परमात्मा शिव) के आगे समर्पण करने की तरफ attention बढ़ाना पड़ेगा...।

Om Shanti
22.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, इस तमोप्रधान दुनिया में जो कुछ इन आँखों से देखते हो, उसमें कोई सार नहीं है...।

तमोप्रधान दुनिया की हर चीज़ तमोप्रधान होने के कारण, आप बच्चों को तमोप्रधानता की तरफ ही लेकर जाती है...।
इसलिए इनके बीच में रहते, इनकी देख-रेख करते, मन-बुद्धि से इन सब चीज़ों से न्यारे हो जाओ...।

देखो बच्चे, अब आप बच्चों के अन्दर ऐसी शक्तियाँ आने ही वाली हैं कि आप रचता बन, इस तमोप्रधान दिखने वाली हर चीज़ को ... चाहे वो तन है ... धन है ... वस्तु है ... को सतोप्रधान बना, उन्हें अपने use में लाओगे...। परन्तु उससे पहले आपको यह समझना पड़ेगा कि इन चीज़ों का हमारे जीवन में कोई मूल्य नहीं है ... अर्थात् इनके होने या ना होने पर, हमारे पर, कोई असर नहीं पड़ता...!

और देखो, आपके तन और धन का रखवाला स्वयं परमात्मा शिव है ... चाहे तन या धन थोड़ा ऊपर-नीचे हुआ हो..., परन्तु आप इन सब चीज़ों से भरपूर रहोगे - यह बाप का आप बच्चों से promise है।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

इस तमोप्रधान दुनिया में जो कुछ इन आँखों से देखते हो, उसमें कोई सार नहीं है...। इसलिए इनके बीच में रहते, इनकी देख-रेख करते, मन-बुद्धि से इन सब चीज़ों से न्यारे हो जाओ...।

Om Shanti
23.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, बाप आप बच्चों को सर्वशक्तिमान् बना रहा है।
फिर एक है सर्वशक्तिमान् और दूसरा है शक्तिमान्...।

• *शक्तिमान् अर्थात्* अपनी शक्तियों का अपनी कर्मेन्द्रियों द्वारा किसी भी रीति प्रदर्शन कर, positive रूप से आत्माओं का कल्याण करना...।
• और दूसरा है, *सर्वशक्तिमान् अर्थात्* बाप-समान स्थिति, अर्थात् बेहद की शक्तियाँ होते हुए भी सभी शक्तियों को स्वयं में समा लेना, अर्थात् अपनी शक्तियों का प्रयोग सूक्ष्म रीति करना...।

देखो बच्चे, आपको आपका बाप स्वयं से भी ऊँचा बना रहा है और यह कार्य केवल मैं ही कर सकता हूँ। आप बच्चों को इस तमोप्रधान दुनिया के बीच रख आपको सर्वशक्तिमान् बना देता हूँ ... अर्थात् सभी आत्माओं की कर्म कहानी को भली-भान्ति जानते हुए अर्थात् उनके संकल्पों में क्या चल रहा है, यह जानते हुए भी आप बिल्कुल शान्त स्थिति में स्थित रहते हो, क्योंकि आपके अन्दर प्रेम की गंगा बह रही होती है ... और आपको इस बात का भी ज्ञान है कि पाँच तत्वों के तन द्वारा अपनी शक्तियों को use करते ही हमारी सूक्ष्म शक्ति की कमाल बहुत कम रह जायेगी। इसलिए आप शान्त स्थिति में स्थित रह, अपने संकल्पों की power द्वारा सभी आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनते हो...।

जिसे जिस दिव्य गुण वा शक्ति की ज़रुरत होती है, उसे वही गुण और शक्ति का दान दे, उसके कल्याण के निमित्त बन जाते हो।

देखो बच्चे, तब ही तो बाप बार-बार कहता है - अब ज़्यादा ज्ञान समझाना बन्द करो, ताकि आपकी सूक्ष्म सेवा की कमाल शुरु हो।

बस बच्चे, जब आप अपनी सूक्ष्म शक्तियों की कमाल को भली-भान्ति जान लोगे अर्थात् आपके अन्दर से पूर्ण रीति acceptance आ जायेगी कि विश्व-परिवर्तन का कार्य तो इसी रीति होगा, तो आपका सम्पन्न स्वरुप (अर्थात फरिश्ता स्वरुप) आपको धारण कर अपना कार्य शुरु कर देगा...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

पाँच तत्वों के तन द्वारा अपनी शक्तियों को यूज़ करते ही हमारी सूक्ष्म शक्ति की कमाल बहुत कम रह जायेगी...। इसलिए आप शान्त स्थिति में स्थित रह, अपने संकल्पों की पॉवर द्वारा सभी आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनते हो...।

Om Shanti
24.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे बाप से पूछते हैं कि बाबा, आप सारी दुनिया की आत्माओं से एक-समान प्यार करते हो या हम बच्चों से ज्यादा...?

देखो बच्चे, मैं हूँ तो सभी का बाप ना, इसलिए मैं सभी को एक समान प्यार करता हूँ ... किन्तु मैं हूँ निराकार, जिस कारण, मुझे कुछ एक आत्मायें ही भली-भान्ति पहचान, मेरे वर्से की अधिकारी बन पाती है ... अर्थात् मुझे अपना बाप मान, मुझसे पुत्र का रिश्ता निभा, मेरे गुणों और शक्तियों की मालिक बन जाती है...।

देखो, गायन है ना कि "जो करेगा - सो बनेगा..." और यही ड्रामा का नियम है ... और जो मुझ समान बनता है, वो ही मुझसे मिलन मना पाता है, अन्यथा मिलना असम्भव है...!

देखो बच्चे, मैं बाप हूँ प्यार का सागर ... किन्तु सागर में से प्यार हर आत्मा यथा-शक्ति ही भर पाती है ... किन्तु मैं सबका बाप हूँ ... इसलिए आप बच्चों को, जो साकार रूप में हैं, उन्हें आप-समान बना, सभी आत्माओं का कल्याण करता हूँ...।

बच्चे, बाप loveful के साथ-साथ lawful भी है और ड्रामा का यही नियम है कि “जो करेगा - सो बनेगा” ... और “जो जैसे कर्म करेगा, वैसे फल पायेगा" और इसी नियम के आधार पर ड्रामा चलता है...।

मैं तो एक-समान ही सबको प्यार करता हूँ, किन्तु बच्चे लेने में नम्बरवार है।

बाप का तो गायन ही एक का है ... आप स्वयं ही स्नेह के धागे में पिरो, मेरे समीप आते जाते हो और जितने मेरे समीप आते हो, उतना ही मेरे समान बन जाते हो...।
आप बच्चे तो परमात्मा बाप को भी अपने प्यार में बाँध लेते हो...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

बाप loveful के साथ-साथ lawful भी है और drama का यही नियम है कि “जो करेगा - सो बनेगा” ... और “जो जैसे कर्म करेगा, वैसे फल पायेगा" और इसी नियम के आधार पर drama चलता है...।

Om Shanti
25.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे पूछते हैं कि oneness का अर्थ क्या है...?

Oneness अर्थात् एक समान ... अर्थात् आपका व्यवहार स्वयं के साथ और सभी आत्माओं के साथ एक समान हो...।

जब जीव आत्मा अज्ञानी होती है, तो स्वयं को तो श्रेष्ठ समझ या स्वयं से अत्यधिक प्यार करने के कारण, कोई गलती होने पर दूसरे को दोषी ठहरा देती है ... और दूसरों को जल्दी से क्षमा भी नहीं कर पाती...!

और जब ज्ञानवान बन जाती है, तो दूसरों को तो क्षमा करना चाहती है, परन्तु स्वयं की गलती का मनन कर लेती है ... जिस कारण, गलती संकल्पों में चली जाती है...!

परन्तु बच्चे, 100% balance चाहिए..., अर्थात् कोई बात भी हो जाये, उसे बाहर की समझ उसे झट से बाहर ही साफ कर, अपनी स्थिति में स्थित हो जाना चाहिए ... क्योंकि यह अन्तिम समय तमोप्रधानता का चल रहा है, जहाँ गलती होना स्वभाविक है ... बस, उसे झट बिन्दु लगा, अपने ऊँचे स्वमान में स्थित होना ही high vibrations में स्थित होना है।

देखो बच्चे, बाबा को इस दुनिया में अमीर-गरीब ... सुन्दर-कुरूप ... मेरा-तेरा, कुछ दिखाई नहीं देता...।

बस, बाप को तो आत्माओं की capability नज़र आती है, अर्थात् किस आत्मा में कितनी चमक है और वो कितना अपना भाग्य बना पायेगी...!

जिस कारण, बाबा सभी आत्माओं पर एक समान रहम और कल्याण करता है, किन्तु योग्य आत्माओं को समझानी दे स्वयं के समान बना, स्वयं के समीप ले आता है...।

अब आप बच्चों का भी बाप-समान व्यवहार कहो, शुभ भावना, शुभ कामना होनी चाहिए...।

बस बच्चे, अब तो आप बच्चे बाप-समान 100% seat पर set होने ही वाले हो और बाप को तो परिवर्तन भी नज़दीक ही दिख रहा है...।

अच्छा। ओम शांति।

Om Shanti
26.07.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, अब समय अनुसार समर्पण भाव को बढ़ाते जाओ...।

जितना-जितना समर्पण भाव को बढ़ाते चले जाओगे ... उतना ही मैं और मेरे-पन से दूर अर्थात् वैराग्य वृत्ति अर्थात् एकरस स्थिति अर्थात् निन्दा-स्तुति ... सुख-दुःख ... मान-अपमान ... सबमें एक-समान स्थिति हो जायेगी...।

बच्चे, जितना-जितना समर्पण भाव बढ़ता जायेगा, उतना ही अशरीरी स्थिति में स्थित होना easy हो जाएगा ... इच्छाओं का अन्त हो जायेगा ... सन्तुष्टता, खुशी और उमंग-उत्साह बना रहेगा..., जिससे आप हल्के रह उड़ते रहोगे और कर्म करते भी कर्म से न्यारे रह कर्मातीत अवस्था हो जायेगी...।

बच्चे, इस स्थिति को ही बाप-समान स्थिति कहा जाता है...।

इस स्थिति में स्थित रहने से आप बच्चों को बहुत सहज कामयाबी मिलेगी और आपके संकल्प भी सिद्ध होने शुरू हो जायेंगे...।

बस बच्चे, attention दे जो कुछ भी मेरा है उसे तेरा-तेरा करने का पुरूषार्थ करो ... यही पुरूषार्थ आप बच्चों को *PASS WITH HONOUR* बना देगा...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

Om Shanti
27.07.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं कि, परमात्मा बाप की पढ़ाई ही परिवर्तन की है अर्थात् स्वयं को शरीर की बजाए आत्मा समझना...।

आप बच्चों को हमेशा समझना है कि मैं आत्मा हूँ ... विशेष आत्मा हूँ ... साधारण नहीं हूँ ..., मेरे सारे कर्म विशेष होने चाहिए...।

बच्चे, ऐसा परिवर्तन तब ही सम्भव है जब आप स्मृति स्वरूप रहते हो, अर्थात् आपको सदा याद रहे कि मैं Godly student हूँ ... मैं देव लोक में जाने वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ ... मैं विश्व-परिवर्तक हूँ...।

और जब आप स्मृति स्वरूप स्थिति में रहते हो तब आपके पुराने संस्कार आते तो हैं, परन्तु आप पर भारी नहीं होते ... अर्थात् आप अपने पुराने संस्कारों को संकल्पों में ही खत्म कर देते हो, वाचा और कर्मणा तक नहीं आने देते...।

जब आप विस्मृत होते हो, तब आपके पुराने संस्कार अपना काम कर जाते हैं, जिससे कि आपका हिसाब-किताब बन जाता है...!

बच्चे, अपना नया हिसाब-किताब बनाना बन्द करो, तब ही तो आप अपने पुराने हिसाब-किताब finish कर प्राप्तियों का अनुभव कर सकते हो...।

बस, इसके लिए स्वयं पर attention की ज़रूरत है।

जब आप बच्चों के अन्दर परमात्मा बाप की knowledge समा जायेगी, तब आप अपना नया हिसाब-किताब नहीं बनाओगे...।

और जब आपके अन्दर बाप की याद समा जायेगी, तब आप powerful बन जाओगे ... और आपके पुराने संस्कार जलकर भस्म हो जायेंगे।
तब ही आप बाप-समान, गुण स्वरूप और शक्ति स्वरूप बन पाओगे।

बच्चे, बाप की पढ़ाई की एक-एक point को महीनता से समझ, उसे अपने जीवन में apply करो।
ऐसे ही पढ़कर नासमझी में छोड़ मत दो...।

जितना आप बाप (परमात्मा पिता) की समझानी को ... बाप की याद को, अपने जीवन में सदा प्रयोग करते जाओगे, उतना ही आपको सफलता मिलेगी ... इससे आपका उमंग-उत्साह और खुशी बढ़ेगी। फिर तो आप हल्के हो अपनी मंज़िल पर समय से पहले पहुँच जाओगे...।

परमात्मा बाप का यूँ आकर पढ़ाना - इसे आप हल्के रूप में मत लेना...।

जो इसकी importance को समझेगा, वो ही बाप-समान बन पायेगा, अन्यथा वह अन्य आत्माओं से भी ज्यादा पश्चाताप की अग्नि में जलेगा और यही उसकी कल्प-कल्प की बाज़ी बन जायेगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

**IMPORTANT POINT*

**परमात्मा बाप की पढ़ाई ही परिवर्तन की है अर्थात् स्वयं को शरीर की बजाए आत्मा समझना...। ऐसा परिवर्तन तब ही सम्भव है जब आप स्मृति स्वरूप रहते हो...।*

Om Shanti
28.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बाप आप बच्चों को जो भी संकल्प दे रहा है, उसे अपनी बुद्धि रुपी तिजोरी में समा, उसे अपने दिनचर्या में हर पल use करो।

• सब मेरे हैं, मुझे सभी से एक समान प्यार करना है।
• मुझमें हर पल प्यार का सागर बहता रहें...।
• सभी आत्मायें जैसी भी हैं, मुझे accept है।
• हर कोई drama में 100% accurate part play कर रहा है..., चाहे उसका part negative हो, स्वयं को hero ना होते हुए भी hero समझने का, अर्थात् स्वयं को ऊँच और समझदार समझने का हो, परन्तु हर हाल में मुझे हर आत्मा accept है और मुझे ही हर आत्मा का, हर पल, हर हाल में कल्याण करना है।

परन्तु उससे पहले स्वयं को स्वयं की seat पर set कर, 100% सन्तुष्ट और खुश रखना है, वो भी बाप (परमात्मा शिव) के according...।

• मुझे अपने पाँचों तत्वों से बने इस तन को love और light के साथ-साथ purity के vibrations देते हुए, इसके कल्याण के निमित्त इसे समझानी देनी है। इसे इसका original स्वरूप अर्थात् light का transparent स्वरूप की स्मृति देनी है। हर हाल में इसे प्रेमपूर्वक समझानी देनी है।

• स्वयं से और स्वयं के part से सन्तुष्ट रहना अति आवश्यक है। सन्तुष्ट आत्मा ही परमात्मा बाप के कार्य में सहयोगी बन सकती है।

• इस तमोप्रधान दुनिया के बीच रहते ... उदासी के, भारीपन के या कोई भी problem के संकल्प आये, उसे conscious में आते ही एक side में कर, बाप के according संकल्प करने हैं।

यदि कही पर भी मूँझते हो या कुछ समझ ना आये, तो बार-बार स्वयं को स्वयं के संकल्पों समेत बाप के आगे समर्पण कर देना है।

देखो बच्चे, इस समय प्रकृति अर्थात् आपका तन, आपके संकल्पों को समझ, स्वयं को परिवर्तन करने का attention रख रहा है...। इसलिए आप consciously कोई भी कमज़ोरी का संकल्प नहीं लाना। अधिक से अधिक स्वयं को conscious (जागृत) अवस्था में रखने का attention रखना है, क्योंकि जब आप aware रह, स्वयं के तन को positive vibrations देते हो या खुश वा हल्के रहते हो, तब आपके तन का परिवर्तन speed से हो रहा होता है ... और जब आप स्मृति स्वरूप नहीं होते, तो आपके तन के परिवर्तन का कार्य रुक जाता है ... और इस समय बाप की श्रीमत के according अर्थात् बाप के प्यार में समाये रहने वाले अर्थात् निश्चयबुद्धि रहने वाले बच्चों के तन पर केवल positive effect ही रहता है, positive संकल्पों का...।
अन्यथा कार्य चाहे रुक जाये, परन्तु opposite direction पर नहीं जा रहा है...।

जो बच्चे 100% निश्चयबुद्धि बन बाप की एक-एक समझानी को स्वयं में practical apply कर रहे हैं, उनका बाप 100% ज़िम्मेवार भी है और उनका परिवर्तन का कार्य झटके से कभी भी सम्पन्न हो सकता है...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

सब मेरे हैं, मुझे सभी से एक समान प्यार करना है ... मुझमें हर पल प्यार का सागर बहता रहें ... सभी आत्मायें जैसी भी हैं, मुझे accept है। हर कोई drama में 100% accurate part play कर रहा है ... और मुझे ही हर आत्मा का, हर पल, हर हाल में कल्याण करना है। परन्तु उससे पहले स्वयं को स्वयं की seat पर set कर, 100% सन्तुष्ट और खुश रखना है, वो भी बाप के according...।

Om Shanti
29.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ, क्योंकि समय अनुसार एकाग्रता की शक्ति की अत्यधिक आवश्यकता है।

एकाग्रता की शक्ति वाला ही अचानक के paper में pass हो पायेगा...।
यदि अभी-अभी पुरुषार्थ खत्म हो जायें, तो आपकी result क्या होगी...?

देखो बच्चे, पुरुषार्थ इसी तरह अचानक ही खत्म होगा...!

और जिस बच्चे ने;
• स्व-स्थिति के आसन पर अर्थात्
• ऊँच स्वमान में स्थित होने का और बाप को अपने संग रखने का अभ्यास किया होगा..., वो ही अचानक के paper में pass होगा...।

बच्चे सोचते हैं कि हम अचानक के paper में तो pass हो जायेंगे...। परन्तु अचानक का paper बहुत भयानक होगा...!

जिस बात में आप कमज़ोर हो, अचानक का paper उसी बात का आयेगा ... और वो समय स्वयं के साथ-साथ बाप की याद भुलाने वाला होगा ... वो समय ऐसा होगा जिसमें आप विस्मृत हो जाओगे अर्थात् आप स्वयं ही परिस्थिति में या उस समय के बहाव में इतना ज्यादा उलझ जाओगे कि स्वयं की याद और बाप की याद भूल जायेगी...!

परन्तु जो बच्चा अभी से ही...,
• अपने ऊँच स्वमान में स्थित होने की drill बार-बार कर रहा है...
• और साथ ही साथ अशरीरी बन अपने बाप (परमात्मा शिव) के पास घर (शान्तिधाम) जाने का भी पुरुषार्थ कर रहा है...
• अर्थात् जो स्वयं को आत्मा realize कर, बाप के साथ सर्व सम्बन्ध जोड़ने का पुरुषार्थ कर रहा है...
• अर्थात् बाप की श्रीमत पर चलने का 100% attention दे रहा है..., वो ही बच्चा अचानक के paper में बाप की मदद से 'PASS WITH HONOUR' बन पायेगा...।

इसलिए बच्चे,
• स्मृति स्वरुप बनो...।
• मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास बढ़ाओ...।

बाबा बार-बार कह रहा है कि अचानक ... अचानक ... अचानक ...।

तो इस बात की importance अर्थात् समय के महत्व को समझ ... बाप की समझानी के महत्व को समझ, पुरुषार्थ करो ... अन्यथा बाप भी कुछ नहीं कर पायेगा..., अन्तकाल आप अकेले हो जाओगे और वो घड़ी केवल पश्चाताप की होगी...।

इसलिए, सोच-समझकर अपने एक-एक second को सफल करो।

अभी का पुरुषार्थ ही अन्तिम विजय का आधार है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

**IMPORTANT POINT*

**ऊँच स्वमान में स्थित होने की drill + अशरीरी बन अपने बाप (परमात्मा शिव) के पास घर (शान्तिधाम) जाने का पुरुषार्थ + स्वयं को आत्मा realize कर, बाप के साथ सर्व सम्बन्ध जोड़ने का

पुरुषार्थ + बाप की श्रीमत पर चलने का 100% attention = बाप की मदद से ‘PASS WITH HONOUR'*

Om Shanti
30.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, परमात्मा बाप धरा पर आया ही है इस दुःख भरी दुनिया को सुख भरी दुनिया बनाने, अर्थात् कलियुग को सतयुग बनाने...।

और अति दुःख का समय आने से पहले ही बाप अपने बच्चों को पढ़ा, अर्थात् ज्ञान और शक्ति दे इस दुःख की दुनिया से न्यारा कर देता है।
परन्तु उन बच्चों को जो बच्चे बाप पर 100% निश्चय रख, निर्भय हो, बाप की अँगुली पकड़ चलते रहते है...।

और देखो, आप बच्चों के पास तो मैं direct आ गया हूँ ... और आपकी हर समस्या का समाधान करने अर्थात् दुःख को सुख में परिवर्तन करने के लिए मैं बँधा हुआ हूँ...।

यह जो भी समस्या आप बच्चों के पास आ रही है, वो आपके कल्याण के निमित्त ही आ रही हैं।

यह परिस्थितियाँ ही आपको powerful बना, सच्चा हीरा बना देती है।

बस, आप बाप पर निश्चय रख बाप की अँगुली अर्थात् श्रीमत पकड़ चलते चलो...।

सोच-सोच कर भारी मत होना, सर्वशक्तिमान् बाप आप बच्चों के साथ है। आप बच्चों का भविष्य बहुत उज्जवल है।

इसलिए बाप पर निश्चय के साथ-साथ अपने ऊँच स्वमान पर भी 100% निश्चय रखो। यह निश्चय ही विजय का आधार है...।

एक संकल्प भी व्यर्थ नहीं होना चाहिए...।

आप बच्चों के साथ जो कुछ भी हो रहा है, उसमें बस कल्याण ही समाया हुआ है...। सर्वशक्तिमान् बाप की direct नज़र आप बच्चों के ऊपर है, तो आप भी मैं और मेरा करने की बजाए तेरा-तेरा कर, हल्के रह खुशी-खुशी से आगे बढ़ो...।
फिर आपके रास्ते की हर रुकावट खत्म होती जाएगी...।

यदि घबरा जाओगे, फिर बाप का हाथ और साथ छूट जायेगा...!
हिम्मत से चलते चलो ... बस थकना मत...।

थकावट आना अर्थात् हार जाना ... और संकल्पों से हार खाने वाले व्यक्ति की विजय असम्भव है...।
विजय आपका जन्म-सिद्ध अधिकार है - इस निश्चय और नशे में रहो।

यह मत सोचो कि किसी भी समस्या का समाधान कब होगा, कैसे होगा ... बल्कि यह सोचो; बाप (परमात्मा शिव) ज़िम्मेवार है जब भी होगा, जैसे भी होगा उसमें केवल मेरा ही कल्याण है - यह निश्चय और निश्चिन्त अवस्था ही आपको मंज़िल तक पहुँचाएगी...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

**IMPORTANT POINT*

*थकावट आना अर्थात् हार जाना ... और संकल्पों से हार खाने वाले व्यक्ति की विजय असम्भव है...।
विजय आपका जन्म-सिद्ध अधिकार है - इस निश्चय और नशे में रहो।*

Om Shanti
31.07.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, स्वयं को आत्मा अर्थात् point of light, मास्टर सर्वशक्तिमान् समझ ... मुझ परमात्मा, अर्थात् point of light सर्वशक्तिमान् को याद करो - यह याद ही आत्मा को शक्तिशाली बनाती है...।

और शक्तिशाली आत्मा ही सर्व परिस्थितियों को सहज ही पार कर अपनी मंज़िल पर पहुँच सकती है।

बस बच्चे, स्वयं को इस पुरुषार्थ में busy रखो।

जितना आप स्वयं को ऊँच स्वमान में अनुभव करोगे, अर्थात् स्वयं को विशेष आत्मा समझ कर्म-व्यवहार में आओगे, उतना ही इस जड़जड़ीभूत दुनिया से न्यारा होना सहज हो जायेगा और न्यारी आत्मा ही बाप की प्यारी बन, बाप (परमात्मा पिता) के कार्य में मददगार बन सकती है...।

बच्चे, स्वयं के मन-बुद्धि पर attention रखो और बार-बार मन-बुद्धि द्वारा स्वयं को ऊँच स्वमान में स्थित कर सर्वशक्तिमान् बाप के संग जाकर बैठ जाओ।

देखो बच्चे, यह जो समय जा रहा है, वह इस कल्प का अन्तिम अर्थात् last घड़ियाँ जा रही है ... तो सभी आत्माओं का हिसाब-किताब clear होना है और सभी को शान्त और पवित्र बन घर जाना है।

परन्तु उनसे पहले, आपको अपना हिसाब-किताब clear कर, अपने अनादि स्वरूप में स्थित हो, बाप के संग बैठ, विश्व-कल्याण का कार्य करना है...।

इसलिए, आपको अपनी कमी-कमज़ोरी ... हिसाब-किताब, सबको बिन्दी लगा, अर्थात् मन-बुद्धि द्वारा हर चीज़ से साक्षी हो, स्वयं को ऊँच स्वमान में स्थित करना है ... यही अभ्यास आपको परमात्मा बाप की मदद का पात्र बनायेगा अर्थात् बाप की याद से शक्तिशाली बनने वाली आत्मा ही स्वयं का और विश्व का कल्याण कर सकती है।

अच्छा। ओम् शान्ति।

**IMPORTANT POINT*

आपको अपनी कमी-कमज़ोरी ... हिसाब-किताब, सबको बिन्दी लगा अर्थात् मन-बुद्धि द्वारा हर चीज़ से साक्षी हो स्वयं को ऊँच स्वमान में स्थित करना है ... यही अभ्यास आपको परमात्मा बाप की मदद का पात्र बनायेगा...।

Om Shanti
01.08.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, सर्व समर्पण हो जाओ ... अर्थात् आप बच्चों के पास जो कुछ भी है, सब (बुद्धि से) परमात्मा बाप को सौंप दो...।

मैं और मेरेपन में रहने वाली आत्मा ना ही ज्ञानी है ... ना ही योगी ... और ना ही धारणा स्वरूप बन सकती है।

यदि किसी भी आत्मा के अन्दर minor सा भी मैं और मेरापन है, तो बाप-समान बनना असम्भव है।

इसलिए बच्चे, मैं और मेरा ... इसका त्याग करो...।

सूक्ष्म रीति स्वयं की checking करो और change करते जाओ ... निमित्त बन कर्म-व्यवहार में आओ, तब ही आप कर्म के प्रभाव से बचे रह सकते हो...।

जब भी किसी तरह की ज़िम्मेवारी स्वयं की समझते हो तो आप उसमें फँस जाते हो ... यदि उस कार्य की ज़िम्मेवारी कोई और सम्भाल लें, तो आप हल्के रह अन्य कार्य कर सकते हो...।

और यहाँ तो स्वयं भगवान, बाप बन, आप बच्चों की ज़िम्मेवारी उठाने आ गया...!
फिर आपका कर्तव्य केवल बाप के कार्य में सहयोगी बनना ही है ... और इतने बड़े कार्य में सहयोगी केवल ज्ञान स्वरूप ... योग स्वरूप ... और धारणा स्वरूप आत्मा ही बन सकती है...।

परमात्मा बाप के कार्य में सहयोगी आत्मा ही बाप-समान आत्मा है...।

जिस बच्चे को बाप पर 100% निश्चय है, वो ही सर्व समर्पण हो सकता है और बाप-समान बन सकता है...।

देखो बच्चे, इस समय बाप (परमात्मा शिव) केवल आप विशेष बच्चों के कल्याण के लिए ही आपको पढ़ाने आया है ... बस आप बाप पर निश्चय रखो।

देखो, भक्ति में भी गायन है कि "भगवान के घर देर है, अन्धेर नहीं ... जिस पर भगवान की नज़र है उसका कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता..." और यहाँ तो स्वयं भगवान आपका अपना बन गया ... भला कभी बाप अपने सपूत बच्चों का अकल्याण देख सकता है क्या...? नहीं ना...!

फिर बाप पर निश्चय रखो और बाप की knowledge को महीनता से समझ स्वयं की checking कर, change होते जाओ...।

अभी आप बच्चों को परमात्मा बाप का full सहयोग है।

फिर तो हल्के रहो, खुश रहो और उमंग-उत्साह के साथ, बाप के संग रह, अपनी मंज़िल तक पहुंचो...।

जो बच्चा इस समय बाप पर 100% निश्चय रख सर्व समर्पण हो चल रहा है, उसका हर कार्य समय से पहले होगा और अत्यधिक कल्याणकारी भी ... और जिस बच्चे के निश्चय में कमी है अर्थात् 'एक बल - एक भरोसा' नहीं है, उसका समय से पहले मंज़िल पर पहुंचना असम्भव है...।

अच्छा। ओम् शान्ति।

**IMPORTANT POINT*

मैं और मेरेपन में रहने वाली आत्मा ना ही ज्ञानी है ... ना ही योगी ... और ना ही धारणा स्वरूप बन सकती है...।

Om Shanti
02.08.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... देखो बच्चे, अब वो समय आ गया है कि आप कुछ एक बच्चों के संकल्प से पुरानी दुनिया का विधिपूर्वक परिवर्तन और नई दुनिया की स्थापना का कार्य होगा, अर्थात् सभी आत्मायें ... चाहे वो अलौकिक हैं वा लौकिक दुनिया की..., सभी कल्प वृक्ष के अपने-अपने धर्म में नम्बरवार set होती जायेंगी ... और उसी अनुसार सतयुग में आयेंगी...।

इसलिए, इस समय मैं आपका बाप, आपके संकल्पों को ठीक रीति चलाने का direction दे रहा हूँ, ताकि आप अपना कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सको, अर्थात् सम्पूर्ण रूप से सम्पन्न हो, बिना विघ्न के, अपना कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न करो...।

बाप आप बच्चों के एक-एक संकल्प को जानता है और उसे यह भी पता है कि जीवनमुक्त आत्मा ही सभी आत्माओं का कल्याण कर सकती है, अर्थात् जब तक आप स्वयं की, हर तरह की..., तन, मन, धन, सम्बन्ध-सम्पर्क की problem से बाहर नहीं निकलते, अर्थात् 100% निर्बन्धन बन सम्पन्न नहीं बन जाते, अर्थात् इच्छामुक्त नहीं बन जाते, अर्थात् 100% सन्तुष्ट आत्मा ही सभी आत्माओं के कल्याण के निमित्त बन सकती है...।

और साथ ही साथ एक ज्ञानवान, बुद्धिमान आत्मा ही विधिपूर्वक, युक्तियुक्त ढंग से अपना कार्य सम्पन्न कर सकती है।
क्योंकि यह कार्य कोई छोटा-मोटा कार्य नहीं है ... सभी आत्माओं को मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा देना है, वो भी नम्बरवार...।

बच्चे, बस अब बाप के एक-एक बोल पर निश्चय रखो।

इस समय आप तमोप्रधान दुनिया के according चलने वाली मन-बुद्धि की तरफ attention ना दे, बाप की बातों पर 100% निश्चय रख, खुशी-खुशी अर्थात् उमंग-उत्साह से आगे बढ़ो...।

आप बच्चों ने तो अभी तक त्याग और तपस्या ही की है, अब आपका बाप बस आपको आपकी seat पर set करने के बाद ... तन, मन, धन, सम्बन्ध-सम्पर्क ... किसी भी तरह की कोई भी problem आने ही नहीं देगा, क्योंकि आगे तो आनन्द ही आनन्द है...।

यह problems जो आपको अनुभव हो रही हैं, वो कुछ भी नहीं है। बस आपको अनुभवी मूर्त ही बना रही हैं ... और साथ ही साथ, इस समय जो directions आपको बाप दे रहा है, उसे अपनी बुद्धि रूपी तिजोरी में सम्भाल लो, ताकि आप उसे आने वाले समय में सफलतापूर्वक use कर सको...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

जीवनमुक्त आत्मा ही सभी आत्माओं का कल्याण कर सकती है, अर्थात् जब तक आप स्वयं की हर तरह की, तन, मन, धन, सम्बन्ध-सम्पर्क की problem से बाहर नहीं निकलते, अर्थात् 100% निर्बन्धन बन सम्पन्न नहीं बन जाते, अर्थात् इच्छामुक्त नहीं बन जाते, अर्थात् 100% सन्तुष्ट आत्मा ही सभी आत्माओं के कल्याण के निमित्त बन सकती है...।

Om Shanti
03.08.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, महसूस करो कि सब कुछ transparent light है। चाहे वो तन के अन्दर है, चाहे बाहर...।

Transparent अर्थात् ... जो जैसा है, उसी रूप में प्रत्यक्ष हो जाना...। हर चीज़ original स्वरूप में सामने आ जाये - आप भी और पाँचों तत्व भी ... और इस drama के सारे रहस्य भी...।

जैसे-जैसे आपका यह अभ्यास natural होता जायेगा, आपके सामने स्वयं ही सब कुछ प्रत्यक्ष होता जायेगा।

किसी भी चीज़ की सच्चाई को सामने लाने के लिए पहले उसे प्रेम किया जाता है, फिर शक्ति दी जाती है ... और फिर उमंग-उत्साह बढ़ाया जाता है, तब ही वो अपने original स्वरूप में आने के लिए अर्थात् सभी के सामने प्रत्यक्ष होने के लिए तैयार होती है ... और अभी तक तो दुनिया की हर चीज़ 2500 वर्ष से

ही अपनी reality को भूली हुई थी, जो बाप (परमात्मा शिव) ने आकर पहले तो ज्ञान दिया, फिर आप बच्चों द्वारा सारा कार्य सम्पन्न करवाया ... और अब reality सामने आने का समय आ गया है।

बस, निश्चय रख, निश्चिन्त रहो, क्योंकि आपके संकल्पों का ही सारा प्रभाव है।

आप हो रचता, आपके अन्दर सब कुछ inbuilt है..., क्योंकि आप आत्मायें सबसे अधिक चमकदार अर्थात् numberone आत्मायें हो। बस, आप अपने गुणों और शक्तियों को use करना भूल गये हो...! अब जैसे-जैसे आपको स्मृति आती जायेगी, अर्थात् स्वयं के 100% स्मृति स्वरूप बनते ही, आपमें सारे गुण और सभी शक्तियाँ emerge रूप में आ जायेंगी।
फिर आप जैसा विश्व में कोई भी नहीं दिखेगा...!

देखो, मैं हूँ निराकार भगवान, जिसे हर कोई देख वा पहचान नहीं सकता। किन्तु आप बनोगे master भगवान, पूरे विश्व का कल्याण करने वाले, सम्मुख दिखने वाले, दुख हर्ता, सुख कर्ता...।

फिर बताओ, आपकी जयजयकार नहीं होगी, तो किसकी होगी...?
बस, आपके थोड़े से ही मन-बुद्धि द्वारा detach होते ही आपकी प्राप्तियाँ भरपूर होती जायेगी...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

किसी भी चीज़ की सच्चाई को सामने लाने के लिए पहले उसे प्रेम किया जाता है, फिर शक्ति दी जाती है ... और फिर उमंग-उत्साह बढ़ाया जाता है, तब ही वो अपने original स्वरूप में आने के लिए अर्थात् सभी के सामने प्रत्यक्ष होने के लिए तैयार होती है ...

Om Shanti
04.08.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बाबा देख रहा था कि परिवर्तन का कार्य बहुत speed से चल रहा है। हर कोई अपना 100% दे भी रहा है और इच्छा भी एक ही है कि बस अब परिवर्तन हो जाना चाहिए...।

बच्चे, बाप की भी बस एक यही शुभ इच्छा है ... परन्तु बाप है knowledgeful, अर्थात् वो आप बच्चों को भी आप-समान बना रहा है।

Knowledgeful, अर्थात् आत्मा और प्रकृति के पाँचों ही तत्व के कार्य करने की विधि को भली-भांति जानता है, अर्थात् बाप को पता है आत्माओं को किस रीति परिवर्तन करना है ... और साथ ही साथ आत्मा के powerful, अर्थात् गुणों से भरपूर संकल्पों से प्रकृति अर्थात् इस शरीर का परिवर्तन किस तरह करवाना है...।

बस, बाप की एक-एक बात को समझ, इसे practical apply कर, अपने-अपने तन को सहज से सहज रीति परिवर्तन करो...।

(देह रूपी प्रकृति का परिवर्तन करना अर्थात ... अपने पाँच तत्वों से बने शरीर को पवित्र light समझ, पूरे तन में पवित्रतम् light अर्थात् गुणों और शक्तियों से भरपूर light को चलता हुआ महसूस करना...।)

बस, इस समय आपको अपनी समझ को practically use करना है।
जितना आप इसे use करोगे, उतना ही आप powerful result अनुभव करोगे...।

परमात्मा बाप की नज़र हर बच्चे पर है और बाप आपके एक-एक संकल्पों को जान उसी according आपको संकल्प दे रहा है...। बस आप हल्के रह एक-एक संकल्प को स्वयं पर practical apply करो। इसमें अलबेले मत बनना, फिर ज़िम्मेवार बाप है...।

बच्चे, हर कार्य को सहज समझ और सहज ही मानकर करो। देखो, मेहनत और मुश्किल word तो बाप (परमात्मा शिव) की dictionary अर्थात् मन-बुद्धि में भी नहीं है...!
तो आप भी तो बाप-समान बच्चे हो...!

बाप के पास आप बच्चों के लिए full planning है, फिर आप बार-बार यह क्यों सोचते हो कि परिवर्तन कब होगा...?
बस बच्चे, बाप पर निश्चय रखो। जब भी होगा केवल-केवल-केवल आप बच्चों के full कल्याण के निमित्त होगा।

औरों का कल्याण तो धीरे-धीरे होगा, परंतु सबसे पहले आनंदमय जीवन तो आप बच्चों का ही होगा ना...!

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

हर कार्य को सहज समझ और सहज ही मानकर करो। देखो, मेहनत और मुश्किल word तो बाप की dictionary अर्थात् मन-बुद्धि में भी नहीं है...! तो आप भी तो बाप-समान बच्चे हो...!

Om Shanti
05.08.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, तमोप्रधान दुनिया के बीच रहते स्वयं को सतोप्रधान बनाने का कार्य चल रहा है और यह कार्य बहुत speed से अपनी मंज़िल की तरफ पहुँच रहा है।

यह समय ऐसा जा रहा है, जहाँ गुण रुपी शक्ति तो क्या, गुण भी नाम के, अर्थात् मुख के द्वारा गुण दिखाने के लिये अर्थात् नाम-मात्र के रह गये हैं और चारों तरफ आसुरी शक्ति ही रह गई है...!

ऐसे वातावरण में आप गुणों रुपी शक्ति को धारण करने के capable बनते जा रहे हो, अर्थात् दुनिया के लोग जितनी speed से नीचे जा रहे हैं, उससे कई अधिक ज्यादा speed से आप ऊपर की तरफ जा रहे हो।
जिस कारण, तमोप्रधानता का opposition आप बच्चों के लिये बढ़ता जा रहा है, अर्थात् वो स्थूल और सूक्ष्म कई रुप से आप बच्चों पर वार कर रही है, परन्तु परमात्मा बाप के बच्चों पर विजय पाना असम्भव है...।

बच्चे, आप स्वयं पर attention रखो। कोई भी कमज़ोर संकल्प आये तो उसे एक second में एक side में कर दो। कोई भी कमज़ोरी के संकल्प को स्वयं के पास मत रखो, अर्थात् ये मत सोचो अभी मैं 100% संतुष्ट या बाप-समान तो बना नहीं हूँ...!

बस आपको तो बार-बार स्वयं पर attention रखना है, अर्थात् जो संकल्प बाप दे रहे हैं उस पर attention देना है ... और जो संकल्प तमोप्रधानता के, बाहर से, अर्थात् विभिन्न रूप में आपके पास आ रहे हैं ... उसे side में करते जाना है ... अर्थात् *कुछ भी नहीं है...,* ऐसा सोच आगे बढ़ जाना है।

आप speed से आगे बढ़ रहे हो और सम्पन्नता के समीप हो। बस बाप पर निश्चय रखो।

जिन बच्चों के साथ परमात्मा बाप है उनकी विजय, सारी कायनात मिलकर भी रोक नहीं सकती...!

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

यह समय ऐसा जा रहा है, जहाँ गुण रुपी शक्ति तो क्या, गुण भी नाम के, अर्थात् मुख के द्वारा गुण दिखाने के लिये, अर्थात् नाम-मात्र के रह गये हैं और चारों तरफ आसुरी शक्ति ही रह गई है...!

Om Shanti
06.08.2019

★ 【आज का पुरूषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आखिर कब तक बाप तमोप्रधानता की speed को रोक कर रखेगा...?
आप कब तैयार होंगे...?

बस बच्चे, अब आप न्यारे हो जाओ, अर्थात् आपके पास कोई भी छोटी, चाहे बड़ी किसी भी तरह की problem हो, उसे माया का वार समझ cross कर लो।

देखो, आप बच्चे युद्ध के मैदान में हो और जब तक आप सम्पूर्ण विजयी नहीं बन जाते, तब तक माया और प्रकृति मिल, आप बच्चों पर वार करती रहेगी।

किन्तु आप बच्चों को कोई भी तन की problem हो, मन में स्वयं की ही कमज़ोरी के संकल्प हों, धन ऊपर-नीचे हो, या सम्बन्ध-सम्पर्क की तरफ से या अन्य आत्मा की तरफ से कोई भी problem आये, या चारों ही तरफ से कोई भी परिस्थिति आये, तो उसे *“कुछ भी नहीं है...”* - ऐसा सोच, झट से stable हो जाओ।

देखो बच्चे, आप पाँच तत्वों से बने इस तन में और तमोप्रधानता के बीच रह रहे हो, तो आपको दिखेगा, सुनेगा और महसूस तो वो ही होगा जिस रूप में आपके पास आयेगा, परन्तु आपके *“कुछ भी नहीं है...”* - ऐसा संकल्प करते ही वो बात हल्की हो जायेगी...।

वैसे भी इस दुनिया में है भी क्या...? कीचड़ पट्टी ही तो है...। बस, मन से इससे बार-बार न्यारे होने का अभ्यास करते रहो ...

देखो, आप बच्चों की सारी ज़िम्मेवारी बाप की है ... परन्तु तब, जब आप अपने संकल्प ना चला बाप पर समर्पण हो जाते हो...।

बस, किसी भी बात में स्वयं की मन-बुद्धि ना चला, बाप के according अपनी मन-बुद्धि चलाओ, फिर तो आप बच्चों की विजय हुई ही पड़ी है...।

बच्चे, इस समय आपकी मन-बुद्धि पर माया और प्रकृति का भी बीच-बीच में प्रभाव पड़ जाता है। इसलिए conscious में आते ही, अर्थात् aware रह, स्वयं की मन-बुद्धि को बाप के according चलाने का attention रखते रहो।

जो करेगा, सो बनेगा ... अर्थात् इस समय बाबा केवल विजयी रत्न बनाने की ही पढ़ाई पढ़ा रहे हैं। केवल विजयी रत्न बच्चे ही परमात्मा बाप की पढ़ाई को सही रीति समझ अपने तन, मन, धन, सम्बन्ध-सम्पर्क या मन्सा, वाचा, कर्मणा को बाप के according use कर पाते हैं ... अर्थात् विजयी रत्न बच्चे ही बाप की पढ़ाई को महीनता से समझ, 100% निश्चयबुद्धि बन, स्वयं को 100% समर्पण कर पाते हैं।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

आप पाँच तत्वों से बने इस तन में और तमोप्रधानता के बीच रह रहे हो, तो आपको दिखेगा, सुनेगा और महसूस तो वो ही होगा जिस रूप में आपके पास आयेगा, परन्तु आपके “कुछ भी नहीं है...” - ऐसा संकल्प करते ही वो बात हल्की हो जायेगी...।

Om Shanti
07.08.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, आप सब बच्चे स्वयं को बाप-समान बना रहे हो, जोकि एक बहुत ऊँची मंज़िल है। जिस पर आप अपनी power से ही पहुँच सकते हो ... और बाप आप बच्चों का साथी, सहयोगी बन बहुत सहज रीति आपकी power के according, आपको आपकी मंज़िल तक पहुँचाता है, परन्तु चलना आपको ही पड़ता है...!

आप बच्चे जितना-जितना light का अभ्यास करते हो और बाप की याद में रहते हो, उतना ही आप बच्चों में powers आती जाती है..., जिससे सहज ही आप अपनी मंज़िल पर पहुँचते हो।

अब power भी कौन-सी...? स्वयं को check कर स्वयं के संस्कारों को बाप-समान बनाने की...।

इसके लिए पहले तो स्वयं को परिवर्तन करने की acceptance चाहिए, तभी तो आप अपनी योग-अग्नि के द्वारा अपने कठोर संस्कारों को जला, हर संस्कार को एकदम soft बना, स्वयं को बाप-समान बना लेते हो...।

देखो बच्चे, आप बच्चों का सम्पन्न स्वरूप (फरिश्ता स्वरूप) प्रेम से भरपूर है ... तो इस समय आप बच्चों को भी loveful बनना है। जितना-जितना loveful बनते जाओगे, उतना ही सहज होता जायेगा...।

बस बच्चे, स्वयं की बुद्धि ना चला, बाप की बुद्धि के according चलो..., जिससे सहज ही और बहुत ही जल्दी आप अपनी मंज़िल पर पहुँच जाओगे...।

आप अपने तन के मालिक हो और आपके सूक्ष्म से सूक्ष्म संकल्प का भी प्रभाव तन पर पड़ता है।

जितना आप flawless बनते हो, उतना ही आपका तन सहज ही flawless बन जाता है ... otherwise आप जितना मर्ज़ी योग लगाते रहो ... light का अभ्यास करते रहो ... किन्तु आपका एक भी सूक्ष्म-सा कठोर संस्कार, ना तो आपको आपकी मंज़िल तक पहुँचने देगा और ना ही आपका तन परिवर्तन होगा...।

बस, बाप की हर समझानी को सहज ही accept कर, स्वयं को परिवर्तन कर, परिवर्तन-कर्ता बन, विश्व-परिवर्तन का कार्य सम्पन्न करो...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

आप जितना-जितना light का अभ्यास करते हो और बाप की याद में रहते हो, उतना ही आप बच्चों में powers आती हैं..., स्वयं को check कर स्वयं के संस्कारों को बाप-समान बनाने की...। बस, स्वयं को परिवर्तन करने की acceptance चाहिए।

Om Shanti
08.08.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, बस आप वरदानी मूर्त बनने ही वाले हो, अर्थात् आपके हर बोल और संकल्प सिद्ध होने ही वाले हैं ... परन्तु उससे पहले आपको फुल knowledgeful होना पड़ेगा..., अर्थात् आपको यह ज्ञान होना चाहिए कि मेरे अन्दर हर तरह की आत्मा के लिए, सूक्ष्म रीति स्नेह और सहयोग देने की भावना हो, ताकि वो अपना हिसाब-किताब सहज रीति चुक्तु कर अपनी मंज़िल पर पहुँच सके...।

आप instant किसी भी आत्मा पर उनके कर्म के according कोई भी stamp नहीं लगाओ..., अर्थात यह पागल है, यह ठीक नहीं हो सकता, यह धोखेबाज़ है या यह विकारी है...।

इस तरह किसी भी आत्मा के बारे में आपके अन्दर संकल्प ना आये, क्योंकि यह हिसाब-किताब clear करने का कहो या climax period कहो, ऐसा समय होने के कारण आत्मायें भिन्न-भिन्न part play कर रही हैं...। चाहे वो अन्दर खाते ,(internally) ऐसी नहीं हैं...।

देखो, बाप भी तो आपकी सारी कर्म कहानी जानता था।
फिर भी बाप ने आप बच्चों को भी पहचान, आप बच्चों को पढ़ाना शुरू किया ... क्योंकि बाप जानता था कि बच्चों पर समय और वातावरण का प्रभाव है। साथ ही साथ इन्हें हर तरह से अनुभवी मूर्त भी बनना है। इस कारण, बाप ने आपको अपनाया...।

देखो बच्चे, बाप त्रिकालदर्शी है। बाप सब जानता है, परन्तु साथ ही साथ बाप के अन्दर अर्थात् स्वभाविक ही बाप को हर बच्चे को देख रहम और प्रेम आता है ... जिस कारण, बाप को बच्चे के कर्म ना दिख, उनके प्रति शुभ और कल्याण की भावना ही निकलती है...। जो बच्चों को आगे बढ़ाने के निमित्त बन जाती हैं।

इस तरह, हर आत्मा के बुरे कर्मों को जानते हुए भी आपकी पहली भावना रहम और कल्याण की हो, फिर उनके कर्मों को देखो..., क्योंकि पहले संकल्प का ही प्रभाव पड़ता है...। इसलिए बाप आपके natural स्वभाव को परिवर्तन करने की पढ़ाई आपको पढ़ा रहा है ... और माया और प्रकृति भी indirect way से बाप की सहयोगी ही बन गई है।
जिससे आप परिपक्व बनते जा रहे हो...।

बस बच्चे, इस समय आप फुल powerful रहो ... और इस कार्य को संकल्प से सहज समझो, अर्थात् स्वयं को बाप की seat पर ही set समझो...। फिर तो कार्य सम्पन्न हो जायेगा...।

अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

आप instant किसी भी आत्मा पर उनके कर्म के according कोई भी stamp नहीं लगाओ..., अर्थात यह पागल है, यह ठीक नहीं हो सकता, यह धोखेबाज़ है या यह विकारी है...। आपके अन्दर हर तरह की आत्मा के लिए, सूक्ष्म रीति स्नेह और सहयोग देने की भावना हो, ताकि वो अपना हिसाब-किताब सहज रीति चुक्तु कर अपनी मंज़िल पर पहुँच सके…।

Om Shanti
09.08.2019

★ 【आज का पुरुषार्थ】 ★

बाबा कहते हैं ... बच्चे, सब अच्छा है ... जो कुछ भी हो रहा है, सब अच्छा है ... सभी का कल्याण हो - जिन बच्चों के अन्दर यह संकल्प हैं, वो ही स्व-कल्याणी से विश्व-कल्याणी बन सकते हैं...।

शुभ भावना, शुभ कामना ... और हर आत्मा के प्रति और हर परिस्थिति में positive संकल्प होना बहुत ज़रूरी है...।
परन्तु साथ ही साथ drama की समझ होनी भी बहुत ज़रूरी है अर्थात् loveful के साथ-साथ lawful होना...।

जिस तरह, इस समय, बाप अपना part play कर रहा है, अर्थात् बच्चों को बाप-समान बनाने के लिए बाप का loveful के साथ-साथ lawful होना भी बहुत ज़रूरी है, क्योंकि आत्मायें कमज़ोर अर्थात् नम्बरवार होती हैं...।

इस समय स्थिरता के साथ-साथ समझ होना भी अति आवश्यक है, क्योंकि यह बिल्कुल तमोप्रधान दुनिया और तमोप्रधान आत्मायें हैं, इनके बीच रहते स्वयं की समझ के साथ ही अर्थात् हर आत्मा के साथ किस रीति adjust होना है, इस समझ के साथ ही आप सदा स्थिर रह सकते हो।

देखो बच्चे, teacher की पढ़ाई तो खत्म हो चुकी है, अर्थात् teacher का role खत्म हो चुका है ... किन्तु बाप अपने बच्चों को अपनी seat देने से पहले अर्थात् बाप का role finish कर, आपको बाप-

समान बनाने से पहले आपको महीनता से समझानी दे रहा है, ताकि आप ठीक रीति अपनी ज़िम्मेवारी सम्भाल सको।

देखो बच्चे, बाबा अन्त तक आपके साथ रहेगा और अन्त में सतगुरु बन, अपने master सतगुरु बच्चों के साथ सारे विश्व का कल्याण कर घर (शान्तिधाम) चला जायेगा...।
अच्छा। ओम शांति।

**IMPORTANT POINT*

इस समय स्थिरता के साथ-साथ समझ होना भी अति आवश्यक है, क्योंकि यह बिल्कुल तमोप्रधान दुनिया और तमोप्रधान आत्मायें हैं, इनके बीच रहते स्वयं की समझ के साथ ही अर्थात् हर आत्मा के साथ किस रीति adjust होना है, इस समझ के साथ ही आप सदा स्थिर रह सकते हो।